A Thousand Splendid Suns

हज़ारों दमकते आफ़ताब

ख़ालिद हुसैनी

द काइट रनर के लेखक की दिल को छू लेने वाली कृति

हज़ारों दमकते आफ़ताब

ख़ालिद हुसैनी
अनुवाद
रेयाज़ उल हक़

पेंगुइन बुक्स

पेंगुइन बुक्स

पेंगुइन बुक्स द्वारा प्रकाशित
पेंगुइन बुक्स इंडिया प्रा. लि., 11 कम्युनिटी सेंटर, पंचशील पार्क, नई दिल्ली 110 017, भारत
पेंगुइन ग्रुप (यू.एस.ए.) इंक., 375 हडसन स्ट्रीट, न्यूयॉर्क 10014, यू.एस.ए.
पेंगुइन ग्रुप (कनाडा), 90 एलिंगटन एवेन्यू, ईस्ट सूइट, 700 टोरंटो, ऑंटारियो एम4पी 2वाय3 कनाडा
(ए डिविज़न ऑफ़ पियरसन पेंगुइन कनाडा इंक.)
पेंगुइन बुक्स लि., 80, स्ट्रैंड, लंदन डब्ल्यू.सी.2आर. ओ.आर.एल., इंग्लैंड
पेंगुइन आयरलैंड, 25 सेंट स्टीफेंस ग्रीन, डबलिन 2, आयरलैंड (ए डिविज़न ऑफ़ पेंगुइन बुक्स लिमिटेड)
पेंगुइन ग्रुप (आस्ट्रेलिया), 707 कॉलिंस स्ट्रीट, मेलबर्न, विक्टोरिया 3008, आस्ट्रेलिया (ए डिविज़न ऑफ़ पियरसन आस्ट्रेलिया ग्रुप पीटीवाई लिमिटेड)
पेंगुइन ग्रुप (एन.ज़ेड), 67 अपोलो ड्राइव, रोज़डेल ऑकलैंड 0632, न्यूज़ीलैंड (ए डिविज़न ऑफ़ पियरसन न्यूज़ीलैंड लिमिटेड)
पेंगुइन ग्रुप (साउथ अफ्रीका) (पीटीवाई) लि., 24 स्टरडी एवेन्यू, रोज़बैंक, जोहांसवर्ग 2196, साउथ अफ्रीका

पेंगुइन बुक्स लि., रजिस्टर्ड ऑफिस : 80 स्ट्रैंड, लंदन डब्ल्यू.सी2आर. ओ.आर.एल., इंग्लैंड

अंग्रेज़ी का प्रथम संस्करण : ब्लूम्सबरी, 2007
हिंदी का प्रथम संस्करण : पेंगुइन बुक्स इंडिया, 2012

Copyright © 2007 ATSS Publications, LLC

सर्वाधिकार सुरक्षित
10 9 8 7 6 5 4 3 2 1

ISBN : 9780143415879

टाइपसेट : कम्प्यूटेक सिस्टम, शाहदरा, दिल्ली-110032 मोबाइल: 9811388579

मुद्रक : श्री कृष्णा प्रिंटर्स, नोएडा

यह पुस्तक इस शर्त पर विक्रय की जा रही है कि प्रकाशक की लिखित पूर्वानुमति के बिना इसका व्यावसायिक अथवा अन्य किसी भी रूप में उपयोग नहीं किया जा सकता। इसे पुनः प्रकाशित कर बेचा या किराए पर नहीं दिया जा सकता तथा जिल्दबंद या खुले किसी भी अन्य रूप में पाठकों के मध्य इसका परिचालन नहीं किया जा सकता। ये सभी शर्तें पुस्तक के ख़रीदार पर भी लागू होंगी। इस संदर्भ में सभी प्रकाशनाधिकार सुरक्षित हैं। इस पुस्तक का आंशिक रूप में पुनः प्रकाशन या पुनः प्रकाशनार्थ अपने रिकॉर्ड में सुरक्षित रखने, इसे पुनः प्रस्तुत करने की प्रति अपनाने, इसका अनूदित रूप तैयार करने अथवा इलेक्ट्रॉनिक, मैकेनिकल, फोटोकॉपी और रिकॉर्डिंग आदि किसी भी पद्धति से इसका उपयोग करने हेतु समस्त प्रकाशनाधिकार रखने वाले अधिकारी तथा पुस्तक के प्रकाशक की पूर्वानुमति लेना अनिवार्य है।

ALWAYS LEARNING PEARSON

यह किताब हारिस और फ़रहा के नाम,
दोनों ही मेरी आंखों की नूर हैं, और अफ़ग़ानिस्तान की औरतों के नाम।

भाग एक

एक

मरियम पांच साल की थी जब उसने पहली बार हरामी शब्द सुना था।

वह एक गुरुवार का दिन था। वह ज़रूर गुरुवार ही होगा, क्योंकि मरियम को याद आया कि वह उस दिन बेचैन और सहमी हुई थी जो कि वह सिर्फ़ गुरुवार को ही रहा करती थी। यह वह दिन था जब जलील *कोल्बा* पर उससे मिलने आता था। जब तक वो उसे घुटनों तक ऊँची घास को पार करते हुए और हाथ हिलाते हुए दिखता, मरियम समय काटने के लिए एक कुर्सी पर चढ़ गई थी और अम्मी का चीनी चाय सेट गिरा दिया था। वह चाय का सेट मरियम की अम्मी नाना की अकेली निशानी थी जो उनको उनकी अम्मी से मिली थी। उनका इंतकाल तब हो गया था जब नाना दो साल की थीं। नाना ने पोर्सिलीन के एक नीले-सफ़ेद टुकड़े को संभाल कर रखा था, चायदानी की टोंटी का वह शानदार घुमाव, हाथ से रंगी हुई उसकी गर्दन और उसकी फूलदार नक्काशी, चीनी के कटोरे पर बना हुआ ड्रैगन जो बुराइयों के नाश को आमादा दिखता था।

यही आख़िरी टुकड़ा मरियम की उंगलियों से फिसल कर *कोल्बा* के लकड़ी के फर्श पर गिर गया और टुकड़ों में बिखर गया था।

जब नाना ने कटोरे को देखा तो उनका चेहरा लाल हो गया। उनका ऊपरी होंठ कांपा और उनकी दोनों आंखों ने, जिनमें से एक आलसी थी और एक अच्छी, मरियम पर बिना पलक झपकाए टिक गई- एक सपाट और स्थिर निगाह थी वो। नाना इतने गुस्से में दिख रही थीं कि मरियम को डर लगा

कि कहीं जिन फिर से नाना पर सवार न हो जाए। लेकिन जिन इस बार नहीं आया। इसके बजाए, नाना ने मरियम की कलाई पकड़ी और उसे करीब खींचा और भिंचे हुए दांतों के साथ कहा, 'तुम एक लापरवाह हरामी हो। मैंने जो कुछ भी बर्दाश्त किया है यह उसका तोहफ़ा है। पुश्तैनी चीज़ों को तोड़ने वाली लापरवाह हरामी।'

तब मरियम समझ नहीं पाई थी। वह नहीं जानती थी कि हरामी शब्द का मतलब क्या होता है। न ही वह इतनी बड़ी थी कि नाइंसाफियों को समझ सके, यह समझ सके कि कसूरवार हरामी को पैदा करने वाले लोग हैं न कि खुद हरामी जिसका अकेला गुनाह पैदा होना है। लेकिन जिस तरह से नाना ने इस शब्द को कहा था, मरियम ने अंदाज़ा लगाया कि हरामी होना एक बदसूरत, नापसंदीदा चीज़ है जैसे कि कोई कीड़ा होता है। जैसे कि तिलचट्टे होते हैं जिनको नाना हमेशा कोसती रहती और बुहार कर कोल्बा से बाहर फेंकती रहतीं।

बाद में बड़ी होने पर मरियम समझ गई। नाना ने जिस तरह इसे कहा था, मानो वह इसे कह नहीं रही हो, बल्कि उस पर थूक रही हो, उसी ने मरियम को इसकी पूरी चुभन का अहसास करा दिया था। तब वो नाना की बात का मतलब समझ गई थी कि वह एक अनचाही चीज़ थी, कि मरियम एक नाजायज़ इनसान थी जिसका प्यार, परिवार, घर और कबूल किए जाने जैसी चीज़ों पर कोई जायज़ दावेदारी नहीं होगी, जिन पर दूसरे लोगों का दावा हुआ करता है।

जलील ने कभी भी उसे इस नाम से नहीं बुलाया था। जलील उसे एक छोटा फूल कहा करता था। उसे मरियम को अपनी गोद में बैठा कर कहानियां सुनाना बेहद पसंद था। वह हेरात की कहानियां सुनाया करता था, जिस शहर में 1959 में मरियम पैदा हुई थी और जो एक समय फ़ारसी तहज़ीब का केंद्र हुआ करता था, लेखकों, चित्रकारों और सूफियों का घर था।

'वहां तुम जहां भी पांव रखो वहां एक शायर मिल जाता है,' वह हंसता।

जलील ने उसे गनी गौहर शाद की कहानी सुनाई जिसने पंद्रहवीं सदी में हेरात से अपनी मुहब्बत की निशानी के बतौर मशहूर मीनार बनवाए थे। वो मरियम को हेरात के गेहूं के खेतों, बागीचों, मोटे अंगूरों से लदी बेलों, शहर की भीड़ और महफ़ूज बाज़ारों के बारे में बताता।

जलील ने एक दिन उसे बताया, 'वहां पिस्ते का एक पेड़ है जिसके नीचे एक बहुत महान शायर जामी दफ्न हैं।' वह झुका और फुसफुसाया, 'जामी पांच

सौ साल पहले हुए थे। मैं तुमको एक बार वहां उस पेड़ के पास ले गया था। तुम तब छोटी थीं। तुमको याद नहीं होगा।'

यह सच था। मरियम को याद नहीं था। और हालांकि अपनी ज़िंदगी के पहले पंद्रह साल वह हेरात से बस इतनी दूर रही थी कि वहां पैदल जाया जा सकता था लेकिन मरियम ने कभी कहानियों वाले उस पेड़ को नहीं देखा था। वह कभी उन मशहूर मीनारों को पास से नहीं देखने वाली थी और न ही कभी हेरात के बागीचों से फलों को तोड़ने वाली थी और न ही गेहूं के खेतों में टहलने वाली थी। लेकिन जब भी जलील इस तरह बात करता, मरियम बहुत खुशी से सुनती। वह इतनी ख़ूब सारी और दुनियावी जानकारी के लिए जलील की तारीफ करती। वह नाज़ से फूल जाती कि उसके अब्बा को ऐसी बातों की जानकारी थी।

'क्या भरपूर झूठ है!' जलील के जाने के बाद नाना कहतीं। 'अमीर लोग भरपूर झूठ बोलते हैं। वो कभी तुमको किसी पेड़ के पास नहीं ले गया है। और उसे ख़ुद को रिझाने मत दो। तुम्हारे इस प्यारे अब्बा ने हमको धोखा दिया है। उसने हमें निकाल फेंका। उसने हमें अपने बड़े शानदार घर से इस तरह निकाल फेंका मानो हम उसके लिए कुछ नहीं थे। और उसने यह सब बहुत ख़ुशी से किया।'

मरियम इसे सिर झुकाए सुन लेती। उसे नाना से यह कहने की कभी हिम्मत नहीं हुई कि जलील के बारे में इस तरह की बातों को वह कितना नापसंद करती थी। सच बात तो यह थी कि जलील के आसपास रहते हुए मरियम कभी ख़ुद को हरामी महसूस नहीं करती थी। हर जुमेरात को जब जलील मुस्कान और तोहफ़ों और प्यारी-प्यारी बातों के साथ उससे मिलने आता तो घंटे-दो घंटे के लिए मरियम ख़ुद को उस सारी ख़ूबसूरती और ईनामों का हक़दार समझती जो ज़िंदगी के ऊपर उसका बकाया थे। और इसी लिए मरियम जलील को प्यार करती।

भले ही उसे जलील को किसी के साथ बांटना पड़ता था।

जलील की तीन बीवियां और नौ बच्चे थे। सारे नौ जायज़ बच्चे मरियम के लिए पराए थे। वो हेरात के सबसे अमीर लोगों में से एक था। उसका एक सिनेमाघर था, जिसे मरियम ने कभी नहीं देखा था लेकिन उसकी गुज़ारिशों

पर उसने मरियम को उसके बारे में बताया था। और इस तरह वह जानती थी कि उसकी सामने की दीवार नीले और हल्के भूरे रंग की टेराकोटा टाइलों से बनी थी, कि इसमें प्राइवेट बालकनी सीटें थीं और संबलों वाली छत थी। दोनों तरफ़ खुलने वाले दरवाज़े एक टाइलों वाली लॉबी में खुलते थे जहां हिंदी फ़िल्मों के पोस्टर शीशे के फ्रेमों में लगाए हुए रहते थे। एक दिन जलील ने बताया कि मंगलवार को बच्चों को छूट वाले काउंटर पर मुफ्त में आइसक्रीम मिलती थी।

जब वो ये बातें बता रहा था, तो नाना रहस्यमय तरीके से मुस्कुरा रही थीं। उन्होंने जलील के कोल्बा से जाने तक इंतज़ार किया और फिर उसका मज़ाक उड़ाती हुई हंसी हंसते हुए बोलीं, 'पराए लोगों के बच्चे वहां आइसक्रीम खाते हैं। तुम्हें क्या मिला है मरियम? आइसक्रीम की कहानियां।'

सिनेमा के अलावा, जलील के पास कारूख, फरह में ज़मीन थी, कालीनों की तीन दुकानें, कपड़ों की एक दुकान और एक काली 1956 मॉडल बुइक रोडमास्टर थी। वह हेरात के बेहतरीन संपर्कों वाले लोगों में से था जिसके दोस्तों में मेयर और सूबाई गवर्नर भी थे। उसका एक रसोइया, एक ड्राइवर और घर का काम करने के लिए तीन नौकर थे।

एक समय नाना भी उनमें से एक नौकर हुआ करती थी। जब तक उनका पेट फूलने नहीं लगा।

नाना ने बताया कि जब यह हुआ तो जलील के पूरे परिवार ने गहरी सांस भरी और यूं लगा पूरे हेरात की हवा खींच ली गई। जलील के ससुर ने ख़ून की नदियां बहा देने की कसम खाई। बीवियों ने नाना को निकाल फेंकने की मांग की। नाना के अपने अब्बा ने, गुल दामन के पास गांव में पत्थर काटनेवाले उसके अब्बा ने उसे छोड़ दिया। अपमानित अब्बा ने अपना सामान समेटा और ईरान जाने वाली बस पर सवार हो गए और इसके बाद उनको न देखा गया और न उनकी कोई खोज ख़बर मिली।

'कभी-कभी,' नाना ने कोल्बा के बाहर मुर्गियों को दाना देते समय एक सवेरे बताया, 'मेरी इच्छा होती है कि मेरे अब्बा ने अपनी छुरियों से मेरा पेट चीर दिया होता और इज़्ज़तदार काम किया होता। यह मेरे लिए बेहतर होता।' उसने मुट्ठी भर दाना दड़बे में फेंका और मरियम को देखा। 'तुम्हारे लिए भी बेहतर होता शायद। तब तुम जो हो उसे जान लेने के दर्द से बच जातीं। लेकिन

मेरे अब्बा कायर थे। ऐसा करने के लिए उनके पास दिल नहीं था।'

जलील के पास भी इज़्ज़त वाला काम करने का दिल नहीं था, नाना ने बताया। अपने परिवार, अपनी बीवियों, अपने ससुर के साथ खड़े रहने, और उसने जो किया था उसकी ज़िम्मेदारी कबूल करने का दिल उसके पास भी नहीं था। असल में बंद दरवाज़ों के पीछे अपने चेहरे बचाने के सौदे शुरू हुए। अगले दिन जलील ने नाना को उनके रहने की जगह यानी नौकरों के क्वार्टर से अपनी चीज़ें समेट लेने को कहा और उन्हें वहां से भेज दिया।

'पता है उसने अपने बचाव में अपनी बीवियों से क्या कहा? कि मैंने जलील पर ज़ोर डाला था। कि यह मेरा कसूर था। देखा तुमने? इस दुनिया में औरत होने का यही मतलब होता है।'

नाना ने मुर्गियों के दाने का कटोरा नीचे रख दिया। उन्होंने मरियम की ठोड़ी अपनी उंगली से उठाई।

'मेरी ओर देखो मरियम।'

मरियम ने उन्हें हिचकते हुए देखा।

नाना ने कहा, 'इसे अब सीख लो और अच्छे से सीख लो मेरी बेटी, उत्तर दिशा दिखाती कंपास की सूई की तरह इल्ज़ाम लगाने के लिए एक मर्द की उंगली हमेशा औरत को ही खोजती है। हमेशा। इसे याद रखना मरियम।'

दो

'जलील और उसकी बीवियों के लिए मैं जंगली झाड़ी थी। उनके लिए मैं एक मगवर्ट थी। तुम भी। और तब तुम पैदा भी नहीं हुई थीं।'

'मगवर्ट क्या है?' मरियम ने पूछा।

'एक जंगली घास है,' नाना ने बताया। 'यह एक ऐसी चीज़ है जिसे तुम उखाड़कर फेंक देते हो।'

मरियम ने भीतर ही भीतर त्यौरियां चढ़ाई। जलील ने उसके साथ खर पतवार की तरह व्यवहार नहीं किया था। उसने कभी नहीं किया था। लेकिन मरियम ने सोचा कि अपने विरोध को दबा देने में ही समझदारी है।

'घास-फूस के उलट मुझे फिर से बसाया गया। तुम देखो कि मुझे खाना-पानी दिया गया। यह तुम्हारी वजह से हुआ। जलील ने अपने परिवार के साथ ऐसा ही करार कर रखा था।'

नाना ने कहा कि उन्होंने हेरात में रहने से मना कर दिया था।

'किसलिए? उसे अपनी *किनचिनी* बीवियों को पूरे शहर में दिन भर गाड़ी पर घुमाते हुए देखने के लिए?'

उन्होंने बताया कि वो गुल दामन के गांव में अपने अब्बा के खाली घर में भी नहीं रहेगी, जो हेरात से दो किलोमीटर दूर एक खड़ी पहाड़ी पर मौजूद था। उन्होंने कहा कि वो कहीं अलग, जुदा रहना चाहती थीं, ऐसी जगह जहां पड़ोसी उसके पेट को न घूरें, उसकी तरफ़ इशारे न करें, मक्कारी से हंसे नहीं

या इससे भी बदतर कि बेईमानी भरी रहमदिली से उनको अपमानित न करें।

'और मेरा यकीन करो,' नाना ने कहा, 'तुम्हारे अब्बा के लिए यह सुकून की बात थी कि मैं उनकी नजरों से दूर थी। यह उनके मन की बात थी।'

यह जलील की पहली बीवी खदीजा से पैदा हुआ उसका बड़ा बेटा मुहसिन था, जिसने उस सपाट खाली जगह का सुझाव दिया था। यह गुल दामन के बाहरी इलाके में स्थित था। यहां तक पहुंचने के लिए गड्ढों वाली, धूल से भरी चढ़ाई वाली राह से गुज़रना पड़ता, जो हेरात और गुल दामन को जोड़ने वाली सड़क से निकलती थी। रास्ता दोनों तरफ़ से घुटनों तक ऊंची घास और सफ़ेद तथा चमकीले पीले फूलों के गुच्छों से भरा हुआ था। राह की चढ़ाई सांप की तरह टेढ़ी-मेढ़ी थी और एक समतल मैदान तक ले जाती थी, जहां लंबे-लंबे पोपलार और कॉटनवुड और जंगली झाड़ियों के झुरमुट थे। वहां से गुल दामन की पवनचक्की के जंग लगे पंखों की नोकों को देखा जा सकता था और दाहिनी तथा बाईं तरफ़ नीचे हेरात पसरा हुआ था। रास्ता एक चौड़ी, ट्राउट मछली से भरी हुई धारा में सीधे जा मिलता था, जो गुल दामन को घेरे हुए सफ़ेद-कोह पहाड़ियों से निकलती थी। धारा में पहाड़ियों की तरफ़ दो सौ गज़ ऊपर लंबी लटकती शाखाओं वाले देवदार (वीपिंग विलो) का एक गोल झुरमुट था। इसके बीच में देवदारों के साए में वो जगह थी।

जलील उसे देखने के लिए गया। नाना ने बताया कि जब वह लौटा तो वह अपनी बातों से ऐसा वार्डेन लग रहा था जो अपनी जेल की साफ़ दीवारों और चमकते फर्श के बारे में शेखी बघार रहा हो।

'और इस तरह तुम्हारे अब्बा ने यह गंदी सी जगह बनवाई।'

नाना जब पंद्रह की थीं, तब उनकी एक बार करीब-करीब शादी हो गई थी। शादी का दावेदार शिंदांद का तोते बेचने वाला एक लड़का था। मरियम ने यह कहानी खुद नाना से ही सुनी थी और हालांकि नाना इस घटना को भूल चुकी थीं लेकिन मरियम उनकी आंखों की उदासी से बता सकती थी वे खुश रही होतीं। शायद अपनी ज़िंदगी में पहली बार नाना अपने शादी वाले उन दिनों में सचमुच में खुश हुई होतीं।

नाना जब कहानी सुना रही थीं, मरियम उनकी गोद में बैठे हुए शादी के जोड़े में अपनी अम्मी की कल्पना कर रही थी। उसने घोड़े की पीठ पर

बैठी हुई अम्मी की कल्पना की, जो नकाबपोश हरे गाउन के पीछे शर्माते हुए मुस्कुरा रही थीं, उनकी हथेलियों पर मेहंदी रची हुई थी, उनके संवारे हुए बालों पर चांदी का बुरादा चमक रहा था, उनकी चोटियों को आपस में एक छल्ले से बांधा गया था। कल्पना में उसने बाजे वालों को शहनाई और ढोल बजाते हुए, गली के बच्चों को आवाजें निकालते और एक दूसरे का पीछा करते हुए देखा।

तभी, शादी के एक हफ़्ता पहले नाना की देह में एक जिन दाख़िल हो गया। मरियम को इसके ब्योरे की ज़रूरत नहीं है। उसने इसे खुद अपनी आंखों से बहुत बार देखा है : अचानक नाना को गिरते हुए, उनकी देह को तनते हुए, सख़्त होते हुए, उनकी आंखों को पलटते हुए, उनकी बांहों और पैरों को इस तरह झटकते हुए मानो भीतर से कोई चीज़ उनका दम घोंट रही हो, उनके मुंह को कोनों से झाग निकलते हुए, जो सफ़ेद और कभी कभी ख़ून मिली होने की वजह से गुलाबी होती। और इसके बाद सुस्ती, डरावना पागलपन और असंगत बड़बड़ाहट।

यह ख़बर जब शिंदांद तक पहुंची, उस तोते बेचनेवाले लड़के के परिवार ने शादी से मना कर दिया।

'वे लोग डर गए थे,' नाना इसे ऐसे ही बताती थीं।

शादी का जोड़ा छुपा कर रख दिया गया। उसके बाद शादी के लिए किसी ने प्रस्ताव नहीं रखा।

उस सपाट जगह में जलील और उसके दोनों बेटों फरहाद और मोहसिन ने एक छोटा सा कोल्बा बनाया जहां मरियम अपनी ज़िंदगी के पहले पंद्रह साल रहने वाली थी। उन्होंने इसे ईंटों, मिट्टी के प्लास्टर और थोड़े से फूस से बनाया। इसमें सोने के लिए दो खाटें, लकड़ी की एक टेबल, खड़ी पीठ वाली दो कुर्सियां, एक खिड़की और दीवार में ठोकी गई तख्तियां थीं, जहां नाना मिट्टी के बर्तन और अपनी प्यारी चीनी चायदानी रखती थी। जलील ने सर्दियों के लिए ढलवां लोहे का एक चूल्हा भी रख दिया और कोल्बा के पीछे टुकड़ों में काटी गई लकड़ियां सजा दीं। रोटियां बनाने के लिए उसने बाहर एक तंदूर बनाया और बाड़ के साथ मुर्गियों का एक दड़बा भी लगा दिया। उसने कुछ भेड़ें ला दीं और उनके खाने के लिए एक नांद बनाई। फरहाद और मोहसिन के साथ उसने देवदार के पेड़ों के दायरे से सौ गज दूर एक गहरा गड्ढा खोदा और इसके ऊपर एक

आउट हाउस बनवाया।

कोल्बा बनाने के लिए जलील नौकर रख सकता था, लेकिन उसने ऐसा नहीं किया, नाना ने कहा।

'वह गुनाह की माफ़ी के बारे में सोच रहा था।'

नाना के ब्योरे के मुताबिक जिस दिन मरियम पैदा हुई थी, कोई नाना की मदद के लिए नहीं आया था। वह बताती कि यह नमी से भरा हुआ, 1959 के बसंत का एक लंबा सा दिन था, जिस साल बादशाह ज़ाहिर शाह के चालीस साल लंबी शांति से भरी हुकूमत के छब्बीस साल पूरे हुए थे। उन्होंने बताया कि जलील ने किसी डॉक्टर, यहां तक कि दाई तक को बुलाने की ज़हमत नहीं उठाई। और उसने ऐसा तब किया जब वह जानता था कि जिन उसकी देह में दाख़िल हो सकता है जिसकी वजह से बच्चे के पैदा होने के दौरान ही उसे दौरा भी पड़ सकता है। बग़ल में एक छुरी रखे हुए और पसीने में डूबी हुई वह अपने कोल्बा में अकेली पड़ी रही।

'जब दर्द बहुत अधिक हो जाता तो मैं तकिए में मुंह गड़ा लेती और गला बैठ जाने तक उसी में चीखती रहती। तब भी कोई मेरा चेहरा पोंछने और एक घूंट पानी देने नहीं आया। और तुम मरियम जो, तुम्हें कोई जल्दी ही नहीं थी। लगभग दो दिनों तक तुमने मुझे ठंडी, सख़्त फर्श पर गिराए रखा। मैं न खा सकी न सो सकी। मैं बस ज़ोर लगाती रही और दुआ करती रही कि तुम बाहर आ जाओ।'

'मुझे दुख है नाना।'

'हमको जोड़नेवाली नाल मैंने ख़ुद काटी। इसीलिए मैंने छुरी रख रखी थी।'

'मुझे दुख है।'

यहां आकर नाना के होंठों पर हमेशा एक धीमी, बोझिल सी मुस्कान आ जाती। मरियम बता नहीं सकती कि यह अब तक मौजूद शिकायत का नतीजा थी या बेमन की माफ़ी का नतीजा। नन्हीं मरियम को यह सोच सकने लायक समझ अभी नहीं आई थी कि अपनी पैदाइश के तरीके के लिए माफ़ी मांगना नामुनासिब है।

जब मरियम को इसकी समझ आई तब वो दस साल की हो गई थी और अब वो अपनी पैदाइश की इस कहानी पर भरोसा नहीं करती थी। वह

जलील की कहानी पर यकीन करती थी, कि भले ही वह दूर था लेकिन उसने नाना को हेरात के अस्पताल ले जाने का इंतज़ाम कर दिया था जहां उसकी देखरेख के लिए एक डॉक्टर था। वह वहां एक रोशन कमरे में, साफ़, सचमुच के बिस्तर पर पड़ी थी। मरियम ने जब जलील को छुरी वाली बात बताई तो उसने उदासी में सिर हिलाया।

मरियम को इस पर भी संदेह होने लगा था कि उसने अपनी अम्मी को पूरे दो दिनों तक परेशानी में डाले रखा। 'उन्होंने मुझे बताया था कि यह सब कुछ घंटों भर के भीतर ही हो गया था,' जलील ने बताया। 'तुम एक भली बेटी थीं, मरियम जो। अपनी पैदाइश में भी तुम एक अच्छी बेटी थीं।'

'तब तो वो यहां था भी नहीं!' नाना उलाहने देती हुई बोलतीं। 'वह तो तख़्ते-सफ़र में अपने बेशकीमती दोस्तों के साथ घुड़सवारी कर रहा था।'

नाना ने बताया कि जब लोगों ने जलील को बताया कि उसके एक बेटी हुई है तो जलील ने कंधे झटक दिए और अपने घोड़े की अयाल को ब्रश करना जारी रखा और तख़्ते-सफ़र में और दो हफ़्ते टिका रहा।'

'सच बात यह है कि तुम्हारे एक महीने का होने तक उसने तुमको पकड़ा भी नहीं। और तब भी तुम पर बस एक नज़र डाली, तुम्हारे लंबे चेहरे पर टिप्पणी की और मुझे वापस पकड़ा दिया।'

मरियम का कहानी के इस हिस्से पर से भी भरोसा उठ गया था। जलील ने कबूल किया था कि हां, वो तख़्ते-सफ़र में घुड़सवारी कर रहा था लेकिन जब उसे ख़बर मिली थी तो उसने कंधे नहीं झटके थे। वह घोड़े पर चढ़ा और हेरात के लिए निकल पड़ा था। उसने नन्हीं मरियम को अपनी बांहों में उछाला था, उसकी पपड़ीदार भौंहों पर अंगूठा फिराया था और एक लोरी गुनगुनाई थी। मरियम यह कहते हुए जलील की कल्पना नहीं कर सकती थी कि उसका चेहरा लंबा था, हालांकि यह सच था कि उसका चेहरा लंबा था।

नाना ने बताया था कि मरियम नाम उन्होंने ही चुना था क्योंकि यह उनकी अम्मी का नाम था। जलील ने कहा कि मरियम नाम उसने चुना था क्योंकि मरियम यानी रजनीगंधा एक बहुत ही ख़ूबसूरत फूल है।

'तुम्हारा पसंदीदा फूल?' मरियम पूछती।

'हां, पसंदीदा फूलों में से एक,' वह कहता और मुस्कुरा देता।

तीन

ठेले के लोहे के पहियों की पत्थरों पर खड़खड़ाने की आवाज़ मरियम की शुरुआती यादों में थी। चावल, आटा, चायपत्ती, चीनी, खाने का तेल, साबुन, टूथपेस्ट से भरा हुआ यह ठेला महीने में एक बार आता था। इसे मरियम के दो सौतेले भाई धकेलते हुए लाते थे- अक्सर मुहसिन और रामिन होते और कभी कभी रामिन और फरहाद होते थे। धूल भरे रास्ते पर चढ़ते हुए, चट्टानों और कंकड़ों को पार करते हुए, गड्ढों और झाड़ियों से गुज़रते हुए बच्चे धारा पर पहुंचने तक बारी बारी से ठेले को धकेलते थे। वहां ठेले को खाली करना पड़ता था और सामान हाथ से ढो कर पानी को पार करना पड़ता था। तब बच्चे ठेले को धारा के पार ले जाते और फिर से इसमें सामान भर लेते। इसके बाद और दो सौ गज़ तक चलना होता था, जिसके दौरान वे लंबी, घनी घास से और कंटीली झाड़ियों से होकर गुज़रते थे। उनके रास्तों में मेढक उछलते। दोनों भाई पसीने चूते अपने चेहरों से मच्छरों को हटाते रहते।

'उनके नौकर थे,' मरियम ने कहा। 'वह नौकरों को भेज सकता था।'

'प्रायश्चित का उसका ख़याल,' नाना ने कहा।

ठेले की आवाज़ मरियम और नाना को बाहर खींच लाती। मरियम हमेशा याद करती कि नाना राशन वाले दिन कैसी दिखती थी : एक लंबी, नंगे पांवों वाली औरत, दरवाज़े पर झुकी हुई, सिकुड़ी हुई आलस भरी आंखें, चुनौती भरे और मज़ाक उड़ाने वाले अंदाज़ में हाथों को बांधे हुए। उसके छोटे कटे हुए,

धूप में चमकते बाल ढंके हुए नहीं रहते और न ही उनमें कंघी की गई होती। वह गले तक बटनों वाली एक भूरी कमीज़ पहने हुए होती, जो उस पर अच्छे से नहीं आती थी। उसकी जेबें बादाम जितने बड़े पत्थरों से भरी होती।

लड़के धारा के पास बैठ कर मरियम और नाना के राशन को कोल्बा तक ढोकर ले जाने तक इंतज़ार करते। वे जानते थे कि तीस गज़ से नज़दीक नहीं जाना ही बेहतर है, तब भी जबकि नाना का निशाना ख़राब था और कंकड़ बहुत पहले ही गिर जाते थे। नाना चावल के थैलों को भीतर रखते हुए बच्चों पर चीखती रहती और उनको ऐसे नामों से पुकारती जिनका मतलब मरियम नहीं समझ पाती। वे उनकी अम्मियों को बद्दुआएं देती, उनके ऊपर नफ़रत भरे चेहरे बनाती। लड़के कभी भी इस ज़िल्लत का पलट कर जवाब नहीं देते थे।

मरियम को उन लड़कों के लिए दुख होता। वह तरस खाती हुई सोचती कि इतना भारी वज़न धकेलते हुए उनके हाथ और पांव कितने थक गए होंगे। उसने चाहा कि उन लोगों को पानी पिलाने की उसे इजाज़त मिल पाती। लेकिन उसने कहा कुछ नहीं और जब वे उसको देख कर हाथ हिलाते तो वह हाथ नहीं हिलाती। एक बार नाना को ख़ुश करने के लिए मरियम मोहसिन पर चिल्लाई भी थी और कहा था कि उसका मुंह छिपकली की चूतड़ की तरह है। और बाद में उसने इस बात का कसूर, शर्म और डर महसूस किया था कि वे इस बात को जाकर जलील को बता देंगे। हालांकि इस पर नाना अपने आगे के सड़ते हुए दांतों को खोल कर इतने ज़ोर से हंसी थीं कि मरियम को लगा था कि उनको मिर्गी का दौरा न पड़ जाए। हंसी रुकी तो उन्होंने मरियम को देखा, 'तुम अच्छी लड़की हो।'

जब ठेला खाली हो जाता तो बच्चे उसे घसीटते और धक्का देते हुए वापस ले जाते। ऊंची घास और खिली हुई घासफूस के पीछे ओझल हो जाने तक मरियम उनको देखती रहती।

'तुम आ रही हो?'

'हां नाना।'

'वो तुम पर हंसते हैं। वे हंसते हैं, मैंने सुना है।'

'मैं आ रही हूं।'

'तुम मेरा यकीन नहीं करतीं?'

'लो आ गई।'

'तुम्हें पता है, मैं तुमको प्यार करती हूं मरियम जो।'

सवेरे दूर से आती भेड़ों की मिमियाने और बांसुरी की तेज़ आवाज़ से वे जाग जातीं। गुल दामन के गड़ेरिए अपनी भेड़ों के झुंड को चराने के लिए घास से भरी पहाड़ी की तरफ़ ले आते थे। मरियम और नाना बकरियों को दूहतीं, मुर्गियों को दाने देतीं और अंडे बटोरतीं। वो मिलकर रोटियां बनातीं। नाना ने मरियम को सिखाया था कि आटा कैसे गूंथते हैं, तंदूर कैसे सुलगाते हैं और बेले हुए आटे को कैसे इसकी भीतरी दीवार पर चिपकाते हैं। नाना ने उसे सीना भी सिखाया था, और भात बनाना और अलग-अलग तरह की सब्ज़ियां बनाना भी : शलजम स्टू, पालक सब्ज़ी, अदरक-गोभी की सब्ज़ी आदि।

नाना ने मिलने के लिए आनेवालों और लोगों को लेकर अपनी नापसंदीदगी को असल में कभी राज़ नहीं रखा। लेकिन उसने कुछ चुने हुए लोगों को इस दायरे से बाहर रखा था। और इनमें थे गुल दामन के रहनुमा, गांव के *अरबाब*, हबीब खान। उनका सिर छोटा था, उनके दाढ़ी थी और वे महीने में एक बार आते थे। उनके पीछे-पीछे उनका नौकर आता था जो मरियम के लिए मुर्गे और खिचड़ी का बर्तन या कभी कभी अंडों की डलिया लिए रहता था।

फिर एक गोल-मटोल सी, बूढ़ी औरत भी थी, जिसे नाना बीबी जो पुकारतीं। उनके मरहूम शौहर पत्थर तराशने का काम करते थे और नाना के अब्बा के दोस्त हुआ करते थे। बीबी जो हर बार अपनी छह दुल्हनों और एक-दो पोतों में से किसी एक के साथ आती थीं। वे उनके घर तक आने के पूरे रास्ते लंगड़ाते और हांफते हुए आतीं और अपने लिए नाना द्वारा लाकर रखी गई कुर्सी पर एक दर्द भरी कराह के साथ कूल्हों को रगड़ते और झुकते हुए बैठ जातीं। बीबी जो हमेशा मरियम के लिए कुछ लेकर आतीं, मिठाइयों का डिब्बा या बेल की टोकरी। नाना के लिए उनके पास पहले तो अपनी गिरती हुई सेहत को लेकर शिकायतें होतीं और फिर हेरात और गुल दामन को लेकर गपशप जो बहुत रस ले लेकर और पूरे ब्योरे के साथ सुनाई जातीं। इन सब के दौरान उनकी बहू उनके पीछे बैठी चुपचाप और पूरे फ़र्ज़ के साथ सुनती रहती।

लेकिन मरियम के पसंदीदा मुल्ला फ़ैज़ुल्ला थे। बेशक उनकी जगह जलील के बाद ही थी, वे गांव में क़ुरान पढ़ाने के बुज़ुर्ग उस्ताद थे। वे गुल दामन में हफ़्ते में एक या दो बार आते और मरियम को रोज़ाना पांच वक़्ती नमाज़ें और

क़ुरान पढ़ना सिखाते जैसा कि उन्होंने नाना को उनके बचपन में पढ़ाया था। ये मुल्ला फ़ैज़ुल्ला ही थे, जिन्होंने मरियम को पढ़ना सिखाया था। जब वो शब्दों को बेआवाज़ पढ़ते हुए होंठ हिलाती, शब्दों के बीच अपनी उंगली फिराती, उंगलियां इस तरह गड़ाती कि नाखून सफ़ेद पड़ जाते मानो वह उन प्रतीकों में से मतलब को निचोड़ कर निकाल सकती है, तो वे सब्र के साथ उसके कंधों के ऊपर देखते रहते। ये मुल्ला फ़ैज़ुल्ला ही थे जिन्होंने उसका हाथ पकड़ कर उसे अलिफ़ की हर उठान, बे के हर मोड़, से के तीन नुक़्तों में उसकी रहनुमाई की थी।

वे एक मरियल से और उमर की वजह से झुक गए बूढ़े आदमी थे जिनकी मुस्कान में दांत नहीं दिखते थे और जिनकी सफ़ेद दाढ़ी उनकी नाभि तक झूलती रहती थी। अमूमन वे कोल्बा तक अकेले ही आते थे। मरियम मुल्ला फ़ैज़ुल्ला के हाथ चूमती जिनके बारे में वह महसूस करती कि वह चमड़ी की एक पतली परत से ढंकी हुई टहनियों के जोड़े को चूम रही है। और उस दिन का सबक शुरू करने के लिए भीतर जाकर बैठने से पहले वे भी उसकी भौंहों के ऊपर चूमते। इसके बाद वे दोनों कोल्बा के बाहर बैठते और चिलगोज़े खाते और ग्रीन टी पीते, बुलबुलों को एक पेड़ से दूसरे पेड़ पर उड़ते हुए देखते। कभी कभी वे झड़ी हुई भूरी पत्तियों और झाड़ियों के बीच टहलने निकल जाते, वे धारा के साथ साथ पहाड़ी की तरफ़ चलते। टहलते हुए भी मुल्ला फ़ैज़ुल्ला अपनी तस्बीह के दाने फेरते रहते और अपनी कांपती हुई आवाज़ में मरियम को अपनी नौजवानी के दिनों में देखी गई चीज़ों के किस्से सुनाते रहते। जैसे कि ईरान में देखा हुआ दो सिरों वाला सांप, इस्फ़हान का तैंतीस मेहराबों वाला पुल, और वह तरबूज़ जिसे एक बार उन्होंने मज़ार की नीली मस्जिद के बाहर काटा था और पाया था कि उसके बीजों ने आधे हिस्से में *अल्लाह* और दूसरे आधे हिस्से में *अकबर* लिखा हुआ था।

मुल्ला फ़ैज़ुल्ला ने मरियम के आगे कबूल किया कि कई बार वे क़ुरान की बातों का मतलब नहीं समझ पाते हैं। लेकिन उन्होंने कहा कि उनको अपनी ज़ुबान से फिसलते अरबी शब्दों की जादुई आवाज़ पसंद आती थी। उन्होंने बताया कि वे उनको सुकून पहुंचाते थे, उनके दिल को चैन देते थे।

'वो तुमको भी सुकून पहुंचाएंगे मरियम जो,' उन्होंने कहा। 'तुम उनको ज़रूरत पड़ने पर पुकार सकती हो और वो तुमको मायूस नहीं करेंगे। खुदा के शब्द कभी धोखा नहीं देते, मेरी बच्ची।'

मुल्ला फैज़ुल्ला उसको कहानियां सुनाने के साथ साथ खुद भी कहानियां सुनते थे। जब मरियम बोलती तो उनका ख़याल कभी नहीं टूटता था। वे हल्के से सिर हिलाते और शुक्रिया के अंदाज़ में मुस्कुराते मानो एक मुंहमांगी मुराद मिल गई हो। मुल्ला फैज़ुल्ला को उन चीज़ों के बारे में बताना आसान था, जिनके बारे में मरियम नाना से कहने की हिम्मत नहीं जुटा पाई थी।

एक दिन जब वे टहल रहे थे, मरियम ने उनको बताया कि उसकी चाहत है कि उसे स्कूल जाने की इजाज़त मिल जाती।

'मेरा मतलब है कि एक असली स्कूल, उस्ताद साहिब। एक क्लास रूम जैसा। मेरे अब्बा के दूसरे बच्चों के स्कूल जैसा।'

मुल्ला फैज़ुल्ला रुक गए।

एक हफ़्ता पहले बीबी जो ख़बर लाई थीं कि जलील की बेटियां सायदे और नहीद हेरात में लड़कियों के मेहरी स्कूल में जा रही हैं। तब से मरियम के दिमाग में क्लास रूमों और टीचरों के ख़याल उमड़-घुमड़ रहे थे। लकीर वाली नोटबुकों, गिनती लिखनेवाली कॉपी के खाने और गहरे काले अक्षर लिखने वाले कलमों की तस्वीरों ने उसे घेर रखा था। उसने अपनी ही उम्र की दूसरी लड़कियों वाले एक क्लास रूम में खुद की कल्पना की। मरियम कागज़ पर रूलर रख कर अहम लगने वाली लकीरें खींचने को तरस रही थी।

'यह चाहती हो तुम?' मुल्ला फैज़ुल्ला ने उसको नरम, गीली आंखों से देखते हुए पूछा। उनके हाथ अपनी झुकी हुई पीठ पर थे और उनकी पगड़ी की परछाईं खिले हुए बटरकप की झुरमुट पर पड़ रही थी।

'हां।'

'और तुम चाहती हो कि मैं तुम्हारी मां से इसकी इजाज़त लूं?'

मरियम मुस्कुराई। वह सोचती थी कि जलील को छोड़ कर इस बूढ़े उस्ताद के अलावा इस दुनिया में कोई नहीं है जो उसे बेहतर तरीके से समझता हो।

'तो मैं क्या कर सकता हूं? ख़ुदा ने अपनी मर्ज़ी से हम सबको अपनी अपनी कमज़ोरियां दी हैं और मेरी कमज़ोरियों में सबसे बड़ी कमज़ोरी ये है कि मुझमें तुम्हें मना करने की ताकत नहीं है।'

लेकिन बाद में जब उन्होंने नाना से इसकी चर्चा चलाई तो उन्होंने प्याज़ काट रही अपनी छुरी गिरा दी। 'किसके लिए?'

'अगर बच्ची सीखना चाहती है तो उसे सीखने दो प्यारी। बच्ची को पढ़ने दो।'

'सीखना? क्या सीखना, मुल्ला साहिब?' नाना ने तीखे लहजे में कहा। 'सीखने के लिए क्या है?' उन्होंने मरियम की तरफ़ देखते हुए आंखें तरेरीं।

मरियम नीचे अपने हाथों को देखने लगी।

'तुम्हारी जैसी लड़की को स्कूल में पढ़ाने का क्या तुक है? यह तो पीकदान को चमकाने जैसी बात है। और तुम इन स्कूलों में कोई शऊर नहीं सीख पाओगी। तुम्हारी और मेरी जैसी औरत को ज़िंदगी में एक ही सलीके की ज़रूरत होती है और यह सलीका स्कूलों में नहीं पढ़ाते। मुझे देखो।'

'तुमको उससे इस तरह नहीं बात करना चाहिए, मेरी बच्ची।' मुल्ला फ़ैज़ुल्ला ने कहा।

'देखो मुझे।'

मरियम ने देखा।

'सिर्फ़ एक सलीका। और वह है तहम्मुल। बर्दाश्त करना।'

'क्या बर्दाश्त करना नाना?'

'ओह। तुम उसकी फ़िक्र मत करो,' नाना ने कहा। 'ऐसी चीज़ों की कमी नहीं रहेगी।'

वह बताती रही कि किस तरह जलील की बीवियां उसको एक बदसूरत, नीच पत्थर काटने वाले की बेटी कहती थीं। कैसे वे उससे ठंड में बाहर कपड़े धुलवाती थीं जब तक कि उसका चेहरा सुन्न न पड़ जाता और उसकी उंगलियों के पोरे जलने न लग जाते।

'ज़िंदगी में हमारा यही माल-मत्ता है मरियम। हम जैसी औरतें। हम सहती हैं। हम बस यही करती हैं। समझती हो तुम? इसके अलावा वे स्कूल में तुम पर हंसेंगे। वे हंसेंगे। वे तुमको हरामी कहेंगे। वे तुमको बहुत बुरी बातें कहेंगे। मैं इसकी इजाज़त नहीं दूंगी।'

मरियम ने सिर हिलाया।

'और स्कूल के बारे में अब कोई बात नहीं होगी। मेरे पास बस तुम्हीं हो। मैं उनको तुम्हें छीन लेने नहीं दूंगी। देखो मुझे। अब स्कूल की कोई बात नहीं होगी।'

'समझदारी से काम लो। चलो भी। अगर बच्ची चाहती है तो-' मुल्ला फ़ैज़ुल्ला ने कहना शुरू किया।

'और आप उस्ताद साहिब, पूरे आदर के साथ मेरा कहना है कि आपको

ऐसी बेवकूफ़ की बातों को बढ़ावा देने के बजाए दूसरी अच्छी बातें आनी चाहिए। अगर आप सचमुच में उसकी परवाह करते हैं तो आप उसे यह सिखाइए कि वह इस घर से और अपनी अम्मी से जुड़ी हुई है। इसके बाहर उसके लिए कुछ भी नहीं है। उसके लिए नकार और दर्द के सिवा कुछ भी नहीं है बाहर की दुनिया में। मैं जानती हूं उस्ताद साहिब, मैं जानती हूं।'

चार

कोल्बा में कोई मिलने आता तो मरियम को अच्छा लगता। गांव के *अरबाब* और उनके तोहफ़े, बीबी जो और उनके दुखते हुए कूल्हे और कभी ख़त्म न होने वाली बातें। और बेशक मुल्ला फ़ैज़ुल्ला। लेकिन मरियम में जलील से मिलने की जितनी चाहत थी उतनी किसी की, किसी और चीज़ की नहीं थी।

बेकरारी मंगल की रात से ही शुरू हो जाती। मरियम अच्छे से नहीं सो पाती, यह सोच सोच कर घबराती रहती कि कारोबार की कोई परेशानी जलील को जुमेरात को आने से रोक न दे। कि तब उसे पूरा एक और हफ़्ता इंतज़ार करना पड़ेगा। बुधवार को वह कोल्बा के बाहर भागती रहती और दड़बे में मुर्गियों को दाना देते वक़्त भी उसका मन कहीं और होता। बिना किसी मकसद के वह यों ही टहलती, फूलों की पंखुड़ियां चुनती और बांह पर काट रहे मच्छरों को मारती। आख़िरकार जुमेरात को वह बस इतना कर पाती कि वह आंखों को धारा पर जमाए हुए और इंतज़ार करते हुए दीवार से लग कर बैठ जाती। अगर जलील को आने में देर होती तो एक अजीब सा डर उसमें समाता रहता। उसके घुटने कमज़ोर पड़ जाते और वह कहीं और जाकर लेट जाती।

तब नाना उसे पुकारती, 'और लो, वो रहे तुम्हारे अव्वा। अपनी पूरी शानो-शौकत के साथ।'

मरियम अपने पैरों पर उछल कर खड़ी होती जब वह उनको धारा के पार पत्थरों को फांदते हुए देख लेती तो बस मुस्कुरा उठती और पूरे दिल से

हाथ लहराने लगती। मरियम जानती थी कि नाना उसे देखेंगी, उसकी हर प्रतिक्रिया को आंकेंगी और दरवाज़े पर खड़े होकर धीरे-धीरे उनको अपनी तरफ़ आते देखने के लिए और उनकी तरफ़ न दौड़ पड़ने के लिए हमेशा उसे बहुत कोशिश करनी पड़ती थी। वह खुद को रोक लेती, सब्र के साथ उनको ऊंची घास के बीच से आते हुए देखती, उनका सूट जैकेट उनके कंधों पर लटक रहा होता और हवा के झोंके उनकी लाल नेकटाई को उड़ा रहे होते।

जब जलील उनके मैदान में दाख़िल होता तो वह अपनी जैकेट तंदूर के ऊपर फेंक देता और अपनी बांहें खोल लेता। चलती हुई मरियम आख़िरकार दौड़ पड़ती और वह उसे बांहों में उठा लेता और ऊपर उछाल देता। मरियम किलकारी मारती।

हवा में लटकी हुई मरियम नीचे जलील का उठा हुआ चेहरा देखती, वह देखती उसकी चौड़ी टेढ़ी मुस्कान, उसका गंजा सिर, उसकी बीच से बंटी हुई ठुड्डी जिसमें उसकी नन्हीं उंगली का सिरा पूरा का पूरा समा सकता था- और सड़ी हुए दांतों वाले लोगों के शहर में सबसे चमकदार सफ़ेद दांत। उसे जलील की तराशी हुई मूंछें पसंद थीं और उसे यह भी पसंद था कि चाहे कोई भी मौसम हो हमेशा मिलने के लिए आते हुए वो अपने पसंदीदा गहरे भूरे रंग का सूट पहनता जिसकी सीने वाली जेब में तिकोना मोड़ा हुआ रूमाल रखा रहता। और उसे पसंद थे उसकी कलाई के बटन, और टाई जो अक्सर लाल होती और जिसे वह ढीली-ढाली छोड़ देता। मरियम जलील की आंखों के भूरेपन में झलकते अपने प्रतिबिंब में खुद को भी देख पाती : अपने झूलते हुए बाल, खुशी से दमकता अपना चेहरा और अपने पीछे का आसमान।

नाना कहती कि एक दिन मरियम को छोड़ देगा और वह उसकी हाथों से छूट कर ज़मीन पर आ गिरेगी और उसकी हड्डियां टूट जाएंगी। लेकिन मरियम को यकीन नहीं हुआ कि जलील उसे गिरा देगा। वो मानती थी कि वह अपने अब्बा के साफ़, सजे-संवरे हाथों से महफ़ूज़ ज़मीन पर उतरेगी।

वो कोल्बा के बाहर छाया में बैठते और नाना उनको चाय देती। जलील और वे एक परेशान सी मुस्कान के साथ सिर हिलाते हुए एक दूसरे का स्वागत करते थे। जलील कभी भी नाना के चलाए गए पत्थरों और बद्दुआओं का बुरा नहीं मानता।

जब वो आसपास नहीं होता तो नाना उसे कोसतीं, लेकिन जब वो मिलने

आता तो नरम पड़ जाती और सलीके से व्यवहार करतीं। हमेशा वे अपने बाल धोतीं। अपने दांत मांजतीं और उसके लिए अपना सबसे अच्छा बुर्का पहनतीं। वे उसके सामने कुर्सी पर अपनी गोद में अपने हाथ मोड़े चुपचाप बैठी रहतीं। वो कभी उसको सीधे नज़र मिला कर नहीं देखतीं और उसके आसपास कभी भी कड़े लहजे में नहीं बोलतीं। जब वो हंसतीं तो अपने ख़राब दांतों को छुपाने के लिए वो अपनी हथेली से मुंह ढंक लेतीं।

नाना उसके काम-धंधों के बारे में पूछतीं। वे उनकी बीवियों के बारे में भी पूछतीं। जब उन्होंने जलील को बताया कि उन्होंने बीबी जो से सुना है कि उसकी छोटी बीवी नरगिस को तीसरा बच्चा होने वाला है तो जलील ने अदब से मुस्कुराते हुए अपना सिर हिलाया।

'तो। तुम ज़रूर ही ख़ुश होंगे,' नाना ने कहा। 'अब तुम्हारे कितने बच्चे हो जाएंगे? दस माशाअल्लाह? दस?'

जलील ने कहा, हां दस।

'अगर तुम मरियम को गिनो तो ग्यारह, बेशक।'

जलील के घर जाने के बाद मरियम और नाना की इस पर एक छोटी-सी लड़ाई हो गई। मरियम ने कहा कि नाना ने जलील के साथ शरारत की थी।

चाय पीने के बाद मरियम और जलील नाना के साथ के साथ धारा में मछली मारने जाते। जलील मरियम को बताता कि डोरी को कैसे डालते हैं और कैसे ट्राउट को फंसाते हैं। उसने ट्राउट को निकालते, धोने और एक बार में ही कांटों से उसका मांस उतार लेने का सही तरीका मरियम को सिखाया। मछली का इंतज़ार करते हुए उसने मरियम को तस्वीरें बनाना सिखाया, उसके दिखाया कि कागज़ पर से बिना कलम उठाए, एक ही झटके में हाथी कैसे बनाते हैं। उसने उसे गीत सिखाए। साथ मिल कर वे गाते :

लिली लिली बर्डबाथ
सिटिंग ऑन ए डर्ट पाथ
मिनो सैट ऑन द रिम एंड ड्रैंक
स्लिप्ड, एंड इन द वाटर शी सैंक

जलील हेरात से *इत्तिफाक-ए-इस्लाम* अख़बार की कतरनें लेकर आता और मरियम को पढ़ कर सुनाता। वह मरियम का सूत्र था, उसके लिए इसका सबूत था कि कोल्वा, गुल दामन और हेरात से भी परे एक भरी-पूरी दुनिया

मौजूद थी, एक ऐसी दुनिया जहां सदर और ऐसे ऐसे लोग रहते हैं जिनका नाम लेना आसान नहीं है, ऐसी दुनिया जहां ट्रेनें और अजायबघर और फुटबॉल है, जहां रॉकेट धरती के चक्कर लगाते हैं और चांद पर उतरते हैं और हरेक जुमेरात जलील अपने साथ उस दुनिया के कुछ टुकड़े कोल्वा में लेकर आता था।

यह जलील ही था, जिसने मरियम को 1973 की गर्मियों में बताया था कि काबुल पर चालीस सालों से हुकूमत करने वाले बादशाह ज़ाहिर शाह का राज बिना ख़ून बहाए हुए एक तख़्तापलट के ज़रिए ख़त्म कर दिया गया है। तब मरियम चौदह साल की थी।

'उसके भतीजे दाऊद खान ने ऐसा तब किया जब बादशाह इटली में अपना इलाज करा रहे थे। दाऊद खान तुम्हें याद है, ठीक? मैंने तुमको उसके बारे में बताया था। जब तुम पैदा हुई थीं, तब वो काबुल में वज़ीर-ए-आज़म हुआ करता था। बहरहाल अफ़ग़ानिस्तान में अब बादशाहियत नहीं रही मरियम। देखो अब यह एक जम्हूरियत है और दाऊद खान सदर है। ऐसी अफवाहें भी हैं कि समाजवादियों ने उसे हुकूमत में आने में मदद की है। ग़ौर करना कि ऐसा नहीं है कि वह खुद समाजवादी है, बल्कि समाजवादियों ने उसकी मदद की है। जो भी हो, यह एक अफवाह है।'

मरियम ने पूछा था कि समाजवादी क्या होता है और जलील ने समझाना शुरू किया था लेकिन मरियम उसे सुन नहीं रही थी।

'तुम सुन रही हो?'

'हां, मैं सुन रही हूं।'

उसने मरियम को अपने कोट की बग़ल की जेब के फूले हुए हिस्से को देखते हुए पाया। 'आह। बेशक। खैर, ये लो...'

उसने अपनी जेब से एक छोटा सा डिब्बा निकाल कर मरियम को दिया। समय-समय पर वो यह करता रहता था। कभी उसमें से जड़ाऊ कंगन निकलता तो कभी नीलम के दानों वाला गुलूबंद। उस दिन मरियम ने डिब्बा खोला तो उसे पत्ते के आकार का एक पेंडेंट और कुछ छोटे सिक्के मिले जिन पर चांद उकेरा हुआ था और सितारे उससे लटक रहे थे।

'इसे पहन कर देखो मरियम जो।'

उसने पहने। 'क्या सोच रहे हैं?'

जलील खुशी से दमकते हुए बोला, 'मैं सोच रहा हूं कि तुम एक रानी जैसी लग रही हो।'

उसके जाने के बाद नाना ने मरियम के गले में पेंडेंट देखा।

'बंजारों के गहने,' उन्होंने कहा। 'मैंने उनको ऐसे गहने बनाते देखा है। वे लोगों के फेंके हुए सिक्कों को पिघला कर गहने बनाते हैं। देखते हैं कि तुम्हारे बेशकीमती अब्बा तुम्हारे लिए अगली बार सोने के गहने लाते हैं कि नहीं। देखते हैं।'

जब जलील के जाने का वक़्त होता तो मरियम हमेशा दरवाज़े पर खड़ी होकर उनको मैदान से जाते हुए देखती। वह अपने और उनके मिलने के बीच खड़े घने, चट्टानी हफ़्ते के बीच हताश सी दिखती। उनको जाते देखते हुए मरियम हमेशा अपनी सांस रोक लेती थी। वह सांसें रोक कर अपने मन में सेकेंडों की गिनती करती। वह दिल ही दिल में मानती कि हर उस सेकेंड के लिए, जब उसने सांस नहीं ली थी, खुदा उसे एक दिन और जलील का साथ बख़्शेगा।

रात में मरियम अपनी खाट पर पड़े सोचती रहती कि हेरात में उसका घर कैसा था। वह सोचती कि उसके साथ रहना कैसा लगेगा, उसे रोज़ देखना कैसा लगेगा। वह कल्पनाएं करती कि जलील के दाढ़ी बनाने के बाद वो उसे तौलिया थमा रही है, रेज़र से खरोंच लगा लेने पर वो उसको बता रही है। वो उसके लिए चाय बनाती। वो उसके टूटे हुए बटन लगा देती। वे हेरात के बाज़ारों में साथ-साथ टहलते, जहां जलील उससे कहता कि तुमको जो भी लेना हो ले लो। वे कार में निकलते और लोग उनकी तरफ़ इशारे करते हुए कहते, 'वो जा रहे हैं जलील अपनी बेटी के साथ।' वह उसे उस मशहूर पेड़ के पास ले जाता जिसके नीचे एक शायर दफ़्न था।

जल्दी ही एक दिन मरियम ने फैसला किया कि वो जलील से ये बातें कहेगी। और जब वो सुनेगा और देखेगा कि वो उसके चले जाने के बाद उसकी कितनी कमी महसूस करती है तो वह ज़रूर मरियम को अपने साथ ले जाएगा। वो उसे अपने बाक़ी बच्चों की तरह घर में रखने के लिए हेरात लेकर जाएगा।

पाँच

'मुझे पता है कि मैं क्या चाहती हूं,' मरियम ने जलील से कहा।

ये 1974 का बसंत का मौसम था, और उस साल मरियम पंद्रह की हुई थी। वे तीनों कोल्बा के बाहर बेदमजनूं के पेड़ों के साए में आमने सामने एक त्रिकोण में रखी हुई मुड़नेवाली कुर्सियों पर बैठे थे।

'अपने जन्मदिन के लिए...मुझे पता है कि मैं क्या चाहती हूं।'

'पता है?' जलील ने उसका हौसला बढ़ाने के लिए मुस्कुराते हुए कहा।

दो हफ़्ते पहले मरियम की ज़िद पर जलील ने उसे अपने सिनेमाघर में चल रही एक अमेरिकी फ़िल्म के बारे में बताया था। यह एक ख़ास तरह की फ़िल्म थी, जिसे वो कार्टून फ़िल्म कहता था। उसने बताया कि पूरी फ़िल्म हज़ारों रेखांकनों का एक सिलसिला थी, इसलिए जब उनकी फ़िल्म बना कर पर्दे पर चलाई जाती थी तो लगता था कि तस्वीरें चल-फिर रही हैं। जलील ने बताया कि फ़िल्म एक बूढ़े, खिलौना बनानेवाले की कहानी कहती थी जिसका कोई बच्चा नहीं था, जो बहुत अकेला था और एक बेटे की चाहत में बेकरार था। इसलिए उसने एक बेटे रूप में एक कठपुतली बनाई, जिसमें जादू से जान आ गई। मरियम ने उससे आगे बताने के लिए कहा और जलील ने बताया कि बूढ़े और कठपुतली ने सभी तरह के साहस से भरे कारनामे किए और फिर एक जगह थी जिसे प्लेज़र आइलैंड कहा जाता था और बुरे बच्चे थे जो गधों में बदल गए थे। कठपुतली और उसके अब्बा को आख़िर में व्हेल

निगल लेती है। मरियम ने फ़िल्म के बारे में सारी बातें मुल्ला फैज़ुल्ला को बताईं।

'मैं चाहती हूं कि आप मुझे अपने सिनेमा में ले चलें,' अब मरियम ने कहा। 'मैं कार्टून देखना चाहती हूं। मैं कठपुतली बच्चा देखना चाहती हूं।'

इसके साथ ही मरियम को लगा कि माहौल बदल गया है। उसके अम्मी-अब्बा अपनी अपनी जगहों पर थोड़े हिले डुले। मरियम उनके बीच नज़रों की अदला-बदली को महसूस कर सकती थी।

'यह अच्छा ख़याल नहीं है,' नाना ने कहा। उनकी आवाज़ शांत और काबू में थी, उसका लहजा नरमी से भरा हुआ था, जिसे वह जलील की मौजूदगी में इस्तेमाल में लाती थी। लेकिन मरियम उसकी सख़्त, इल्ज़ाम लगाती हुई नज़र को महसूस कर सकती थी।

जलील ने अपनी कुर्सी पर पहलू बदली। वह खांसा और उसने अपना गला साफ़ किया।

'पता है,' उसने कहा, 'पिक्चर की क्वालिटी उतनी अच्छी नहीं है। आवाज़ भी अच्छी नहीं है। और प्रोजेक्टर भी इधर ख़राब चल रहा है। शायद तुम्हारी अम्मी सही हैं। शायद तुम किसी दूसरे तोहफ़े के बारे में सोच सकती हो, मरियम जो।'

'एंह,' नाना ने कहा। 'देखा? तुम्हारे अब्बा को भी यही लगता है।'

लेकिन बाद में धारा के पास मरियम ने कहा, 'मुझे ले चलो।'

'मैं तुमको बता दूंगा,' जलील ने कहा। 'मैं किसी को भेज दूंगा कि आकर तुम्हें ले जाए। मैं इसका पक्का इंतज़ाम कर दूंगा कि तुमको अच्छी सीट मिले और वो सारी चॉकलेटें भी, जो तुम चाहती हो।'

'ना। मैं चाहती हूं कि आप मुझे ले चलें।'

'मरियम जो-'

'और मैं चाहती हूं कि आप मेरे भाइयों और बहनों को भी बुलाएं। मैं उनसे मिलना चाहती हूं। मैं चाहती हूं कि सब एक साथ जाएं। यही मैं चाहती हूं।'

जलील ने गहरी सांस ली। वह दूर पहाड़ियों की तरफ़ देखने लगा।

मरियम ने उसे याद किया कि वो बता रहा था कि पर्दे पर इंसान का चेहरा घर जितना बड़ा लगता है, कि जब एक कार टूटती तो आप अपनी हड्डियों में उसके लोहे का मुड़ना महसूस करते हैं। उसने निजी बालकनी सीटों में अपने भाइयों-बहनों और जलील के साथ बैठे और आइसक्रीम खाते हुए अपनी कल्पना

की। 'मैं यही चाहती हूं,' उसने कहा।

जलील ने उसे बेचारगी के भाव के साथ देखा।

'कल। दोपहर में मैं तुमसे ठीक इसी जगह पर मिलूंगा। ठीक? कल?'

'यहां आओ,' उसने कहा। वह नीचे झुका और उसे ऊपर उठा लिया और देर तक, देर तक पकड़े रखा।

अव्वल तो नाना कोल्बा के चारों तरफ़ घूमते हुए अपनी मुट्ठियां कस और खोल रही थीं।

'मेरी जो बेटियां हो सकती थीं, उनमें से खुदा ने तुम जैसी नाशुक्री बेटी ही क्यों दी? हर चीज़ मैंने तुम्हारे लिए बर्दाश्त की! तुम्हें इतनी हिम्मत कैसे हुई! मुझे इस तरह छोड़ने की तुममें इतनी हिम्मत कैसे हुई, नन्हीं हरामी!'

तब वो हंसी।

'कैसी बेवकूफ़ लड़की हो तुम! तुमको लगता है कि तुम उसके लिए मायने रखती हो, कि वो तुमको अपने घर में रखना चाहता है? तुम सोचती हो कि तुम उसकी बेटी हो? कि वो तुमको रखने जा रहा है? तब मुझे कुछ बताने दो। मर्द का दिल एक कमबख़्त, कमबख़्त चीज़ होती है मरियम। वह एक मां की कोख जैसी नहीं होती। इसने ख़ून नहीं बहाया है, इसने तुम्हारे लिए अपने भीतर जगह नहीं बनाई है। अकेले मैं ही तुमको प्यार करती हूं। मैं ही इस दुनिया में तुम्हारा सब कुछ हूं मरियम और जब मैं रुखसत हो जाऊंगी, तो तुम्हारे पास कुछ नहीं बचेगा। तुम्हारे पास कुछ नहीं होगा। तुम कुछ नहीं हो!'

फिर उसने जुर्म के एहसास को आजमाया।

'अगर तुम गईं तो मैं मर जाऊंगी। जिन आएगा और मुझे दौरा पड़ेगा। तुम देख लेना मैं अपनी जीभ निगल कर मर जाऊंगी। मुझे मत छोड़ो मरियम जो। रहम करो और रुक जाओ। तुम गईं तो मैं मर जाऊंगी।'

मरियम ने कुछ नहीं कहा।

'तुम जानती हो मैं तुमको प्यार करती हूं मरियम जो।'

मरियम ने कहा कि वह टहलने जा रही है।

उसे डर था कि अगर वह रुकी तो शायद दिल दुखाने वाली बातें उसके मुंह से निकल जाएंगी: कि वह जानती थी कि जिन एक झूठ था, कि जलील

ने उसे बताया था कि यह नाना की एक बीमारी थी जो दवाओं से ठीक हो सकती थी। उसने नाना से पूछ लिया होता कि उसने क्यों जलील के डॉक्टर को दिखाने से मना कर दिया था, जिसके लिए उसने ज़ोर दिया था। जो दवाएं जलील ने उनके लिए ख़रीद कर दी थीं, क्यों उन्होंने वो दवाएं नहीं ली थीं। वह अगर अपनी बातों को ज़ुबान पर ला पाती तो उसने नाना से कहा होता कि वो खुद को एक औज़ार बना दिए जाने से और झूठों से तंग आ गई थी। कि वह नाना द्वारा अपनी ज़िंदगी की सच्चाइयों को तोड़-मरोड़ कर पेश किए जाने और मरियम को दुनिया के ख़िलाफ़ अपनी शिकायतों में से एक बना दिए जाने से आजिज़ आ चुकी थी।

तुम डरी हुई हो, नाना, शायद उसने कहा होता। *तुम डरी हुई हो कि शायद मैं वह खुशी हासिल कर लूंगी जिसे तुम कभी नहीं हासिल कर पाई। और तुम मुझे खुश नहीं देखना चाहतीं। तुम मेरे लिए एक अच्छी ज़िंदगी नहीं चाहतीं। तुम वह इंसान हो जिसका दिल कमबख़्त है।*

मैदान के सिरे पर एक चौकी थी, जहां मरियम जाना पसंद करती थी। वह वहां सूखी, गर्म घास पर बैठ गई। यहां से हेरात दिख रहा था। वह उसके नीचे बच्चों के बोर्ड गेम की तरह पसरा हुआ था : शहर के उत्तर में वुमेन्स गार्डेन था, चार-सुक बाज़ार और दक्षिण में सिकंदर महान के पुराने किले के खंडहर थे। कुछ दूरी पर वह मीनारों को भी देख सकती थी जो मिट्टी की विशालकाय उंगलियों की तरह दिख रही थीं। और गलियां थीं जिनके बारे में उसने कल्पना की थी वे लोगों, गाड़ियों और खच्चरों से भरी हुई होंगी। उसने ऊपर अबाबीलों को झपट्टा मारते और गोल-गोल घूमते देखा। वो इन चिड़ियों से जलती थी। वो हेरात में रह चुकी थीं। वो उसकी मस्जिदों, उसके बाज़ारों के ऊपर उड़ चुकी थीं। हो सकता है वे जलील के घर की दीवारों पर, उसके सिनेमाघर की बाहरी सीढ़ियों पर भी उतरी हों।

उसने दस कंकड़ उठाए और उनको एक ऊपर एक तीन खंभों की तरह खड़ा किया। यह वह खेल था, जिसे वह कभी-कभी तब खेलती थी जब नाना उसे नहीं देख रही होतीं। पहले खंभे में उसने चार कंकड़ रखे, ये खदीजा के बच्चों के लिए थे, तीन अफसूं के लिए और तीसरे में तीन नरगिस के बच्चों के लिए। और तब उसने एक चौथा खंभा बनाया। यह अकेला, ग्यारहवां कंकड़ था।

अगली सुबह मरियम ने घुटनों तक आती क्रीम रंग की पोशाक, सूती पाजामा और सिर पर हरा हिजाब पहना। हिजाब पर वह थोड़ी खीझी भी थी जो हरे रंग की थी और उसकी पोशाक से मेल नहीं खा रही थी। लेकिन उसे यही पहनना पड़ा क्योंकि कीड़ों ने उसकी सफ़ेद हिजाब में छेद कर दिए थे।

उसने घड़ी देखी। यह एक पुरानी, चाभी देने वाली घड़ी थी जिसकी हल्की हरी डायल पर काले नंबर थे। यह मुल्ला फैज़ुल्ला का तोहफ़ा थी। घड़ी में नौ बजे थे। उसने जानना चाहा कि नाना कहां हैं। उसने बाहर जाकर उनको खोजने के बारे में सोचा, लेकिन उसे उनका सामना हो जाने और उनकी तकलीफदेह निगाह से डर लगा। नाना उस पर धोखा देने का इलज़ाम लगाएंगी। वह उसकी ग़लत चाहतों के लिए उसका मज़ाक उड़ाएंगी।

मरियम बैठ गई। वक़्त गुज़ारने के लिए वह बार-बार एक स्ट्रोक में एक हाथी बनाने की कोशिश करने लगी। यह तरीका जलील ने उसे सिखाया था। लगातार बैठे रहने से उसकी देह अकड़ गई लेकिन कपड़े मुड़ जाने के डर से वह लेटी नहीं।

जब सुइयों ने आख़िरकार साढ़े ग्यारह बजाए तो मरियम ने ग्यारह कंकड़ निकाले और बाहर निकली। धारा तक जानेवाले रास्ते में उसने नाना को बैठे देखा। वो लंबी लटकती शाखाओं वाले एक बेदमजनूं की गुंबदनुमा छत के नीचे, साए में कुर्सी डाले बैठी थीं। मरियम नहीं बता सकती कि नाना ने उसे देखा या नहीं।

धारा पर मरियम ने उस जगह पर जाकर इंतज़ार किया, जहां के बारे में पिछले दिन उन्होंने तय किया था। आसमान में कुछ स्याह, गोभी के आकार के बादल तैर रहे थे। जलील ने उसे बताया था कि स्याह बादलों का रंग स्याह इसलिए होता है कि वे इतने घने होते हैं कि उनका ऊपरी हिस्सा धूप को सोख कर निचले हिस्से पर इसकी परछाईं डालता है। उसने बताया था, *उनके निचले तल का अंधेरा ही तुम देखती हो मरियम जो।*

कुछ वक़्त गुज़रा।

मरियम कोल्बा लौट आई। इस बार वह मैदान के पश्चिमी किनारे की तरफ़ से लौटी ताकि उसे नाना से मिलना न पड़े। उसने घड़ी देखी। लगभग एक बज चुके थे।

वे एक कारोबारी आदमी हैं मरियम ने सोचा। *कुछ काम आ गया होगा।*

वो धारा तक लौटी और फिर काफ़ी देर तक इंतज़ार किया। ऊपर मंडरा रही श्यामा चिड़िया घास में कहीं समा गई। उसने एक कीड़े को एक छोटे कंटीले पेड़ के तने के पास जाते देखा।

उसने तब तक इंतज़ार किया जब तक उसके पांव अकड़ नहीं गए। इस बार वो कोल्बा नहीं लौटी। उसने अपने पाजामे के पांयचे घुटनों तक मोड़ लिए, धारा को पार किया और ज़िंदगी में पहली पहाड़ी से उतर कर हेरात की तरफ़ चल पड़ी।

नाना हेरात के बारे में भी ग़लत थी। किसी ने उसकी तरफ़ इशारा नहीं किया। कोई उस पर नहीं हंसा। मरियम सनोबर की कतारों के बीच से निकलते रास्ते पर चलती गई। सड़क शोर और भीड़ से भरी हुई थी। वह पैदल चलनेवालों, साइकिल सवारों और खच्चरों से खींची जा रही गाड़ियों की जमी हुई भीड़ के बीच चलती रही और किसी ने उस पर पत्थर नहीं फेंके। किसी ने उसको हरामी नहीं कहा। शायद ही किसी ने उसे देखा भी होगा। वह यहां शानदार तरीके से एक आम इंसान थी और इस बात की उसे उम्मीद नहीं थी।

कुछ देर के लिए मरियम एक बड़े-से पार्क के बीच में एक अंडाकार तालाब के पास खड़ी रही ज़हां पत्थर वाले रास्ते आपस में एक दूसरे को काट रहे थे। हैरानी के साथ उसने तालाब के एक सिरे पर खड़े संगमरमर के ख़ूबसूरत घोड़ों पर अपनी उंगलियां फिराईं और अपनी धुंधली आंखों से पानी को निहारा। उसने चोरी-छुपे उन लड़कों के झुंड को देखा जो काग़ज़ की नावें तैरा रहे थे। मरियम ने हर जगह फूल ही फूल देखे-ट्यूलिप, लिली, सांझ को खिलने वाली मालती। उनकी पंखुड़ियां धूप में नहाई हुई थीं। लोग राहों पर चल रहे थे, बेंचों पर बैठे थे और चाय पी रहे थे।

मरियम मुश्किल से ही यकीन कर पा रही थी कि वह यहां थी। उसका हेरात उत्तेजना के साथ हिलकोरें ले रहा था। उसने चाहा कि मुल्ला फैज़ुल्ला उसे इस वक़्त देख पाते। वो पाते कि वो कितनी साहसी है। कितनी बहादुर! इस शहर में उसकी जो नई ज़िंदगी उसका इंतज़ार कर रही थी, उसने ख़ुद को उसके हाथों में सौंप दिया था। एक अब्बा, भाइयों और बहनों वाली ज़िंदगी। ऐसी ज़िंदगी जिसमें वह प्यार कर पाए और बदले में उसे प्यार मिले। यह सब बिना किसी शर्त या मकसद के हो और ऐसा करने में कोई शर्म भी न हो।

इसी जोश में वह पार्क के पास आम रास्ता पकड़ कर वापस लौटने लगी।

वह छायादार पेड़ों के नीचे बैठे थुलथुल चेहरों वाले बूढ़े फेरीवालों और उनके सामने सजाए हुए चेरी और अंगूर के ढेरों को देखते हुए उनके पास से होकर गुज़री। नंगे पांव लड़के बेल के थैले लहराते हुए कारों और बसों के पीछे भाग रहे थे। मरियम एक नुक्कड़ पर खड़ी गुज़रने वालों को देखती रही और यह समझने की नाकाम कोशिश करती रही कि कैसे वे अपने आस पास की शानदार चीज़ों की तरफ़ से इतने बेपरवाह हो सकते थे।

कुछ देर बाद उसने एक उम्रदराज़ घोड़ागाड़ी मालिक से पूछने की हिम्मत जुटाई कि क्या वह जानता है कि सिनेमाघर के मालिक जलील कहां रहते हैं। फूले हुए गालों वाले बूढ़े ने सतरंगी चापन पहन रखी थी। 'तुम हेरात की नहीं हो, है न?' उसने दोस्ताना लहजे में कहा। 'हर कोई जानता है कि जलील खान कहां रहते हैं।'

'क्या आप मुझे दिखा सकते हैं?'

उसने पन्नी में लिपटी हुई एक टॉफी खोली और कहा, 'तुम अकेली हो?'

'हां।'

'आओ, चढ़ जाओ। मैं तुम्हें वहां ले चलूंगा।'

'मैं आपको किराया नहीं दे सकती। मेरे पास पैसे नहीं हैं।'

बूढ़े ने टॉफी उसे दे दी। उसने कहा कि उसे दो घंटों तक गाड़ी नहीं चलानी थी और बहरहाल वह घर जाने की सोच रहा था। जलील का घर उसके रास्ते में था।

मरियम गाड़ी पर सवार हो गई। वे आसपास बैठे हुए चुपचाप चलते रहे। रास्ते में मरियम ने जड़ी-बूटियों की दुकानें देखीं, उसने बिना दरवाज़ों वाले बड़े-बड़े कमरे देखे जहां ख़रीददार संतरे और नाशपाती, किताबें और यहां तक कि बाज़ तक ख़रीद रहे थे। बच्चे मिट्टी में घेरे बना कर कंचे खेल रहे थे। चायखानों के बाहर दरी से ढंके हुए लकड़ी के तख़्त पर बैठे लोग चाय और हुक्के पी रहे थे।

बूढ़े ने गाड़ी को एक चौड़ी, नुकीले पेड़ों की कतारों वाली सड़क पर मोड़ दिया। बीच रास्ते पर एक जगह उसने घोड़े को रोका।

'वह रही। लगता है कि तुम खुशकिस्मत हो, *दुख़्तर जो*। यह उन्हीं की कार है।'

मरियम कूद कर नीचे उतरी। वह मुस्कुराया और चला गया।

मरियम ने कभी किसी कार को नहीं छुआ था। उसने जलील की कार के हुड पर उंगलियां फिराईं। वह एक काली, चमकदार और जगमगाते पहियों वाली गाड़ी थी, जिसमें उसने अपनी खुद की एक चिपटी और चौड़ी तस्वीर देखी। उसकी सीटें सफ़ेद चमड़े की बनी थीं। स्टीयरिंग व्हील के पीछे मरियम ने शीशे के गोल पैनल और उनके नीचे सुइयां देखीं।

एक पल के लिए मरियम ने अपने सिर में नाना की मज़ाक उड़ाती हुई, अपनी उम्मीदों की चमक को फीकी करती हुई आवाज़ सुनी। कांपते पांवों के साथ मरियम घर के सामने के दरवाज़े पर पहुंची। उसने दीवार पर अपने हाथ रखे। वे इतनी ऊंची और अपशगुनी लग रही थीं। उसे उन दीवारों की दूसरी तरफ़ से झांकती सनोबर के पेड़ों की फुनगियां देखने के लिए अपनी गर्दन को तानना पड़ा। फुनगियां हवा के झोंकों से हिल रही थीं और उसने कल्पना की कि वे उसके स्वागत में सिर हिला रही हैं। मरियम ने डर की उठती हुई लहर के ख़िलाफ़ खुद को टिकाए रखा।

नंगे पांवों वाली एक औरत ने दरवाज़ा खोला। उसके निचले होंठों के नीचे गोदना था।

'मैं जलील खान से मिलने आई हूं। मैं मरियम हूं। उनकी बेटी।'

असमंजस का एक भाव लड़की के चेहरे पर दौड़ गया। तब फिर पहचान लेने का भाव आया। उसके होंठों पर अब एक हल्की सी मुस्कान आई और उसके बारे में उत्सुकता और अंदाज़ा लगाने का भाव भी। 'यहीं रुको,' लड़की ने जल्दी से कहा।

उसने दरवाज़ा बंद किया।

कुछ मिनट गुज़रे। तब एक मर्द ने दरवाज़ा खोला। वह लंबा और चौड़े कंधों वाला एक आदमी था जिसकी आंखें सोई-सोई सी और चेहरा शांत दिख रहा था।

'मैं जलील खान का शोफर हूं,' उसने यह कठोरता से नहीं कही।

'उनके क्या?'

'उनका ड्राइवर। जलील खान यहां नहीं हैं।'

'मैंने उनकी कार देखी,' मरियम ने कहा।

'वे एक ज़रूरी काम के सिलसिले में बाहर हैं।'

'वे कब लौटेंगे?'

'उन्होंने नहीं बताया है।'

मरियम ने कहा कि वह इंतज़ार करेगी।

उसने दरवाज़ा बंद कर दिया। मरियम बैठ गई और उसने अपने घुटने अपने सीने से लगा लिए। शाम ढलने लगी थी और उसे भूख लग रही थी। उसे गाड़ीवाले की टॉफी खा ली। कुछ देर बाद ड्राइवर फिर से निकला।

'तुम्हारे लिए अब घर चले जाना ज़रूरी है,' उसने कहा। 'घंटे भर में अंधेरा हो जाएगा।'

'मुझे अंधेरे की आदत है।'

'ठंड भी होगी। क्यों नहीं मैं तुमको तुम्हारे घर तक छोड़ आऊं? मैं उनको बता दूंगा कि तुम यहां आई थीं।'

मरियम ने बस उसे देखा।

'तब मैं तुम्हें होटल में ले चलूंगा। वहां तुम आराम से सो सकोगी। सवेरे हम देखेंगे कि हम क्या कर सकते हैं।'

'मुझे घर में आने दो।'

'मुझे ऐसा नहीं करने को कहा गया है। देखो, कोई नहीं जानता कि वे कब तक लौटेंगे। कई दिन भी लग सकते हैं।'

मरियम ने अपने सीने पर हाथ बांध लिए।

ड्राइवर ने गहरी सांस ली और उसको हल्के उलाहने के साथ देखा।

बरसों बाद, मरियम को इस पर सोचने के काफ़ी सारे मौक़े आनेवाले थे कि अगर वह ड्राइवर को उसे कोल्बा तक पहुंचा देने देती तो चीज़ें कौन सा रुख अख़्तियार करतीं। लेकिन उसने उसे नहीं पहुंचाने दिया। उसने जलील के घर के सामने रात गुज़ारी। उसने आसमान में अंधेरा घिरते हुए देखा, अंधेरे ने मुहल्ले के घरों को अपने में डुबो लिया। गोदनेवाली लड़की उसके लिए थोड़ी रोटी और एक प्लेट चावल लेकर आई, जिसे मरियम ने कह दिया कि उसे नहीं चाहिए। लड़की ने मरियम के नज़दीक उनको रख दिया। समय-समय पर मरियम को सड़क पर पैरों की आहट, दरवाज़ों का खुलना, दुआ सलाम की हल्की आवाज़ें सुनाई देतीं। बिजली की बत्तियां जलीं और खिड़कियां फीकी रोशनी में दमक उठीं। जब वो भूख और अधिक बर्दाश्त नहीं कर पाई तो उसने प्लेट में रखे चावल और रोटी खा ली। फिर उसने बागीचे में बोलते झिंगुरों को सुना। ऊपर आसमान में बादल फीके चांद को पीछे छोड़ते हुए तैर रहे थे।

सवेरे झकझोरे जाने से उसकी नींद खुली। मरियम ने देखा कि रात में किसी ने उसे कंबल ओढ़ा दिया था।

उसका कंधा झकझोरने वाला ड्राइवर था।

'बहुत हो गया। तुमने तमाशा बना दिया है। बस। अब चलने का वक़्त हो गया है।'

मरियम उठ बैठी और अपनी आंखें मलने लगी। उसकी पीठ और गर्दन दुख रहे थे। 'मैं उनका इंतज़ार करूंगी।'

'मुझे देखो,' ड्राइवर ने कहा। 'जलील खान ने कहा है कि मैं तुमको वापस ले जाऊं। अभी। समझीं? जलील खान ने ऐसा कहा है।'

उसने कार का पिछला सवारी वाला दरवाज़ा खोला। *'बिया।* चलो आ जाओ,' उसने नर्मी से कहा।

'मैं उनसे मिलना चाहती हूं,' मरियम ने कहा। उसकी आंखों में आंसू भर आए थे।

ड्राइवर ने गहरी सांस ली। 'चलो, मुझे तुमको घर छोड़ आने दो। चलो *दुख़्तर जो।'*

मरियम खड़ी हुई और उसकी तरफ़ बढ़ी। लेकिन तभी, आख़िरी पल में उसने अपनी दिशा बदल दी और सामने के दरवाज़ों की तरफ़ दौड़ पड़ी। उसने अपने कंधों को पकड़ने के लिए फिसलतीं ड्राइवर की उंगलियां महसूस कीं। वह उसकी पकड़ से निकली और खुले दरवाज़ों से होती हुई भीतर दाख़िल हो गई।

जलील के बागीचे में बिताए गए उन मुट्ठी भर पलों में मरियम की आंखों ने चमकते शीशे के ढांचे की झलक पाई जिसके भीतर पौधे थे, लकड़ी की जाफरी पर चढ़ी अंगूर की बेलों को देखा, स्याह पत्थर के टुकड़ों से बने मछली रखने के तालाब को देखा, फलदार पेड़ों और चमकीले रंगों वाले फूलों से भरी झाड़ियों को देखा। वो यही सब चीज़ें देख रही थी कि उसकी नज़र बागीचे के पार ऊपरी मंज़िल की खिड़की में एक चेहरे पर पड़ी। वह चेहरा वहां केवल एक पल के लिए, एक झलक भर के लिए था लेकिन इतना काफ़ी था। मरियम के लिए उस चेहरे की फैल गई आंखों और खुले हुए मुंह को देख लेने के लिए इतना काफ़ी थी। वह नज़र से ओझल हो गया। एक हाथ की झलक मिली जिसने तेज़ी से तार खींच दिया। पर्दा गिर गया।

तभी दो हाथों ने उसे अपनी बग़ल में दबाया और वह ज़मीन से उठा ली गई। मरियम लात मारने लगी। उसकी जेब से निकल कर कंकड़ बिखर गए। कार में ले जाए जाने और पिछली सीट के ठंडे चमड़े पर रखे जाने के दौरान मरियम ने लात मारना और चिल्लाना जारी रखा।

गाड़ी चलाते हुए ड्राइवर धीमी और तसल्ली देती आवाज़ में बात करता रहा। मरियम ने उसे नहीं सुना। पूरे सफ़र के दौरान पिछली सीट पर हिचकोले खाते हुए वह रोती रही। ये आंसू दुख के, गुस्से के और मोहभंग के आंसू थे। लेकिन सबसे अधिक ये आंसू गहरी, गहरी शर्म के आंसू थे कि कैसे उसने खुद को जलील के हाथों सौंप कर अपने को बेवकूफ़ बनाया है, कि कैसे वह इस बात के लिए परेशान रही कि कौन सी पोशाक पहनी जाए, कि हिजाब मेल नहीं खा रहा था, पूरे रास्ते चल कर आने के लिए, घर के सामने से हट जाने से इन्कार करने के लिए, आवारा कुत्ते की तरह सड़क पर सोने के लिए। और वह इससे शर्मिंदा थी कि कैसे उसने अपनी मां को सख़्त निगाह और सूजी आंखों को नज़रअंदाज़ कर दिया था। नाना ने उसे चेताया था और वह पूरी तरह सही थीं।

मरियम ऊपरी मंज़िल की खिड़की से दिखते उस चेहरे के बारे में सोचती रही। उसने उसे सड़क पर सोता छोड़ दिया। सड़क पर। मरियम पड़ी पड़ी रोती रही। वह बैठी नहीं, वह दिखाई देना नहीं चाहती थी। उसने कल्पना की कि सारा हेरात जानता था कि कैसे उसने अपने आप को अपमानित किया था। उसने चाहा कि यहां मुल्ला फैज़ुल्ला होते तो वह अपना सिर उनकी गोद में रख देती और उनको सुकून पहुंचाने देती।

कुछ देर बाद सड़क हिचकोलों से भर हुई और कार का शोर बढ़ गया। वे हेरात से गुल दामन जाने वाली ऊंचाई पर चढ़ रहे थे।

मरियम सोच रही थी कि वह नाना को क्या बताएगी। वह उनसे कैसे माफ़ी मांगेगी? वह नाना का सामना भी कैसे कर पाएगी?

कार रुकी और ड्राइवर ने उसे बाहर आने में मदद की। 'मैं तुम्हारे साथ चलूंगा,' उसने कहा।

उसने ड्राइवर को सड़क पार कर के बढ़ते हुए आगे चलने दिया। रास्ते के किनारे किनारे हनीसकल और मिल्कवीड की झाड़ियां उगी थीं। चमकते

जंगली फूलों पर मक्खियां भिनभिना रही थीं। ड्राइवर ने उसका हाथ पकड़ा और धारा को पार करने में उसकी मदद की। इसके बाद उसने उसे जाने दिया, और बात करने लगा कि कैसे हेरात की एक सौ बीस दिनों तक चलने वाली हवाएं जल्दी ही शुरू होने वाली हैं, जो सुबह से लेकर शाम ढलने तक चलती हैं और कैसे मच्छर काट खाने के अभियान पर निकल पड़ेंगे और फिर अचानक वो उसके सामने खड़ा हुआ और उसकी आंखों को ढंकने की कोशिश करते हुए उस वापस उसी रास्ते की तरफ़ धकेलने लगा जिधर से वे आ रहे थे। वो कह रहा था, 'लौट जाओ! नहीं। अब मत देखो। घूमो! लौट जाओ!'

लेकिन वह उतना फुर्तीला साबित नहीं हुआ। मरियम ने देख लिया था। हवा का एक झोंका नीचे से उठा और बेदमजनूं की लंबी लटकती शाखाओं को बीच से पर्दे की तरह बांटता हुआ निकल गया और मरियम ने पेड़ के नीचे जो था, उसकी एक झलक पा ली : सीधी पीठ वाली कुर्सी उल्टी पड़ी थी। ऊंची शाखा से एक रस्सी लटक रही थी। इसके एक सिरे पर नाना की देह झूल रही थी।

छह

नाना को उन्होंने गुल दामन के कब्रिस्तान के एक कोने में दफनाया। मुल्ला फैज़ुल्ला के कब्र के पास नमाज़ पढ़ाने और इसके बाद लोगों द्वारा कफ़न में लिपटी नाना की देह को ज़मीन में उतारने के दौरान मरियम औरतों के बीच बीबी जो की बग़ल में खड़ी रही।

इसके बाद जलील मरियम को कोल्बा तक ले गया जहां साथ में आए गांव वालों के सामने मरियम के साथ ख़ूब लाड़-प्यार दिखाया। उसने मरियम की कुछ चीज़ें उठाईं और उनको एक सूटकेस में रखा। वह खाट पर पड़ी मरियम की बग़ल में बैठा और उसके चेहरे पर हवा की। उसने उसकी ललाट को सहलाया और चेहरे पर दुख का भाव लिए हुए उसने उससे पूछा कि क्या उसे किसी चीज़ की ज़रूरत थी? किसी चीज़ की?- उसने यह बात इसी तरह दो बार कही।

'मैं मुल्ला फैज़ुल्ला को चाहती हूं,' मरियम ने कहा।

'बेशक। वे बाहर हैं। मैं उनको बुलाता हूं।'

जब मुल्ला फैज़ुल्ला की दुबली, लंबी देह कोल्बा के दरवाज़े पर दिखी तो मरियम उस दिन पहली बार रोई।

'ओह मरियम जो।'

वे उसकी बग़ल में बैठे और उसके चेहरे को अपनी हथेलियों में ले लिया। 'रोओ मरियम जो। रोओ। इसमें कोई शर्म की बात नहीं है। लेकिन

क़ुरान जो कहता है उसे याद रखना, 'शुक्रिया उसका जिसके हाथों में जहान है और जिसकी सारी चीज़ों पर हुक्म चलना है, जिसने मौत और ज़िंदगी बनाई है वह एक दिन तुमको आजमा सकता है।' क़ुरान ने सच्ची बात कही है। हमारे कंधों पर आ पड़ी हरेक आजमाइश और हरेक दुख के पीछे ख़ुदा की हिक़मत होती है।'

लेकिन मरियम ख़ुदा के शब्दों में सुकून नहीं सुन सकी। उस दिन तो नहीं। उस वक़्त नहीं। वह बस यह कहती हुई नाना की आवाज़ सुन पा रही थी, *अगर तुम जाओगी तो मैं मर जाऊंगी।* बस मैं मर जाऊंगी। वह बस रो सकी और अपने आंसुओं को मुल्ला फ़ैज़ुल्ला के हाथों की धब्बेदार, पतली चमड़ी पर गिरने दिया।

अपने घर लौटते वक़्त जलील अपनी कार की पिछली सीट पर मरियम के साथ बैठा और अपने हाथ उसके कंधों पर लपेट दिए।

'तुम हमारे साथ रह सकती हो मरियम जो,' उसने कहा। 'मैंने पहले ही तुम्हारी खातिर कमरा साफ़ करने को कह दिया है। यह ऊपर वाली मंज़िल पर है। मुझे लगता है कि तुम इसे पसंद करोगी। तुम वहां से बागीचा देख पाओगी।'

पहली बार मरियम उसको नाना के कानों से सुन सकती थी। उसके खोखले और झूठे दिलासों के नीचे छुपी बेईमानी को अब वह साफ़-साफ़ सुन सकती थी। वह उनकी तरफ़ नज़र उठा कर देख नहीं सकी।

कार जब जलील के घर के सामने उतरी तो ड्राइवर ने उनके लिए दरवाज़ा खोला और मरियम का सूटकेस उठा लिया। जलील उसके दोनों कंधों पर हथेलियां टिकाए उसे उन्हीं दरवाज़ों के ज़रिए घर के भीतर ले चला, जिनके बाहर दो दिन पहले ही उनका इंतज़ार करते हुए मरियम सोई थी। दो दिन पहले के वे दिन एक दूसरा ही जीवन लग रहे थे जब मरियम इस बागीचे में जलील के साथ चलने से अधिक दुनिया में किसी और चीज़ के बारे में नहीं सोचती थी। मरियम ने ख़ुद से पूछा कि कैसे इतनी जल्दी उसकी ज़िंदगी बिखर गई। उसने अपनी निगाहें ज़मीन पर, स्याह पत्थरों वाले रास्ते पर पड़ते कदमों पर टिकाए रखीं। वह जानती थी कि बागीचे में लोग मौजूद हैं जो फुसफुसा रहे हैं, किनारे किनारे चल रहे हैं। उसने ऊपर की मंज़िल की खिड़कियों से झांकती

निगाहों का वज़न महसूस किया।

घर के भीतर भी मरियम ने अपना सिर झुकाए रखा। वह एक कत्थई रंग की दरी पर चल रही थी जिसमें नीले-पीले रंग के आठ कोनों वाले सांचे बने थे। अपनी आंखों के कोनों से उसने संगमरमर के आधार वाली मूर्ति, आधी ऊंचाई के गुलदान, दीवार पर टंगी घिसे हुए सिरे वाले चटख रंगों वाली टेपेस्ट्री देखी। उनको ले जाने वाली सीढ़ी पर भी वैसी ही कालीन बिछी हुई थी जिसमें हर सीढ़ी पर कीलें ठुकी हुई थीं। ऊपर आने के बाद ज़लील उसे दाहिनी तरफ़ ले गया जहां एक और कालीन बिछा लंबा गलियारा था। वो एक दरवाज़े पर रुका, उसे खोला और उसे भीतर आने दिया।

'तुम्हारी बहनें नीलोफर और अतिया कभी-कभी यहां खेलती हैं,' जलील ने कहा। 'लेकिन हम इसे अधिकतर मेहमानखाने के रूप में इस्तेमाल करते हैं। मुझे लगता है कि यहां तुम आराम से रह सकोगी। यह अच्छा है, है न?'

कमरे में एक बिस्तर था जिस पर मधुमक्खी के छत्ते जैसी डिज़ाइन वाला, हरे फूलों वाला एक कंबल था। पर्दे कंबल के रंग से मेल खाते थे और उनको समेट देने पर वहां से नीचे का बागीचा दिखता था। बिस्तर की बग़ल में तीन दराजों वाला एक संदूक था, जिसके पाए फूलदार थे। दीवार से लगे खाने बने हुए थे जिनमें फ्रेम की हुई तस्वीरें रखीं थीं। मरियम उन तस्वीरों को नहीं पहचानती थी। एक खाने पर मरियम ने लकड़ी से बनी मिलती-जुलती गुड़ियां देखीं, जिनको उनके घटते हुए कद के हिसाब से एक कतार में खड़ा किया गया था।

जलील ने उसे खिलौनों को देखते हुए देखा। 'मात्र्योश्का गुड़ियां। मैं उन्हें मास्को से लाया था। तुम चाहो तो उनसे खेल सकती हो। कोई बुरा नहीं मानेगा।'

मरियम बिस्तर पर बैठ गई।

'तुम्हें क्या कोई चीज़ चाहिए?' जलील ने कहा।

मरियम लेट गई। उसने अपनी आंखें बंद कर लीं। कुछ देर बाद उसने दरवाज़े के हल्के से बंद होने की आवाज़ सुनी।

नीचे बाथरूम जाने के अलावा मरियम पूरे वक़्त अपने कमरे में ही रहती। गोदनों वाली लड़की, जिसने मरियम के लिए दरवाज़ा खोला था, उसके लिए

ट्रे में खाना ले आती : भेड़ का कबाब, सब्ज़ी, सूप। इनमें से अधिकतर यों ही अछूता पड़ा रहता। जलील दिन में कई बार आता, बिस्तर पर उसकी बग़ल में बैठता और पूछता कि वह ठीक से तो है।

'तुम नीचे हम सबके साथ खा सकती हो,' वह बिना ज़्यादा ज़ोर दिए यह बात कहता। जब मरियम ने कहा कि वह अकेले खाना पसंद करेगी तो वह फटाफट मान गया।

खिड़कियों से मरियम अनमने तरीके से जलील की रोज़मर्रा की ज़िंदगी की उन सारी चीज़ों को देखती जिनके बारे में वह पूरी ज़िंदगी सोचती रही थी और देखने को तरसती थी। सामने के दरवाज़े से नौकर भागते हुए आते-जाते। एक माली हमेशा झाड़ियों को काटता-छांटता, ग्रीन हाउस के पौधों को पानी देता। सड़क पर लंबी, आकर्षक हुडों वाली कारें रुकतीं। उनमें से सूट, चापन और काराकुल टोपी पहने मर्द और हिजाब पहने औरतें, संवरे बालों वाले बच्चे उतरते। मरियम जलील को उन अजनबियों से हाथ मिलाते देखती, वह उसे अपने सीने तक हाथ उठा कर उनकी बीवियों से सलाम करते हुए देखती। वह जानती थी कि नाना ने सच कहा था। उसका इस जगह से कोई रिश्ता नहीं था।

लेकिन तब मेरा रिश्ता किस जगह से है? अब मैं क्या करनेवाली हूं?

इस दुनिया में मैं ही तुम्हारा सबकुछ हूं मरियम। जब मैं रुखसत हो जाऊंगी तो तुम्हारे पास कुछ नहीं बचेगा। तुम्हारे पास कुछ नहीं बचेगा। कुछ नहीं होगा तुम्हारे पास। तुम कुछ नहीं होओगी!

कोल्बा के पास के बेदमजनूंओं से गुज़रने वाली हवा की तरह एक कहा न जा सकनेवाला अंधकार का झोंका मरियम से होकर गुज़रता रहा।

जलील के घर में रहते हुए मरियम का यह दूसरा पूरा दिन था, जब एक छोटी-सी लड़की कमरे में आई।

'मुझे कुछ लेना है,' उसने कहा।

मरियम बिस्तर पर पांव मोड़ कर बैठ गई और कंबल को अपनी गोद में खींच लिया।

लड़की ने फुर्ती से जाकर अल्मारी का दरवाज़ा खोला। उसने एक स्याह चौकोर डिब्बा निकाला।

'पता है ये क्या है?' उसने पूछा। उसने डिब्बे को खोला। 'इसे ग्रामोफोन

कहते हैं। ग्रामोफोन! इसमें रेकार्ड बजाए जाते हैं। तुम जानती हो? संगीत? ग्रामोफोन।'

'तुम नीलोफर हो। तुम आठ बरस की हो?'

नन्हीं लड़की मुस्कुराई। उसकी मुस्कान जलील जैसी थी और उसके गालों पर गड्ढे बनते थे। 'तुम कैसे जानती हो?'

मरियम ने कंधे झटके। वह इस लड़की को यह नहीं बतानेवाली थी कि उसने एक पत्थर का नाम इसके नाम पर रखा हुआ था।

'क्या तुम गाना सुनना चाहती हो?'

मरियम ने फिर से कंधे झटके।

नीलोफर ने ग्रामोफोन का प्लग लगाया। उसने डिब्बे के ढक्कन के नीचे पाउच में से एक छोटा सा रेकॉर्ड निकाल कर उसमें लगाया और सूई नीचे की। गीत बजने लगा :

आई विल यूज़ ए फ्लावर पेटल फॉर पेपर
एंड राइट यू द स्वीटेस्ट लेटर
यू आर द सुल्तान ऑफ माई हार्ट
द सुल्तान ऑफ माई हार्ट

'तुम जानती हो यह गीत?'

'नहीं।'

'यह एक ईरानी फ़िल्म का गीत है। इस फ़िल्म को मैंने अब्बा के सिनेमाघर में देखा था। तुम कुछ देखना चाहती हो?'

मरियम कुछ कह पाती इसके पहले ही नीलोफर ने अपनी हथेलियों और ललाट को ज़मीन पर टिका दिया था। उसने अपने तलवों से ज़ोर लगाया और अब वह सिर के बल खड़ी थी।

'क्या तुम ऐसा कर सकती हो?' उसने भारी आवाज़ में कहा।

'नहीं।'

नीलोफर ने अपने पैर वापस गिरा लिए और अपनी कुर्ती को नीचे खींचा। 'मैं तुमको सिखा सकती हूं,' नीलोफर ने अपनी लाल हो आई भौंहों से बाल हटाते हुए कहा। 'तो तुम कब तक यहां रहोगी?'

'मैं नहीं जानती।'

'मेरी अम्मी कहती हैं कि तुम सचमुच की उस तरह मेरी बहन नहीं हो, जैसा कि तुम बताती हो।'

'मैंने कभी नहीं कहा कि मैं सचमुच की बहन हूं,' मरियम ने झूठ बोला।

'वो कहती हैं कि तुमने कहा था। मुझे इससे मतलब नहीं। मेरा मतलब है कि तुमने कहा है या नहीं कहा है, इससे मुझे कोई मतलब नहीं है। मैं इसका बुरा नहीं मानती।'

मरियम लेट गई। 'मैं थक गई हूं।'

'मेरी अम्मी ने बताया कि तुम्हारी अम्मी ने जिन की वजह से फांसी लगा ली।'

'अब तुम रोक सकती हो,' मरियम ने उसकी तरफ़ मुड़ते हुए कहा। 'मेरा मतलब है कि गाना रोक सकती हो।'

उसी दिन बीबी जो उसे देखने आईं। उनके आते-आते बारिश होने लगी। उन्होंने किसी तरह मुंह बनाते हुए बिस्तर की बग़ल में कुर्सी पर अपने बड़े से शरीर को टिकाया।

'ये बारिश, मरियम जो, ये बारिश मेरे कूल्हों के लिए ज़हर है। ज़हर, मैं कह रही हूं। उम्मीद है...ओह अब मेरे पास आओ बच्ची। बीबी जो के पास आओ। रोओ नहीं। लो, बेचारी बच्ची...च्ह, च्ह...बेचारी।'

उस रात मरियम देर तक नहीं सो सकी। वो बिस्तर में पड़ी आसमान को देखती रही और नीचे क़दमों की आवाज़ें, दीवारों में घुटी हुई बातचीत और खिड़कियों पर बारिश की बौछारों को सुनती रही। जब उसके झपकी आ गई थी तो वह एक चीख से अचकचा कर जाग पड़ी। नीचे से तीखी और गुस्से से भरी आवाज़ें आ रही थीं। मरियम एक शब्द नहीं बोल पाई। किसी ने दरवाज़ा ज़ोर से बंद किया।

अगली सुबह मुल्ला फैज़ुल्ला उससे मिलने आए। जब उसने दरवाज़े पर अपने दोस्त की सफ़ेद दाढ़ी और स्नेह से भरी हुई दंतहीन मुस्कान देखी तो मरियम को अपनी आंखों के कोनों पर फिर से आंसुओं की चुभन महसूस की। उसने बिस्तर के किनारे की तरफ़ अपने पांव डाले और दौड़ पड़ी। उसने हमेशा की तरह मुल्ला के हाथ चूमे और मुल्ला ने उसकी भौंहें। मरियम ने उनके लिए एक कुर्सी खींची।

मुल्ला ने मरियम के लिए लाया हुआ क़ुरान उसे दिखाया। 'मुझे लगा कि रोज़मर्रा की चीज़ों को छोड़ने में कोई तुक नहीं है।'

'आपको पता है कि मुझे अब इस सबकी की ज़रूरत नहीं है मुल्ला साहिब। आप मुझे क़ुरान का हर सूरा और हर आयत बरसों पहले पढ़ा चुके हैं।'

वे मुस्कुराए और हार मानने का इशारा करते हुए अपना हाथ खड़े कर दिए। 'तो मैं कबूल करता हूं। मैं पकड़ लिया गया। लेकिन मैं तुमसे मिलने के और भी ख़राब बहाने सोच सकता हूं।'

'आपको बहानों की ज़रूरत नहीं है। आपको नहीं।'

'ये तुम्हारी रहमदिली है मरियम जो।'

मुल्ला साहिब ने उसे क़ुरान दिया। जैसा कि उन्होंने मरियम को सिखाया था, उसने तीन बार क़ुरान को चूमा और हर बार उसे अपनी भौंहों से लगाया और फिर उसे मुल्ला साहिब को लौटा दिया।

'तुम कैसी हो मेरी बच्ची?'

'मैं सोचती,' मरियम ने कहना शुरू किया। उसे रुक जाना पड़ा क्योंकि उसे लगा कि गले में कोई पत्थर फंस गया है। 'मैं वह बात सोचती रहती हूं जो मेरे चलने से पहले उन्होंने मुझसे कही थी। वो-'

'ना ना ना।' मुल्ला फैज़ुल्ला ने अपना हाथ उसके घुटने पर रखे। 'तुम्हारी अम्मी, अल्लाह उन्हें माफ़ करे, एक परेशान और दुखियारी औरत थीं मरियम जो। उन्होंने अपने साथ, तुम्हारे साथ और अल्लाह के साथ भी बुरा किया। अल्लाह उनको माफ़ करेगा क्योंकि वही माफ़ करनेवाला है। लेकिन उन्होंने जो किया उससे अल्लाह उदास होगा। जान लेने को अल्लाह कबूल नहीं करता, चाहे अपनी जान हो या दूसरों की। क्योंकि वह कहता है कि ज़िंदगी पाक चीज़ है। देखो-' उन्होंने कुर्सी करीब खींची और मरियम के हाथ अपने हाथों में लिए। 'देखो, मैं तुम्हारी अम्मी को तुम्हारे पैदा होने से बहुत पहले से जानता हूं, जब वो अभी छोटी ही थीं। और मैं तुमको बताता हूं कि वो तब भी दुखियारी थीं। मुझे अंदेशा है कि उन्होंने जो किया उसके बीज बहुत पहले बोए जा चुके थे। मेरे कहने का मतलब यह है कि इसमें तुम्हारा कोई कसूर नहीं है। यह तुम्हारी गलती नहीं थी मेरी बच्ची।'

'मुझे उनको छोड़ कर नहीं जाना चाहिए था। मुझे चाहिए था-'

'रुक जाओ। ऐसे ख़याल अच्छे नहीं हैं मरियम जो। सुन लो मेरी बात,

बच्ची? अच्छा नहीं है। यह तुमको तबाह कर देगा। यह तुम्हारी ग़लती नहीं थी। यह तुम्हारी ग़लती नहीं थी। ना।'

मरियम ने सिर हिलाया, लेकिन वह पूरे दिल से यही चाहती थी कि वो इस बात पर यकीन नहीं करे।

एक हफ़्ते बाद दोपहर ढल रही थी जब उसका दरवाज़ा खटखटाया गया और एक लंबी औरत उसमें दाख़िल हुई। उसका रंग गोरा, लाल रंगत लिए हुए बाल और लंबी उंगलियां थीं।

'मैं अफसूं हूं,' उसने कहा। 'नीलोफर की अम्मी। तुम नहा कर नीचे क्यों नहीं आतीं मरियम?'

मरियम ने कहा कि वह इसके बजाए अपने कमरे में ही रहेगी।

'नहीं, तुम समझी नहीं। तुम्हारा नीचे आना जरूरी है। हमें तुमसे बात करनी है। यह अहम बात है।'

सात

जलील और उसकी बीवियां एक लंबी, गहरी भूरी टेबल पर उसके आमने-सामने बैठे थे। उनके बीच में टेबल पर क्रिस्टल के एक गुलदान में ताज़े गेंदे के फूल और पानी की गीली सुराही रखी थी। लाल बालों वाली एक औरत अफसूं, जिसने खुद को नीलोफर की अम्मी बताया था, जलील की दाहिनी तरफ़ बैठी थी। दूसरी दो खदीजा और नरगिस उसकी बाईं तरफ़ थीं। हरेक बीवी के पास झीना काला दुपट्टा था जिसे उन्होंने अपने सिरों पर नहीं ओढ़ रखा था बल्कि उनको अपने गले में ढीले-ढाले तरीके से लपेट रखा था। मरियम यकीन नहीं कर सकती थी कि उन्होंने नाना के मातम में काला कपड़ा पहना होगा। उसने कल्पना की कि उसे बुलाए जाने के पहले किसी ने या शायद जलील ने ही इसकी सलाह दी होगी।

अफसूं ने सुराही से पानी डाला और गिलास को मरियम के आगे चारखानेदार कपड़े के कोस्टर पर रख दिया। 'अभी तो बसंत ही है और गर्मी शुरू हो गई,' उसने कहा। उसने अपने हाथ को पंखे की तरह झला।

'तुम आराम से तो रहीं?' नरगिस ने पूछा, जिसकी छोटी ठुड्डी और काले घुंघराले बाल थे। 'उम्मीद है कि तुम आराम से रही होंगी। यह...तकलीफ... तुम्हारे लिए बहुत ही सख़्त होगी। बहुत मुश्किल।'

बाक़ी दोनों ने सिर हिलाया। मरियम ने उनकी करीने से सजी हुई भौंहों और पतली, उदार मुस्कान को देखा। मरियम के सिर में एक चुभती हुई भनभनाहट

थी। उसका गला जल रहा था। उसने थोड़ा पानी पीया।

जलील के पीछे की चौड़ी खिड़की से मरियम सेब के पेड़ों की कतार को देख सकती थी, जिन पर फूल आए हुए थे। खिड़की से लगी दीवार पर एक गहरे रंग का लकड़ी का कैबिनेट था। इसके भीतर एक घड़ी थी और मछली पकड़े हुए जलील और तीन लड़कों का फ्रेम किया हुआ फोटो था। जलील और लड़के हंस रहे थे।

'खैर,' अफसूं ने बोलना शुरू किया। 'मैं-मतलब हम- तुमको इसलिए यहां लाए हैं क्योंकि हमारे पास तुम्हारे लिए बहुत अच्छी ख़बर है।'

मरियम ने नज़रें उठाईं।

उसने नज़रों ही नज़रों में बीवी को जलील से कुछ बातें करते हुए देखा, जो अपनी कुर्सी में धंसा हुआ टेबल पर रखी सुराही की तरफ़ अनमने तरीके से देखे जा रहा था। यह उन सबमें सबसे उम्रदराज दिखने वाली खदीजा थी जिसने मरियम की तरफ़ निगाह की और मरियम को महसूस हुआ कि इस काम के बारे में भी उसको बुलाने से पहले बातें हो चुकी हैं, और इस पर सब राज़ी हैं।

'तुम्हारी शादी के लिए एक लड़के ने रिश्ता भेजा है,' खदीजा ने कहा।

मरियम के पेट में हौल सा उठा। 'क्या चीज़?' उसने अचानक सुन्न हो आए होंठों से कहा।

'शादी के लिए रिश्ता। उसका नाम रशीद है,' खदीजा ने बोलना जारी रखा। तुम्हारे अब्बा की उससे कारोबारी जान-पहचान है। वह कांधार का पश्तून है, लेकिन काबुल के देह-माज़ांग ज़िले में रहता है। उसका अपना दो मंज़िला मकान है।'

अफसूं ने सिर हिलाया। 'और वह हमारी-तुम्हारी तरह फ़ारसी बोलता। तो तुमको पश्तो नहीं सीखना पड़ेगा।'

मरियम का सीना जकड़ रहा था। कमरा ऊपर-नीचे डोल रहा था और उसके पांवों के नीचे से ज़मीन खिसक रही थी।

'वह जूते बनाता है,' खदीजा कह रही थी। 'लेकिन वह कोई सड़कछाप आम मोची नहीं है। नहीं नहीं। उसकी अपनी दुकान है और वह काबुल के उन जूते बनाने वालों में से है जिनकी सबसे अधिक मांग है। वह राजदूतों और सदर के परिवारवालों जैसे रुतबे वाले लोगों के लिए जूते बनाता है। तो देखो

तुम्हारा खर्च उठाने में उसको कोई दिक्कत नहीं होगी।'

मरियम ने अपनी आंखें जलील पर टिका लीं। उसका दिल उसके सीने में उछल रहा था। 'क्या यह सही है? वो जो कह रही हैं क्या वो सही है?'

लेकिन जलील ने उसको नहीं देखा। वह अपने निचले होंठ के कोने को चबाता और सुराही को घूरता रहा।

'अब वो तुमसे थोड़ा ही बड़ा है,' अफसूं ने सुर में सुर मिलाया। 'लेकिन वह ज़्यादा का नहीं होगा...चालीस तक। ज़्यादा से ज़्यादा हुआ तो पैंतालीस का होगा। तुम कुछ नहीं कहोगी नरगिस?'

'हां। लेकिन मैंने नौ साल की लड़कियों को तुम्हारे लिए रिश्ता भेजनेवाले इस लड़के से बीस साल बड़े लोगों के साथ दिए जाते देखा है मरियम। हम सबने देखा है। तुम कितने की हो, पंद्रह की? यह अच्छा है, एक लड़की की शादी की यह सबसे अच्छी, असली उम्र है।' इस पर जोश से भर कर सबने सिर हिलाए। मरियम इस पर ग़ौर किए बिना नहीं रह सकी कि उसकी सौतेली बहनों सियादे और नाहिद का कोई ज़िक्र नहीं हो रहा था। ये दोनों उसी की उम्र की थीं और हेरात के मेहरी स्कूल में पढ़ रही थीं। उन दोनों का मंसूबा काबुल यूनिवर्सिटी में दाख़िला लेने का था। आख़िरकार पंद्रह की उम्र उनके लिए शादी की अच्छी, असली उम्र नहीं थी।

'इससे भी ज़्यादा,' नरगिस बोलती रही, 'उसने भी जीवन में तो बड़े नुक़सान उठाए हैं। हमने सुना कि उसकी बीवी दस साल पहले बच्चे की पैदाइश के दौरान मर गई थी। और फिर तीन साल पहले उसका बेटा झील में डूब कर मर गया।'

'यह बहुत बुरा है, हां। वह पिछले कुछ बरसों से एक दुल्हन की तलाश में था लेकिन उसे कोई मनमाफिक नहीं मिली।'

'मैं शादी नहीं करना चाहती,' मरियम ने कहा। उसने जलील की तरफ़ देखा। 'मैं यह नहीं चाहती। मेरी शादी मत करो।' उसने अपनी आवाज़ में सिसकता और फरियाद करता हुआ लहजा अच्छा नहीं लगा, लेकिन वह इससे बच नहीं सकी।

'अब समझदारी से काम लो मरियम,' एक बीवी ने कहा।

मरियम को अब इसका ख्याल नहीं रहा कि कौन क्या कह रहा है। वह जलील को घूरती रही और इंतज़ार करती रही थी कि वह मुंह खोले और कहे

कि यह सब झूठ था।

'तुम पूरी ज़िंदगी यहां नहीं गुज़ार सकतीं।'

'क्या तुम अपना ख़ुद का एक परिवार नहीं चाहतीं?'

'हां, एक घर, अपने बच्चे?'

'तुमको आगे जीना है।'

'सही है कि तुम्हारे लिए एक स्थानीय, एक ताजिक से शादी करना अच्छा होगा। लेकिन रशीद अमीर है और तुममें उसकी दिलचस्पी है। उसके पास घर है, काम है। यही सब चीज़ें मायने रखती हैं, नहीं क्या? और क़ाबुल एक ख़ूबसूरत और रोमांचक शहर है। शायद तुमको इससे बेहतर मौक़ा न मिले।'

मरियम ने बीवियों की तरफ़ रुख किया।

'मैं मुल्ला फ़ैज़ुल्ला के साथ रहूंगी,' उसने कहा। 'वे मुझे रख लेंगे। मैं जानती हूं कि वे रख लेंगे।'

'यह अच्छा नहीं है,' ख़दीजा ने कहा। 'वे बूढ़े हैं और वे इतने...' वह सही शब्द के लिए रुक गई। मरियम जानती थी जो वह असल में क्या कहना चाहती थी कि वे इतने नज़दीक हैं। वह समझ गई थी कि उनकी बातों का क्या मतलब था। *शायद तुमको इससे बेहतर मौक़ा न मिले।* और न ही उनको इससे बेहतर मौक़ा मिलेगा। उसका पैदा होना उनके लिए अपमानजनक था और अब उनके लिए यह एक आख़िरी मौक़ा था जब वे अपने पति की उस भारी ग़लती की आख़िरी निशानी को पोंछ कर मिटा सकती थीं। वह दूर भेजी जा रही थी क्योंकि वह उनकी शर्मिंदगी की चलती-फिरती, सांस लेती निशानी थी।

'वे इतने बूढ़े और कमज़ोर हैं,' ख़दीजा ने आख़िरकार कहा। 'और जब वे नहीं रहेंगे तो तुम क्या करोगी? तुम उनके परिवार पर बोझ बन जाओगी।'

जैसी कि तुम अभी हमारे ऊपर हो। मरियम ने ख़दीजा के मुंह से सर्दियों की भाप की तरह निकलते इन अनबोले शब्दों को लगभग देख लिया।

मरियम ने ख़ुद को क़ाबुल में रख कर देखा। जलील ने एक बार उसे बताया था कि वह एक बड़ा, अजनबी, भीड़ भरा शहर था जो हेरात से साढ़े छह सौ किमी पूरब में था। *साढ़े छह सौ किलोमीटर*। अपने कोल्बा से वह अधिक से अधिक दो किलोमीटर दूर गई थी जब वो जलील के घर चल कर गई थी। उसने ख़ुद को क़ाबुल में रख कर देखा, कल्पना से भी परे इस दूरी के दूसरे सिरे पर एक अजनबी के घर में रहते हुए जहां उसे उसके मिज़ाज

और उसकी मांगों के आगे सिर झुकाए रहना होगा। उसे रशीद नाम के इस आदमी के लिए सफाई करनी होगी, खाना बनाना होगा, उसके कपड़े धोने होंगे। और फिर दूसरे काम भी होंगे- नाना ने उसे बताया था कि शौहर अपनी बीवियों के साथ क्या करते हैं। यह ख़ास तौर से उन अंतरंगताओं का ही ख़याल था, जिसने उसे डर से भर दिया और वह पसीने-पसीने हो गई। यह अंतरंग संबंध उसे बुराइयों से भरे दर्दनाक काम लगते थे।

वह फिर से जलील की तरफ़ मुड़ी। 'उनको बताइए। उनको बताइए कि आप उनको ऐसा नहीं करने दीजिएगा।'

'असल में तुम्हारे अब्बा ने रशीद को पहले ही ज़बान दे दी है,' अफसूं न कहा है। 'रशीद यहीं हेरात में हैं। वे काबुल से यहां आए हैं। निकाह कल सुबह होनी है और इसके बाद दोपहर में एक बस काबुल को रवाना होगी।'

'बताइए उनको!' मरियम चीख पड़ी।

औरतें अब चुप हो गईं। मरियम ने महसूस किया कि वे भी जलील को देख रही थीं। वो भी इंतज़ार कर रही थीं। क़मरे में खामोशी पसर गई। जलील चोट खाया हुआ, बेचारगी भरा भाव अपने चेहरे पर लिए अपनी शादी की अंगूठी घुमा रहा था। कैबिनेट के भीतर घड़ी टिक-टिक कर रही थी।

'जलील जो?' आख़िर में एक औरत बोली।

जलील की आंखें धीमे-धीमे उठीं, मरियम की आंखों से मिलीं, पल भर को ठहरीं और फिर झुक गईं। उसने मुंह खोला लेकिन उससे बस दर्द में डूबी हुई कराह ही निकल पाई।

'कुछ कहिए,' मरियम ने कहा।

तब जलील बोला। महीन, घिसी हुई आवाज़ में उसने कहा, 'धत्त तेरे की, मरियम मेरे साथ यह मत करो।' वह यों बोला मानो उसके साथ कुछ किया जाने वाला था।

और इसी के साथ मरियम ने महसूस किया कि कमरे से तनाव गायब हो गया।

जलील की बीवियों ने तसल्ली का एक नया और अधिक जीवंतता से भरा हुआ दौर शुरू किया तो मरियम नज़रें नीची किए टेबल की तरफ़ देखने लगी। उसकी आंखें टेबल के सुडौल पायों, लहरदार घुमावों वाले कोनों और गहरे भूरे रंग की इसकी चमकदार सतह पर फिरती रहीं। उसने ग़ौर किया

कि उसके सांस छोड़ने पर हर बार सतह पर धुंध जम जा रही थी और वो अपने अब्बा की टेबल से गायब हो जा रही थी।

अफसूं उसे वापस ऊपर पहुंचा आई। जब अफसूं ने दरवाज़ा बंद किया तो मरियम ने ताले में घूमती चाबी की तेज आवाज़ सुनी।

आठ

सवेरे मरियम को सफ़ेद सूती पाजामे पर पहनने के लिए एक लंबी आस्तीन की गहरी हरी पोशाक दी गई। अफसूं ने उसे एक हरा हिजाब और उससे मेल खाती चप्पलें दीं।

उसे लंबे, बादामी टेबल वाले कमरे में ले जाया गया। फ़र्क़ बस यह था कि टेबल के बीच में चीनी में लिपटी हुई बादाम की मिठाइयां, एक क़ुरान, एक हरा बुर्का और एक शीशा रखा था। दो मर्द जिनको मरियम ने कभी नहीं देखा था—उसने अंदाज़ा लगाया कि वे गवाह होंगे—और एक मुल्ला जिसे वो पहचान नहीं पाई, पहले से बैंठे थे।

जलील ने उसको एक कुर्सी दिखाई। उसने एक हल्का भूरा सूट और लाल टाई बांध रखी थी। उसके बाल धुले हुए थे। जब उसने मरियम के लिए कुर्सी खींची तो वह उसका हौसला बढ़ाने के लिए मुस्कुराया। खदीजा और अफसूं इस बार मरियम की तरफ़ बैठीं।

मुल्ला ने बुर्के की तरफ़ इशारा किया और नरगिस ने मरियम के बैठने से पहले उसके सिर पर पहना दिया। मरियम नीचे अपने हाथों को देखने लगी।

'अब आप उनको बुला सकते हैं,' जलील ने किसी से कहा।

मरियम को उसकी गंध पहले मिली, झलक बाद में। सिगरेट का धुआं और कोलोन की भारी, मीठी गंध। वह जलील की तरह हल्की गंध नहीं थी। इसकी ख़ुशबू मरियम की नाक में भर गई। बुर्के के भीतर, अपनी आंखों के

कोनों से मरियम ने दरवाज़े पर एक लंबे, मोटी तोंद और चौड़े कंधों वाले एक झुके हुए आदमी को देखा। उस आदमी के कद को देख वह धक से रह गई और उसने अपनी निगाहें नीची कर लीं। उसका दिल हथौड़े की तरह बज रहा था। उसने दरवाज़े पर उसके रुकने को महसूस किया। इसके बाद उसकी धीमी, भारी पैरों की हरकतों को महसूस किया। उसके कदमों की धमक से टेबल पर रखा मिठाइयों का कटोरा टनक रहा था। एक भारी घुरघुराहट के साथ वह उसकी बग़ल में कुर्सी पर धंस गया। वह शोर करते हुए सांसें ले रहा था।

मुल्ला ने दोनों का स्वागत किया। उसने कहा कि यह एक रिवायती निकाह नहीं है।

'मैं समझता हूं कि रशीद आगा ने काबुल के लिए बस की टिकटें ले रखी हैं, जो जल्दी ही खुलने वाली है। समय की कमी है इसलिए हम कार्रवाई को जल्दी पूरा करने के लिए कुछ रस्मों को छोड़ देंगे।

मुल्ला ने कुछ दुआएं पढ़ीं, शादी की अहमियत पर दो-चार बातें कहीं। उसने जलील से पूछा कि क्या उसे इस शादी पर कोई एतराज़ है और जलील ने सिर हिलाकर इन्कार किया। तब मुल्ला ने रशीद से पूछा कि क्या वह मरियम के साथ शादी के इस निकाहनामे में शामिल होना चाहता है। रशीद ने 'हां' कहा। उसकी रूखी, सख़्त आवाज़ ने मरियम को पैरों तले कुचली जा रही पतझड़ की सूखी पत्तियों की आवाज़ की याद दिलाई।

'और मरियम जान, आपको यह आदमी अपने शौहर के रूप में कबूल है?'

मरियम चुप रही। लोगों ने गले साफ़ किए।

'उसे कबूल है,' टेबल की दूसरी तरफ़ से एक औरत की आवाज़ आई।

'असल में,' मुल्ला ने कहा, 'उनको खुद जवाब देना होगा। और उनको तीन बार पूछे जाने तक इंतज़ार करना चाहिए। बात यह है कि रशीद ने उनके लिए ख़्वाहिश जताई है न कि मरियम ने।'

उसने सवाल को दो बार और पूछा। जब मरियम ने कुछ नहीं कहा तो उसने एक बार फिर पूछा। और इस बार ज़ोर देकर पूछा। मरियम अपनी बग़ल में जलील को अपनी कुर्सी पर पहलू बदले हुए महसूस कर सकती थी। वह टेबल के नीचे पैरों का मुड़ना और खुलना महसूस कर सकती थी। लोगों ने

फिर से गले साफ़ किए। एक छोटे, सफ़ेद हाथ ने बढ़ कर टेबल पर हल्की-सी धूल को उड़ा कर साफ़ किया।

'मरियम,' जलील फुसफुसाया।

'हां,' उसने कांपते हुए कहा।

बुर्के के नीचे से एक शीशा गुज़रा। इसमें मरियम ने पहले अपना चेहरा देखा, अपनी बेढंगी भौंहें, चिपके हुए बाल, आंखों का उदास हरापन देखा। उसकी आंखें इतनी नजदीक थीं कि ग़लती से उसे भेंगी समझा जा सकता था। उसकी चमड़ी रूखी थी और बेजान और धब्बों से भरी दिख रही थी। उसे अपनी ललाट बहुत चौड़ी, ठुड्डी बहुत संकरी, होंठ बहुत पतले लग रहे थे। कुल मिला कर वह एक लंबा, तिकोना लंबोतरा चेहरा लग रहा था। और तब भी मरियम ने देखा कि अजीब तरह से इन सारे भुलाए जा सकने वाले अंगों ने एक ऐसे चेहरे को रचा था जो ख़ूबसूरत भले न हो लेकिन बुरा भी नहीं था।

शीशे में मरियम ने पहली बार रशीद की झलक पाई : बड़ा, चौड़ा, लाल चेहरा, नुकीली नाक, मक्कारी से भरे मौज-मजे के संकेत देते मांसल गाल, पानीदार, लाल आंखें, भरे हुए दांत जिनमें से सामने के दो दांत तिकोनी छत की तरह एक साथ सटे हुए थे, नामुमकिन रूप से घने बाल, छितरी हुई भौंहों के ऊपर महज दो उंगलियों भर की जगह खाली थी जिसके ऊपर मोटे, कड़े, काले-सफ़ेद बाल थे।

शीशे में उनकी नज़रें थोड़ी देर को मिलीं और अलग हो गईं।

यह मेरे शौहर का चेहरा है, मरियम ने सोचा।

उन्होंने सोने की पतली अंगूठियों की अदला बदली की, जिनको रशीद ने अपने कोट की जेब से निकाला। उसके नाखून पीले-बादामी रंग के थे जिनकी रंगत सड़ते हुए सेब के भीतरी हिस्से जैसी थी। उनमें से कुछ के सिरे मुड़े और उभरे हुए थे। उसकी उंगलियों में अंगूठी पहनाते वक़्त मरियम के हाथ कांप रहे थे और रशीद ने उसकी मदद की। उसकी अपनी अंगूठी थोड़ी छोटी थी लेकिन रशीद को उसे उसकी उंगली को जोड़ों के ऊपर पहनाने में कोई दिक्कत नहीं हुई।

'लो,' उसने कहा।

'अंगूठी ख़ूबसूरत है,' एक बीवी ने कहा। 'यह प्यारी है, मरियम।'

'अब बस निकाहनामे पर दस्तख़त करना बाक़ी है,' मुल्ला ने कहा।

मरियम ने अपनी आंखों को अपने हाथों पर केंद्रित किए हुए अपना

नाम लिखा- मीम, रे, ये और फिर मीम। अगली बार मरियम अपना नाम सत्ताईस साल के बाद एक दस्तावेज़ पर लिखने वाली थी, जिसे उसके आगे फिर से एक मुल्ला ही पेश करने वाला था।

'अब आप शौहर-बीवी हैं,' मुल्ला ने कहा। 'मुबारक हो।'

रशीद बहुरंगी बस में इंतज़ार कर रहा था। मरियम पिछले बंपर के पास जलील के साथ खड़ी थी, जहां से वह रशीद को नहीं देख पा रही थी। उसे केवल खुली खिड़की में छल्ले बनाता उसकी सिगरेट का धुआं दिख रहा था। उनके आस पास हाथ मिलाए जा रहे थे, एक दूसरे को अलविदा कहा जा रहा था। क़ुरान को चूमा जा रहा था, उसको सिर के ऊपर से गुज़ारा जा रहा था। नंगे पांव लड़के सवारियों के बीच में कूद रहे थे, उनके चेहरे च्यूइंग गम और सिगरेटों की डलियों के पीछे गायब थे।

जलील उसे बताने में लगा था कि काबुल इतना ख़ूबसूरत था, कि मुग़ल बादशाह बाबर ने कहा था कि उसे वहीं दफ़नाया जाए। मरियम जानती थी कि अब वह काबुल के बागीचों और उसकी दुकानों, उसके पेड़ों, उसकी हवा के बारे में बताएगा। उसके बस पर सवार होने से भी काफ़ी पहले वह ख़ुशी से हाथ हिलाता, ख़ैरियत मनाता और बच कर निकल गया महसूस करता हुआ चल पड़ेगा।

मरियम इसकी इजाज़त नहीं देने वाली थी।

'मैं आपकी इबादत करती थी,' उसने कहा।

जलील बीच वाक्य में ही रुक गया। उसने अपने हाथ बांधे और खोल लिए। एक नौजवान हिंदू जोड़ा उनके बीच से गुज़रा। बीवी ने बच्चा पकड़ रखा था और पति सूटकेस खींच रहा था। जलील इस रुकावट पर मन ही मन खुश हुआ। उन्होंने एक दूसरे से माफ़ी मांगी और नर्मी से मुस्कुराए।

'हर जुमेरात को मैं घंटों बैठी आपका इंतज़ार करती रहती थी। मैं फ़िक्र कर कर के ख़ुद को हल्कान कर लेती कि आप शायद नहीं आएंगे।'

'यह एक लंबा सफ़र है। तुमको कुछ खा लेना चाहिए।' उसने कहा कि वह कुछ रोटियां और पनीर ख़रीद सकता है।

'मैं हर वक़्त आपके बारे में सोचती रहती थी। मैं दुआएं करती थी कि आप सौ साल का होने तक जीएं। मैं नहीं जानती थी। मैं नहीं जानती

थी कि आपको मेरी वजह से शर्म आएगी।'

जलील ने बड़ी उम्र के लड़के की तरह नज़र नीची कर ली जो मानो अपने जूतों की नोक से कुछ खोद रहा हो।

'आप मेरी वजह से शर्मिंदा थे।'

'मैं तुमको देखने आऊंगा,' वह बुदबुदाया। 'मैं काबुल आऊंगा और तुमसे मिलूंगा। हम-'

'नहीं। नहीं,' उसने कहा। 'मत आइएगा। मैं आपसे नहीं मिलूंगी। आप मत आइएगा। मैं आपसे कोई रिश्ता नहीं रखना चाहती। कभी भी। कभी भी।'

जलील ने चोट खाई नज़रों से उसे देखा।

'आपके और मेरे लिए यहीं सब कुछ ख़त्म होता है। अलविदा कहिए।'

'मुझे इस तरह मत छोड़ो,' जलील ने धीमी आवाज़ में कहा।

'आपमें इतनी शराफत भी नहीं थी कि आप मुझको मुल्ला फैज़ुल्ला को अलविदा कहने की मोहलत भी देते।'

वह मुड़ी और बस की तरफ़ चल पड़ी। वह अपने पीछे जलील के चलने की आवाज़ सुन रही थी। जब वह खुद से खुलने-बंद होने वाले दरवाज़ों के तक पहुंची तो पीछे से जलील की आवाज़ आई।

'मरियम जो।'

वह पायदान पर चढ़ी और हालांकि वह अपनी आंखों के कोनों से नीचे जलील को अपने साथ साथ चलते हुए देख सकती थी लेकिन उसने खिड़की की तरफ़ नहीं देखा। वह गलियारा पार करके पीछे गई जहां रशीद अपने पांवों के बीच में सूटकेस रखे हुए बैठा था। जब जलील की हथेलियां शीशे को दबा रही थीं और उंगलियां से वह शीशे को थपथपा रहा था, तब भी वह देखने के लिए नहीं मुड़ी। जब बस आगे की तरफ़ झटका खाते हुए बढ़ी तो वह जलील को इसके साथ-साथ तेज़ी से दौड़ते हुए देखने के लिए भी नहीं मुड़ी। और जब बस आगे बढ़ चली तो वह जलील को पीछे खड़े हाथ हिलाते हुए और धूल के बादलों में गायब हो जाने के लिए देखने को नहीं मुड़ी।

खिड़की के पास वाली और बीच की सीट को घेरे रशीद ने अपना मोटा हाथ मरियम के हाथों पर रख दिए।

'बस बच्ची। बस...बस...' उसने कहा। वह खिड़की की तरफ़ आंखें तिरछी किए देख रहा था मानो उसने कोई दिलचस्प चीज़ देख ली हो।

नौ

वे अगले दिन शाम होने से पहले रशीद के घर पहुंचे।

'हम देह-माज़ांग में हैं,' रशीद ने कहा। वे बाहर, फुटपाथ पर थे। उसने एक हाथ से सूटकेस पकड़ रखी थी और दूसरे से सामने का लकड़ी का दरवाज़ा खोल रहा था। 'यह शहर का दक्षिणी-पश्चिमी हिस्सा है। चिड़ियाघर यहां से पास में ही है और यूनिवर्सिटी भी।'

मरियम ने सिर हिलाया। वह जान चुकी थी जब वो बोल रहा हो तो उसे उनकी बातों को ग़ौर से सुनना होगा, भले ही वह उनको नहीं समझ पाए। वह काबुल की उसकी फ़ारसी और उसमें मिले पश्तो लहजे से परिचित नहीं थी जो कांधार में उसकी पुश्तैनी ज़ुबान थी। दूसरी तरफ़ रशीद को मरियम की हेरात की फ़ारसी को समझने में कोई दिक्कत नहीं लग रही थी।

मरियम ने जल्दी से उस संकरी, कच्ची सड़क पर नज़र दौड़ाई, जिसके किनारे रशीद का घर था। इस सड़क के किनारे बने घर एक दूसरे से बहुत सटे हुए थे, उनकी दीवारें आपस में मिलती थीं। इन घरों के सामने दीवारों से घिरा एक छोटा सा आंगन था, जो उनको सड़क से अलग करता था। अधिकतर घरों की छतें सपाट थीं और ईंटों की बनी हुई थीं, उनमें से कुछ मिट्टी की भी थीं, जो शहर को घेरे हुए पहाड़ों की तरह ही धूसर रंग के थे। दोनों तरफ़ गटर फुटपाथ को सड़क से अलग करते थे और उनमें कीचड़ से भरा पानी बहता रहता था। मरियम ने सड़क पर जहां-तहां बिखरे हुए, मक्खियों से भरे

कूड़े के ढेर देखे। रशीद का घर दो मंज़िला था। मरियम देख सकती थी कि यह कभी नीला रहा होगा।

रशीद के सामने का दरवाज़ा खोलने के बाद मरियम ने खुद को एक छोटे, गंदे आंगन में पाया जहां पतली पतली पट्टियों में पीली घास उग रही थी। मरियम ने दाहिनी तरफ़ के आंगन में एक आउट हाउस देखा और बाईं तरफ़ हैंडपंप वाला एक कुआं था जहां छोटे-छोटे पौधे सूख रहे थे। कुएं के पास ही औज़ारों को रखने के लिए बना एक शेड था और एक साइकिल दीवार से टिका कर रखी हुई थी।

'तुम्हारे अब्बा ने बताया कि तुमको मछली मारना पसंद है,' जब वे आंगन पार कर घर की तरफ़ बढ़ रहे थे तो रशीद ने कहा। मरियम ने देखा कि घर में पीछे की तरफ़ कोई आंगन नहीं है। 'यहां से उत्तर की तरफ़ वादियां हैं। नदी ख़ूब सारी मछलियों से भरी हुई है। शायद किसी दिन मैं तुमको ले चलूं।'

उसने दरवाज़ा खोला और उसे घर में दाख़िल होने दिया।

रशीद का घर जलील के घर से तो बहुत छोटा था लेकिन मरियम और नाना के कोल्बा के मुकाबले यह हवेली था। इसमें एक गलियारा था, बैठक थी और एक रसोई थी, जिसमें उसने मरियम को बर्तन, तसले, कुकर और एक किरासन *इस्टोप* दिखा। बैठक में हल्के हरे रंग का चमड़े का पलंग था। बग़लों से यह फट गया था जिसे भद्दे ढंग से सिला गया था। छतें नंगी थीं। वहां टेबल, बेंत की दो कुर्सियां, दो फोल्डिंग कुर्सियां और कोने में एक काला, लोहे का स्टोव था।

मरियम बैठक के बीच में खड़ी अपने चारों तरफ़ देख रही थी। कोल्बा में वह अपनी उंगलियों से छत को छू सकती थी। वह अपनी खाट पर पड़े पड़े खिड़की से आती धूप के कोण से समय बता सकती थी। वह जानती थी कि कितना खुलने के बाद उसके दरवाज़े के कब्ज़े टूट जाएंगे। वह लकड़ी के फर्श के तीसों टुकड़ों में से हरेक की खपच्चियों और दरारों को जानती थी। अब वे सारी जानी-पहचानी चीज़ें ख़त्म हो गई हैं। नाना मर चुकी है और वह खुद यहां, एक अजनबी शहर में थी और उस ज़िंदगी से अलग कर दी गई थी, जिसे वह उसकी वादियों, बर्फ़ से ढंकी पहाड़ियों और पूरे रेगिस्तानों के ज़रिए जानती थी। वह एक अजनबी के घर में थी, इसके अलग-अलग कमरे और सिगरेट के धुएं

की गंध के साथ, अनजाने बर्तनों से भरी अलमारी के साथ, इसके भारी, गहरे हरे रंग के पर्दों के साथ और एक छत के साथ जिसके बारे में वह जानती थी कि उस तक वह नहीं पहुंच पाएगी। इस जगह में मरियम का दम घुट रहा था। उसमें नाना, मुल्ला फैज़ुल्ला और अपनी पुरानी जिंदगी की तेज़ चाहत जगी।

तब उसने रोना शुरू किया।

'रोने की क्या बात है?' रशीद ने रूखेपन के साथ कहा। उसने अपनी पतलून की जेब में हाथ डाले, मरियम की उंगलियां खोलीं और उसकी हथेली में एक रूमाल रख दिया। उसने एक सिगरेट जलाई और दीवार के सहारे टिक गया। वह मरियम को रूमाल से आंखें पोंछते हुए देखता रहा।

'हो गया?'

मरियम ने सिर हिलाया।

'पक्का?'

'हां।'

तब उसने मरियम की कोहनी पकड़ी और बैठक की खिड़की तक ले गया।

'ये खिड़की उत्तर की तरफ़ खुलती है,' उसने शीशे को अपनी तर्जनी के टेढ़े नाखूनों से ठकठकाते हुए कहा। 'हमारे ठीक सामने वह अस्मई पहाड़ है- देखा?- और बाईं तरफ़ अली आबाद पहाड़ है। यूनिवर्सिटी इसके ठीक नीचे है। हमारे पीछे पूरब में शेर दरवाज़ा पहाड़ है जिसे तुम यहां से नहीं देख सकतीं। हर रोज़ दोपहर में वहां तोप दगती है। अब रोना बंद करो। मैं कहता हूं।'

मरियम ने अपनी आंखों पर हाथ फेरे।

'एक चीज़ मैं कभी नहीं बरदाश्त नहीं कर सकता,' उसने त्योरियां चढ़ाते हुए कहा। 'औरत के रोने की आवाज़। माफ़ करना। मैं इसे बरदाश्त नहीं कर सकता।'

'मैं घर जाना चाहती हूं,' मरियम ने कहा।

रशीद ने चिढ़ते हुए गहरी सांस ली। धुएं से भरी उसकी सांस मरियम के चेहरे से टकराई। 'मैं इस बार इसे निज़ी रूप में नहीं लूंगा। इस बार।'

फिर से उसने मरियम की कोहनी पकड़ी और उसे ऊपरी मंज़िल की तरफ़ ले चला।

ऊपर एक संकरा, फीकी रोशनी से भरा गलियारा और दो सोने के कमरे थे। बड़े कमरे का दरवाजा हल्का खुला हुआ था। उसमें से मरियम देख सकती थी कि बाक़ी घर की तरह यह भी बिखरा-बिखरा हुआ है : कोने में बिस्तर, एक बादामी कंबल और तकिया, एक अलमारी और एक ड्रेसर। दीवारें खाली थीं, बस एक छोटा सा शीशा लगा हुआ था। रशीद ने दरवाजा बंद कर दिया।

'यह मेरा कमरा है।'

उसने मरियम से कहा कि वह मेहमानखाने में रह सकती थी। 'उम्मीद है कि तुम बुरा नहीं मानोगी। मुझे अकेले सोने की आदत है।'

मरियम ने उसे नहीं बताया कि कम से कम इस बात से उसे कितनी राहत मिली है।

जो कमरा मरियम का होने वाला था, वह उस कमरे से काफ़ी छोटा था, जिसमें वो जलील के घर में रुकी थी। उसमें एक बिस्तर, एक पुराना काला-भूरा ड्रेसर और एक छोटी अलमारी थी। खिड़की से आंगन और उसके पार सड़क दिखती थी। रशीद ने उसका सूटकेस कोने में रख दिया।

मरियम बिस्तर पर बैठ गई।

'तुमने ग़ौर नहीं किया,' उसने कहा। वह दरवाज़े में ही रुक गया था और अंटने के लिए थोड़ा झुक गया था। 'खिड़की के पत्थरों पर देखो। जानती हो वो क्या हैं? हेरात के लिए निकलने से पहले मैंने उनको रखा था।'

अब जाकर मरियम पत्थर पर रखी टोकरी देख पाई। सफ़ेद मरियम (रजनीगंधा) के फूल इसके दोनों तरफ़ लटके हुए थे।

'तुमको पसंद आए? तुम खुश हुईं?'

'हां।'

'तो तुम मुझे शुक्रिया कह सकती हो।'

'शुक्रिया। माफ़ कीजिएगा। तशक्कुर-'

'तुम कांप रही हो। शायद मैं तुमको डरा रहा हूं? क्या मैं तुमको डरा रहा हूं? क्या तुमको मुझसे डर लग रहा है?'

मरियम उसकी तरफ़ नहीं देख रही थी, लेकिन वह इस सवाल में छुपे कुरेदते हुए मज़ाक को महसूस कर पा रही थी। उसने इन्कार में अपना सिर हिलाया जिसे उसने अपनी शादीशुदा ज़िंदगी का पहला झूठ माना।

'नहीं? तो अच्छा है। तुम्हारे लिए अच्छा है। खैर अब यह तुम्हारा घर

है। तुमको यहां रहना अच्छा लगेगा। तुम देख लोगी। क्या मैंने तुमको बताया कि यहां बिजली है? अधिकतर दिन में और हर रात में बिजली रहती है।'

उसने जताया कि अब वह जाएगा। दरवाज़े पर वह थोड़ा रुका, उसने एक लंबा कश लिया और धुएं से अपनी आंखें सिकोड़ीं। मरियम को लगा कि वह कुछ कहने जा रहा है। लेकिन उसने कुछ नहीं कहा। उसने दरवाज़ा बंद कर दिया और उसे उसके सूटकेस और फूलों के साथ अकेला छोड़ दिया।

दस

शुरुआती कुछ दिनों में मरियम मुश्किल से ही अपने कमरे से बाहर निकली। हर सुबह नमाज़ के लिए दूर से आती अज़ान की आवाज़ के साथ उठती और इसके बाद फिर से अपने बिस्तर में दुबक जाती। बिस्तर से ही वो रशीद को बाथरूम में नहाते, धोते सुनती और जब वो दुकान के लिए निकलने से पहले उसे देखने उसके कमरे में आता, तब भी वो बिस्तर में ही होती। अपनी खिड़की से वो उसे आंगन में अपना दोपहर का खाना साइकिल के पिछले कैरियर पर बांधते हुए देखती, जिसके बाद वह साइकिल को आंगन के पार ले जाते हुए सड़क पर चला जाता। वह उसे पैडल मारते हुए जाती देखती, उसके चौड़े, मोटे कंधों वाली आकृति को नुक्कड़ पर नज़रों से ओझल होते देखती।

अधिकतर दिन मरियम बिस्तर में ही रही जहां वो दिशाहीन और लाचार सी महसूस करती। कभी कभी वह नीचे उतर कर रसोई तक जाती जहां वह चिपचिपे, ग्रीज़ के धब्बों से सने ओटे पर, विनाइल पर, जले हुए खाने की गंध से भरे फूलदार पर्दों पर हाथ फिराती। वह बेढब दराजों, बेमेल चम्मचों और छुरियों, छलनी और छिपटी को, लकड़ी की लेपनी को छान मारती, जो उसकी आनेवाली नई ज़िंदगी के औज़ार होने वाले थे। ये सारे उसे उस तबाही की याद दिलाते थे जो उसकी ज़िंदगी पर छा गई थी और उसे अपनी जड़ों से उखड़ा हुआ, विस्थापित महसूस कराते, मानो वह किसी की ज़िंदगी में दाख़िल हो गई कोई घुसपैठिया हो।

उसके कोल्बा में उसकी भूख का अंदाज़ा लगाया जा सकता था। यहां उसका पेट खाने की शायद ही कभी मांग करता था। कभी कभी वह बैठक में खिड़की के पास जाकर वो बचे हुए भात और रोटी का एक टुकड़ा खा लेती। वहां से वह अपनी सड़क से लगे एकमंजिला घरों की छतों को देख सकती थी। वह उनके आंगन भी देख सकती थी, जहां वो औरतों को कपड़े धोते और अपने बच्चों को भगाते हुए देखती, मुर्गियों को धूल में चारा खोजते हुए, फावड़ों और कुदालों को रखे हुए और गायों को पेड़ों से बंधे हुए देखती।

वह गर्मियों की उन रातों को बड़ी ललक के साथ याद करती जब गुल दामन के ऊपर चमक रहे चांद को देखते हुए वो और नाना कोल्बा की सपाट छत पर सोतीं। रात इतनी गर्म होती कि उनकी कमीज़ें खिड़की से चिपकी गीली पत्ती की तरह उनके सीने से चिपक जातीं। वह सर्दियों की दोपहर बाद की कोल्बा में मुल्ला फैज़ुल्ला से पढ़ाई की कमी महसूस करती, अपनी छत पर पेड़ों से टूट कर गिरते बर्फ़ के टुकड़ों को याद करती, बाहर बर्फ़ से झुकी टहनियों पर बोलते कौवों को याद करती।

घर में अकेले मरियम बेचैनी से रसोई से बैठक, ऊपर अपने कमरे से नीचे तक घूमती रहती। अंत में वह अपने कमरे में वापस लौट आती जहां वह नमाज़ पढ़ती या अपने बिस्तर पर बैठी रहती, अपनी अम्मी को शिद्दत से याद करते हुए वह पाती कि वह नफ़रत से भरती जा रही है और अपने घर के लिए बेचैन हो जाती।

सूरज पश्चिम में ढल रहा होता जब मरियम की बेचैनी अपने चरम पर पहुंच जाती। रात के बारे में सोच कर उसके दांत बज उठते, कि किसी रात आख़िरकार रशीद उसके साथ वह करने का फैसला कर सकता है जो सारे शौहर अपनी बीवियों के साथ करते हैं। जब रशीद नीचे अकेले खा रहा होता तो वह भावनात्मक रूप से टूट कर बिस्तर में पड़ जाती।

वह हमेशा उसके कमरे के पास रुकता और अंदर सिर घुसा कर देखता।

'तुम इतनी जल्दी नहीं सो सकतीं। अभी बस सात बजे हैं। क्या तुम जगी हो? जवाब दो। चलो, अभी आओ।'

वह अंधेरे में खड़ा तब तक जोर देता रहता, जब तक मरियम नहीं कहती, 'मैं यहीं हूं।'

वह सरक आता और उसके चौखटे में बैठ जाता। अपने बिस्तर से वो

उसकी बड़ी सी देह के ढांचे को, उसकी लंबी टांगों को, उसकी नुकीली नाक के पास उमड़ते सिगरेट के धुएं को, उसकी सिगरेट की चमकती और मंद पड़ते दमकते सिरे को देखती।

वह बताता कि उसका दिन कैसे गुज़रा। रशीद ने बताया कि उसने जूतों का एक जोड़ा खासतौर से उप विदेश मंत्री के लिए बनाया है, जो केवल उसी के यहां से जूते ख़रीदते हैं। उसे पोलैंड के एक कूटनीतिज्ञ और उसकी पत्नी के लिए चप्पलों का ऑर्डर मिला है। वह उसे बताता कि लोगों में जूतों को लेकर कैसे-कैसे अंधविश्वास मौजूद हैं: कि उनको बिस्तर पर रख देना परिवार में मौत को दावत देना है, कि अगर कोई बायां जूता पहले पहन ले तो उसका किसी से झगड़ा हो सकता है।

'जब यह जुमे को बिना किसी इरादे के किया जाए तो ऐसा नहीं होता,' उसने बताया। 'और तुमको पता है कि जूतों को आपस में बांध कर खूंटी पर टांग देना बुरा शगुन है?'

रशीद खुद इनमें से किसी पर यकीन नहीं करता। उसकी राय में अंधविश्वास सबसे अधिक औरतों की परेशानी थे।

वह उसे सड़कों पर सुनी हुई बातें सुनाता जैसे कि अमेरिकी राष्ट्रपति रिचर्ड निक्सन ने कैसे एक कांड के बाद इस्तीफा दे दिया है।

मरियम ने कभी निक्सन या उस कांड के बारे में कभी नहीं सुना था जिससे वो इस्तीफा देने को मजबूर हुआ था और वो जवाब में रशीद को कुछ भी नहीं कहती। वह रशीद की बातें ख़त्म होने, सिगरेट को बुझाने और वहां से चले जाने का बेकरारी से इंतज़ार करती। जब वह उसे गलियारा पार करके अपना दरवाज़ा खोलते और बंद करते हुए नहीं सुन लेती तब तक उसके पेट को जकड़ी हुई लोहे की मुट्ठी ढीली नहीं पड़ती।

फिर एक रात उसने सिगरेट बुझाई और गुड नाइट कहने की जगह वो चौखटे पर झुक गया।

'क्या तुम उस चीज़ को कभी खोलोगी भी?' उसने उसके सूटकेस की तरफ़ इशारा करते हुए कहा। रशीद ने अपने हाथ बांध लिए। 'मेरा अंदाज़ा है कि तुमको शायद कुछ वक़्त चाहिए। लेकिन यह तो बकवास है। एक हफ़्ता गुज़र गया है और...खैर मैं उम्मीद करता हूं कि कल सवेरे से तुम बीवियों की तरह बर्ताव करने लगोगी। समझीं?'

मरियम के दांत बजने लगे।

'मुझे जवाब चाहिए।'

'हां।'

'बढ़िया,' उसने कहा। 'तुम क्या सोचती हो? कि यह कोई होटल है? कि मैं कोई होटलवाला हूं? खैर, यह...ओह...ओह...*ला इलाह इलल्लाह।* मैंने रोने के बारे में क्या कहा था? मरियम। क्या कहा था मैंने रोने के बारे में तुमसे?'

अगली सुबह रशीद के काम पर जाने के बाद मरियम ने अपने बंधे हुए कपड़े निकाले और उन्हें ड्रेसर में लगा दिया। कुएं से वह एक डोल पानी निकाल लाई और एक चीथड़े के साथ उसने अपने कमरे और नीचे बैठक की खिड़कियों को साफ़ किया। उसने फर्श बुहारा, छत से झूलते मकड़ी के जालों को साफ़ किया। घर में हवा आने के लिए उसने खिड़कियां खोल दीं।

उसने एक बर्तन में तीन प्याली मसूर की दाल को फूलने के लिए डाला, एक छुरी खोजी और कुछ गाज़र और दो आलू काटे और उनको भी पानी में डाल कर छोड़ दिया। उसने आटे की तलाश की जो उसे मसाले के गंदे मर्तबानों की कतार के पीछे की कैबिनेटों में मिला। आटे को हथेलियों से दबाते हुए, कोनों से मोड़ते हुए, घुमाते हुए और फिर से दबाते हुए उसने नाना के बताए तरीके से आटे को गूंधा। आटा गूंध लेने के बाद उसने उसे एक गीले कपड़े में लपेटा, फिर एक हिजाब पहनी और एक सामुदायिक तंदूर का इंतज़ाम करने के लिए निकली।

रशीद ने से बताया था कि यह कहां था। सड़क पर आगे जाकर बाईं तरफ़ मुड़ने के फौरन बाद दाहिनी तरफ़ मुड़ना होगा। लेकिन मरियम को बस औरतों और बच्चों के झुंड के साथ-साथ चलते जाना था, जो उसी तरफ़ जा रहे थे। मरियम ने देखा कि अपनी मांओं के आगे-पीछे भाग रहे बच्चों ने जो कमीज़ें पहन रखी थीं, उनमें पैबंदों के ऊपर पैबंदें लगी थीं। उनके पाजामे या तो बहुत बड़े थे या बहुत छोटे, उनकी चप्पलों में चीथड़ों के फीते लगे थे जो आगे-पीछे झूल रहे थे। वे छड़ियों से साइकिलों के पुराने टायर नचा रहे थे।

उनकी मांएं तीन या चार के झुंडों में चल रही थीं। कुछ ने बुर्के पहन

रखे थे, कुछ ने नहीं। मरियम उनकी तेज़ गपशप और ऊंचे ठहाकों को सुन सकती थी। अपना सिर झुकाए हुए वह उनके हंसी-मज़ाक को सुन रही थी जो ऐसा लगता था कि हमेशा ही अपने बीमार और आलसी बच्चों और नाशुक्रे शौहरों के बारे में हुआ करती थी।

मानो खाना खुद बन जाता हो।

वल्लाहो बिल्लाह, *एक मिनट का आराम नहीं!*

और कसम से वो मुझसे कहते हैं, सचमुच में वो मुझसे कहते हैं...

कभी नहीं ख़त्म होने वाली यह बातचीत, फरियाद का लहजा लेकिन अजीब तरह से चहक़ती हुई बातें घूम-फिर कर चलती रहतीं। रास्तों पर, गलियों में, नुक्कड़ों पर, तंदूर की कतार में यही बातें। जुआ खेलने वाले शौहरों की बातें। मांओं के प्यार में डूबे शौहरों की बातें जो बीवियों पर एक रुपया खर्च नहीं करते। मरियम को हैरानी हुई कि कैसे इतनी सारी औरतें एक ही बदकिस्मती से गुज़र रही हैं कि उन सबकी शादी ऐसे डरावने मर्दों से हुई थी। या यह आटा गूंधने और चावल भिगोने जैसा बीवियों की रोज़ की कोई रस्म थी, जिसके बारे में वह नहीं जानती थी? क्या वे उम्मीद कर रही थीं वह भी जल्दी ही उनमें शामिल हो जाएगी?

तंदूर की कतार में मरियम ने अगल-बग़ल से अपने ऊपर पड़ती निगाहें देखीं और फ़ुसफ़ुसाहटें सुनीं। उसकी हथेलियों में पसीने आ गए। उसने कल्पना की शायद वे सब जानती हैं कि वह हरामी थी, जो अपने अब्बा और परिवार के लिए शर्म का सबब थी। वे सब जानती थीं कि उसने अपनी अम्मी को धोखा दिया था और ख़ुद को अपमानित किया था।

अपने हिजाब के कोने से उसने अपने ऊपरी होंठों पर से पसीना पोंछा और अपनी हिम्मत जुटाने की कोशिश करने लगी।

कुछ मिनटों तक सब ठीक चल रहा था।

तभी किसी ने उसके कंधे को थपथपाया। मरियम पीछे मुड़ी और उसने अपनी ही तरह का हिजाब पहने हुए एक हल्के रंग की, मोटी औरत को देखा। उसके छोटे, कड़े बाल थे और हंसमुख, कमाल का गोल चेहरा था। उसके होंठ मरियम से भी ज़्यादा उभरे हुए थे, जिसमें नीचे का होंठ थोड़ा लटका हुआ था मानों उसे होंठों के ठीक नीचे के बड़े, काले तिल ने अपनी तरफ़ खींच रखा हो। उसकी आंखें हरी-सी थीं जो मरियम को दावत देती हुई सी चमक

रही थीं।

'तुम रशीद जान की नई बीवी हो, है न?' औरत ने खुल कर मुस्कुराते हुए कहा। 'हेरात वाली। तुम कितनी छोटी हो! तुम्हारा नाम मरियम जान है न? मेरा नाम फरीबा है। मैं तुम्हारी गली में ही रहती हूं, तुम्हारे घर से बाएं, पांच घरों के बाद हरे दरवाजे वाला घर मेरा है। ये मेरा बेटा है नूर।'

उसकी बगल में खड़ा बच्चे का चिकना, खुशनुमा चेहरा और अपनी अम्मी की तरह ही कड़े बाल थे। उसके बाएं कान के लौ पर काले बालों का एक गुच्छा था। उसकी आंखें शरारत से भरी थीं और उनमें एक बेचैन रोशनी थी। उसने अपना हाथ उठाया। 'सलाम खाला जान।'

'नूर दस साल का है। इससे बड़ा मेरा एक और बेटा है, अहमद।'

'वो तेरह का है,' नूर ने कहा।

'चौदहवां लग रहा है।' फरीबा हंसी। 'मेरे शौहर का नाम हक़ीम है,' उसने कहा। 'वे यहां देह माज़ंग में टीचर हैं। तुम हमारे यहां कभी-कभार आओ, हम मिल कर चाय—'

और तभी अचानक फरीबा के पीछे की औरतें आगे आ गईं और मरियम को घेर कर खड़ी हो गईं, मानों अचानक उनमें साहस आ गया हो।

'तो तुम हो रशीद जान की छोटी बीवी—'

'काबुल तुम्हें कैसा लगा?'

'मैं हेरात में रही थी। वहां मेरा एक चचेरा भाई रहता है।'

'तुम पहला बच्चा क्या चाहती हो? लड़का या लड़की?'

'मीनारें! ओह क्या ख़ूबसूरत हैं! क्या शानदार शहर है!'

'लड़का मायने रखता है, मरियम जान। उनसे खानदान चलता है—'

'अरे नहीं! लड़के शादी करते हैं और चले जाते हैं। लड़कियां साथ रह जाती हैं और बुढ़ापे में वही देखभाल करती हैं।'

'हमने तुम्हारे आने के बारे में सुना था।'

'जुड़वां पैदा करो! एक लड़की, एक लड़का! फिर तो हर कोई खुश रहेगा।'

मरियम पीछे हटी। उसका दम फूल गया था। उसके कान बज रहे थे, उसकी नब्ज़ तेज़ चल रही थी और उसकी आंखें एक चेहरे से दूसरे पर उड़ रही थीं। वह फिर से पीछे हटी लेकिन जाने के लिए कोई राह नहीं थी—वह

एक घेरे के बीच में थी। उसने फरीबा को तलाशा जो मन ही मन ग़ुस्सा हो रही थी। उसने देखा कि मरियम तनाव में है।

'जाने दो उसे!' फरीबा कह रही थी। 'चलो हटो, जानो दो उसे! तुम लोग उसे डरा रही हो!'

मरियम ने गुंधा हुआ आटा अपने सीने से लगा लिया और अपने चारों ओर की भीड़ को धकेलते हुए आगे बढ़ने की कोशिश करने लगी।

'तुम कहां जा रही हो हमशीरा?'

किसी तरह खुले में आने तक वह उनको धकेलती रही और फिर वह सड़क की तरफ़ दोड़ चली। जब तक वो चौराहे तक नहीं पहुंच गई तब तक उसे इसका एहसास नहीं हुआ कि वह ग़लत रास्ते पर जा रही थी। वह मुड़ी और वापस दूसरी दिशा में दौड़ी। उसके पांव लड़खड़ाए और वो गिर पड़ी। उसका घुटना बुरी तरह छिल गया। वह उठी और फिर पीछे की औरत को झटका देते हुए दौड़ने लगी।

'तुमको क्या परेशानी है?'

'तुमसे ख़ून बह रहा है हमशीरा!'

मरियम एक नुक्कड़ पर मुड़ी और फिर दूसरे पर। उसे सही गली तो मिल गई लेकिन फौरन वो याद नहीं कर सकी कि रशीद का घर कौन है। वह पूरी सड़क पर हांफते हुए दौड़ती रही। उसे रुलाई आ रही थी। अब वो आंख मूंद कर एक एक दरवाज़ा देख रही थी। कुछ में ताले लगे थे, दूसरे खुले थे जिनके पार पराए आंगन, भौंकते हुए कुत्ते और भौंचक बच्चे मिले। उसने कल्पना की कि रशीद काम से लौटेगा तो वो उसके घुटने से ख़ून बहते हुए और अपनी सड़क पर खोए हुए और उसे अभी भी अपना घर खोजते हुए पाएगा। अब वो रोने लगी। वह तब तक आंसुओं से नम अपने चेहरे और खुली आंखों के साथ दरवाज़ों को धक्का देती रही और खौफज़दा फरियादें करती रही जब तक कि उसे आउटहाउस, कुआं और औजार रखने वाला छप्पर नहीं दिख गया। उसे सुकून मिला। उसने धड़ाक से दरवाज़ा बंद किया और चिटखनी चढ़ाई। और फिर वो कुएं के पास हाथों-पैरों के बल झुकी उल्टी करने लगी। जब वो इससे उबरी तो रेंगते हुए वो कुएं से टिक कर बैठी और अपने पांव सामने फैला दिए। अपनी ज़िंदगी में उसने खुद को इतना अकेला कभी महसूस नहीं किया था।

रात में घर लौटते हुए रशीद अपने साथ बादामी रंग का कागज़ का थैला लेकर आया। मरियम के इससे निराशा हुई कि उसने साफ़ खिड़कियों, बुहारे हुए फर्श और हटाए जा चुके मकड़ी के जालों की तरफ़ ग़ौर नहीं किया। लेकिन वह इससे ख़ुश दिखा कि मरियम ने बैठक के फर्श पर एक साफ़ *सोफरे* पर उसके लिए रात का खाना तैयार रखा है।

'मैंने दाल बनाई है,' मरियम ने कहा।

'बढ़िया। भूख से मेरी जान जा रही है।'

उसने रशीद के हाथ धोने के लिए के लिए *अफ़्तवा* से पानी उंड़ेला। जब वो तौलिए से अपने हाथ पोंछ रहा था, मरियम ने उसके लिए भाप छोड़ती दाल का कटोरा और खिले हुए सफ़ेद चावल परोस दिया। यह मरियम द्वारा उसके लिए बनाया गया पहला खाना था और मरियम ने चाहा था कि इसे बनाते वक़्त वो अच्छी हालत में रही होती। खाना बनाते हुए भी वो तंदूर के पास घटी घटनाओं से कांप रही थी और पूरे वक़्त वो दाल के गाढ़ेपन और इसके रंग को लेकर परेशान रहीं था। वो फिक्र कर रही थी कि कहीं रशीद ये न सोचे कि उसने ज़्यादा अदरक डाल दी है या कम हल्दी डाली है।

उसने सुनहरी दाल में अपनी चम्मच डुबोई।

मरियम थोड़ी हिली। क्या हो अगर वो इससे निराश या ग़ुस्सा हो जाए? क्या हो अगर नाराज़गी में वो प्लेट को दूर हटा दे?'

'देख कर,' उसने कुछ कहने की कोशिश की। 'गर्म है।'

रशीद ने होंठ सिकोड़े और फूंका, फिर चम्मच को मुंह में डाल लिया।

'अच्छी है,' उसने कहा। 'थोड़ा नमक कम है, लेकिन अच्छी है। बल्कि अच्छी से भी बढ़िया है।'

इससे मिली राहत के साथ मरियम उसे खाती हुई देखती रही। गर्व की एक लहर उसमें दौड़ गई। *उसने अच्छे से किया था। बल्कि अच्छे से भी बढ़िया।* और इससे उसे हैरानी हुई थी। रशीद की छोटी सी तारिफ से वो रोमांचित हो गई थी। उस दिन की उसकी परेशानियां थोड़ी हल्की हो गईं।

'कल जुमा है,' रशीद ने कहा। क्या कहती है, मैं तुम्हें घुमाने ले चलूंगा।'

'काबुल के पास?'

'नहीं कलकत्ता।'

बात को नहीं समझते हुए मरियम ने पलकें झपकाईं।

'मज़ाक था। बेशक काबुल में ही। और कहां?' उसने बादामी काग़ज़ की तरफ़ हाथ बढ़ाया। 'लेकिन पहले मैं तुमको कुछ बताना चाहता हूं।'

उसने थैले से एक आसमानी रंग का एक बुर्का निकाला। जब उसने बुर्के को उठाया तो तह किए हुए कपड़े उसके घुटनों पर बिखर गए। उसने बुर्के को लपेटा और मरियम की तरफ़ देखा।

'मेरे मर्द ग्राहक़ हैं मरियम जो अपनी बीवियों को दुकान पर लाते हैं। बिना पर्दे वाली औरतें मुझसे सीधे बात करती हैं, मेरी आंखों में बिना शर्म के देखती हैं। वे मेकअप करती हैं और ऐसे स्कर्ट पहनती हैं जिनमें उनके घुटने दिखते हैं। कभी कभी वे अपने पांव भी मेरे सामने नापने के लिए रख देती हैं और वहीं उनके शौहर खड़े देखते रहते हैं। वे इसकी इजाज़त देते हैं। वे इसके बारे में कुछ नहीं सोचते कि पराए मर्द उनकी बीवियों के नंगे पांव छूते हैं! मेरा अंदाज़ा है कि वो सोचते हैं कि वो अपनी तालीम की वजह से मॉडर्न और दानिशमंद लोग हैं। वे नहीं देखते कि इस तरह वे अपने नंग-ओ-नामूस को, अपनी इज़्ज़त और मर्यादा को ख़राब कर रहे हैं।'

रशीद ने अपना सिर झटका।

'अधिकतर ऐसे लोग काबुल के अमीरों वाले इलाकों में रहते हैं। मैं तुमको वहां ले चलूंगा। तुम देखोगी। लेकिन ऐसे नर्म लोग यहां ठीक हमारे पड़ोस में भी रहते हैं। इसी गली में एक टीचर रहता है। हाकिम उसका नाम है। और मैं उसकी बीवी फरीबा को हर समय गली में बिना किसी काम के अकेले चलते हुए देखता हूं। उसके सिर पर दुपट्टे के सिवा कुछ नहीं होता। साफ़ बोलूं तो ऐसे आदमी को देख कर मुझे शर्म आती है जिसका अपनी बीवी पर से काबू न रह गया हो।'

उसने मरियम पर तीखी निगाह डाली।

'लेकिन मैं अलग किस्म का आदमी हूं मरियम। मैं जहां से आया हूं वहां एक नामुनासिब निगाह, एक नामुनासिब बात पर ख़ून बह जाता है। जहां से मैं आया हूं वहां औरत का चेहरा सिर्फ़ उसके शौहर के लिए होता है। मैं चाहता हूं कि तुम इसे याद रखो। समझीं?'

मरियम ने सहमति में सिर हिलाया। जब उसने अपना थैला मरियम की तरफ़ बढ़ाया तो उसने उसे ले लिया।

खाना बनाने पर मिली तारीफ से पैदा हुई ख़ुशी मिट गई थी। इसकी जगह समेटने के भाव ने ले लिया था। मरियम को यह आदमी गुल दामन में फैले हुए सफ़ेद-कोह पहाड़ों की तरह दूसरों पर ख़ुद थोपने वाला और अडिग लगा।

रशीद ने उसे काग़ज़ का थैला थमा दिया। 'तो फिर हम इस पर राज़ी हैं। अब मुझे थोड़ी और दाल दो।'

ग्यारह

मरियम ने कभी बुर्का नहीं पहना था। रशीद ने उसे पहनने में मदद की। सिर वाला गद्देदार हिस्सा उसे सिर पर कसा हुआ और भारी लगा और उसके जालीदार पर्दे के भीतर से दुनिया को देखना अजीब था। उसने बुर्का पहन कर अपने कमरे में चल कर जब इसका अभ्यास किया तो उसके पांव उसके किनारे पर पड़ जाते और वो लड़खड़ा जाती। अगल-बग़ल के दृश्य बुर्के से ढक जा रहे थे और यह परेशान करने वाला था। उसे यह भी पसंद नहीं आया कि बुर्के का तहदार कपड़ा उसका मुंह दबा रहा है और उससे उसका दम घुट रहा है।

'तुमको इसकी आदत हो जाएगी,' रशीद ने कहा। 'मैं शर्त लगा सकता हूं समय के साथ तुम इसे पसंद भी करने लगोगी।'

उन्होंने एक जगह के लिए बस पकड़ी जिसे रशीद शार-ए-नौ पार्क कह रहा था। बच्चे वहां झूलों पर झूल रहे थे और पेड़ के तनों से बंधे चीथड़े हो आई जाली के ऊपर वॉलीबॉल उछाल रहे थे। वे साथ-साथ टहलते रहे और बच्चों को पतंगें उड़ाते देखते रहे। अपने बुर्के के किनारे में उलझती हुई मरियम रशीद की बग़ल में चल रही थी। दोपहर के खाने के लिए रशीद उसे मस्जिद के करीब कबाब की एक छोटी-सी दुकान में ले गया। मस्जिद का नाम उसने हाजी यागूब मस्जिद बताया। दुकान का फर्श चिपचिपा था और हवा में धुआं भरा हुआ था। दीवारों से कच्चे गोश्त की हल्की गंध आ रही थी और तेज़ आवाज़ में संगीत बज रहा था, जिसके बारे में रशीद ने बताया कि वो लोगारी

संगीत है। खाना बनानेवाले दुबले-पतले छोकरे थे, जो एक हाथ से सींखों पर पंखे से हवा कर रहे थे और दूसरे हाथ से उड़ती हुई मक्खियों को भगा रहे थे। मरियम कभी किसी रेस्टोरेंट के भीतर नहीं गई थी और उसे ऐसी भीड़ भरी जगह में, इतने अजनबियों के बीच बैठना और मुंह में निवाले डालने के लिए बुर्का उठाना अजीब लगा। ऐसी ही घबराहट उसे उस दिन तंदूर के पास महसूस हुई थी, लेकिन रशीद की मौजूदगी उसे थोड़ी राहत दे रही थी। और कुछ देर के बाद उसे संगीत, धुआं और लोगों पर से भी उसका ध्यान हट गया। और उसे हैरानी हुई कि बुर्का भी उसे राहत दे रहा था। यह एकतरफ़ा खिड़की की तरह था। इसके भीतर से वह सबकुछ देख सकती थी लेकिन पराए लोगों की भेदती हुई नज़रों से बची हुई थी। अब उसे इसकी फिक्र नहीं थी कि लोग एक ही नज़र में उसके पिछले अतीत के शर्मनाक राज़ों को जान जाएंगे।

सड़कों पर चलते हुए रशीद ने उसे अनेक सरकारी इमारतों के नाम बताए : यह अमेरिकी दूतावास है, यह विदेश मंत्रालय है। उसने कारों की तरफ़ इशारा किया, उनके नाम और उन जगहों के नाम बताए जहां वो बनी थीं : सोवियत वोल्गा, अमेरिकी शेवर्ले, जर्मन ओपेल।

'तुमको कौन पसंद आई?' रशीद ने पूछा।

मरियम ने हिचकिचाते हुए वोल्गा की तरफ़ इशारा किया और रशीद हंस पड़ा।

काबुल उस थोड़े-से हेरात से जिसे मरियम ने देखा था कहीं ज़्यादा भीड़ भरा था। यहां उससे कम पेड़ थे और कहीं कम गाड़ियां घोड़ों से चलती थीं। यहां हेरात से ज़्यादा कारें, ऊंची इमारतें, अधिक ट्रैफिक बत्तियां और ज़्यादा पक्की सड़कें थीं। और हर कहीं मरियम ने शहर की अजीब-सी बोली सुनी : प्रिय के लिए जो की जगह जान, बहन के लिए हमशीरे की जगह हमशीरा, और इसी तरह दूसरे शब्द।

सड़क पर एक फेरीवाले से रशीद ने मरियम के लिए आइसक्रीम ख़रीदी। उसने पहली बार आइसक्रीम खाई और मरियम ने कभी इसकी कल्पना नहीं की थी कि जीभ पर ऐसी तरकीबें आजमाई जा सकती हैं। वह पूरा कटोरा जल्दी से खा गई- गिरी के बुरादे वाला ऊपर का हिस्सा, तले में छोटी-छोटी सेवइयों जैसा हिस्सा, सब कुछ। उसे मुग्ध करने वाली छुअन और मिठास पर मर मिटी।

वे कूचा-मुर्ग यानी चिकन स्ट्रीट नामक जगह से होकर गुज़रे। यह संकरा, भीड़ भरा बाज़ार उस मुहल्ले में था, जिसे रशीद ने अमीरों वाला इलाके में से एक बताया।

'इसके आसपास विदेशी कूटनीतिज्ञ, अमीर कारोबारी, शाही परिवार के सदस्य- इसी तरह के लोग रहते हैं। यहां मेरी-तुम्हारी तरह के लोग नहीं रहते।'

'मुझे यहां कोई मुर्गा नहीं दिख रहा,' मरियम ने कहा।

'यही वह चीज़ है जो तुमको चिकन स्ट्रीट में नहीं मिलेगी,' रशीद हंसा।

सड़क की दोनों तरफ़ भेड़ की खाल की टोपियों और सतरंगे चापन की दुकानों और छोटे खोखों की कतारें थीं। एक दुकान में रशीद चांदी के कामवाली छुरी देखने के लिए रुका और दूसरी में एक पुराना राइफल देखने के लिए, जिसके बारे में दुकानदार ने उसे यकीन दिलाया कि वो ब्रिटिशों के ख़िलाफ़ पहली जंग के दौरान की एक तारीखी बंदूक थी।

'और मैं मोशे दयान हूं,' रशीद बुदबुदाया। वो हल्के से मुस्कुराया और मरियम को लगा कि यह मुस्कान उसी के लिए थी। एक निजी, शादीशुदा आदमी की मुस्कान।

वे कालीनों, हैंडीक्राफ्टों, मिठाइयों, फूलों की दुकानों और उन दुकानों से होकर गुज़रे जिनमें मर्दों और औरतों के लिए कपड़े बिक रहे थे। मरियम ने उनमें लेस के पर्दे के पीछे नौजवान लड़कियों को बटन सीते और कॉलर प्रेस करते हुए देखा। समय-समय पर रशीद जान-पहचान के दुकानदारों से दुआ-सलाम करता। कभी वे फ़ारसी में बोलते और कभी पश्तो में। जब वे हाथ मिलाते और गालों पर चूमते, मरियम कुछ क़दम दूर खड़ी रहती। रशीद ने कभी उसे पास नहीं बुलाया और न ही उसको किसी से मिलवाया।

उसने मरियम को कसीदाकारी की दुकान के बाहर इंतज़ार करने को कहा। 'मैं इसके मालिक को जानता हूं,' उसने कहा। 'मैं बस दुआ-सलाम करने कुछ मिनटों के लिए जा रहा हूं।'

मरियम ने बाहर भीड़ से भरे फुटपाथ पर इंतज़ार किया। उसने चिकन स्ट्रीट में चलती कारों को देखा जो रास्ते पर खड़े सामान बेचने वालों और पैदल चलने वालों की भीड़ के बीच राह बनाती हुई चल रही थीं और बच्चों और अपनी जगह पर अडिग बंदरों पर हॉर्न बजा रही थीं। उसने छोटे खोखों में ऊबे हुए दिख रहे व्यापारियों को देखा जो सिगरेट पी रहे थे और तांबे की चिलमचियों

में थूक रहे थे। आने-जाने वालों को कपड़ा और फर के कॉलर वाले *पुस्तीन* कोट दिखाते हुए उनके चेहरे साए में जब-तब उभर आते थे।

लेकिन मरियम की निगाहें सबसे ज़्यादा औरतों पर गईं।

काबुल के इस हिस्से में औरतें उन गरीब मुहल्लों की औरतों से अलग किस्म की थीं, जिनमें वो और रशीद रहते थे। उन इलाकों में तो इतनी सारी औरतें पूरी तरह ढकी रहती थीं। जबकि इस इलाके में औरतें...रशीद ने कौन-सा शब्द इस्तेमाल किया था?—'आधुनिक' थीं। हां, ये आधुनिक अफ़ग़ानी औरतें जिन आधुनिक अफ़ग़ानी मर्दों से ब्याही गई थीं, उनको इस पर कोई आपत्ति नहीं थी कि वे मेकअप करके बिना सिर पर कुछ डाले परायों के बीच चलती थीं। मरियम उनको सड़क पर मनचाहे तरीके से तेज़-तेज़ चलते हुए देख रही थी। कभी-कभी वे मर्दों के साथ होतीं, कभी अकेली और कभी चमकते हुए जूते और घड़ी और चमड़े की पट्टियां पहने हुए, गुलाबी गालों वाले बच्चों के साथ। ये बच्चे ऊंची हैंडल और सुनहरे तारों वाली साइकिल पकड़े हुए रहते। इसके उलट देह माज़ंग के बच्चों के गालों पर मच्छरों के डंक के निशान होते और वे छड़ियों से साइकिल के पुराने टायर नचाते फिरते थे।

ये औरतें हैंडबैग झुलाती और अपनी स्कर्ट फड़फड़ाते चलतीं। मरियम ने एक को तो कार की स्टीयरिंग के पीछ सिगरेट पीते हुए तक देखा। उनके नाखून लंबे थे, वे गुलाबी या नारंगी रंग के रंगे हुए थे और होंठ ट्यूलिपों की तरह लाल। वे ऊंची हील में तेज़ी से चल रही थीं मानों वे हमेशा जल्दी में रहती हों। उन्होंने धूप के चश्मे पहन रखे थे और जब वे पास से गुज़रतीं तो मरियम को परफ्यूम की खुशबू आती। मरियम ने कल्पना की कि उन सबके पास यूनिवर्सिटी की डिग्री होगी, कि वे सभी इमारतों में दफ्तरों में अपनी डेस्क के पीछे काम करती होंगी जहां वे टाइप करती होंगी, सिगरेट पीती होंगी और अहम लोगों से फोन पर बातें करती होंगी। इन औरतों ने मरियम को रहस्य के फंदे डाल दिया। उन्होंने मरियम को अपने अकेलेपन, अपने साधारण रूप-रंग, चाहतों की कमी और इतनी सारी चीज़ों से अनजानेपन से अवगत कराया।

तभी रशीद ने उसके कंधे पर थपथपाया और उसके हाथ में कुछ पकड़ाया।

'ये लो।'

यह एक काली, कत्थई रंग की रेशमी चादर थी जिसके किनारों पर फुंदने लगे थे और सोने के तार की कसीदाकारी की हुई थी।

'पसंद आया?'

मरियम ने ऊपर देखा। रशीद ने तब कुछ ऐसा किया जो मरियम के दिल को छू गया। उसने पलकें झपकाईं और नज़र हटा ली।

मरियम ने जलील के बारे में सोचा, किस ज़ोरदार तरीके से ख़ुश होकर वो उसके गहने पकड़ाता था, उसकी छलकती हुई ख़ुशी को देखते हुए एक मौन कृतज्ञता के अलावा कहने को कुछ बचता ही नहीं था। नाना जलील के तोहफ़ों के बारे में हमेशा सही कहती थी। वे अपने गुनाह से निकलने के लिए आधे मन से दिए गए रस्मी तोहफ़े होते। वो ऐसा बेईमान, भ्रष्ट नाटक था, जिसका मकसद मरियम को तसल्ली देने से अधिक ख़ुद को तसल्ली देना होता। यह चादर एक सच्चा तोहफ़ा था, इसे मरियम ने देख लिया था।

'यह ख़ूबसूरत है,' उसने कहा।

उस रात रशीद फिर से उसके कमरे में आया। लेकिन दरवाज़े पर खड़े रह कर सिगरेट पीने के बजाए वह क़मरे में दाख़िल हुआ और बिस्तर पर जहां वो सोई थी, उसकी बग़ल में बैठ गया। बिस्तर उसकी तरफ़ दबा और स्प्रिंग बज उठी।

हिचक से भरा हुआ एक पल आया और फिर उसका हाथ मरियम की गर्दन पर था। उसकी मोटी उंगलियां उसकी गर्दन के पीछे उभरी हुई गोल हड्डियों को दबा रही थीं। उसका अंगूठा नीचे फिसलने लगा और उसकी कॉलरबोन के ऊपर गड्ढे से होते हुए वो उसके नीचे के मांस को सहलाया। मरियम कांपने लगी। रशीद के सधे हुए हाथ नीचे की तरफ़ सरके और उसके नाख़ुन मरियम के ब्लाउज़ के कपड़े में अटक रहे थे।

'मैं नहीं कर सकती,' फटी हुई आवाज़ में वह चिल्लाई। उसने चांद की रोशनी में चमकते रशीद के एक तरफ़ के चेहरे को, उसके मोटे कंधों और चौड़ी छाती को, खुले गले से झांकते स्याह बालों के गुच्छों को देखा।

अब रशीद के हाथ मरियम की दाहिनी छाती पर थे और उसे ब्लाउज़ के ऊपर से ही सख़्ती से दबा रहे थे। वह नाक के ज़रिए रशीद की तेज़-तेज़ सांसों की आवाज को सुन सकती थी।

वह उसकी बग़ल में कंबल के भीतर सरक आया। वो रशीद के हाथों को अपनी बेल्ट और उसकी सलवार का नाड़ा खोलते हुए महसूस कर सकती

थी। मरियम ने मुट्ठियों में चादर भींच ली। वह लुढ़क कर उसके ऊपर आ गया, कसमसाया और हिला। मरियम सुबक पड़ी मानो रोना शुरू करनेवाली हो।

दर्द अचानक उठा और उसे स्तब्ध कर गया। मरियम की आंखें फट पड़ीं। उसने अपने भिंचे हुए दांतों के ज़रिए सांस ली और अपने अंगूठे का जोड़ दांतों से काट लिया। उसने अपनी खाली बांह रशीद की पीठ पर फेंकी और अपनी उंगलियां उसकी कमीज पर गड़ा दीं।

रशीद ने अपना चेहरा उसके तकिए में गड़ा दिया और होंठों को भींचे हुए, कांपती हुई मरियम फटी हुई आंखों से उसके कंधों के ऊपर से छत देखती रही और रशीद की तेज़ सांसों की गर्माहट को महसूस करती रही। उनके बीच की हवा तंबाकू, प्याज़ और भुने हुए भेड़ के गोश्त की गंध से भरी हुई थी, जिसे उन्होंने खाया था। जब-तब रशीद के कान मरियम के गालों पर रगड़ जाते और खरोंच से वो जान जाती कि उसने अपने कानों के बाल शेव किए हैं।

जब यह ख़त्म हुआ तो रशीद उस पर से हांफते हुए उठा। उसने अपनी बांह अपनी भौंहों पर रख दी। अंधेरे में मरियम उसकी घड़ी की नीली सुइयों को देख सकती थी। वे इसी तरह बिना एक दूसरे को देखते हुए पीठ के बल कुछ देर तक पड़े रहे।

'इसमें शर्म की कोई बात नहीं है मरियम,' उसने थोड़ा लड़खड़ाते हुए कहा। 'शादीशुदा लोग यही करते हैं। खुद नबी और उनकी बीवियों ने भी यह किया है। इसमें कोई शर्म की बात नहीं है।'

कुछ पलों के बाद रशीद ने कंबल हटाया और मरियम को उसके तकिए पर अपने सिर से बने गड्ढे के साथ छोड़ दिया। उसने मरियम को उसके दर्द के मंद पड़ने का इंतज़ार करने के लिए छोड़ दिया। उसके पीछे अकेली रह गई मरियम आसमान में जमे हुए सितारों और एक बादल को देखती रही जिसने शादी के बुर्के की तरह चांद का चेहरा ढक लिया था।

बारह

उस साल यानी 1974 में रोज़े पतझड़ में पड़े। अपने जीवन में पहली बार मरियम ने देखा कि कैसे महज एक चांद का दिख जाना पूरे शहर का रंग-ढंग बदल सकता है, कैसे इसकी चाल-ढाल में हेर-फेर ला सकता है। उसने ग़ौर किया कि एक उनींदी चुप्पी पूरे काबुल शहर पर छा गई है। ट्रैफिक मंद, कम या नहीं के बराबर था। दुकानें खाली हो गई थीं। रेस्टोरेंटों ने अपनी रोशनी बुझा दी और अपने दरवाज़े बंद कर लिए। मरियम ने देखा कि गलियों में अब धुआं नहीं उठता और न ही खिड़कियों के आले पर भाप छोड़ती चाय की प्यालियां दिखती हैं। और इफ्तार के वक़्त जब सूरज पश्चिम में डूब रहा होता और शीर दरवाज़ा पहाड़ी पर तोप दगती तो शहर के साथ मरियम भी रोटी और खजूरों से रोज़े तोड़ती। वह पंद्रह साल की उम्र में पहली बार सामूहिक रूप से मिल बांट खाने की मिठास का मज़ा ले रही थी।

थोड़े से दिनों को छोड़ कर रशीद रोज़े नहीं रहता था। कुछ दिन जब वो रोज़े रहता तो उखड़े हुए मिजाज़ के साथ घर लौटता। भूख उसे रूखा, चिढ़ा हुआ और बेसब्र बना देती। एक रात मरियम को रात का खाना तैयार करने में कुछ मिनटों की देरी हो गई तो वो मूलियों के साथ रोटी खाने लगाया। मरियम के उसके सामने भात और भेड़ का गोश्त और ओकरा कोरमा रखने के बाद भी उसने उन्हें नहीं छुआ। उसने कुछ नहीं कहा और रोटियां चबाता गया। उसकी कनपटी चल रही थी, और ललाट पर उभरी हुई नसें गुस्से से भरी हुई

थीं। वह चबाता रहा और सामने देखता रहा और जब मरियम उससे बोली तो उसने बिना मरियम का चेहरा देखे उसकी तरफ़ निगाह की और रोटी का एक और टुकड़ा अपने मुंह में रख लिया।

जब रोजे ख़त्म हुए तो मरियम को राहत मिली।

कोल्बा में रमज़ान के बाद आने वाली ईद-उल-फितर के तीन दिनों तक चलने वाले जश्न के पहले दिन जलील मरियम और नाना से मिलने आता। सूट और टाई में सजा हुआ जलील ईद के तोहफ़े लाता। एक साल उसने मरियम को ऊनी स्कार्फ दिया था। वे तीनों बैठ कर चाय पीते और फिर जलील जाने की इजाज़त लेता।

'चला गया अपने असली परिवार के साथ ईद मनाने,' जब वो धारा को पार करके हाथ हिलाता तो नाना कहती।

मुल्ला फैज़ुल्ला भी आते। वे मरियम के लिए पन्नियों में लिपटे चॉकलेट, उबले हुए अंडों से भरी टोकरी और बिस्कुट लाते। जब वे चले जाते तो मरियम अपने तोहफ़ों के साथ बेदमजनूं के एक पेड़ पर चढ़ जाती। एक ऊंची डाली पर बैठ कर वो मुल्ला फैज़ुल्ला के चॉकलेट खाती और उसकी पन्नियां तब तक गिराती जब तक कि वो पेड़ के तने के आसपास चांदी के फूलों की तरह नहीं खिल जातीं। जब चॉकलेटें ख़त्म हो जातीं तो वो बिस्कुट शुरू करती और एक पेंसिल की मदद से वो मुल्ला के लाए अंडों पर चेहरे बनाती। लेकिन उसको इसमें कम ही मज़ा आता था। मरियम इस तरह की ईद के लिए तरसती थी जिसमें ऐसी मेहमाननवाज़ी और धूमधाम होती थी, परिवार सबसे अच्छे कपड़ों में सज-संवर कर एक दूसरे से मिलने जाते। वह अंदाज़ा लगाती कि हेरात की हवा खुशियां फूटी पड़ रही हैं और जोश से भरे हुए चमकते चेहरे वाले लोग एक दूसरे पर बधाइयों और दुआओं की बौछार कर रहे हैं। उसके ऊपर एक बेचारगी कफन-सी छा जाती और तभी हटती जब ईद गुज़र जाती।

इस बरस पहली बार मरियम ने अपनी आंखों से वह ईद देखी, जिसकी कल्पना वह बचपन से करती आ रही थी।

रशीद और मरियम गलियों में गए। मरियम कभी भी इतनी जीवंतता के बीच नहीं चली थी। कड़कड़ाती सर्दी से विचलित हुए बिना परिवार अपने रिश्तेदारों से मिलने के लिए शहर में भर गए थे। अपनी गली में मरियम ने फरीबा और उसके बेटे नूर को देखा जो सूट पहने हुए था। फरीबा ने एक

सफ़ेद स्कार्फ डाल रखी थी और छोटे कद के एक शर्मीले से दिख रहे चश्मे पहने आदमी की बग़ल में चल रही थी। उसका बड़ा बेटा अहमद भी वहां था- मरियम को पहले दिन तंदूर के पास फरीबा का बताया हुआ नाम किसी तरह याद रह गया था। उसकी गहरी, विचार में डूबी हुई आंखें थीं और उसका चेहरा अपने छोटे भाई से अधिक विचारमग्न, ज़्यादा गंभीर दिख रहा था। उसका चेहरा परिपक्व होने के शुरुआती दौर के संकेत देता था जबकि उसके छोटे भाई के चेहरे पर बचपना अभी भी मौजूद था। अहमद के गले में अल्लाह लिखा हुआ पेंडेंट झूल रहा था।

फरीब ने भी उसे रशीद की बग़ल में बुर्का पहने हुए देख लिया था। उसने हाथ हिला कर कहा, 'ईद मुबारक!'

बुर्के के भीतर से मरियम ने हल्के-से सिर हिलाया।

'तो तुम उस औरत को जानती हो, टीचर की बीवी को?' रशीद ने कहा।

मरियम ने कहा कि वो नहीं जानती।

'बेहतर रहेगा कि तुम उससे दूर रहो। वह औरत बड़ी अफवाहें फैलाती है। और उसका मर्द खुद को बड़ा पढ़ा-लिखा दानिशमंद आदमी समझता है। लेकिन वह एक चूहा है। देखो उसे। क्या वो एक चूहे जैसा नहीं दिख रहा?'

वे शार-ए-नौ पहुंचे जहां बच्चे नई कमीज़ों और लड़ियों वाली, चमकदार बंडियों में उछल-कूद रहे थे और एक दूसरे के ईद के तोहफ़ों की तुलना कर रहे थे। औरतें मिठाइयों की थालियां फिरा रही थीं। मरियम ने दुकानों की खिड़कियों से लटकते सजावटी लालटेनों को देखा। उसे लाउडस्पीकर पर बजता तेज़ संगीत भी सुनाई दिया। अनजान लोग पास से गुज़रते हुए उसे 'ईद मुबारक' कह रहे थे।

उस रात वे चमन गए और रशीद की बग़ल में खड़ी होकर मरियम ने आसमान में चमकती आतिशबाजी देखी, हरे, गुलाबी और पीले रंग की चमकती हुई रोशनियां देखीं। उसे कोल्बा के बाहर मुल्ला फैज़ुल्ला के साथ बैठ कर दूर हेरात के आसमान में हो रही आतिशबाजी को देखना याद आया। अचानक बिखर गए रंगों की चमक उसे पढ़ानेवाले उस्ताद के मोतियाबिंद की मारी आंखों में झलकती। लेकिन सबसे ज़्यादा उसे नाना की याद आई। मरियम ने चाहा कि उसकी अम्मी यह देखने के लिए ज़िंदा रहतीं। इन सबके बीच उसे देखने के लिए ज़िंदा रही होतीं। यह देखने के लिए कि वैसी संतुष्टि

और ख़ूबसूरती ऐसी चीज़ें नहीं थीं जिनको हासिल नहीं किया जा सकता हो। यहां तक कि उन जैसे लोगों के लिए भी।

ईद पर रशीद के दोस्त उनसे मिलने आए। वे सारे मर्द थे। जब दरवाज़े खटखटाए जाने लगे तो मरियम जानती थी कि उसे ऊपर अपने कमरे में जाकर दरवाज़ा बंद कर लेना है। नीचे जब तक मर्द रशीद के साथ चाय की चुस्कियां लेते रहे, सिगरेटें पीते हुए बातें करते रहे, तब तक मरियम ऊपर ही रही। रशीद ने मरियम को कह रखा था कि जब तक मिलने वाले लौट नहीं जाते तब तक वो ऊपर ही रहे।

मरियम ने इसका बुरा नहीं माना। सच में उसने तो इसके लिए ख़ुशामद ही की थी। रशीद ने इसी में दोनों की पाकीज़गी देखी। मरियम की इज़्ज़त, उसका *नामूस* ऐसी चीज़ थी जो रशीद की हिफाजत करता था। मरियम को भी रशीद के हिफाज़ती रवैए से ख़ुशी हासिल होती थी। उसे लगता कि रशीद के लिए उसका कोई मोल और अहमियत है।

ईद के तीसरे और आख़िरी दिन, रशीद कुछ दोस्तों से मिलने उनके घर गया। मरियम के पेट पूरी रात ठीक नहीं था, इसलिए उसने अपने लिए थोड़ा पानी उबाला और इलायची डाल कर ग्रीन टी बनाई। बैठक में उसने पिछली रात की ईद की दावत के बची-खुची चीज़ें को समेटा- उलटे हुए प्याले, दरियों के बीच छितराए हुए अधखाए कद्दू के बीज, रात के खाने की पपड़ी से भरी हुई प्लेटें। मरियम ने इस पर हैरान होते हुए सारे बिखरे हुए सामान को साफ़ किया कि मर्द कितने आलसी हो सकते हैं।

रशीद के कमरे में जाने का उसका इरादा नहीं था। लेकिन सफाई की ज़रूरत उसे बैठक से सीढ़ियों तक ले गई और फिर ऊपर के गलियारे से होते हुए वो उसके दरवाज़े तक पहुंची। वो जानती थी कि इसके बाद वो पहली बार रशीद के कमरे में जाएगी, जहां वो उसके बिस्तर पर एक घुसपैठिए के रूप में बैठी होगी।

उसने भारी, हरे पर्दों को साफ़ किया, पालिश किए हुए जूतों की जोड़ियों को दीवार से एक कतार में लगाया। अलमारी के दरवाज़े पर भूरी पेंट की पपड़ियां उखड़ रही थीं और नीचे की लकड़ी दिख रही थी। उसे बिस्तर की बग़ल में ड्रेसर के ऊपर सिगरेट का एक पैकेट दिखा। उसने एक सिगरेट अपने होंठों

में दबाई और दीवार से टंगे एक छोटे-से शीशे में खुद को देखा। उसने शीशे पर हवा फूंकी और कश लेने का नाटक किया। उसने सिगरेट वापस रख दी। वह कभी काबुल की औरतों की तरह सिगरेट पीने के अनंत मज़े के बारे में नहीं सोच पाई। यह उसे बुरा और अजीब दिखता था।

खुद को कसूरवार महसूस करते हुए उसने रशीद के ड्रेसर की ऊपरी दराज खोली।

सबसे पहले उसे बंदूक दिखी। यह काली, छोटी नली वाली थी और इसकी मूंठ लकड़ी की थी। उसे उठाने से पहले उसने याद कर लिया कि यह कैसे रखी हुई थी। उसने उसे अपने हाथों में उलटा-पलटा। यह जितनी दिखती थी उससे भारी थी। उसके हाथों में उसकी पकड़ चिकनी लग रही थी और नली ठंडी थी। यह सोच कर उसे बेचैनी हुई कि रशीद के पास ऐसी एक चीज़ थी, जिसका अकेला मकसद दूसरे इंसान की जान लेना था। लेकिन यकीनन उसने हिफाज़त के ख़याल से इसे रखा होगा। मरियम की हिफाज़त के लिए।

बंदूक के नीचे मुड़े हुए कोनों वाली कई पत्रिका थीं। मरियम ने एक पत्रिका खोली। उसमें से कुछ नीचे गिरा। हैरानी में उसका मुंह खुला का खुला रह गया।

हरेक पन्ने पर औरतों की तस्वीरें थीं। ये औरतें ख़ूबसूरत थी और उन्होंने कुछ भी नहीं पहना हुआ था, न कमीज़ें, न पतलून, न मोज़े और न अंडरपैंटें। उन्होंने कुछ भी नहीं पहना हुआ था। वे अस्त-व्यस्त चादर पर लेटी हुई थीं और अधखुली आंखों से पीछे, मरियम की तरफ़ देख रही थीं। अधिकतर तस्वीरों में उनके पैर फैले हुए थे और मरियम को उनके बीच की काली जगह पूरी-पूरी दिख रही थी। कुछ में औरतें इस तरह औंधे मुंह पड़ी थीं मानों इस ख़याल के लिए खुदा माफ़ करे...सजदे में गिरी हुई हों। वे अपने कंधों के ऊपर से पीछे की तरफ़ एक ऊबी हुई नाफरमानी के साथ देख रही थीं।

मरियम ने जल्दी से पत्रिका वहां रख दी जहां उसने उठाई थी। उसने बेहोशी जैसा महसूस किया। कौन थी ये औरतें? वे ऐसी तस्वीरें खिंचवाने के लिए तैयार कैसे हो गईं? नफ़रत से उसका पेट मरोड़ उठा। तो जिन रातों में वो मरियम के पास नहीं आता था उनमें वो यही करता था? क्या इस ख़ास मामले में मरियम ने रशीद को निराश किया था? और फिर इज़्ज़त और जायदाद के बारे में उसकी बातों और ग्राहक़ औरतों की शिकायतों का क्या मतलब

है, जो अधिक से अधिक उसे जूतों की फिटिंग के लिए अपने नंगे पांव ही तो दिखाती थीं। उसने कहा था, एक औरत का चेहरा सिर्फ़ उसके शौहर के लिए होता है। यकीनन इन पन्नों में दिख रही औरतों के शौहर होंगे, उनमें से कुछ के तो ज़रूर ही होंगे। नहीं भी हुए तो कम से कम उनके भाई तो होंगे। अगर ऐसा था तो रशीद उसे, मरियम को पर्दा करने पर ज़ोर क्यों देता था जबकि वह खुद दूसरे मर्दों की बीवियों और बहनों के निजी अंगों को देखने के अलावा कुछ और नहीं सोच पाता था?

शर्मिंदा और चकराई हुई मरियम बिस्तर पर बैठ गई। उसने अपने चेहरे को हथेलियों में छुपा लिया और अपनी आंखें बंद कर लीं। वो तब तक गहरी सांसें लेती रही जब तक वह शांत नहीं हो गई।

खुद से इसके लिए एक सफाई उसके मन में उठी। जो भी हो, वह एक मर्द था जो मरियम के आने के पहले इतने बरसों तक अकेले रह रहा था। उसकी ज़रूरतें मरियम की ज़रूरतों से अलग थीं। इतने महीनों के बाद भी मरियम के लिए प्यार करने का मतलब दर्द को बर्दाश्त करना था। दूसरी तरफ़ रशीद की भूख तेज़ थी जो हिंसक हो उठती थी। जिस तरह वह उसे दबाता था, उसकी छातियां दबोचता था, जिस तरह उसके उत्तेजित कूल्हे काम करते थे। वह एक मर्द था। इतने बरस तक औरत के बिना रहा था। क्या वह उसे उस काम के लिए कसूरवार ठहरा सकती थी, जिसके लिए खुदा ने उसे बनाया था?

मरियम को पता था कि वो इसके बारे में रशीद से कभी बात नहीं कर पाएगी। इसका तो जिक्र भी नहीं किया जा सकता। लेकिन क्या इसे भुलाया जा सकता है? उसने अपनी ज़िंदगी के दूसरे मर्दों के बारे में सोचा। जलील के बारे में जो तीन बीवियों और नौ बच्चों का पिता है और जिसने बिना शादी किए नाना से संबंध बनाए। इनमें से बदतर क्या था, रशीद की पत्रिका या जलील की करतूत? और उस जैसी एक गंवार, हरामी को दूसरों के बारे में फैसला करने का अधिकार कैसे मिला?

मरियम ने ड्रेसर की निचली दराज खोली।

यहां उसे एक बच्चे की तस्वीर मिली। यह युनूस था। यह एक ब्लैक एंड व्हाइट फोटो था। बच्चा चार का या शायद पांच का था। उसने धारीदार कमीज़ और बो टाई पहन रखी थी। वह एक ख़ूबसूरत लड़का था, जिसकी

नाक लंबी, काले बाल और गहरे रंग की हल्की धंसी हुई आंखें थीं। उसका ध्यान कहीं और था, मानो कैमरे के फ्लैश की चमक के साथ ही उसकी नज़र किसी और चीज़ पर चली गई थी।

उसके नीचे मरियम को एक और फोटो मिला। यह भी ब्लैक एंड व्हाइट फोटा था और यह ज़्यादा दानेदार था। यह एक बैठी हुई औरत का फोटो था जिसके पीछे काले बालों वाला दुबला, नौजवान रशीद खड़ा था। औरत ख़ूबसूरत थी। शायद यह पत्रिकाओं की औरतों जितनी ख़ूबसूरत तो नहीं थी, लेकिन ख़ूबसूरत थी। मरियम से तो यकीनन ही अधिक ख़ूबसूरत थी। उसकी एक नाज़ुक ठोढ़ी और लंबे, काले बाल थे जिनको बीच से बांट कर संवारा गया था। उसके गालों की हड्डी ऊंची थी और भली सी ललाट थी। मरियम ने अपने चेहरे, अपने पतले होंठों और लंबी ठोढ़ी की कल्पना की और जलन के एक एहसास से भर गई।

वह इस फ़ोटो को देर तक देखती रही। जिस तरह औरत पर रशीद तना हुआ था, वह मरियम को कुछ-कुछ परेशान कर रहा था। रशीद के हाथ उसके कंधों पर थे। रशीद की मज़ेदार, कसे हुए होंठों वाली मुस्कान और उसका बिना मुस्कान वाला उदास चेहरा। जिस तरह से उस औरत की देह थोड़ा आगे की ओर झुकी हुई थी, उससे लगता था मानों वह रशीद के हाथों से निकलने की कोशिश कर रही हो।

मरियम ने हर चीज़ जहां से उठाई थीं वहां रख थी।

बाद में, जब वो कपड़े धो रही थी तो उसे इस पर अफसोस हुआ कि वह रशीद के कमरे में क्यों गई। किसलिए? उसे रशीद के बारे में ढंग की क्या बात पता लगी? कि उसके पास बंदूक थी, कि उसमें वही ज़रूरतें थीं, जो मर्दों में होती हैं? और उसे रशीद और उसकी बीवी का फोटो उतनी देर नहीं देखना चाहिए था जितनी देर उसने देखा। उसकी आंखें एक पल के लिए कैमरे में यों ही कैद हो गई उनकी देहों की स्थिति में से मतलब निकाल रही थीं।

कपड़ों से भरी हिलती हुई रस्सी के सामने खड़ी मरियम को अब रशीद के लिए दुख महसूस हो रहा था। उसको भी एक मुश्किलों से भरा जीवन जीना पड़ा था, जिसमें उसे नुक्सान उठाने पड़े थे और किस्मत के उलट-फेर सहने पड़े थे। उसका मन युनूस पर लौट जा रहा था जिसने कभी इसी आंगन में

बर्फ़ का इंसान बनाया था, जिसके पैर ठीक इन्हीं सीढ़ियों पर धमक पैदा करते थे। झील ने उसे रशीद से छीन कर निगल लिया था जैसे क़ुरान के मुताबिक व्हेल इसी लड़के के नाम वाले एक नबी को निगल गई थी। रशीद को झील के किनारे खौफज़दा और लाचार भागते हुए और उससे अपने बेटे को वापस कर देने की फरियाद करते हुए कल्पना करके मरियम को दर्द हुआ, उसे काफ़ी दर्द हुआ। पहली बार उसे अपने शौहर से खानदानी जुड़ाव महसूस हुआ। उसने खुद से कहा कि उनकी जोड़ी अच्छी जमेगी।

तेरह

घर से डॉक्टर के यहां जाने के बस के सफ़र में मरियम के साथ सबसे अजीब घटना घटी। जहां भी उसकी नज़र जाती उसे चमकीले रंग दिखाई देते : फीकी, स्याह पक्की इमारतों पर, टिन के छप्परों वाले घरों पर, खुले दरवाज़ों वाली दुकानों पर, गटर में बह रहे कीचड़ भरे पानी में। ऐसा था मानों उसकी आंखों में इंद्रधनुष घुल गया हो।

रशीद अपने दस्तानों से ढंकी उंगलियों को थपथपाते हुए कोई गीत गुनगुना रहा था। हर बार बस जब किसी गड्ढे में हिचकोले खाती तो रशीद का हाथ बचाव में मरियम के पेट पर चला जाता।

'जल्मे कैसा रहेगा?' उसने कहा। 'यह एक अच्छा पश्तो नाम है।'

'और अगर लड़की हुई तो?' मरियम ने कहा।

'मुझे लगता है यह लड़का है। हां। ये लड़का है।'

बस में एक भुनभुनाहट फैल गई। कुछ सवारियां किसी चीज़ की तरफ़ इशारा कर रही थीं और दूसरी सवारियां सीटों से झुक कर देखने की कोशिश कर रही थीं।

'देखो,' रशीद ने शीशे पर उंगलियां खटखटाते हुए कहा। वो मुस्कुरा रहा था। 'वहां। देखा?'

मरियम ने देखा कि सड़क पर लोग झुक कर खड़े हैं। ट्रैफिक की बत्ती के पास कारों की खिड़कियों से चेहरे निकल कर ऊपर से गिरती हुई नर्मी को

देख रहे थे। यह सब मौसम की पहली बर्फ़बारी को लेकर हो रहा था। मरियम को हैरानी हुई कि क्या यह इतनी सम्मोहक चीज़ है। एक नए मौसम की अस्थायी ख़ूबसूरती को, इसकी प्यारी सी शुरुआत को इसके ख़त्म हो जाने और भ्रष्ट हो जाने से पहले देख लेने के लिए यह सारा तामझाम?

'अगर ये लड़की हुई तो,' रशीद ने कहा, 'और ये लड़की नहीं है, लेकिन अगर यह एक लड़की हुई तो तुम जो चाहे वो नाम चुन लेना।'

मरियम की अगली सुबह आरी से काटने और पीटने की आवाज़ों से नींद खुली। एक शाल लपेट कर वो बर्फ़ से ढंके हुए आंगन में निकली। पिछली रात की भारी बर्फ़बारी रुक गई थी। अब केवल हल्के, नाचते हुए नन्हें टुकड़ों की फुहार उसके गालों को छू रही थी। हवा ठहरी हुई थी और उसमें जले हुए चारकोल की गंध भरी थी। यह काबुल की एक डरावनी, खामोशी से भरी हुई सुबह थी, जिसमें यहां-वहां से सफ़ेद छल्लों के रूप में धुआं उठ रहा था।

उसने रशीद को औज़ार रखने वाले छप्पर में लकड़ी के एक पटरे पर कीलें ठोंकते हुए पाया। जब उसने मरियम को देखा तो उसने अपने मुंह में दबी कील को हटा लिया।

'मैं तुमको एक सरप्राइज़ देने जा रहा था। उसको पालने की ज़रूरत होगी। तुमको इसे तब तक नहीं देखना चाहिए था, जब तक यह बन नहीं जाता।'

मरियम ने चाहा था कि वह ऐसा नहीं करे। उसने अपनी उम्मीदें इस पर टिका रखी थीं कि उसे बेटा होने जा रहा है। वह मरियम के गर्भवती होने से उतना ही खुश था, जितनी मरियम थी, लेकिन रशीद की आकांक्षा मरियम के लिए बोझ बन गई थी। कल रशीद बाहर गया और बच्चे के लिए एक सर्दियों के लिए चमड़े का कोट लेकर आया, जिसके भीतर भेड़ की नर्म खाल का अस्तर लगा था। उसकी बांहों पर रेशम के बारीक लाल और पीले धागों से कसीदाकारी की हुई थी।

रशीद ने एक लंबा, पतला तख़्ता उठाया। उसे दो टुकड़ों में काटते हुए वो बोला कि सीढ़ियों से उसे फ़िक्र हो रही है। 'बच्चा जब चढ़ने लायक हो जाएगा तो उनका कुछ करना होगा।' उसने बताया कि चूल्हे को लेकर भी उसे फ़िक्र हो रही थी। छुरियों और कांटों को उसकी पहुंच से दूर संभाल कर रखना होगा। 'आप उतने सावधान नहीं रह सकते। लड़के तो बेचैन जीव होते हैं।'

मरियम ने सर्दी में शाल को अपने ऊपर खींच लिया।

अगली सुबह रशीद ने कहा कि वह जश्न मनाने के लिए अपने दोस्तों को दावत देना चाहता है। सारी सुबह मरियम मसूर की दाल और गीले चावल साफ़ करती रही। उसने *बोरानी* के लिए बैंगन के टुकड़े किए, हरी प्याज़ (लीक) पकाई और *औशाक* के लिए गाय का गोश्त तैयार किया। उसने फर्श बुहारी, पर्दे झटक कर साफ़ किए और फिर से शुरू हो गई बर्फ़ के बावजूद खिड़कियों को हवा आने के लिए खोल दिया। उसने बैठक में चटाइयों और दरियों को सजा कर लगाया, मिठाई और भुने हुए बादाम के कटोरे टेबल पर सजाएं।

शाम ढलने से पहले जब पहला मेहमान आया तो वह अभी अपने कमरे में ही थी। नीचे के कमरे से जब हो-हल्ला, ठहाकों और हंसी-मज़ाक की आवाज़ें आनी शुरू हुईं तब भी वह बिस्तर में पड़ी थी। वह अपने हाथों को अपने पेट की तरफ़ जाने से नहीं रोक पा रही थी। वह सोच रही थी कि वहां क्या हो रहा होगा और फिर ख़ुशी ऐसे दाख़िल हुई जैसे चौड़े खुले हुए दरवाज़े से हवा का झोंका अंदर आता है। उसकी आंखें भर आईं।

मरियम ने रशीद के साथ पश्चिम में ईरान से लगी हुई सरहद के पास हेरात से साढ़े छह सौ किलोमीटर लंबे बस के सफ़र के बारे में सोचा। वे छोटे और बड़े शहरों से गुज़रे, छोटे गांवों के झुंडों से गुज़रे जो एक के बाद एक उभर कर सामने आ रहे थे। वे पहाड़ों से, जले हुए रेतीले इलाकों से, एक के बाद दूसरे सूबे से होकर गुज़रे। और अब वो यहां है। उन चट्टानों और सूखे पहाड़ों के ऊपर अब उसका अपना एक घर है। अपना एक पति है। और अब वो एक आख़िरी, प्यारी सी दुनिया में दाख़िल होने जा रही है : वो मां बनने जा रही है। इस बच्चे के बारे में, अपने बच्चे के बारे में, उनके बच्चे के बारे में सोचना कितना सुहावना था। यह जानना कितना सुखद था कि इस बच्चे को लेकर उसका प्यार ने एक इंसान के रूप में उसने जो कुछ भी महसूस किया था, उन सबको बौना कर दिया था। कि अब कंकड़-पत्थरों से खेले जाने वाले खेलों की ज़रूरत नहीं रही थी।

नीचे कोई हारमोनियम के सुर मिला रहा था। इसके बाद हथौड़ी से तबले को ठोकने की आवाज़ आई। किसी ने गला साफ़ किया। और फिर सीटी

और तालियां और तीखी आवाज़ और फिर गाना।

मरियम ने अपने पेट की नर्मी को छुआ। नाखुन से बड़ा नहीं, डॉक्टर ने कहा था।

मैं मां बनने जा रही हूं, उसने सोचा।

'मैं मां बनने जा रही हूं,' उसने कहा। इसके बाद वो खुद ही हंस पड़ी और बार-बार इन शब्दों को मज़े ले लेकर कहने लगी।

जब मरियम बच्चे के बारे में सोचती तो उसका दिल हिलकोरें लेने लगता। यह तब तक हिलकोरें लेता जब तक उसमें उसकी ज़िंदगी का सारा दुख, अकेलापन और अनमनापन बह नहीं जाता। इसीलिए खुदा उसे यहां देश के दूसरे सिरे पर लाया है। अब वो यह जानती थी। उसने मुल्ला फैजुल्ला की पढ़ाई हुई क़ुरान की एक आयत याद आई : अल्लाह ही पूरब है और पश्चिम है, इसलिए तुम जिधर भी रुख करो अल्लाह की हिक़मत है। वह जानेमाज़ बिछा कर नमाज पढ़ती। नमाज पढ़ कर वह हाथ बांध कर खुदा से दुआ मांगती कि वह उसकी ज़िंदगी की सारी खुशकिस्मती को बह न जाने दे।

हम्माम जाने का ख़याल रशीद का था। मरियम कभी भी हम्माम नहीं गई थी लेकिन उसने कहा कि उसमें क़दम रख कर ठंडी हवा को पहली बार सांस में भरने और चमड़ी से उठती गर्मी को महसूस करने से बेहतर कुछ नहीं है।

जनाना हम्माम में मरियम के चारों तरफ़ भाप में आकृतियां चल-फिर रही थीं। कभी यहां किसी कूल्हे की झलक मिलती तो कभी वहां किसी के कंधों के उठान की। नौजवान लड़कियों की किलकारियां, बूढ़ियों की घुरघुराहटें और पीठों को रगड़ते तथा बालों में साबुन लगाते हुए दीवारों के बीच पानी के गिरने की आवाज़ें आ रही थीं। मरियम ने खुद ही एक दूर का कोना चुना था जहां वो अपनी एड़ियां पत्थर से रगड़ कर साफ़ कर रही थी। भाप वहां से गुज़र रही आकृतियों को उससे अलग कर रही थी।

तभी ख़ून दिखा और वो चीख पड़ी।

पैरों की आवाज़ें आईं। लोग गीले पत्थरों पर थपथपा रहे थे। भाप के पार से चेहरे उसकी तरफ़ झांक रहे थे। चीखें चट्-चट् कर रही थीं।

उस रात बाद में बिस्तर पर फरीबा ने अपने पति को बताया कि जब

उसने चीख सुनी और उधर दौड़ी तो उसने रशीद की बीवी को कोने में कांपते हुए देखा। वो अपने घुटनों को गले से लगाए हुए थी और उसके पांवों के पास ख़ून का एक तालाब बना हुआ था।

'तुम उस बेचारी लड़की के दांतों की किटकिटाहट सुन सकते थे हाकिम। वो इतने ज़ोर से कांप रही थी।'

उसने बताया कि जब मरियम ने उसको देखा तो उससे तेज़, मिन्नत करती हुई आवाज़ में पूछा, यह सामान्य है, है न? है कि नहीं? क्या यह सामान्य नहीं है?

रशीद के साथ बस एक और सफ़र। फिर से बर्फ़बारी। इस बार भारी बर्फ़ गिर रही थी। यह फुटपाथों, छतों पर ढेर की ढेर जमा हो रही थी, छितराए हुए पेड़ों की छालों पर पैबंदों की तरह दिख रही थी। मरियम ने कारोबारियों को अपनी दुकानों के बाहर से बर्फ़ को हटाते हुए देखा। बच्चों का एक समूह एक काले कुत्ते का पीछा कर रहा था। खेल करते हुए वे बस के पीछे भी दौड़े। मरियम ने रशीद की तरफ़ देखा। उसकी आंखें बंद थीं। वह गुनगुना नहीं रहा था। मरियम ने अपना सिर झुका लिया और अपनी आंखें भी बंद कर लीं। वह अपने ठंडे मोज़ों और नम ऊनी स्वेटर को निकालना चाहती थी जो उसकी त्वचा में चुभ रही थी। वो इस बस से भी दूर जाना चाहती थी।

घर पर जब वो पलंग पर लेटी तो रशीद उसे एक कंबल से ढक दिया लेकिन उसके हाव-भाव में एक रूखापन और लापरवाही थी।

'यह कैसा जवाब है?' उसने फिर कहा। 'ऐसी बात की तो एक मुल्ला से उम्मीद की जाती है। जब आप डॉक्टर को फीस देते हैं तो आप उससे 'ख़ुदा की मर्ज़ी' से बेहतर एक जवाब की उम्मीद करते हैं।'

मरियम ने कंबल के नीचे अपने घुटने मोड़े और बोली कि रशीद को आराम करना चाहिए।

'ख़ुदा की मर्ज़ी,' भीतर ही भीतर वह सुलग रहा था।

पूरे दिन वह अपने कमरे में बैठा सिगरेट पीता रहा।

मरियम पलंग पर पड़ी, अपने हाथों को घुटने में दबाए खिड़की के बाहर नीचे गिरती, गोल-गोल घूमती बर्फ़ को देखती रही। उसे याद आया कि नाना ने एक बार बताया था कि बर्फ़ का हरेक टुकड़ा दुनिया में कहीं किसी दुखी

औरत की आह होता है। कि सारे आहें आसमान में उठती हैं, बादलों के रूप में जमा होती हैं और फिर छोटे टुकड़ों में बंट कर लोगों पर चुपचाप गिरती हैं।

वे याद दिलाती हैं कि हम जैसी औरतें कितना दुख उठाती हैं, उन्होंने कहा था। *कैसे हम अपने ऊपर आ पड़े सारे दुख को चुपचाप सहती रहती हैं।*

चौदह

मलाल मरियम को देर तक हैरान करता रहा। उसके टूलशेड में अधूरे बने पालने या रशीद की अलमारी में रखे चमड़े के कोट के बारे में सोचने भर की देर थी कि यह शुरू हो जाता। बच्चे ने जन्म लिया और वह फिर वो उसकी आवाज़ सुन सकती थी, उसकी भूखी घुरघुराहटें सुन सकती थी, उसकी गलगलाहट और उसकी यों ही निकाली गई आवाज़ें सुन सकती थी। वह महसूस करती कि बच्चा उसके सीने में सांसें ले रहा है। मलाल ने उसे घेर लिया और उस पर छाई रही। मरियम इस पर सुन्न सी पड़ गई थी कि वो जीव उससे ऐसी लाचारगी से खो भी गया था जिसे उसने देखा तक नहीं था।

फिर ऐसे दिन आए जब नीरसता काफ़ी हद तक मरियम के लिए निर्मम नहीं लगती थी। ऐसे दिन जब जीवन जीने के पुराने तौर-तरीके को वापस ले आने का महज ख़याल ही इतना थकाऊ नहीं लगता था, वे दिन जब उसे बिस्तर से उठने, नमाज़ पढ़ने, धोने और रशीद के लिए खाना बनाने के काम के लिए उसे इतना ज़ोर नहीं लगाना पड़ता था।

मरियम बाहर जाने को तरस गई। एकाएक उसे मुहल्ले की औरतों और उनके बच्चों से जलन होने लगी। कुछ औरतों के तो सात-आठ बच्चे थे और वे नहीं समझती थीं कि वे कितनी खुशकिस्मत थीं, कितनी नसीब वाली थीं कि उनके बच्चे उनके कोख में फले-फूले, उनके बाहों के झूलों में कसमसाए और उनकी छातियों से उन्होंने दूध पीए। ऐसे बच्चे जो साबुन वाले पानी और

अजनबियों के शरीर की गंदगी के साथ हम्माम के नाले में बहा नहीं दिए गए। मरियम उनको पसंद नहीं करती जब वो सुनती कि वे अपने शरारती बेटों और आलसी बेटियों की शिकायत कर रही हैं।

उसके भीतर एक आवाज़ उसे तसल्ली दिलाने की कोशिश करती। उसका इरादा तो नेक होता लेकिन उसकी तसल्ली की दिशा भटकी हुई होती।

तुमको और बच्चे होंगे, इंशाअल्लाह। *तुम अभी जवान हो। यकीनन तुमको कई मौक़े मिलेंगे।*

लेकिन मरियम के मलाल का एक मकसद था, उसका एक मरकज़ था। वो अपने बच्चे के लिए दुखी थी, अपने उस बच्चे के लिए जिसने उसे कुछ देर के लिए खुशियां दी थीं।

कुछ दिनों तक वो मानती रही कि वह बच्चा एक अनचाही सौगात था। कि उसने नाना के साथ जो किया था उसे इसकी सज़ा मिली थी। क्या यह सही नहीं था कि उसने खुद अपनी अम्मी के गले में फंदा डाला था? धोखेबाज़ बेटियों को मां बनने का हक़ नहीं। और यह एक जायज़ सज़ा थी। उसे ऐसे सपनों के दौरे पड़ने लगे जिनमें नाना का जिन रात में उसके कमरे में दाख़िल होता, अपने नाखुनों से भरे पंजे से मरियम की कोख को खोद कर उसका बच्चा चुरा लेता। इन सपनों में नाना खुशी से और पुष्टि में खिलखिलाती।

दूसरे दिनों में मरियम ग़ुस्से से भर गई। समय से पहले जश्न मना कर रशीद ने ही ग़लती की। उसके इस बेवकूफ़ी से भरे भरोसे के लिए वह ग़ुस्सा होती कि वो सोचता कि मरियम के पेट में बेटा है। जिस तरह उसने बेटे का नाम रखा था, इस पर ग़ुस्सा होती। उसने खुदा की मंशा को पहले से ही अपने मनमाफिक मान लिया था। यह उसका कसूर था कि उसने मरियम को हम्माम जाने के लिए कहा। वहां कुछ ऐसा था, वहां का नाला, गंदा पानी, साबुन, कुछ ऐसा था जिसकी वजह से यह हादसा हुआ। नहीं। रशीद नहीं। कसूर मरियम का था। वह इतनी जल्दबाज़ थी कि वह ग़लत तरीके से सोती थी, बहुत मसालेदार खाना खाती थी, ख़ूब सारे फल नहीं खाती थी और ख़ूब सारी चाय पीती थी।

यह खुदा की ही ग़लती थी कि उसने मरियम को ऐसा बनाया था। यह खुदा की ग़लती थी कि उसने दूसरी औरतों को जो दिया था उससे मरियम को महरूम रखा था। कि वो जानता था कि जो चीज़ उसे बहुत बड़ी खुशी

देने वाली थी, उसे ललचाने वाले अंदाज में उसके सामने झुलाया और फिर वापस खींच लिया।

लेकिन कसूरवारों की तलाश से कुछ भी अच्छा नहीं हो सका। तोहमतें उसके दिमाग में उमड़-घुमड़ रही थीं। ऐसी बातें सोचना कुफ्र है। अल्लाह डाह नहीं करता। वह कोई मामूली खुदा नहीं है। मुल्ला फैज़ुल्ला के शब्द उसके कानों में फुसफाए : शुक्र है उस अल्लाह का जिसके हाथों में कायनात है और सारी चीज़ों पर जिसकी हुक्मरानी है, जिसने ज़िंदगी और मौत बनाई है ताकि वह तुम्हें आजमा सके।

कसूर के अहसास से लुटी-पिटी मरियम ने घुटने टेकते हुए नमाज़ पढ़ी और अपने विचारों के लिए माफ़ी मांगी।

•

इस बीच हम्माम वाली घटना के बाद रशीद के रवैए में भी बदलाव आया। जब वो घर आता तो वह मुश्किल से ही कोई बात करता। वह खाता, सिगरेट पीता और बिस्तर पर चला जाता। कभी कभी वह आधी रात को थोड़ी देर के लिए प्यार करने मरियम के पास आता। इन दिनों वह ज़्यादा तुनकमिजाज़ हो गया था और उसके खाना बनाने की गलतियों पर खीझता, आंगन में अस्त-व्यस्तता पर शिकायत करता और घर में सफाई की थोड़ी सी भी कमी की तरफ़ ध्यान दिलाता। कभी-कभार वह जुमे को मरियम को शहर में ले जाता जैसा कि वह पहले करता रहा था, लेकिन अब वह फुटपाथों पर चुपचाप चलते और रशीद मरियम से कुछ क़दम आगे चलता। तब वह मरियम से कुछ नहीं बोलता, उसकी तरफ़ से लापरवाह रहता, जिसको रशीद के साथ क़दम मिला कर चलने में लगभग दौड़ना पड़ता था। वह इस घूमने फिरने में कभी हंसता नहीं था। वह उसके लिए मिठाइयां या तोहफ़े नहीं ख़रीदता और पहले की तरह जगहों के नाम बताने के लिए नहीं रुकता था। ऐसा लगता था कि मरियम के सवाल उसे खिझा देते थे।

एक रात वे बैठक में रेडियो पर ख़बरें सुन रहे थे। सर्दियां जा रही थीं। बर्फ़ के थपेड़ों वाली तेज़ हवा जो आंखों में पानी ला देती थी अब शांत हो गई थी। बर्फ़ के नर्म रुपहले टुकड़े जंगली पेड़ों की टहनियों से पिघल रहे थे और कुछ ही हफ़्तों में गोल-मटोल फीकी हरी कोंपलें उनकी जगह लेने वाली थीं। रशीद हमआहंग गाने के तबले की ताल पर खोया हुआ अपने पैर

हिला रहा था और उसकी आंखें सिगरेट के धुएं पर सिकुड़ रही थीं।

'तुम मुझ पर ग़ुस्सा हो?' मरियम ने पूछा।

रशीद ने कुछ नहीं कहा। गीत ख़त्म हुआ और ख़बरें आने लगीं। एक औरत की आवाज़ बता रही थी कि सदर दाऊद खान ने एक और सोवियत सलाहकार को मॉस्को लौटा दिया है और क्रेमलिन के साथ नाराज़गी बढ़ रही है।

'मुझे फिक्र है कि तुम मुझ पर ग़ुस्सा हो।'

रशीद ने गहरी सांस ली।

'क्या तुम ग़ुस्सा हो?'

रशीद की आंखें मुड़ीं। 'मैं ग़ुस्सा क्यों होऊंगा?'

'मुझे नहीं पता लेकिन जब से बच्चा।'

'क्या तुम मुझे ऐसा आदमी समझती हो, तुम्हारे लिए इतना कुछ करने के बावजूद?'

'नहीं। बिल्कुल नहीं।'

'तो मुझे तंग करना बंद करो।'

'मुझे दुख है। रशीद। मुझे इसके लिए दुख है।'

रशीद ने अपनी सिगरेट तोड़ दी और दूसरी जलाई। उसने रेडियो की आवाज़ तेज़ कर दी।

'हालांकि मैं सोचती रही हूं,' मरियम ने अपनी आवाज़ ऊंची करते हुए कहा ताकि गीत में उसकी आवाज़ सुनी जा सकें।

रशीद ने फिर से गहरी सांस ली। इस बार वह ज़्यादा चिढ़ा हुआ लग रहा था। उसने रेडियो की आवाज़ कम की। इसके बाद उसने थके हुए अंदाज़ में अपनी ललाट रगड़ी। 'अब क्या है?'

'मैं सोचती रही हूं कि हमें मुनासिब तरीके से दफनाना चाहिए था। मेरा मतलब है कि बच्चे को। बस अपने लिए कुछ नमाज़ें और इससे ज़्यादा कुछ नहीं।'

मरियम ने कुछ देर इस पर सोचा। वह बच्चे को भूलना नहीं चाहती थी। यह सही नहीं लगता था कि उसके खो जाने को हमेशा-हमेशा के लिए एक निशानी न दी जाए।

'किस लिए? यह तो बेवकूफ़ी है।'

'इससे मुझको लगता है कि मुझे अच्छा लगेगा।'

'तो तुम करो,' उसने तीखे लहजे में कहा। 'मैं पहले ही एक बेटा दफना चुका हूं। मैं दूसरे को नहीं दफनाऊंगा। अब तुमको अगर एतराज़ न हो तो मैं रेडियो सुनने की कोशिश कर रहा हूं।'

उसने रेडियो की आवाज़ फिर से ऊंची कर दी और पीठ के बल टिक कर आंखें बंद कर लीं।

उस हफ़्ते धूप से भरी हुई एक सुबह मरियम ने आंगन में एक जगह चुनी और एक गड्ढा खोदा।

'अल्लाह के नाम पर और अल्लाह के साथ, और अल्लाह के रसूल के नाम पर जिन पर अल्लाह का सारा रहम और शांति हो,' फावड़ा जब ज़मीन पर पड़ा तो मरियम होंठों ही होंठों में बुदबुदाई। उसने रशीद द्वारा बच्चे के लिए लाए गए कोट को गड्ढे में रखा और फावड़े से उस पर मिट्टी डाल दी।

'तुम्हीं रात को दिन में बदलते हो और दिन को रात में। और तुम्हीं मौत से ज़िंदगी को लाते हो और ज़िंदगी को मौत से, और बिना सामर्थ्य वालों पर खुश हो जाने पर तुम्हीं उनको सहारा देते हो।'

उसने मिट्टी को फावड़े की दूसरी तरफ़ से थपथपाया। उस छोटे से टीले के पास वह झुकी और उसने अपनी आंखें बंद कर लीं।

अल्लाह मुझे सहारा दो
सहारा दो मुझे।

पंद्रह

अप्रैल, 1978

मरियम जिस साल उन्नीस की हुई, उसी साल यानी 1978 की 17 अप्रैल को मीर अकबर खैबर नाम के एक आदमी का कत्ल हुआ। दो दिन बाद काबुल में एक बहुत बड़ा प्रदर्शन हुआ। मुहल्ले में हरेक आदमी सड़क पर इसी के बारे में बातें कर रहा था। खिड़की से मरियम ने पड़ोसियों की भीड़ को ज़ोर-शोर से बातें करते हुए और रेडियो को कान पर लगाए हुए देखा। उसने फरीबा को अपने घर की दीवार से लग कर खड़ी एक औरत के साथ बातें हुए देखा जो देह-माज़ंग में नई-नई थी। गर्भवती फरीबा मुस्कुरा रही थी और उसकी हथेलियां उसके उभरे हुए पेट पर थीं। दूसरी औरत, जिसका नाम मरियम नहीं सुन पाई, फरीबा से ज़्यादा उम्र की लग रही थी। उसके बाल अजीब से जामुनी रंगत लिए हुए थे। उसने एक छोटे-से बच्चे का हाथ पकड़ रखा था। मरियम जानती थी कि उस बच्चे का नाम तारिक़ है क्योंकि उसने सड़क पर उस औरत को यही नाम लेकर बच्चे को पुकारते सुना था।

मरियम और रशीद पड़ोसियों से नहीं मिलते थे। उन्होंने रेडियो पर सुना कि दस हज़ार लोग सड़क पर उतर आए और काबुल के सरकारी हिस्से में जुलूस निकाला। रशीद ने बताया कि मीर अकबर खैबर एक मशहूर कम्युनिस्ट था और उसके हिमायती उसके कत्ल के लिए राष्ट्रपति दाऊद खान की सरकार को कसूरवार ठहरा रहे थे। उसने यह बात बताते हुए मरियम की तरफ़ नहीं देखा। इन दिनों वह मरियम की तरफ़ देखते हुए बातें नहीं करता था और

मरियम को कभी पक्के तौर से नहीं लगता कि बात उसी से की जा रही है।

'कम्युनिस्ट क्या है?' उसने पूछा।

रशीद ने नाक साफ़ की और दोनों भौंहें उठाईं। 'तुम नहीं जानतीं कि कम्युनिस्ट क्या होता है? ऐसी सीधी-सी बात। हर कोई जानता है। यह तो एक आम जानकारी है। तुम नहीं...धत। मुझे नहीं पता कि मुझे हैरानी क्यों हो रही है।' उसने टेबल पर अपनी एड़ियों को एक दूसरे के ऊपर रखा, 'और ये वे लोग होते हैं जो कार्ल मार्क्सिस्ट को मानते हैं।

'कार्ल मार्क्सिस्ट कौन है?'

रशीद ने गहरी सांस ली।

रेडियो पर एक औरत बता रही थी कि अफ़ग़ानी कम्युनिस्ट पार्टी पीडीपीए की खल्क शाखा का नेता तारकी सड़कों पर प्रदर्शन करने वालों को भड़काऊ भाषण दे रहा था।

'मेरा मतलब था कि वे क्या चाहते हैं?' मरियम ने पूछा। 'ये कम्युनिस्ट किस बात में यकीन करते हैं?'

रशीद खुशी से हंसा और अपना सिर हिलाने लगा। लेकिन मरियम को लगा कि रशीद के हाथ बांधने और आंखें मोड़ने के तरीके से ज़ाहिर है कि उसे पक्के तौर पर मालूम नहीं है। 'तुम कुछ नहीं जानतीं, है न? तुम बच्चों की तरह हो। तुम्हारा दिमाग तो खाली है। इसमें कोई जानकारी नहीं है।'

'मैंने पूछा क्योंकि...'

'चुप।'

मरियम चुप हो गई।

रशीद के इस रवैए को बर्दाश्त करना आसान नहीं था, न ही उसकी डांट, उसके मज़ाक, उसका अपमान किया जाना, उसके पीछे पालतू बिल्ली की तरह चलना सहने लायक था। लेकिन शादी के चार बरसों के बाद मरियम ने साफ़-साफ़ देख लिया था एक डरी हुई औरत कितना कुछ बर्दाश्त कर सकती है। वह लगातार उसके बदलते मिजाज़, उसके अस्थिर स्वभाव और ऐसी दुनियावी बातों में भी जबरन खुद को आगे रखने की रशीद की आदत के डर में जीती थी। ऐसी बातें टकराव की शक्ल अख्तियार कर लेतीं और

अक्सर मुक्कों, थप्पड़ों, लातों और कभी-कभी बेईमान माफियों के रूप में सामने आतीं। कई बार तो ये बेईमान माफियां भी नहीं होतीं।

हम्माम वाले उस दिन के बाद के चार बरसों में और छह बार उम्मीदों का सिलसिला शुरू हुआ था। लेकिन हर बार यह चकनाचूर हो गया था। हरेक नुक़सान, हरेक तबाही, डॉक्टर तक जाने का हर सफ़र मरियम के लिए पिछली बार के मुकाबले ज़्यादा तकलीफदेह होता। हर निराशा के बाद रशीद और ज़्यादा दूर और नाख़ुश होता गया। अब मरियम का कोई काम उसे ख़ुश नहीं कर पाता। वह घर साफ़ करती, यह सुनिश्चित करती कि उसको साफ़ धुली हुई कमीज़ें मिलें, उसके पसंदीदा खाने बनाती। एक बार तो वो मेकअप का सामान भी लेकर आई और सजी-संवरी, लेकिन इससे तो तबाही ही आ गई। घर आने के बाद जब रशीद ने उसे एक निगाह देखा और बुरे तरीके से चौंक गया तो मरियम भागी हुई बाथरूम गई और उसने सब कुछ धो डाला। शर्म के मारे निकल आए आंसू साबुन वाले पानी, रूज़ और काजल में घुल गए।

अब मरियम शाम को उसके घर आने की आहट से डर जाती। चाभी का कड़कड़ाना, दरवाज़े के जोड़ों का बजना ऐसी आवाज़ें हो गई थीं जिनसे उसका दिल ज़ोर-ज़ोर से धड़कने लगता। अपने बिस्तर से वह रशीद के जूतों की क्लिक-क्लैक और फिर उसे पांवों से जूते निकालने की घुटी हुई आवाज़ सुनती। अपने कानों से वह उसकी गतिविधियों का जायज़ा लेती; फर्श पर कुर्सी घसीटने की आवाज़, रशीद के बैठने पर बेंत की कुर्सी का कराहना, प्लेट पर चम्मच का बजना, अखबार के पन्नों की फड़फड़ाहट, पानी का तेज़ आवाज़ के साथ गिरना। और धड़कते दिल के साथ मन में वह सोचती कि आज रात उस पर चिल्लाने के लिए रशीद क्या बहाना चुनेगा? हमेशा कुछ न कुछ होता, कोई छोटी-सी बात उसे गुस्सा दिला देती क्योंकि भले ही मरियम उसे ख़ुश करने के लिए कुछ करे, भले ही वो रशीद की इच्छाओं और मांगों के आगे ख़ुद को पूरी तरह सौंप दे, लेकिन हर चीज़ बेकार थी। इसलिए कि वह उसको बेटा नहीं लौटा सकती थी। इस बुनियादी ज़रूरत के लिहाज़ से मरियम ने रशीद को निराश किया था, सात बार निराश किया था उसने, और अब वो रशीद के लिए बोझ भर थी। वह इसे उसकी निगाह में देख सकती थी, जब वो उसे देखता था, जब वो कभी उसको देखता। वो उसके लिए बोझ थी।

'क्या होने वाला है?' अब उसने रशीद से पूछा।

रशीद ने उसे तिरछी निगाह से देखा। उसने आह और गुर्राने के बीच की कोई आवाज़ निकाली। उसने अपने पांव टेबल से नीचे रख लिए और रेडियो को बंद कर दिया। वह उसे अपने कमरे में लेता गया और अपना दरवाज़ा बंद कर लिया।

27 अप्रैल को चटखने की आवाज़ों और तेज़ गरज ने मरियम के सवाल का जवाब दिया। वो नंगे पांवों बैठक में भागी आई और पाया कि रशीद पहले ही खिड़की के पास अपनी हथेलियां शीशे पर टिकाए हुए खड़ा है। वो बनियान में था और उसके बाल बिखरे हुए थे। मरियम ने खिड़की के पास उसकी बग़ल में जगह बनाई। ऊपर वो फौजी जहाज़ों को तेज़ी से उत्तर और पूरब की ओर जाते हुए देख सकती थी। उनका बहरा कर देने वाला शोर मरियम के कानों में चुभ रहा था। दूर धमाकों की तेज़ आवाज़ गूंजी और आसमान में धुएं का बादल उठा।

'क्या हो रहा है, रशीद?' उसने पूछा। 'यह सब क्या है?'

'ख़ुदा ही जानता है,' वो बुदबुदाया। उसने रेडियो चलाने की कोशिश की जो सिर्फ़ खड़खड़ा कर रह गया।

'हम क्या करें?'

रशीद ने बेताबी से जवाब दिया, 'हम इंतज़ार करते हैं।'

उस दिन बाद में भी रशीद रेडियो चलाने की कोशिश करता रहा और मरियम ने रसोई में जाकर चावल और पालक का शोरबा बनाया। मरियम को वो दिन याद आए जब उसे रशीद के लिए खाना बनाने में मज़ा आता था। तब तो वो इसकी ताक में रहा करती थी। अब उसके लिए खाना बनाना एक भारी चिंता वाला काम हो गया था। रशीद को अब कोरमा या तो ज़्यादा नमक वाला लगता या ज़्यादा बेस्वाद। चावल को या तो बेहद गीला बताता या फिर ज़्यादा सूखा हुआ। रोटी या तो ज़्यादा ही नर्म लगती या फिर ज़्यादा खस्ता। रशीद के मीन-मेख निकालने की वजह से रसोई को लेकर मरियम का आत्मविश्वास ख़त्म हो गया था।

जब वो रशीद का खाना लेकर आई, उस समय रेडियो पर राष्ट्र गान बज रहा था।

'मैंने सब्ज़ी बनाई है,' उसने कहा।

'रख दो और चुप रहो।'

गीत ख़त्म होने के बाद रेडियो पर एक आदमी ने बोलना शुरू किया। उसने खुद को एयर फोर्स कर्नल अब्दुल कादिर बताया। उसने ख़बर दी कि उस दिन बागी फोर्थ आर्मर्ड डिवीज़न ने हवाई अड्डे और शहर के मुख्य चौराहों पर कब्ज़ा कर लिया था। काबुल रेडियो, संचार और गृह मंत्रालय और विदेश मंत्रालय की इमारत पर भी कब्ज़ा कर लिया गया था। उसने पूरी शान से बताया कि काबुल अब अवाम के हाथों में है। बागी मिग जहाज़ों ने सदर के महल पर हमला किया है। तोपें उसके परिसर में दाख़िल हो चुकी हैं और वहां घमासान लड़ाई जारी है। अब्दुल कादिर ने तसल्लीबख़्श लहजे में बताया कि दाऊद की सारी वफादार फौजें हरा दी गई हैं।

कई दिनों के बाद जब कम्युनिस्टों ने दाऊद खान की हुकूमत से जुड़े हुए लोगों को चटपट सजाएं देनी शुरू कीं और जब आंखें निकाले जाने और पोलेह चरखी जेल में जननांगों को बिजली के झटके दिए जाने की अफवाहें काबुल में फैलने लगीं तब जाकर मरियम ने उस कत्लेआम के बारे में सुना जो सदर के महल में हुआ था। दाऊद खान मार दिए गए थे, लेकिन उसके पहले कम्युनिस्ट उनके परिवार के बीस लोगों को मार चुके थे, जिनमें औरतें और उनके पोते भी शामिल थे। ऐसी भी अफवाहें थीं कि दाऊद ने अपनी जान खुद ले ली थी, या वो लड़ाई के बीच मारे गए थे। अफवाहें ऐसी भी थीं कि उनको आख़िर तक बचाए रखा गया था और उनके सामने उनके परिवार के लोगों का कत्लेआम किया गया और फिर उनको गोली मार दी गई।

रशीद ने रेडियो की आवाज़ ऊंची कर दी और उसके करीब झुक आया।

'हथियारबंद सेनाओं की एक इन्कलाबी काउंसिल बनाई गई है और हमारा वतन अब से डेमोक्रेटिक रिपब्लिक ऑफ अफ़ग़ानिस्तान के नाम से जाना जाएगा,' अब्दुल कादिर ने बताया। 'निरंकुशता, परिवारवाद और गैरबराबरी का ज़माना ख़त्म हुआ हमवतनों। हमने दशकों पुराने निरंकुशता के राज को ख़त्म कर दिया है। सारी ताकत अब अवाम और आज़ादीपसंद लोगों के हाथों में है। हमारे वतन की तारीख में एक नया शानदार दौर शुरू हुआ है। एक नया अफ़ग़ानिस्तान पैदा हो चुका है। हम आपको यकीन दिलाते हैं कि डरने की कोई बात नहीं है हमवतनों। नई हुकूमत इस्लामी और जनवादी दोनों उसूलों को कायम रखेगी

और उनका पूरी तरह आदर करेगी। यह खुशियों और जश्न का मौक़ा है।'

रशीद ने रेडियो बंद कर दिया।

'तो यह अच्छा है या बुरा?' मरियम ने पूछा।

'जैसा यह लग रहा है उससे अमीरों के लिए यह बुरा है,' रशीद ने कहा। 'शायद हमारे लिए उतना बुरा न हो।'

मरियम का मन उड़ते हुए जलील की तरफ़ चला गया। उसके मन में जानने की इच्छा जगी कि क्या कम्युनिस्ट जलील के पीछे पड़ेंगे। क्या वो उसे जेल में डाल देंगे? उसके बेटों को भी? क्या वो उसके कारोबार और सारी जायदाद को अपने हाथ में ले लेंगे?

'क्या यह गर्म है?' रशीद ने चावल को देखते हुए पूछा।

'मैंने अभी देगची में से निकाला है।'

वो भुनभुनाया और उससे बोला कि उसे एक प्लेट लाकर दे।

उस रात सड़कों पर जब लाल और पीली रोशनियां जगमगाने लगीं, थकी हुई फरीबा कुहनियों का सहारा लेकर लेटी रही। उसके बाल पसीने में चिपके हुए थे और उसके ऊपरी होंठ के किनारे पर नन्हीं बूंदें उभर आई थीं। बिस्तर पर उम्रदराज़ दाई वाज्मा ने फरीबा के शौहर और बेटों को अभी-अभी पैदा हुई बच्ची दिखाई। वे बच्ची के हल्के बालों, गुलाबी गालों और सिकुड़े हुए गुलाबी होंठों, फूली हुई पलकों के नीचे नाचती हरी आंखों पर मुग्ध थे। जब उन्होंने बच्ची की आवाज़ पहली बार सुनी तो वे एक दूसरे को देख कर मुस्कुराए। बिल्ली की आवाज़ की तरह शुरू हुई उसकी यह रुलाई जल्दी ही एक पूरे गले की चिल्लाहट में बदल गई थी। नूर ने कहा कि उसकी आंखें किसी जवाहर की तरह थीं। अहमद अपने परिवार का सबसे मज़हबी सदस्य था और उसने अपनी बहन के कानों में अज़ान पढ़ी और उसके चेहरे पर तीन बार फूंका।

'तो इसका नाम लैला है?' हाकिम ने बेटी को उछालते हुए कहा।

'लैला,' फरीबा ने थकी हुई मुस्कान के साथ कहा। 'रात की ख़ूबसूरती। यह सबसे अच्छा नाम है।'

रशीद ने अपनी उंगलियों से भात का एक गोला बनाया। उसने उसे मुंह में रखा, एक बार और फिर दोबारा चबाया और फिर मुंह बनाते हुए उसे थूक दिया।

'क्या हुआ?' मरियम ने अपनी आवाज़ में झलकते माफ़ी के लहजे को

छुपाते हुए पूछा। उसे लगा कि उसकी नब्ज़ तेज़ हो गई है और उसकी चमड़ी सिकुड़ रही है।

'क्या हुआ?' उसकी नकल करता हुआ वो मिमियाया। 'हुआ ये कि तुमने फिर वही गलती की है।'

'लेकिन मैंने पांच मिनट ज़्यादा उबाला है।'

'यह सरासर झूठ है।'

'मैं कसम खाती हूं।'

रशीद ने अपनी उंगलियों से चावल को झाड़ा और सॉस और चावल को बिखराते हुए प्लेट हटा दी। मरियम उसे तेज़ी से कमरे से बाहर जाते हुए देखती रही। धड़ाम से दरवाज़ा बंद करते हुए वो घर से बाहर चला गया।

मरियम घुटनों के बल झुकी और उसने चावल के दाने बीन कर प्लेट में रखने की कोशिश की। लेकिन उसके हाथ बुरी तरह कांप रहे थे और उसको कंपकंपाहट रुकने तक इंतज़ार करना पड़ा। डर उसके सीने को दबा रहा था। उसने कुछ गहरी सांसें लेने की कोशिश की। उसे अंधेरे में डूबी बैठक की खिड़की में अपना पीला चेहरा दिखाई दिया तो वो दूसरी तरफ़ देखने लगी।

तभी उसने बाहरी दरवाज़े के खुलने की आवाज़ सुनी। रशीद बैठक में लौट आया था।

'उठो,' वो बोला। 'यहां आओ। उठो।'

उसने मरियम का हाथ खींचा, उसकी हथेली खोली और उसमें मुट्ठी भर कंकड़ गिराए।

'इन्हें मुंह में रखो।'

'क्या?'

'रखो। इन्हें। अपने मुंह में।'

'बस करो रशीद, मैं—'

रशीद का मज़बूत हाथ मरियम के जबड़े पर पड़ा। उसने दो उंगलियां उसके मुंह में घुसाते हुए उसे खोल कर उन ठंडे, सख़्त कंकड़ों को उसमें ज़बरदस्ती डालने की कोशिश की। मरियम बड़बड़ाते हुए उससे जूझ रही थी, लेकिन रशीद कंकड़ों को ठूंसता रहा। मरियम का मज़ाक उड़ाते हुए उसका ऊपरी होंठ मुस्कुरा रहा था।

'अब चबाओ,' उसने कहा,

रेत और कंकड़ों से भरे हुए मुंह से मरियम उससे फरियाद कर रही थी। उसकी आंखों के कोनों से आंसू बहे जा रहे थे।

'चबाओ!' वो गरजा। धुएं की गंध से भरी हुई सांस का एक झोंका मरियम के चेहरे से टकराया। मरियम चबाने लगी। उसके मुंह में कुछ टूटा।

'अच्छा,' रशीद ने कहा। उसके गाल कांप रहे थे। 'अब तुमको पता लगेगा कि तुम्हारे बनाए चावलों का स्वाद कैसा होता है। अब तुमको पता लगेगा कि तुमने मुझे इस शादी में क्या दिया है। ख़राब खाना और कुछ नहीं।'

फिर वो चला गया और अपने पीछे कंकड़, ख़ून और टूटे हुए दो दांतों के टुकड़ों को थूकती हुई मरियम को छोड़ गया।

भाग दो

सोलह

काबुल, बसंत, 1987

अधिकतर सुबहों की तरह उस सुबह भी नौ साल की लैला बिस्तर से उठी तो अपने दोस्त तारिक़ की झलक पाने को बेताब थी। हालांकि वो जानती थी आज वो तारिक़ को नहीं देख पाएगी।

'तुम कितने दिन के लिए जा रहे हो?' उसने तारिक़ से पूछा था जब तारिक़ ने उसे यह बताया था कि उसके अम्मी-अब्बू उसे दक्षिण के शहर ग़ज़नी में चाचा के घर ले जा रहे हैं।

'तेरह दिन।'

'तेरह दिन?'

'इतने लंबे भी नहीं हैं। तुम मुंह बना रही हो लैला।'

'नहीं, मैं नहीं बना रही।'

'तुम रोने नहीं जा रही हो, नहीं क्या?'

'मैं रोने नहीं जा रही! तुम पर तो नहीं रोऊंगी। हज़ार बरसों में भी नहीं।'

लैला ने उसके घुटनों पर मारा। नकली घुटने पर नहीं बल्कि असली घुटने के ऊपर और तारिक़ ने मज़ाक में उसके सिर के पीछे जा चपत मारी।

तेरह दिन। पूरे दो हफ़्ते। और बस पांच दिनों में ही लैला ने वक़्त के बारे में यह बुनियादी तथ्य जान लिया कि तारिक़ के अब्बा के अकॉर्डियन की तरह, जिस पर वे कभी-कभी पुराने पश्तो गीत बजाया करते थे, वक़्त भी तारिक़ की मौजूदगी और गैर मौजूदगी में खिंचता-सिकुड़ता है।

नीचे उसके अम्मी-अब्बू लड़ रहे थे। फिर से। लैला रोज़ की इस आदत को जानती थी; उसकी मम्मी उग्र, नहीं दबने वाली, तेज़-तर्रार और ज़ोर-ज़ोर से बोलती थीं। बाबी भेड़ की तरह ऊंघते बैठे रहते और आज्ञाकारी की तरह सिर हिलाते रहते और आंधी के गुज़र जाने का इंतज़ार करते। लैला अपना दरवाज़ा बंद कर कपड़े बदलने लगी। लेकिन तब भी वो उनकी आवाज़ें सुन सकती थी। वो अब भी अम्मी को सुन सकती थी। आख़िरकार एक दरवाज़ा ज़ोर से बंद हुआ। सीढ़ियों पर धम-धम चलने की आवाज़ें आईं। मम्मी का बिस्तर ज़ोर से बजा। ऐसा लगा कि बाबी एक और दिन देखने के लिए बच गए थे।

'लैला!' बाबी ने अब पुकारा। 'मुझे काम के लिए देर हो रही है!'

'एक मिनट!'

लैला ने जूते पहने और जल्दी से अपने कंधों तक लंबे घुंघराले सुनहरे बालों को शीशे में देखते हुए कंघी की। मम्मी हमेशा लैला से कहती थी कि उसे अपने बालों का रंग और इसके साथ-साथ मोटी बरौनियों वाली फिरोज़ी आंखें, गालों में पड़नेवाले गड्ढे, गालों की ऊंची हड्डियां और उभरा हुआ निचला होंठ विरासत में मिले हैं—लैला ने इन्हें अपनी मम्मी की परदादी से हासिल किया है। वो एक परी थीं, मम्मी बतातीं। उनकी ख़ूबसूरती के चर्चे पूरी घाटी में होते थे। यह ख़ूबसूरती हमारे खानदान में बाद की दो पीढ़ियों तक किसी भी औरत को नहीं मिली, लेकिन यकीनन तुमको वह हासिल हुई है, लैला। मम्मी जिस घाटी की बात कर रही थीं, वो पंजशेर घाटी थी जो काबुल से सौ किलोमीटर उत्तर-पूर्व में स्थित फ़ारसी बोलने वाले ताजिक लोगों का इलाका थी। मम्मी और बाबी दोनों पंजशेर में ही जन्मे और पले-बढ़े। वे पहले रिश्ते में चचेरे भाई-बहन थे। वे 1960 में नई-नई शादी के बाद उम्मीद से भरे हुए काबुल आए, जहां बाबी ने काबुल यूनिवर्सिटी में दाख़िला लिया।

लैला सीढ़ियों पर तेज़ी से उतरते हुए उम्मीद कर रही थी कि मम्मी दूसरे दौर के लिए फिर अपने कमरे से बाहर न आ जाएं। उसने बाबी को स्क्रीन वाले दरवाज़े के पास घुटने तक झुके पाया।

'तुमने यह देखा लैला?'

स्क्रीन में कई हफ़्तों से दरार-सी बनी हुई था। लैला ने उनके बग़ल में जाते हुए कहा। 'नहीं। नया होगा।'

'मैंने भी फरीबा से यही कहा था।' वे भीतर से हिले हुए, सिकुड़ गए से लग रहे थे जैसा मम्मी के बरसने के बाद हमेशा लगते थे। 'वो कह रही थी कि इससे मधुमक्खियां आती रही हैं।'

लैला का दिल उनके लिए भर आया। बाबी एक छोटे कद के, दुबले कंधों वाले और पतले, नाज़ुक, लगभग औरतों जैसे हाथों वाले आदमी थे। रात में जब लैला बाबी के कमरे की तरफ़ जाती तो हमेशा उनके चेहरे को किसी किताब में डूबे हुए पाती। उनका चश्मा उनकी नाक की नोक पर टिका रहता। कभी-कभी वो इस पर ध्यान भी नहीं देते कि लैला वहां है। जब वो ध्यान देते तो अपने पन्ने पर निशान लगा कर बंद होंठों से दोस्ताना तरीके से मुस्कुरा देते। बाबी ने रूमी और हाफ़िज़ की गज़लों को जज़्ब कर लिया था। वे अफ़ग़ानिस्तान को लेकर ब्रिटेन और ज़ारशाही रूस के बीच संघर्ष के बारे में गहराई से बातें कर सकते थे। वे पत्थर के आरोही और अवरोही निक्षेपों के बारे में भी जानते थे और यह बता सकते थे कि धरती और सूरज के बीच की दूरी काबुल और गज़नी के बीच पंद्रह लाख बार सफ़र करने के बराबर है। लेकिन अगर लैला को मिठाई का एक मर्तबान ज़ोर लगा कर खुलवाना होता तो उसे मम्मी के पास जाना पड़ता। बाबी दरवाज़ों को चरमरा कर खुलते-बंद होते देखते रहते लेकिन उनके कब्ज़ों में कभी तेल नहीं लगाते। छतें जब से लगी थीं, तब से चू रही थीं। किचन के कैबिनेटों में फफूंद चुनौतियां देती हुई पनपती रहती। मम्मी बतातीं कि 1980 में नूर के साथ सोवियतों के ख़िलाफ़ लड़ने के लिए जिहाद में शामिल होने जाने से पहले अहमद इन चीज़ों पर पूरे फ़र्ज़ के साथ ग़ौर करता था।

'लेकिन अगर तुम्हारे पास कोई किताब हो जिसे पढ़ा जाना ज़रूरी हो,' वो कहतीं, 'तो फिर हाकिम तुम्हारे गुलाम हैं।'

अब भी लैला इस बात को भूल नहीं पाई थी कि कभी ऐसा भी वक़्त था जब बाबी की किताबों से मुहब्बत को मम्मी भी अच्छा मानती थीं। यह अहमद और नूर के सोवियतों के ख़िलाफ़ जंग पर जाने से पहले का वक़्त था—बाबी द्वारा उनको जंग पर जाने देने से पहले का वक़्त—जब वो भी बाबी के भूल जाने की आदत और अकुशलता पर रीझ जाती थीं।

'तो आज कौन-सा दिन है?' बाबी ने नखरे से मुस्कुराते हुए पूछा। 'पांचवा? या छठा दिन?'

'मुझे क्या परवाह है? मैं गिन कर नहीं रखती,' लैला ने झूठ बोलते हुए कंधे झटके लेकिन बाबी का याद रखना उसे अच्छा लगा। मम्मी को पता नहीं था कि तारिक़ चला गया था।

'खैर उसकी फ्लैशलाइट तुम्हारे पता लगने से भी पहले बुझ जाएगी,' बाबी ने लैला और तारिक़ के रातों में सिग्नल के खेल की तरफ़ इशारा करते हुए कहा। वे यह खेल इतने अरसे से खेलते आ रहे थे कि अब यह रातों को सोने से पहले दांत में ब्रश करने जैसी आदत बन गई थी।

बाबी ने स्क्रीन की दरार पर उंगलियां फेरीं। 'मौक़ा मिलते ही मैं इसे ठीक करा दूंगा। अब चलना बेहतर होगा।' उन्होंने अपनी आवाज़ ऊंची कर ली और सिर उठा कर कहा, 'अब हम जा रहे हैं फरीबा! मैं लैला को स्कूल ले जा रहा हूं। उसे वापस ले आना मत भूलना!'

बाहर बाबी की साइकिल के कैरियर पैक पर सवार होते हुएं लैला ने सड़क पर एक कार को देखा जो उस घर के सामने खड़ी थी जहां जूते बनाने वाला रशीद अपनी तन्हा-तन्हा बीवी के साथ रहता है। यह नीले रंग की एक बेंज़ थी जिस पर एक मोटी सफ़ेद पट्टी इसके हुड, छत और ट्रंक को बराबर-बराबर हिस्सों में बांट रही थी। इस मुहल्ले में ऐसी कार गैर मामूली बात थी। लैला देख सकती थी कि भीतर दो मर्द बैठे हैं। एक स्टीयरिंग व्हील के पीछे और दूसरा पीछे की सीट पर।

'वे कौन हैं?' लैला ने पूछा।

'यह हमारा काम नहीं है,' बाबी ने कहा। 'बैठ जाओ। क्लास के लिए तुम्हें लेट हो जाएगी।'

लैला को एक और लड़ाई याद आई और इस बार मम्मी बाबी के सिर पर सवार थीं और दांत भींचते हुए में कह रही थीं, *यही तुम्हारा काम है कि तुम्हारा कोई काम नहीं है, है न भाईजान? यहां तक कि तुम्हारे अपने बेटे जंग पर चले गए। कैसे मैंने तुमसे फरियाद की थी। लेकिन तुमने अपनी नाक उन मरी किताबों में घुसा ली और हमारे बेटों को हरामियों के जोड़ों की तरह चले जाने दिया।*

बाबी साइकिल में पैडल मारने लगे और पीछे बैठी लैला ने अपने हाथों को उनके पेट के गिर्द लपेट लिया। नीली बेंज़ के पास से गुज़रते हुए लैला को पिछली सीट पर बैठे आदमी की एक झलक मिली। वो पतला, सफ़ेद

बालों वाला एक आदमी था जिसने गहरे भूरे रंग का सूट पहन रखा था और तिकोना रूमाल सीने वाली जेब में लगा रखा था। जिस दूसरी बात पर वो ग़ौर कर पाई वो ये थी कि कार में हेरात की लाइसेंस वाली नंबर प्लेट लगी थी।

बाक़ी रास्ते वे चुपचाप चलते रहे, बस मोड़ पर सावधानी से ब्रेक लगाते हुए बाबी कहते थे, 'पकड़े रहो लैला। धीरे। धीरे। हां।'

उस दिन तारिक़ की गैर मौजूदगी और अम्मी-अब्बू की लड़ाई के बीच लैला को क्लास में मन लगाने में मुश्किल हो रही थी। इसलिए रोमानिया और क्यूबा की राजधानियों के नाम बताने के लिए टीचर ने जब लैला का नाम पुकारा तो वह पकड़ी गई कि उसका ध्यान कहीं खोया हुआ था।

टीचर का नाम शानज़ई था लेकिन टीचर की पीठ पीछे बच्चों उसे खाला रंगमाल कहते थे। इस नाम के ज़रिए वे पिटाई के टीचर के पसंदीदा तरीके की तरफ़ इशारा करते। जब वो किसी बच्चे को थप्पड़ मारती तो पहले हथेली से, फिर पीछे की तरफ़ से, फिर सामने से और फिर पीछे से। मानों कोई पेंटर (रंगमाल) ब्रश फेर रहा हो। खाला रंगमाल तीखे चेहरे और घनी भौंहों वाली एक नौजवान औरत थी। स्कूल के पहले दिन ही उसने क्लास में बड़ी शान से ऐलान कर दिया था कि वो खोश्त के एक गरीब किसान की बेटी है। वो सीधी खड़ी थी और उसके गहरे काले बाल कस कर पीछे की ओर जूड़े में बंधे हुए थे। इसलिए जब भी खाला रंगमाल मुड़ती तो लैला उसकी गर्दन पर खड़े नन्हें बालों को देख सकती थी। खाला रंगमाल ने न मेकअप किया था और न ही गहने पहने थे। उसने न लड़कियों को पर्दा करने को कहा और न इससे रोका। उसने कहा कि औरत और मर्द हर तरह से बराबर होते हैं और अगर मर्द पर्दा नहीं करते तो किसी औरत के पर्दा करने की कोई वजह नहीं थी।

उसने कहा कि अफ़ग़ानिस्तान के साथ सोवियत संघ दुनिया का सबसे अच्छा कौम था। यह अपने कामगारों को लेकर रहमदिल था और इसके सारे लोग बराबर थे। सोवियत संघ में हरेक आदमी ख़ुश और दोस्ताना था। इसके उलट अमेरिका में जुर्म के डर से लोग घर छोड़ कर भाग रहे थे। उसने कहा कि अफ़ग़ानिस्तान में भी तरक्की के मुखालिफ, पिछड़े हुए डाकुओं को एक बार हरा दिए जाने के बाद हर कोई ख़ुश रहेगा।

'इसीलिए 1979 में हमारे सोवियत कॉमरेड यहां अपने पड़ोसी का हाथ बंटाने आए। वो उन जंगलियों को हराने के लिए आए जो चाहते थे कि हमारा देश पिछड़ा हुआ, कबीलाई कौम बना रहे। और बच्चों तुमको भी हाथ बंटाना चाहिए। अगर कोई इन बागियों के बारे में कुछ जानता हो तो तुम इसकी ख़बर दो। यह तुम्हारा फर्ज़ है। तुम सुनो और सुन कर ख़बर दो। अगर ऐसे लोग तुम्हारे अपने अम्मी-अब्बू हों, अपने चाचा-चाची हों तब भी ख़बर दो। क्योंकि उनमें से कोई भी तुम्हें उतना प्यार नहीं करता जितना तुम्हारा देश तुमसे प्यार करता है। तुम्हारा देश पहले आता है, याद रखना! मुझे तुम पर नाज़ होगा और तुम्हारे देश को भी।'

खाला रंगमाल के पीछे दीवार पर एक सोवियत संघ का और एक अफ़ग़ानिस्तान का नक्शा था, मौजूदा कम्यूनिस्ट सदर नजीबुल्लाह का एक फ्रेम किया हुआ फोटो था जिनके बारे में बाबी कहते थे कि वे कभी खतरनाक अफ़ग़ानी खुफिया पुलिस खाद के मुखिया थे। वहां दूसरे कुछ फोटो भी थे, जिनमें मुख्यत: किसानों से हाथ मिलाते, सेब के पौधे रोपते, घर बनाते और मिलनसारिता से मुस्कुराते हुए जवान सोवियत फौजियों को दिखाया गया था।

'खैर,' खाला रंगमाल ने अब कहा। 'क्या मैंने दिन में सपने देखने वाली तुम्हारी इन्कलाबी लड़की को परेशान कर दिया है?'

खाला रंगमाल ने लैला का नाम इन्कलाबी लड़की रख छोड़ा था क्योंकि वो 1978 के अप्रैल तख़्तापलट की रात पैदा हुई थी। फ़र्क़ ये था कि अगर कोई तख़्तापलट शब्द का इस्तेमाल कर दे तो खाला रंगमाल खफा हो जाती थीं। इस तारीख को जो हुआ था उसे खाला एक इन्कलाब कहती थीं। उनके लिए यह गैरबराबरी के ख़िलाफ़ कामगारों की बगावत थी। इसी तरह जिहाद शब्द के इस्तेमाल पर भी मनाही थी। उनके मुताबिक सूबों में कोई जंग नहीं हो रही थी बल्कि वहां कुछ उपद्रवी लोग छुटफुट लड़ाइयां लड़ रहे थे जिनको कुछ लोग उकसावा दे रहे थे। इन उकसावा देने वाले लोगों को खाला विदेशी उकसावेबाज़ कहतीं। और यकीनन उनकी मौजूदगी में कोई भी, कोई भी इस बढ़ती हुई अफवाह के बारे में बात नहीं कर सकता था कि आठ साल की लड़ाई के बाद सोवियत जंग हार रहे थे। ख़ास तौर से अब जब अमेरिकी सदर रीगन ने सोवियत हेलीकॉप्टरों को मार गिराने के लिए मुजाहिदीनों को स्टिंगर मिसाइलों से लैस करना शुरू कर दिया है और अब पूरी दुनिया से

मुसलमान इस मकसद के साथ जुड़ रहे हैं; मिस्री, पाकिस्तानी और यहां तक कि रईस सऊदी लोग भी जो अपने पीछे दसियों लाख लोगों को छोड़ कर जिहाद में शामिल होने अफ़ग़ानिस्तान आए हैं।

'बुखारेस्ट। हवाना,' लैला किसी तरह जबाव दे पाई।

'और ये देश हमारे दोस्त हैं या नहीं?'

'वे दोस्त हैं, मुअल्लिम साहिब। वे दोस्ताना देश हैं।'

खाला रंगमाल ने रूखेपन से सिर हिलाया।

जब स्कूल में छुट्टी हुई तो लैला को मम्मी वहां नहीं दिखीं, जिनको वहां होना चाहिए था। लैला घर लौटने के लिए आख़िरकार अपनी क्लास में पढ़नेवाली लड़कियों गीती और हसीना के साथ हो ली।

गीती एक ख़ूब मोटी-तगड़ी लड़की थी जिसने अपने बालों की दो चोटियां बना कर उनमें रबड़ बैंड लगा रखे थे। वह हमेशा नाक-भौं चढ़ाए रखती और अपनी किताबों को सीने पर ढाल की तरह चिपका कर चलती। हसीना बारह की थी और लैला तथा गीती से तीन साल बड़ी थी लेकिन तीसरे दर्जे में एक बार और चौथे में दो बार फेल हो चुकी थी। वह अक्ल में कमी की भरपाई शरारतों से करती और गीती कहती कि उसका मुंह सिलाई मशीन की तरह चलता है। यह हसीना ही थी जिसने टीचर का नाम खाला रंगमाल रखा था।

आज हसीना मुफ्त में सलाहें बांट रही थी कि शादी के बदसूरत दावेदारों को कैसे भगाया जाए। 'अचूक तरीका है। इसके काम करने की गारंटी है। कसम खाकर कहती हूं।'

'यह बेवक़ूफ़ी है। रिश्ता आने के लिहाज़ से मैं बहुत छोटी हूं।'

'तुम उतनी भी छोटी नहीं हो।'

'जो भी हो, कोई भी मेरा हाथ मांगने नहीं आने वाला।'

'ऐसा इसलिए कि तुम्हारी दाढ़ी है, प्यारी।'

गीती का हाथ अपनी ठोढ़ी तक उठा और उसने चौकन्ना होकर लैला की तरफ़ देखा जो दया के साथ उसकी तरफ़ देख रही थी। लैला ने सिर झटक कर उसे तसल्ली दी। लैला अब तक जितने लोगों से मिली थी उनमें गीती सबसे कम मज़ाकिया लड़की थी।

'बहरहाल लड़कियों क्या तुम जानना चाहती हो कि क्या करना चाहिए

और क्या नहीं?'

'बताओ,' लैला ने कहा।

'सेम। चार कटोरे से कम नहीं। शाम को पोपले मुंह वाला गिरगिट हाथ मांगने आता है। लेकिन सही वक़्त लड़कियों, सही वक़्त ही तो सबकुछ है। जब तक उसे चाय देने का वक़्त न आए तब तक पटाखे को दबाए रखो।'

'मैं याद रखूंगी,' लैला ने कहा।

'और वो भी याद रखेगा।'

लैला कह सकती थी कि उसे इस सलाह की ज़रूरत नहीं थी क्योंकि हाल-फिलहाल में बाबी का इरादा उसे दूर करने का नहीं था। हालांकि बाबी काबुल की विशालकाय ब्रेड फैक्टरी सिलो में काम करते थे, जहां वे गर्मी और शोर करती मशीनरी के बीच बड़े-बड़े तंदूरों को धधकाते और चक्कियों को चलाते थे, लेकिन वे एक यूनिवर्सिटी में पढ़े-लिखे इनसान थे। कम्युनिस्टों द्वारा निकाल दिए जाने के पहले वे एक स्कूल टीचर हुआ करते थे—यह 1978 के तख़्तापलट के फौरन बाद की घटना है, जब सोवियतों को देश पर हमला किए हुए डेढ़ साल हुए थे। बाबी ने लैला के सामने छोटी उम्र से ही यह बहुत साफ़ कर दिया था कि उसकी ज़िंदगी में उसकी हिफाज़त के बाद सबसे अहम चीज़ पढ़ाई-लिखाई है।

मैं जानता हूं कि तुम अभी बहुत छोटी हो, लेकिन मैं चाहता हूं कि तुम इसे अभी समझ और सीख लो, उन्होंने कहा था। शादी इंतज़ार कर सकती है, लेकिन पढ़ाई नहीं। तुम एक बहुत, बहुत ही समझदार लड़की हो। सचमुच में तुम हो। तुम जो चाहो वो बन सकती हो लैला। मैं तुम्हारे बारे में यह जानता हूं। और मैं यह भी जानता हूं कि जब यह जंग ख़त्म हो जाएगी तो अफ़ग़ानिस्तान को अपने मर्दों जितनी ही तुम्हारी भी ज़रूरत होगी, शायद उनसे भी ज़्यादा। क्योंकि किसी भी समाज की कामयाबी की तब तक गुंजाइश नहीं होती जब तक उसकी औरतें पढ़ी-लिखी नहीं होतीं, लैला। कोई गुंजाइश नहीं।

लेकिन लैला ने हसीना से नहीं कहा कि बाबी ने उनसे यह बात कही थी, कि वो उनके जैसा अब्बू पाकर कितनी खुश थी, या उसके अब्बा उसका जितना आदर करते थे इस पर उसे कैसे नाज़ होता था, या कैसे वह अपनी आगे की पढ़ाई को लेकर अपने अब्बा जितनी ही पक्की थी। पिछले दो बरसों से लैला अव्वल नुमरा सर्टिफिकेट हासिल करती आ रही थी जो सालाना रूप

से हरेक दर्जे में अव्वल आने वालों को दिया जाता था। उसने इनमें से कुछ भी हसीना को नहीं बताया, हालांकि उसके अब्बा एक बुरे मिजाज़ वाले एक टैक्सी ड्राइवर थे जो अगले दो या तीन बरसों में उसकी शादी कर देने वाले थे। हसीना कभी-कभार ही गंभीर होती थी और ऐसे ही एक मौक़े पर उसने लैला को बताया था कि यह पहले ही तय हो चुका था कि उसकी शादी अपने एक चचेरे भाई से होगी जो उससे बीस साल बड़ा था और लाहौर में उसकी ऑटो की दुकान थी। *मैंने उसे दो बार देखा है,* हसीना ने बताया। *हर बार वो अपने मुंह खोल कर खाता था।*

'सेम, लड़कियों,' हसीना ने कहा। 'याद रखना। बेशक जब तक कि'- शरारत से हंसते हुए उसने लैला को कुहनी मारी-'तुम्हारा एक पैर का बांका नौजवान शहज़ादा दरवाज़ा न खटखटाए। तब...'

लैला ने कुहनी को चपत लगा कर परे कर दिया। अगर कोई तारिक़ के बारे में ऐसा कहता तो वह बुरा मान जाती। लेकिन वो जानती थी कि हसीना बुरा चाहने वाली नहीं थी। वह मज़ाक उड़ाती थी और यही वो करती थी, कोई उसके मज़ाक से बच नहीं पाता था, खुद वह भी नहीं।

'तुमको लोगों के बारे में इस तरह बात नहीं करनी चाहिए!' गीती ने कहा।

'कैसे लोग?'

'जो लोग जंग की वजह से जख्मी हो जाते हैं,' हसीना के मज़ाक से अनजान गीती ने गंभीरता से कहा।

'मुझे लगता है कि मुल्ला गीती तारिक़ पर फिदा है। मैं जानती हूं! हा! लेकिन तारिक़ ने तो अपनी जबान दे दी है, जानती नहीं तुम? वही है न लैला?'

'मैं कोई फिदा-विदा नहीं हूं। किसी पर नहीं!'

अपनी गली में मुड़ते हुए वो लैला से अलग हो गईं, लेकिन उनकी बात जारी रही।

लैला तीन ब्लॉकों तक अकेली चलती रही। जब वो अपनी गली में आई तो उसने ग़ौर किया कि नीली बेंज़ अब तक वहीं रशीद और मरियम के घर के बाहर खड़ी थी। भूरे सूट वाला अधेड़ आदमी अब बेंत पर झुका हुआ, हुड से लग कर खड़ा घर को देख रहा था।

तभी लैला के पीछे से एक आवाज़ ने कहा, 'ऐ। पीले बाल। इधर देखो।'

लैला पीछे मुड़ी और उसका स्वागत एक बंदूक की नली ने किया।

सत्रह

बंदूक लाल थी और उसका ट्रिगर गार्ड चमकीले हरे रंग का था। बंदूक के पीछे खादिम का मुस्कुराता चेहरा फैला हुआ था। खादिम तारिक़ की तरह ग्यारह साल का था। वो मोटा, लंबा था और उसके दांत बाहर को निकले हुए थे। उसके अब्बा देह-माज़ंग में कसाई का काम करते थे और खादिम कभी-कभी बछड़े की अंतड़ियों के टुकड़े रास्ते से गुज़रनेवालों पर फेंकने के लिए जाना जाता था। कभी जब तारिक़ करीब नहीं होता तो खादिम दोपहर के खाने की छुट्टी के दौरान स्कूल के आंगन में लैला के पीछे-पीछे मंडराता रहता, बुरी नज़र से देखता और शिकायती लहजे में आवाज़ें निकालता। एक बार उसने लैला के कंधे को थपथपाते हुए कहा था, *तुम इतनी ख़ूबसूरत हो, पीले बाल। मैं तुमसे शादी करना चाहता हूं।*

अब वो बंदूक लहरा रहा था। 'फ़िक्र मत करो,' उसने कहा। 'यह तुमको दिखेगा नहीं। तुम्हारे बालों पर नहीं।'

'ऐसा मत करो! मैं तुमको चेतावनी दे रही हूं।'

'क्या कर लोगी तुम?' उसने कहा। 'कैसे रोकोगी मुझे? 'ओह तारिक़ जान। ओह, तुम मुझे इस बदमाश से बचाने क्यों नहीं आते!''

लैला ने पीछे हटने लगी, लेकिन खादिम ट्रिगर को दबा चुका था। एक के बाद एक गर्म पानी की बौछारें लैला के बालों पर और फिर उसकी हथेलियों पर गिरने लगीं, जिनको उसने अपना चेहरा ढंकने के लिए उठा रखा था।

अब तक छुप कर खड़े हुए दूसरे लड़के निकल आए थे और खिलखिला रहे थे।

गली में सुनी गई एक गाली लैला के होंठों पर आ गई। वो इसका मतलब तो नहीं समझती थी और न इसके पीछे के तर्क की कल्पना कर सकती थी, लेकिन इन शब्दों में उग्रता थी और अब उसने यह गाली बच्चों की तरफ़ उछाल दी।

'तुम्हारी अम्मी लंड खाती हैं!'

'कम से कम वो तुम्हारी अम्मी की तरह पागल तो नहीं हैं,' खादिम ने बिना विचलित हुए पलटवार किया। 'कम से कम मेरे अब्बा जनखे तो नहीं हैं! और जो भी हो, तुम अपना हाथ क्यों नहीं सूंघ रहीं?'

दूसरे बच्चों ने बात पकड़ ली। 'अपना हाथ सूंघो! अपना हाथ सूंघो!'

लैला ने अपने हाथ सूंघे, लेकिन वो सूंघने से पहले से ही जानती थी कि खादिम की इस बात का मतलब क्या था कि यह तुम्हारे बालों पर नहीं दिखेगा। वो बहुत ज़ोर से चीख पड़ी। इस पर तो बच्चे और ज़ोर से शोर मचाने लगे।

लैला घूमी और तेज़ी से घर की तरफ़ दौड़ी।

उसने कुएं से पानी निकाल कर बाथरूम में एक बेसिन को भरा। उसने अपने कपड़े तेज़ी से उतारे अपने बालों में साबुन लगा कर वो तेज़ी से अपने सिर पर उंगलियां चला रही थी और अपमान के मारे रोती जा रही थी। उसने कटोरे से बाल धोए और उनमें फिर से साबुन लगाया। कई बार उसे लगा कि वो उल्टी कर देगी। रोते और कांपते हुए उसने साबुन लगे कपड़ों से अपने चेहरे और गर्दन को तब तक रगड़ा जब तक कि वो लाल नहीं हो गए।

साफ़ कमीज़ और पाजामा पहनते हुए उसने सोचा कि अगर तारिक़ उसके साथ रहा होता तो यह उसके साथ नहीं हुआ होता। खादिम को तब हिम्मत नहीं होती। बेशक तब भी वो इससे बच जाती अगर मम्मी उसे स्कूल से लाने गई होतीं, जो उनको जाना चाहिए था। कभी-कभी लैला को हैरानी होती कि मम्मी ने उसे पैदा करने की ज़हमत ही क्यों उठाई। अब वो मानती थी कि लोगों को नए बच्चे पैदा करने की इजाज़त नहीं होनी चाहिए अगर उन्होंने अपना सारा प्यार अपने पहले बच्चों के नाम कर रखा हो। यह ठीक

नहीं था। उस पर ग़ुस्से का एक दौरा पड़ गया। लैला अपने कमरे में गई और बिस्तर पर ढह गई।

जब वो इससे उबरी तो गलियारा पार करके मम्मी के दरवाज़े पर जाकर उसने खटखटाया। जब वो छोटी थी तो लैला घंटों इस दरवाज़े के बाहर बैठी रहती थी। वो इसको खटखटाती और मम्मी का नाम पुकारती रहती मानों इस नाम में कोई जादू हो जो तिलिस्म को तोड़ देता; मम्मी, मम्मी, मम्मी, मम्मी... लेकिन मम्मी कभी दरवाज़ा नहीं खोलतीं। अब भी उन्होंने नहीं खोला। लैला ने नॉब घुमाया और भीतर चली गई।

कभी-कभी मम्मी के अच्छे मिजाज़ वाले दिन भी आते। वो बिस्तर से चमकती आंखों और खिले मन के साथ उठतीं। उनका लटकता हुआ निचला होंठ मुस्कुराते हुए ऊपर को खिंच आता। वो नहातीं। ताज़े धुले कपड़े पहनतीं और काजल लगातीं। वो लैला से अपने बालों में कंघी करवातीं जिसको लैला बहुत पसंद करती थी। फिर वे अपने कानों में बालियां पहनतीं। इसके बाद वो साथ-साथ मंडाई बाज़ार में ख़रीदारी करने जातीं। लैला सांप-सीढ़ी ख़रीदती और वो काली चॉकलेट की कतरनें खातीं। ये उन कुछ चीज़ों में से थी, जो उन दोनों को पसंद थी। मम्मी के अच्छे दिनों का लैला का सबसे पसंदीदा हिस्सा वो होता जब बाबी घर आते और लैला और मम्मी उनको तख़्त से देख कर दांत खोल कर मुस्कुरातीं। कमरे में खुशियां भर जातीं और लैला अपने अम्मी-अब्बा के उस दुलार और प्यार की एक झलक पाती जो उनके जीवन में तब तक भरा-पूरा हुआ करता था जब घर लोगों से, शोर-शराबे से और खुशियों से भरा था।

मम्मी अपने अच्छे मिजाज़ वाले दिनों में पेस्ट्रियां बनातीं और पड़ोस की औरतों को बुला कर चाय और पेस्ट्रियों की दावत करतीं। मम्मी टेबल पर कप, रूमाल और तश्तरियों के साथ बैठी रहतीं और लैला कटोरे को चाटती। बाद में लैला अपनी प्लेट बैठक की टेबल पर ले कर चली आती और औरतों की बातचीत में दखल देने की कोशिश करती, जो पूरे जोश-खरोश में बातें करते हुए चाय पी रही होतीं और मम्मी की बेकिंग की तारीफ कर रही होतीं। हालांकि कहने को उसके पास कुछ होता नहीं, इसलिए वो चुपचाप बैठ कर सुनना पसंद करती क्योंकि ऐसी बैठकों में उसे एक ऐसी खुशी मिलती थी जो बहुत दुर्लभ थी : वो अपनी मम्मी को बाबी के बारे में प्यार भरी बातें बोलते हुए सुनती।

'कितने पहले दर्जे के टीचर थे वो,' मम्मी कहतीं। 'उनके छात्र उनको पसंद करते थे। और सिर्फ़ इसलिए नहीं कि दूसरे टीचरों की तरह वो उनको डंडों से मारते नहीं थे। देखो, वो उनका इसलिए आदर करते थे क्योंकि वे अपने छात्रों का आदर करते थे। वे एक शानदार टीचर थे।'

मम्मी यह किस्सा बताना बहुत पसंद करती थीं कि कैसे उन्होंनें बाबी के सामने शादी की पेशकश की थी।

'मैं सोलह की थी और वे उन्नीस के। पंजशेर में हमारे परिवार आमने-सामने रहते थे। ओह, मैं उन पर कितनी फिदा थी, बहनों! मैं हमारे घरों के बीच की दीवार फांद जाती और हम उनके अब्बा के बागीचे में खेलते। हाकिम हमेशा डरे रहते कि हम पकड़े न जाएं और मेरे अब्बा उनको थप्पड़ न मारें। 'तुम्हारे अब्बा मुझे पीटने वाले हैं,' वो हमेशा कहते। वो इतने सतर्क थे, इतने गंभीर थे, तब भी। और फिर एक दिन मैंने उनसे कहा, मैंने कहा, 'भाईजान, तो आगे क्या होगा? क्या तुम मेरा हाथ मांगने आ रहे हो या तुम चाहते हो कि मैं तुम्हारा हाथ मांगने आऊं? मैंने बस ऐसे ही कहा। तुम्हें उनका चेहरा देखना चाहिए था!'

औरतें और लैला हंसतीं और मम्मी अपनी हथेलियां पीटतीं।

मम्मी से ये कहानियां सुनते हुए लैला जानती थी ऐसे भी दिन थे जब मम्मी बाबी के बारे में हमेशा इसी तरह से बातें करती थीं। वो ऐसा समय था जब उसके अम्मी-अब्बू अलग-अलग कमरों में नहीं सोते थे। लैला चाहती कि वो दिन कभी ख़त्म नहीं हुए होते।

मम्मी की शादी की पेशकश वाली कहानी का अंत हमेशा जोड़ियां मिलाने की योजनाओं पर होता। जब अफ़ग़ानिस्तान सोवियतों से आज़ाद होगा और लड़के घर लौटेंगे तो उनको दुल्हनों की ज़रूरत होगी और इसलिए औरतें एक-एक कर मुहल्ले की लड़कियों पर विचार करतीं कि कौन अहमद और नूर के लायक हो सकती है और कौन नहीं। बातचीत जब भी लैला के भाइयों की तरफ़ मुड़ जाती तो वो हमेशा इस बातचीत से ख़ुद को बाहर महसूस करती मानों औरतें अपनी किसी प्यारी फ़िल्म के बारे में बातें कर रही हों, जिसे सिर्फ़ लैला ने ही नहीं देखा हो। वो दो बरस की थी जब अहमद और नूर ने जिहाद के लिए काबुल छोड़ दिया और उत्तर की तरफ़ पंजशेर में कमांडर अहमद शाह मसूद के लड़ाकों में शामिल होने चले गए थे। लैला उनके बारे में मुश्किल

से ही कुछ याद कर पाती थी। अहमद के गले में लटका अल्लाह का पेंडेंट। नूर के एक कान के पीछे काले बालों का एक गुच्छा। और बस इतना ही।

'आजिता के बारे में क्या ख्याल है?'

'कालीन बनाने वाले की बेटी?' मम्मी ने अपने गालों को पीटते हुए मज़ाकिया गुस्से में कहा। 'उसके तो हाकिम से भी घनी मूंछें हैं!'

'एक अनाहिता भी है। हमने सुना है कि वो जरगूना की अपनी क्लास में सबसे अव्वल आती है।'

'तुमने उस लड़की के दांत देखे हैं? कब्र के पत्थर हैं। अपने होंठों के पीछे उसने कब्रिस्तान छुपा रखी है।'

'वाहिदी बहनों के बारे में क्या ख्याल है?'

'दोनों बौनी लड़कियां? ना, ना, ना। अरे नहीं। मेरे बेटों के लिए नहीं। मेरे सुल्तानों के लिए नहीं। वो इनसे अच्छी लड़कियों के लायक हैं।'

बातचीत चलती रहती और लैला का मन उड़ते हुए हमेशा की तरह तारिक़ तक पहुंच जाता।

मम्मी ने पीले पर्दे खींच रखे थे। कमरे के अंधेरे में नींद की, बिना धुले हुए कपड़ों की, पसीने की, गंदे मोज़ों, इत्र और पिछले रात के बासी कोरमे की मिली-जुली गंधों की परतें जमी हुई थीं। लैला ने आंखों के अंधेरे में देखने लायक होने का इंतज़ार किया और फिर कमरा पार किया। तब भी उसके पैर फर्श पर बिखरे कपड़ों में उलझ रहे थे।

लैला ने पर्दे हटाए। बिस्तर के पाए के पास एक पुरानी लोहे की कुर्सी थी। लैला उस पर बैठ गई और अपनी अम्मी के ऊपर पड़े कंबलों के ढेर को बिना हिले-डुले देखने लगी।

मम्मी के कमरे की दीवारें पर अहमद और नूर की तस्वीरों से ढंकी हुई थी। जहां भी लैला देखती मुस्कुराते हुए दो अजनबी दिखाई देते। यहां नूर एक तिपहिए साइकिल पर सवार था। यहां अहमद नमाज़ पढ़ रहा था, धूपघड़ी के पास खड़ा तस्वीर खिंचा रहा था, जिसे बाबी और उसने तब बनाया था जब वो बारह साल का था। और वहां उसके भाई आंगन में नाशपाती के पेड़ के नीचे एक दूसरे से पीठ सटाए बैठे हुए थे।

मम्मी के बिस्तर के नीचे लैला अहमद के जूते के बक्से को झांकते हुए

देख सकती थी। समय-समय पर मम्मी इसमें से पुराने, फटे हुए अखबारों की कतरने और पर्चे उसे दिखाती थीं, जिनको अहमद ने पाकिस्तानी मुख्यालयों वाले बागी समूहों और प्रतिरोध कर रहे संगठनों से जमा किया था। लैला ने याद किया कि एक तस्वीर में लंबा सफ़ेद कोट पहने हुए एक आदमी बिना टांगों वाले एक छोटे से बच्चे को लॉलीपॉप दे रहा था। तस्वीर के नीचे कैप्शन था : सोवियत बारूदी सुरंग अभियान का निशाना बच्चे हैं। लेख में कहा गया था कि सोवियत चमकीले रंगों वाले खिलौनों में बम छुपा कर रखना पसंद करते थे। अगर कोई बच्चा उसे उठाता तो खिलौने में धमाका हो जाता, जिसमें उसकी उंगलियां या पूरा हाथ ही उड़ जाता। तब उसके अब्बा जिहाद में शामिल नहीं हो पाते क्योंकि उनको घर पर रह कर बच्चे की देखभाल करनी पड़ती। अहमद के डिब्बे में एक दूसरे लेख में एक नौजवान मुजाहिद बता रहा था कि सोवियतों ने उसके गांव पर गैस छिड़क दी जिसने लोगों की चमड़ी को जला डाला और उन्हें अंधा कर दिया। उसने बताया था कि उसने अपनी मां और बहन को नाले की तरफ़ भागते हुए देखा था और उनके मुंह से ख़ून निकल रहा था।

'मम्मी।'

कंबलों का ढेर हल्के से हिला। एक कराह निकली।

'उठो, मम्मी। तीन बज गए हैं।'

एक और कराह। सतह से उभरती पनडुब्बी के दूरबीन की तरह एक हाथ उठा और फिर गिर गया। इस बार ढेर ज़्यादा साफ़-साफ़ हिला। फिर एक दूसरे के ऊपर सरकते कंबल सरसराए। धीरे-धीरे, कई चरणों में मम्मी प्रकट हुईं; पहले बिखरे हुए बाल, बिगड़ा हुआ मुंह, रोशनी से चुंधियाई हुई आंखें, सिरहाने के तख्ते को टटोलता हुआ एक हाथ, घुरघुराते हुए उनके ऊपर सरकने से खिसक गई चादर। मम्मी ने ऊपर देखने की कोशिश की लेकिन रोशनी से वो चौंधिया गई थीं और फिर उनका सिर सीने पर लटक गया।

'स्कूल कैसा रहा?' वो बुदबुदाईं।

इस तरह यह शुरू होता। ज़रूरी सवाल और बेपरवाह जवाब। दोनों नाटक करते। बिना किसी उत्साह के वो दोनों वह पुराना घिसा-पिटा खेल खेलते।

'स्कूल बढ़िया था।' लैला कहती।

'तुमने कुछ सीखा?'

'हमेशा की तरह।'

'तुमने खाया?'

'मैंने खाया।'

'अच्छा।'

मम्मी ने फिर अपना सिर खिड़की की तरफ़ उठाया। उन्होंने आंखें सिकोड़ लीं और उनकी पुतलियां फड़फड़ाईं। उनके चेहरे का दाहिना हिस्सा लाल था और उस तरफ़ के बाल दब गए थे। 'मुझे सिर दर्द है।'

'आपके लिए एस्प्रिन ला दूं?'

मम्मी अपनी कनपटियों को मलते हुए बोलीं, 'अभी नहीं, बाद में। तुम्हारे अब्बा घर पर हैं?'

'अभी तो तीन ही बज रहे हैं।'

'ओ। सही। तुमने बताया तो था।' मम्मी ने जम्हाई ली। 'मैं अभी सपना देख रही थी,' उन्होंने कहा। उनकी आवाज़ चादर पर उनकी नाइटगाउन की सरसराहट से थोड़ी ही ऊंची थी। 'अभी तुम्हारे आने से पहले। लेकिन मुझे अब याद नहीं आ रहा है। क्या तुम्हारे साथ भी ऐसा होता है?'

'ऐसा सबके साथ होता है मम्मी।'

'अजीब बात है।'

'मुझे आपको बता देना चाहिए कि जब आप सपने देख रही थीं उसी समय एक लड़के ने पानी वाली बंदूक से मेरे बालों पर पेशाब फेंक फेंकी।'

'क्या फेंका? क्या था? माफ़ करना।'

'पेशाब। पेशाब।'

'ये तो...ये तो भयानक है। ख़ुदा। माफ़ करना। बेचारी। सुबह सबसे पहले मैं उससे बात करने जाऊंगी या शायद उसकी अम्मी से। हां, मुझे लगता है कि यही बेहतर होगा।'

'मैंने आपको नहीं बताया कि वह कौन था।'

'ओह। ख़ैर, कौन था वो?'

'जाने दीजिए।'

'तुम ग़ुस्सा हो?'

'आप तो मुझको लेने आने वाली थीं।'

'मैं आने वाली थी,' फटी हुई आवाज़ में मम्मी बोलीं। लैला नहीं समझ पाई कि क्या यह कोई सवाल था। मम्मी अपने बाल खींचने लगी। यह लैला

के जीवन के सबसे बड़े रहस्यों में से एक था कि मम्मी अपने बालों को खींचने के बावजूद अंडे की तरह गंजी होने से कैसे बची हुई थीं। 'उसके बारे में... क्या नाम है तुम्हारे उस दोस्त का, तारिक़? हां, क्या यह उसका काम है?'

'वो तो एक हफ़्ते के लिए बाहर गया हुआ है।'

'ओह।' मम्मी ने अपनी नाक से गहरी सांस ली। 'क्या तुमने धो लिया?'

'हां।'

'यानी तुम साफ़ हो, तब।' मम्मी ने अपनी थकी हुई निगाह खिड़की की तरफ़ मोड़ी। 'तुम साफ़ हो और हर चीज़ ठीक है।'

लैला खड़ी हुई। 'मुझे अब होमवर्क करना है।'

'बेशक तुम करो। जाने से पहले पर्दे खींच दो मेरी जान,' मम्मी ने डूबती हुई आवाज़ में कहा। वो चादर के नीचे दुबक रही थीं।

लैला जब पर्दे के पास पहुंची तो उसने एक कार को अपने पीछे धूल के बादल उड़ाते हुए गुज़रते देखा। यह हेरात की लाइसेंस प्लेट वाली नीली बेंज़ थी, जो आख़िरकार जा रही थी। वह कार को तब तक देखती रही जब तक मोड़ पर गायब नहीं हो गई। उसकी पिछली खिड़की धूप में चमक रही थी।

'कल मैं नहीं भूलूंगी,' पीछे से मम्मी उससे कह रही थीं। 'वादा करती हूं।'

'आपने कल भी यह बात कही थी।'

'तुम नहीं जानतीं लैला।'

'क्या नहीं जानती?' लैला ने अम्मी की तरफ़ अपना चेहरा घुमाया। 'मैं क्या नहीं जानती?'

मम्मी ने अपना हाथ सीने पर रखा और थपथपाया। 'कि यहां, यहां क्या है।' फिर उनका हाथ ढीला पड़ गया। 'तुम बस नहीं जानतीं।'

अट्ठारह

एक हफ़्ता गुज़र गया और तारिक़ का कोई अता-पता नहीं था। फिर एक और हफ़्ता आया और चला गया।

समय काटने के लिए लैला ने दरवाज़े की स्क्रीन को ठीक कर दिया, जिसे बाबी अभी तक नहीं ठीक कर पाए थे। उसने बाबी की किताबें उतारीं, उनकी धूल झाड़ी और फिर उनको नाम के पहले अक्षर के मुताबिक सजाया। वो हसीना, गीती और गीती की अम्मी नीला के साथ चिकन स्ट्रीट गई। नीला दर्जिन थी और कभी-कभी मम्मी के साथ सिलाई करती थी। उस हफ़्ते लैला इस नतीजे पर पहुंची कि इनसान को जितनी भी मुश्किलों का सामना करना पड़ता है, उनमें से कोई उतनी तकलीफदेह नहीं होती जितना इंतज़ार करना होता है।

एक और हफ़्ता गुज़रा।

लैला ने खुद को डरावने ख़यालों के जाल में उलझा हुआ पाया।

वह कभी नहीं लौटेगा। उसके अम्मी-अब्बू हमेशा के लिए चले गए हैं, गजनी का दौरा तो एक छल था। यह उन दोनों को परेशान करने वाली विदाई से बचाने के लिए बड़ों की योजना थी।

फिर से एक बारूदी सुरंग ने उसे शिकार बना लिया, जैसा उसने 1981 में किया था। तब वो पांच साल का था और आख़िरी बार उसके अम्मी-अब्बू उसे दक्षिण में गजनी ले गए थे। यह लैला के तीसरे जन्मदिन के कुछ ही समय

बाद की बात है। तब वो किस्मत वाला था कि उसकी एक ही टांग गई थी और वो बच गया था।

उसके सिर में ये ख़याल उमड़-घुमड़ रहे थे।

तभी एक रात लैला ने सड़क से आती चमकती हुई रोशनी देखी। एक आवाज़ उसके होंठों से निकली जो चिल्लाहट और हांफते हुए बोलने के बीच की आवाज़ थी। उसने जल्दी से बिस्तर के नीचे से अपनी फ्लैशलाइट निकाल ली, लेकिन वह काम नहीं कर रहा था। लैला ने उसे अपनी हथेली पर पटका और उसकी बैटरियों को कोसा। लेकिन कोई फ़र्क़ नहीं पड़ा। वो लौट आया था। उसके आने पर उसे राहत मिली थी और वो चंचल हो गई थी। अपने बिस्तर के किनारे पर बैठे हुए वो उस ख़ूबसूरत, पीली चमकती हुई रोशनी को जलते-बुझते देख रही थी।

अगले दिन तारिक़ के घर जाते हुए लैला ने सड़क की दूसरी तरफ़ खादिम और उसके दोस्तों के झुंड को देखा। खादिम उकड़ूं बैठा हुआ धूल में छड़ी से कुछ लकीरें खींच रहा था। जब उसने लैला को देखा तो उसने छड़ी गिरा दी और अपनी उंगलियां हिलाने लगा। उसने कुछ कहा और ठहाकों का दौर उठा। लैला ने सिर झुका लिया और तेज़ी से चलने लगी।

'ये क्या किया तुमने?' तारिक़ ने जब दरवाज़ा खोला तो लैला ने लगभग चिल्लाते हुए पूछा। तभी उसे याद आया कि उसके चाचा एक नाई थे।

तारिक़ ने हाल में गंजे हुए अपने सिर पर हाथ फेरा और मुस्कुराया। उसके सफ़ेद और थोड़े उबड़-खाबड़ दांत दिखे।

'अच्छा लगा?'

'ऐसे दिख रहे हो मानों तुमने फौज में नाम लिखा लिया है।'

'तुम इसे महसूस करना चाहती हो?' उसने अपना सिर झुकाया।

लैला को हथेली पर छोटे कड़े बालों का खुरचना अच्छा लगा। तारिक़ दूसरे लड़कों की तरह नहीं था जिनके बालों के नीचे नुकीली खोपड़ी और मांस की गांठें छुपी रहती हैं। तारिक़ का सिर पूरा गोल था और उसमें कोई गांठ नहीं थी।

जब उसने ऊपर देखा, तो लैला ने देखा कि तारिक़ के गाल और भौंहें धूप में झुलस गए थे।

'तुमको इतनी देर कैसे लगी?' लैला ने पूछा।

'मेरे चाचा बीमार थे। आओ, भीतर आओ।'

वो उसे गलियारे से होता हुआ दालान में ले गया। लैला इस घर की सारी चीज़ों को पसंद करती थी। दालान में बिछी फटी हुई पुरानी कालीन, पलंग का कसीदाकारी किया हुआ लिहाफ, तारिक़ के जीवन की सामान्य अस्त-व्यस्तता, उसकी अम्मी के कपड़े के थान, रील में लगा कर रखी हुई सुइयां, पुरानी पत्रिकाएं और बजाए जाने का इंतज़ार करता हुआ कोने में रखा अकॉर्डियन।

'कौन है?'

यह तारिक़ की अम्मी थीं जो रसोई से पुकार रही थीं।

'लैला,' तारिक़ ने जवाब दिया।

उसने लैला के लिए कुर्सी खींची। दालान में भरपूर रोशनी थी और इसकी दोहरी खिड़कियां आंगन में खुलती थीं। खिड़की के ओटे पर खाली मर्तबान रखे हुए थे जिनमें तारिक़ की अम्मी बैंगन के आचार और गाज़र के मुरब्बे बनाती थीं।

'मतलब हमारी आरूस, हमारी बहू,' तारिक़ के अब्बा ने कमरे में दाख़िल होते हुए ऐलान किया। वे एक बढ़ई थे जो सफ़ेद बालों के साथ साठ की उम्र पार कर चुके थे और अब झुक गए थे। उनके सामने के कुछ दांत टूटे हुए थे और उनकी आंखें भेंगी थीं, जो उन लोगों की होती हैं जो अपने जीवन का अधिकतर वक़्त बाहर काम करते हुए गुज़ारते हैं। उन्होंने अपनी बाहें खोलीं और लैला उनमें समा गई। उसे उनसे आती लकड़ी बुरादों की जानी-पहचानी और अपनेपन से भरी हुई गंध अच्छी लगती थी। उन्होंने लैला के गाल तीन बार चूमे।

'तुम उसे यह कहना जारी रखो और देखना कि वो यहां आना बंद कर देगी,' तारिक़ की अम्मी वहां आते हुए बोलीं। वो एक ट्रे लाई थीं जिसमें एक बड़ा सा कटोरा, एक कलछुल और चार छोटे कटोरे रखे हुए थे। ट्रे उन्होंने टेबल पर रख दी। 'बूढ़े आदमी की बातों का बुरा मत मानना।' उन्होंने अपनी हथेली में लैला का चेहरा थाम लिया। 'तुमको देखकर अच्छा लगता है प्यारी। आओ, बैठो। मैं अपने साथ कुछ भिगोए हुए फल लाई हूं।'

टेबल बहुत बड़ा था और हल्की, खुरदरी लकड़ी का बना था। तारिक़ के अब्बा ने इसे और दूसरी कुर्सियां बनाई थीं। इस पर एक हल्की हरी रंग

की मेज़पोश बिछी थी जिसमें गहरे गुलाबी रंग के चांद और तारे बने हुए थे। दालान की अधिकतर दीवार पर अलग-अलग उम्र के तारिक़ की तस्वीरें टंगी हुई थीं। उनमें से कुछ उसके शुरुआती बरसों के थे, जब उसके दोनों पैर सलामत थे।

'मैंने सुना कि आपके भाई बीमार थे,' लैला ने भीगी हुई किशमिश, पिस्ते और खुबानियों के कटोरे में चम्मच डलते हुए तारिक़ के अब्बा से पूछा।

वे सिगरेट जला रहे थे। 'हां, लेकिन अब वो ठीक है। खुदा का शुक्र है।'

'दिल का दौरा। दूसरी बार,' तारिक़ की अम्मी ने अपने शौहर को उलाहने से देखते हुए कहा।

तारिक़ के अब्बा ने सिगरेट जला ली और लैला की तरफ़ देख कर आंख मारी। लैला के मन में अचानक यह बात आई कि तारिक़ के अम्मी-अब्बू को आसानी से उसके दादा-दादी समझा जा सकता था। तारिक़ तब पैदा हुआ था जब उसकी अम्मी चालीस पार कर गई थीं।

'तुम्हारे अब्बा कैसे हैं प्यारी?' तारिक़ की अम्मी ने उसके कटोरे की तरफ़ देखते हुए पूछा।

लैला जब से तारिक़ की अम्मी को जानती थी, वो एक विग पहनती थीं। यह उम्र के साथ फीके जामुनी रंग में बदल गया था। आज यह उनकी भौंहों तक खिंच आया था और लैला उनकी कनपटियों के स्याह बालों को देख सकती थी। कभी-कभी विग उनकी ललाट के काफ़ी ऊपर रहती थी। लेकिन लैला को तारिक़ की अम्मी इसमें कभी भी दयनीय नहीं लगीं। लैला को उस विग के नीचे एक शांत, आत्मविश्वासी चेहरा, समझदार आंखें, खुशनुमा और सुकून से भरे तौर-तरीके दिखते।

'वे अच्छे हैं,' लैला ने कहा। 'बेशक अभी सिलो में ही हैं। वे अच्छे हैं।'

'और तुम्हारी अम्मी?'

'ये उनके अच्छे दिन हैं। कभी-कभी बुरे दिन भी आते हैं। वैसी ही हैं।'

'हां,' तारिक़ की अम्मी ने सोचते हुए कहा। उन्होंने अपनी चम्मच कटोरे में डाली। 'एक मां के लिए अपने बेटों से दूर रहना कितना तकलीफदेह होगा, कितना तकलीफदेह?'

'तुम दोपहर के खाने तक रुक रही हो?' तारिक़ ने पूछा।

'तुमको रुकना होगा,' उसकी अम्मी ने कहा। 'मैं शोरबा बना रही हूं।'

'मैं बोझ नहीं बनना चाहती।'

'बोझ?' तारिक़ की अम्मी बोलीं। 'हम हफ़्ते-दो हफ़्ते के लिए क्या गए कि तुम हमसे तकल्लुफ करने लगीं?'

'ठीक है, मैं रुक जाऊंगी,' लैला ने लाल पड़ते हुए मुस्कुरा कर कहा।

'यह तय रहा फिर।'

सच्चाई यह थी कि लैला को तारिक़ के घर खाना उतना ही पसंद था जितना नापसंद उसे अपने घर खाना था। तारिक़ के घर पर खाने का मतलब अकेले खाना नहीं होता, वे हमेशा एक परिवार के बतौर खाते। वे लोग बैंगनी रंग के प्लास्टिक के गिलास इस्तेमाल करते थे और उनकी सुराही में हमेशा नीबू के टुकड़े तैरते रहते थे, यह लैला को पसंद आता था। वे जिस तरह हरेक खाने की शुरुआत ताज़ी दही से करते और जिस तरह हरेक चीज़ पर, यहां तक कि दही पर भी खट्टे संतरे निचोड़ते, और जिस तरह वे सबके बारे में हल्के-फुल्के मज़ाक करते, ये सब लैला को पसंद आते थे।

खाते हुए बातचीत हमेशा जारी रहती। हालांकि तारिक़ और उसके अम्मी-अब्बू पश्तून थे, पर वे लैला की मौजूदगी में फ़ारसी बोलते थे। जबकि लैला उनकी अपनी पश्तो जुबान को कमोबेश समझ सकती थी, उसने स्कूल में इसे सीख रखा था। बाबी बताते थे कि ताजिकों और पश्तूनों में टकराव हुआ करता था। तारिक़ की कौम वाले ताजिक अल्पसंख्यक थे और पश्तून अफ़ग़ानिस्तान का सबसे बड़ा जातीय समुदाय था। *ताजिक हमेशा अपमानित महसूस करते थे, बाबी ने बताया था। पश्तून बादशाहों ने ढाई सौ साल इस देश पर राज किया लैला, और ताजिकों ने 1929 में कुल मिला कर बस नौ महीने।*

और आप, लैला ने पूछा। आप अपमानित महसूस करते हैं बाबी?

बाबी ने अपनी कमीज़ की किनारी से चश्मे के शीशे साफ़ किए। *मेरे लिए यह बकवास है—और यह बेहद खतरनाक बकवास है कि मैं ताजिक हूं और तुम पश्तून हो और वो आदमी हज़ारा है और वो औरत उज़्बेक है। हम सब अफ़ग़ानी हैं और बस यही बात मायने रखनी चाहिए। लेकिन जब एक समूह दूसरे पर इतने लंबे अरसे तक हुकूमत करती है...तो अपमान जन्म लेता है। रंजिश पैदा होती है। होती ही है। हमेशा से होती रही है।*

हो सकता है कि ऐसा हो। लेकिन लैला को तारिक़ के घर पर कभी यह महसूस नहीं हुआ, जहां कभी भी इन बातों का ज़िक्र नहीं उठता था। तारिक़ के घर पर वो हमेशा सहज महसूस करती, सरल, कबीले या ज़ुबान के फ़र्क़ में या निजी नाराज़गियों और शिकायतों में उलझे बिना, जिन्होंने उसके अपने घर को गंदा कर रखा था।

'ताश का खेल कैसा रहेगा?' तारिक़ ने कहा।

'चलो, ऊपर चलते हैं,' उसकी अम्मी ने अपने शौहर के सिगरेट के धुएं के बादलों को नापसंदीदगी से हटाते हुए कहा। 'मैं शोरबा देखने जा रही हूं।'

वो तारिक़ के कमरे में पेट के बल पड़े हुए बारी-बारी से पंजपार खेलते रहे। अपने पैरों को हवा में चलाते हुए तारिक़ ने अपने दौरे के बारे में लैला को बताया। उसने बताया कि कैसे उसने आड़ू के पौधे लगाने में अपने चाचा की मदद की। कैसे उसने एक धारीदार सांप को पकड़ा।

यह वो कमरा था जहां लैला और तारिक़ अपने होमवर्क करते, ताश के पत्तों से मीनारें बनाते और एक दूसरे की अजीबोगरीब तस्वीरें बनाते। अगर बारिश हो रही होती तो वे खिड़की के ओटे पर झुक कर गर्म, झागदार फैन्टा पीते और शीशे पर नीचे को सरकती फूली हुई बूंदों को देखते।

'ठीक है, ये लो,' लैला ने पत्ते फेंटते हुए कहा। 'क्या चीज़ है जो दुनिया भर में घूम आती है लेकिन कोने में पड़ी भी रहती हैं?'

'रुको,' तारिक़ ने खुद को ऊपर खींचा और अपना नकली बायां पांव लटका दिया। दर्द से मुंह बनाते हुए वह कुहनी पर झुका हुआ करवट करके लेट गया। 'मुझे वो तकिया देना।' उसने उसे अपने पांवों के नीचे रख लिया। 'हां, अब अच्छा है।'

लैला को याद आया जब पहली बार तारिक़ ने अपने कटे हुए पांव उसे दिखाए थे। तब वो छह बरस की थी। उसने तारिक़ के बाएं घुटने के ठीक नीचे उस तंग, चमकदार चमड़ी को एक उंगली से कोंचा था। उसकी उंगलियों को छोटी, सख़्त गांठें महसूस हुई थीं और तारिक़ ने उसे बताया था कि वे हड्डियों के सिरे हैं जो अंगों को काट कर अलग कर दिए जाने के बाद कभी कभी उग आते हैं। लैला ने पूछा था कि क्या उसका कटा हुआ पांव दुखता है तो उसने बताया था कि जब इसमें चोट लग कर घाव हो गया था और यह सूज गया था तो उसका नकली पांव उसमें नहीं आ रहा था, जैसे उंगली

दस्ताने में नहीं आती। *और कभी कभी यह रगड़ जाता है। खासकर गर्म दिनों में। तब छाले पड़ जाते हैं लेकिन अम्मी क्रीम लगा देती है तो आराम मिलता है। यह उतना बुरा नहीं है।*

लैला के आंसू निकल आए थे।

तुम क्यों रो रही हो? तारिक़ ने अपना पांव फिर से बांध लिया था। *तुमने इसे देखने को कहा था, रोतू लड़की! अगर मैं जानता कि तुम रोने लगोगी तो मैं दिखाता ही नहीं।*

'एक कटा हुआ पांव,' तारिक़ ने कहा।

'क्या?'

'तुम्हारी पहेली थी। उसका जवाब है एक कटा हुआ पैर। हमें दोपहर के खाने के बाद चिड़ियाघर जाना चाहिए।'

'तुम इस पहेली के बारे में जानते थे। जानते थे ना?'

'बिल्कुल नहीं।'

'तुम धोखेबाज़ हो।'

'और तुम जलती हो।'

'किससे?'

'मेरी मर्दाना समझदारियों से।'

'तुम्हारी मर्दाना समझदारियां? सचमुच? बताओ मुझे कि शतरंज में हमेशा कौन जीतता है?'

'मैं तुमको जीत जाने देता हूं।' वो हंसा। दोनों जानते थे कि यह सच नहीं था।

'और हिसाब में कौन फेल हुआ था? हिसाब के होमवर्क के लिए तुम किसके पास मदद के लिए आते हो, जबकि तुम एक दर्जा आगे हो?'

'मैं दो दर्जा आगे होता अगर हिसाब मुझे ऊबा नहीं देता।'

'मेरा अंदाजा है कि भूगोल से भी तुम ऊबते हो।'

'तुम कैसे जानती हो? अब चुप रहो। तो क्या हम चिड़ियाघर जा रहे हैं या नहीं?'

लैला मुस्कुराई। 'हम जा रहे हैं।'

'अच्छा।'

'मुझे तुम्हारी याद आती थी।'

दोनों चुप रहे। फिर तारिक़ उसकी तरफ़ नापसंदीदगी के साथ आधा मुस्कुराते हुए और आधा मुंह बनाते हुए मुड़ा। 'तुम्हारे भीतर क्या चल रहा है...'

लैला को हैरानी हुई कि कितनी बार उसने, हसीना और गीती ने इन्हीं शब्दों को एक दूसरे को कहा था। जब वो दो या तीन दिनों तक नहीं मिलतीं तो कैसे वो बिना हिचक के एक दूसरे से यह बात कहतीं? *मुझे तुम्हारी याद आई हसीना। ओह मैंने भी तुमको याद किया।* तारिक़ के मुंह बनाने पर लैला जान गई कि इस मामले में लड़के लड़कियों से अलग होते हैं। वे दोस्ती को ज़ाहिर नहीं करते हैं। वे इस तरह की बातों की ज़रूरत, इसका तकाज़ा महसूस नहीं करते थे। लैला ने महसूस किया कि उसके भाइयों का भी ऐसा ही रवैया था। लैला देख रही थी कि लड़के दोस्ती को उसी तरह लेते थे जैसे वे सूरज को लेते थे, इसके होने में कोई दो राय नहीं थी, इसकी चमक ख़ुशी देती थी लेकिन उसे सीधे देखा नहीं जा सकता था।

'मैं तुमको तंग करने की कोशिश कर रही थी,' लैला ने कहा।

तारिक़ ने बग़ल से उस पर निगाह डाली। 'मैं तंग हुआ।'

लेकिन लैला ने सोचा कि तारिक़ का बना हुआ मुंह नर्म पड़ गया था। उसने सोचा कि शायद तारिक़ की कनपटियों के नीचे के बाल पल भर के लिए गहरे हो गए थे।

लैला का इरादा उसे सबकुछ बताने का नहीं था। असल में उसने फैसला किया था कि उसको बताने का ख़याल बुरा है। किसी को चोट पहुंचेगी क्योंकि तारिक़ इसे यों ही नहीं जाने देता। लेकिन बाद में जब वे सड़क पर थे और बस स्टॉप की तरफ़ जा रहे थे तो लैला ने फिर से खादिम को दीवार से टेक लगाए हुए देखा। वह बेल्ट के लूपों में अंगूठे टिकाए अपने दोस्तों से घिरा हुआ था। वह लैला को चुनौती देते हुए मुस्कुरा रहा था।

और इसलिए उसने तारिक़ को बता दिया। वह खुद को रोक पाती, इससे पहले पूरी कहानी उसके मुंह से निकल गई।

'क्या किया उसने?'

उसने दोबारा बताया।

तारिक़ ने खादिम की तरफ़ इशारा किया। 'उसने? उसी ने? तुम्हें पूरा

यकीन है?'

'पक्का।'

तारिक़ ने अपने दांत भींचे और पश्तो में कुछ बुदबुदाया जिसे लैला समझ नहीं पाई। 'तुम यहीं रुको,' उसने अब फ़ारसी में कहा।

'नहीं, तारिक़–'

वह सड़क पार कर चुका था।

सबसे पहले उसे खादिम ने देखा। उसकी मुस्कान फीकी उड़ गई और वो दीवार से अलग हुआ। उसने बेल्ट के लूपों में से अंगूठे निकाले सीधा हुआ और खुद को तैयार किया। उसने खतरनाक दिखने की कोशिश की। दूसरों की नज़रें उसकी नज़रों के साथ हिलीं।

लैला का मन किया कि उसने कुछ नहीं कहा होता। अगर वे सब मिल जाएं तो? वे वहां कितने थे–दस? ग्यारह? बारह? अगर वे उसे चोट पहुंचा दें तो?

तारिक़ तब खादिम और उसके गिरोह से कुछ फुट पहले रुक गया। कुछ पल सोचने में गुज़रे, लैला ने सोचा कि शायद उसका मन बदल गया हो, और जब तारिक़ झुका तो उसने कल्पना की कि वो यह दिखाएगा कि उसके जूतों के फीते खुल गए हैं और वो उसकी तरफ़ लौट आएगा। तब उसके हाथ काम पर लगे और वो समझ गई।

दूसरे लोग भी समझ गए जब तारिक़ एक पांव पर सीधे खड़ा हुआ। जब खादिम पर अपना खुला हुआ नकली पांव तलवार की तरह ताने वो उसकी तरफ़ उछला।

लड़के जल्दी से अलग हट गए। उन्होंने उसके लिए रास्ता बना दिया।

इसके बाद तो धूल, मुक्के, लातें और चीखें ही वहां बची थीं।

खादिम ने फिर कभी लैला को तंग नहीं किया।

अधिकतर रातों की तरह उस रात भी लैला ने टेबल पर सिर्फ़ दो लोगों के लिए दस्तरख़्वान लगाई। मम्मी ने कहा कि उसे भूख नहीं थी। ऐसी रातों में बाबी के आने से भी पहले मम्मी अपने कमरे में खाने की प्लेट लेकर चली जाती थी। लैला और बाबी जब खाने बैठते उस समय तक मम्मी या तो सो चुकी होतीं या लेटी रहतीं।

बाबी बाथरूम से बाहर आए। घर लौटने पर उनके आटा लगे हुए बाल काले-सफ़ेद दिखते, जो अब धो कर साफ़ कर दिए गए थे और उनमें कंघी की गई थी।

'आज हम क्या खाने जा रहे हैं लैला?'

'बचा हुआ सूप।'

'लग तो बढ़िया रहा है,' जिस तौलिए से उन्होंने बाल सुखाया था, उसे मोड़ते हुए बाबी बोले। 'तो आज रात हम क्या पढ़ने जा रहे हैं? फ्रैक्शन के जोड़?'

'असल में फ्रैक्शनों को मिश्रित संख्याओं में बदलना सीखेंगे।'

'आह। ठीक।'

हर रात खाने के बाद बाबी लैला को होमवर्क करने में मदद करते और उसे अपनी तरफ़ से कुछ और होमवर्क देते। उनका मकसद लैला को अपनी क्लास में एक-दो क़दम आगे रखना था, इसलिए नहीं कि वे स्कूल में मिले काम को पसंद नहीं करते थे, भले ही वहां प्रोपेगेंडा वाली पढ़ाई हुआ करती थी। असल में तो बाबी सोचते थे कि कम्युनिस्टों ने एक काम सही किया था—या कम से कम वे यह करना चाहते थे और यह विडंबना ही थी कि यह तालीम का काम था, जिस पेशे से उन्होंने बाबी को निकाला था। हुकूमत ने सारी औरतों के लिए तालीम की क्लासें लगाई थीं। बाबी बताते कि अब काबुल यूनिवर्सिटी के कुल छात्रों का दो तिहाई लड़कियां थीं। ये लड़कियां कानून, डॉक्टरी और इंजीनियरिंग की पढ़ाई कर रही थीं।

औरतों को इस देश में काफ़ी मुश्किलों का सामना करना पड़ा है लैला, लेकिन अब कम्युनिस्टों की हुकूमत के दौरान वे आज़ाद हैं और आज उनके पास इतने अधिकार हैं जितने पहले कभी भी नहीं रहे, यह बात बाबी हमेशा आवाज़ को धीमे करते हुए कहते। वे जानते थे कि मम्मी कम्युनिस्टों के बारे में अच्छी बातें बर्दाश्त नहीं करती थीं। बाबी कहते, *लेकिन यह सही है कि अफ़ग़ानिस्तान में औरतों के लिहाज से यह एक बढ़िया वक़्त है। और तुम इसका फायदा उठा सकती हो लैला। बेशक औरतों को मिली आज़ादी और* बाबी दुख में यहां अपना सिर हिलाते—*ये भी उन वजहों में से एक है, जिन वजहों से लोगों ने वहां हथियार उठा लिए हैं।*

'वहां' से बाबी की मुराद काबुल नहीं था, जो हमेशा दूसरों के मुकाबले

ज़्यादा उदार और तरक्कीपसंद हुआ करता था। यहां काबुल में औरतें यूनिवर्सिटी में पढ़ाती थीं, स्कूल चलाती थीं, सरकारी दफ्तरों में अफसर थीं। नहीं, बाबी का मतलब उन कबीलाई इलाकों से था, ख़ास कर दक्षिण में पश्तून इलाकों या पूरब में पाकिस्तानी सरहद से लगे हुए इलाकों से, जहां औरतें सड़कों पर मुश्किल से ही दिखती थीं और अगर कभी दिखती भी थीं तो वो भी बुर्के में और मर्दों के साथ। उनका कहने का मतलब था कि जिन इलाको में लोग पुराने कबीलाई कानूनों के तहत रह रहे थे, वहां के लोगों ने कम्युनिस्टों के ख़िलाफ़ बगावत कर दी थी। वे कम्युनिस्टों के फरमानों के ख़िलाफ़ थे जिनमें औरतों को आज़ादी दी गई थी, जबरन शादी को ख़त्म कर दिया गया था और शादी की उम्र को लड़कियों के लिए बढ़ा कर सोलह कर दिया गया था। बाबी बताते कि उन इलाकों में मर्दों ने इसे अपने सदियों पुराने रिवाज़ों के अपमान के रूप में देखा था कि सरकार उनको बताए—वो भी ऐसी सरकार जो ख़ुदा में यकीन नहीं करती हो कि उनकी लड़कियों को घर छोड़ कर स्कूल जाना होगा और मर्दों के साथ-साथ मिल कर काम करना होगा।

ख़ुदा इससे बचाए! बाबी व्यंग्य में कहते। फिर वे गहरी सांस लेते और कहते, *लैला, मेरी प्यारी, एक अफ़ग़ानी सिर्फ़ एक ही दुश्मन को नहीं हरा सकता, और वो दुश्मन है वो ख़ुद।*

बाबी अपनी कुर्सी टेबल के करीब ले आए और उन्होंने सूप में रोटी डुबोई।

लैला ने फैसला किया था कि फ्रैक्शन पर काम शुरू करने के पहले खाते समय वो बाबी को बता देगी कि तारिक़ ने खादिम के साथ क्या किया था। लेकिन उसे मौक़ा ही नहीं मिला। क्योंकि तभी दरवाज़े पर किसी ने दस्तक दी। दरवाज़े की दूसरी तरफ़ खड़ा वो अजनबी एक ख़बर लेकर आया था।

उन्नीस

'मुझे आपके अम्मी-अब्बू से बात करनी है दुख़्तर जान,' लैला के दरवाज़ा खोलने पर उस आदमी ने कहा। वह एक तगड़ा, नाटा आदमी था जिसका चेहरा तीखा और मौसम की मार खाया हुआ था। उसने धूसर रंग का कोट और सिर पर एक भूरा ऊनी पकोल पहन रखा था।

'क्या मैं उनको बता सकती हूं कि आप कौन हैं?'

तभी बाबी का हाथ लैला के कंधे पर पड़ा और हल्के-से उसने लैला को दरवाज़े से खींच लिया।

'क्यों नहीं तुम ऊपर चली जातीं लैला? चलो, जाओ।'

सीढ़ियों की तरफ़ जाते हुए लैला ने सुना कि मिलने आने वाला बाबी को बता रहा था कि उसके पास पंजशेर से ख़बर है। मम्मी भी अब कमरे में आ गई थीं। उन्होंने एक हाथ से अपना मुंह दबा रखा था और उनकी आंखें बाबी से होते हुए उस पकोल वाले आदमी पर आ-जा रही थीं।

लैला ने सीढ़ियों के ऊपर से झांका। उसने देखा कि वो अजनबी उसके अम्मी-अब्बू के साथ बैठा हुआ है। वो उनकी तरफ़ झुका। उसने दबी आवाज़ में कुछ कहा। तब बाबी का चेहरा सफ़ेद पड़ गया और सफ़ेद होता जा रहा था। वो अपने हाथों की तरफ़ देख रहे थे और मम्मी बिलख रही थीं और अपने बालों में आंसू बहा रही थीं।

अगली सुबह, फातिहा के दिन पड़ोस की औरतों का एक झुंड घर में दाख़िल हुआ और उसने जनाज़े के बाद रात में होने वाली ख़त्म की रस्म के लिए खाने की तैयारियों का जिम्मा उठा लिया। पूरी सुबह मम्मी पलंग पर बैठी रहीं। उनकी उंगलियों में रूमाल उलझा हुआ था और उनका चेहरा सूज गया था। सिसकती हुई औरतों का एक जोड़ा उनको मना रहा था। वो बारी बारी से मम्मी के हाथों पर सावधानी के साथ थपकियां दे रही थीं। मानो वह दुनिया की सबसे दुर्लभ और नाज़ुक गुड़िया हों। दूसरी तरफ़ ऐसा नहीं लग रहा था कि मम्मी उनकी मौजूदगी पर ध्यान दे रही थीं।

लैला अपनी अम्मी के सामने घुटनों के बल झुकी और उनका हाथ पकड़ लिया। 'मम्मी।'

मम्मी की निगाह नीची हुई। उन्होंने पलकें झपकाईं।

'हम इनकी देख-भाल कर रही हैं लैला जान,' एक औरत ने खुद को अहमियत देने वाले लहजे में कहा। लैला पहले ऐसी मैयतों में जा चुकी थी जहां ऐसी ही औरतें किसी मौत के बाद घर में होनेवाला सारा काम बड़े मज़े में करती थीं, तसल्ली देने के काम में माहिर ऐसी औरतें खुद सारे ज़िम्मे उठा लेती थीं और फिर किसी को भी उसमें हाथ नहीं लगाने देतीं।

'सब काबू में है। लड़की तुम जाओ और कोई दूसरा काम करो। अपनी अम्मी को रहने दो।'

परे हटा दी गई लैला को लगा कि उसकी कहीं ज़रूरत नहीं है। वो एक कमरे से दूसरे में फिरती रही। कुछ देर वो रसोई में मंडराई। हसीना और उसकी अम्मी आईं, हसीना ग़ैर मामूली तरह से शांत और उदास लग रही थी, जो उसकी फितरत का हिस्सा नहीं था। गीती और उसकी अम्मी भी आईं। जब गीती ने लैला को देखा तो वो उसकी तरफ़ दौड़ पड़ी और अपने पतले हाथों में लैला को लपेट लिया। लैला को हैरान करते हुए वो देर तक उसे कस कर गले लगाए रही। जब वो पीछे हटी तो उसकी आंखों में आंसू भरे थे। 'मुझे बहुत दुख हुआ लैला,' उसने कहा। लैला ने उसको शुक्रिया कहा। लड़कियां बाहर आंगन में तब तक बैठी रहीं जब तक किसी औरत ने उनको गिलासों को धोने और तश्तरियों को टेबल पर सजाने का काम नहीं दे दिया।

बाबी भी बेमकसद घर में आते-जाते रहे मानो वो करने के लिए कोई काम खोज रहे हों।

'उनको मुझसे दूर रखो।' पूरी सुबह में मम्मी बस यही एक बार बोली थीं।

आख़िर में बाबी गलियारे में फोल्डिंग कुर्सी पर बैठ गए। वे उदास, अकेले और छोटे-से दिख रहे थे। फिर एक औरत ने उनसे कहा कि वो लोगों के रास्ते में आ रहे हैं। उन्होंने माफ़ी मांगी और अपने पढ़ने के कमरे में गायब हो गए।

उस दोपहर कारतेह-सेह से वो आदमी आया जिसे बाबी ने फातिहा पढ़ने के लिए बुला रखा था। औरतें घर में आईं। लैला ने मम्मी के पास जाकर बैठी। यह बैठक के दरवाज़े के पास की जगह थी, जहां रिवाज़ के मुताबिक मरने वालों के परिवार वाले बैठते थे। मातमपुर्सी करनेवालों ने दरवाज़े के बाहर जूते उतारे, कमरे से गुज़रते हुए जान-पहचान वालों को देख कर सिर हिलाए और फिर दीवार से लगा कर रखी गई कुर्सियों पर बैठ गए। लैला ने वाज्मा को देखा। यह वो बूढ़ी दाई थी, जिसने लैला को पैदा कराया था। उसने तारिक़ की अम्मी को भी देखा जिन्होंने अपनी विग के ऊपर काला दुपट्टा ओढ़ रखा था। उन्होंने लैला को देख कर सिर हिलाया और बंद होंठों से उदासी भरी मुस्कान दी।

कैसेट प्लेयर से एक आदमी नाक से निकलती आवाज़ में क़ुरान की आयतें पढ़ रहा था। बीच बीच में औरतें गहरी सांसें ले रही थीं, पहलू बदल रही थीं और नाक साफ़ कर रही थीं। लोग दबी हुई आवाज़ में खांस रहे थे, बुदबुदा रहे थे और कुछ-कुछ देर पर कोई नाटकीय तौर पर दुख के मारे सिसक उठता था।

रशीद की बीवी मरियम आई। उसने काला हिजाब पहन रखा था। हिजाब के नीचे से बालों की लटें उसकी भौंहों पर लटक रही थीं। वो लैला के सामने दीवार से लगी कुर्सी पर बैठ गई।

लैला की बग़ल में मम्मी आगे-पीछे हिल रही थीं। लैला ने मम्मी का हाथ अपनी गोद में रख रख कर अपने दोनों हाथों में पकड़ रखा था, लेकिन ऐसा नहीं लगता था कि मम्मी को इसकी ख़बर थी।

'क्या तुमको थोड़ा पानी चाहिए मम्मी?' लैला ने उनके कान में कहा। 'तुम्हें प्यास लगी है?'

लेकिन मम्मी ने कुछ नहीं कहा। उन्होंने कुछ नहीं किया, बस आगे-पीछे हिलती रहीं और दरी को एक एकटक बेजान नज़र से घूरती रहीं।

तभी मम्मी के पास बैठे हुए, कमरे भर में लोगों की झुकी हुई, उदास निगाहों को देखते हुए लैला को इसका अंदाज़ा हुआ कि उसके घर पर आई हुई तबाही कितनी बड़ी थी। संभावनाएं ख़त्म हो गई थीं। उम्मीदें मिट गई थीं।

लेकिन यह एहसास देर तक नहीं रहा। मम्मी के नुक़सान को महसूस करना। सचमुच में महसूस करना मुश्किल था। उन लोगों के मर जाने पर दुखी होना, दर्द उठाना लैला के लिए मुश्किल था, जिनके बारे में उसने कभी सचमुच में सोचा ही नहीं था कि वो ज़िंदा थे। अहमद और नूर उसके लिए दादी-नानी की कहानियों की तरह थे। वे परीकथाओं के चरित्रों की तरह थे। इतिहास की किताबों के बादशाहों की तरह थे।

उसके लिए तो तारिक़ ही था जो सचमुच का, ख़ून और मांस का बना हुआ इंसान था। जिस तारिक़ ने उसे पश्तो में कसमें खाना सिखाया था, जिसे नमक लगाई हुई लौंग की पत्तियां पसंद थीं, जो उनको चबाते हुए त्योरियां चढ़ाता और धीमी, दर्द भरी आवाज़ें निकालता, जिसकी कॉलरबोन के ठीक नीचे उल्टी मैंडोलिन की शक्ल का हल्का गुलाबी पैदाइशी निशान था।

इसलिए मम्मी की बग़ल में बैठी हुई लैला अहमद और नूर के लिए पूरे फ़र्ज़ के साथ मातम मना रही थी लेकिन उसके दिल में उसका सच्चा भाई ज़िंदा और सलामत था।

बीस

बाद के दिनों में मम्मी का पीछा करने वाली बीमारियों का दौर शुरू हो गया था। सीने और सिर में दर्द, जोड़ों का दुखना और रातों में पसीना आना, कानों को सुन्न कर देने वाला दर्द, ऐसी गांठें जिन्हें कोई पकड़ नहीं पाया। बाबी उनको डॉक्टर के पास ले गए, जिसने ख़ून और पेशाब के नमूने लिए, मम्मी की देह की एक्स-रे कराई लेकिन देह में कोई भी बीमारी नहीं निकली।

मम्मी अधिकतर दिनों में बिस्तर में पड़ी रहतीं। वो काले कपड़े पहनतीं। वो अपने बाल नोचतीं और अपने होंठ के नीचे के तिल को चबातीं। जब मम्मी जगी रहतीं तो लैला को घर हैरानी से भरा हुआ लगता। वो हमेशा लैला के कमरे में आतीं मानो वो उन कमरों में चल कर देर-सबेर उन लड़कों को पकड़ लेंगी जहां कभी वे लड़के सोते थे, हवाएं निकालते थे और तकियों से लड़ते थे। लेकिन उन्हें मिलती केवल उनकी गैरमौजुदगी। और लैला। लैला को लगता कि मम्मी के लिए लैला का होना भी न होने के बराबर हो गया था।

बस मम्मी से उनकी पांचों वक़्त की नमाज़ें नहीं छूटीं। हर नमाज़ के आख़िर में वे अपना सिर झुकाए, हथेलियां बांधे हुए ख़ुदा से मुजाहिदीनों की फतह की दुआ मांगतीं। लैला के कंधों पर घर का ज़्यादा से ज़्यादा काम आ गया था। अगर वो घर की देखभाल नहीं करती तो उसे हर कहीं कपड़े, जूते, चावल के खुल हुए थैले, फलियों के डिब्बे और बासी खाना बिखरा हुआ मिलता। लैला मम्मी के कपड़े धोती और उनकी चादरें बदलती। वो उनको मनुहार कर

नहाने और खाने के लिए बिस्तर से उठा कर ले जाती। वही बाबी की कमीज़ें प्रेस करती और उनके पतलूनों को तह लगाती। अब वो दिन पर दिन रसोइया बनती जा रही थी।

कभी कभी घर का काम निबटा कर लैला मम्मी की बग़ल में उनके बिस्तर में घुस जाती। वो उनको अपनी बांहों में लपेट लेती, वो अपनी उंगलियां उनकी उंगलियों में फंसा लेती, उनके बालों में अपने चेहरे को डुबो देती। मम्मी हिलती-डुलतीं, कुछ बुदबुदातीं। और आख़िर में हमेशा ही वो अपने बेटों के बारे कोई कहानी शुरू कर देतीं।

एक दिन जब वे इसी तरह लेटे हुए थे तो मम्मी ने कहा, 'अहमद एक रहनुमा बनने जा रहा था। उसमें इसका हुनर था। उसकी उम्र से तीन गुना बड़े लोग उसकी बातें आदर से सुनते थे लैला। वह देखने लायक था। और नूर। ओह मेरे नूर। वो हमेशा इमारतों और पुलों के खाके खींचता रहता था। वो एक आर्किटेक्ट बनता, पता है? वो अपनी डिज़ाइनों से काबुल का हुलिया बदल देने वाला था। और अब दोनों शहीद हो गए हैं। मेरे बच्चे, दोनों शहीद हो गए।'

लैला वहां पड़े हुए सुनती रही और चाहती रही कि मम्मी इस पर ग़ौर करें कि वो, लैला शहीद नहीं हुई है। कि वो ज़िंदा है, यहीं उनके साथ उनके बिस्तर में। कि उसकी अपनी उम्मीदें और भविष्य है। लेकिन लैला जानती थी उसके भविष्य का अपने भाइयों के अतीत से कोई मेल नहीं है। जब तक वो ज़िंदा थे, उस पर छाए हुए थे। मर कर वे लैला को तबाह कर देने वाले थे। मम्मी अब उनकी ज़िंदगियों के अजायबघर की देखरेख करनेवाली थीं और लैला वहां आने वाली एक तमाशबीन। वो उनके मिथकों को सही जगह पर रखने वाली एक औज़ार थी। वो चमड़े का वो टुकड़ा थी, जिस पर मम्मी का इरादा अपने शहीद बेटों की गाथाएं लिखना था।

'जो आदमी ख़बर लाया था, उसने बताया कि जब वे लड़के कैंप में लाए गए तो अहमद शाह मसूद ने खुद उनके कफ़न-दफ़न की देख-रेख की। उन्होंने उनकी कब्रों पर दुआ पढ़ी। तुम्हारे भाई इस कदर बहादुर थे लैला कि कमांडर मसूद ने खुद, पंजशेर के शेर ने, उन पर खुदा का करम हो, उनके कफ़न-दफ़न की देख-रेख की।'

मम्मी पीठ के बल लेट गईं। लैला भी हिली और अपना सिर मम्मी के

सीने पर रख दिया।

'किसी दिन,' मम्मी ने भर्राई हुई आवाज़ में कहा, 'मैंने गलियारे में घड़ी की टिक-टिक सुनी। फिर मैंने उन सारी टिक-टिकों के बारे में, उन सारे मिनटों, घंटों, दिनों और हफ़्तों और महीनों और बरसों के बारे में सोचा जो मेरा इंतज़ार कर रहे हैं। ये सारे दिन मेरे उन बच्चों के बिना आएंगे। और तब मैं सांस नहीं ले सकी लैला, मानो कोई मेरे दिल पर पांव रख कर खड़ा हो। मैं इतनी कमज़ोर हो गई हूं। मैं इतनी कमज़ोर हो गई हूं कि बस कहीं गिर जाना चाहती हूं।'

'मैं चाहती हूं कि मैं इसमें कुछ कर सकूं,' लैला ने पूरे दिल से कहा। लेकिन यह बात ऐसें ज़ाहिर हुई मानो यह किसी रहमदिल अजनबी की एक लापरवाह, दिखावे से भरी हुई तसल्ली हो।

'तुम एक अच्छी बेटी हो,' मम्मी ने गहरी सांस भरे के बाद कहा। 'और मैं तुम्हारे लिए अच्छी मां भी नहीं रही हूं।'

'ऐसा मत कहिए।'

'ओह। यह तो सच है। मैं जानती हूं और मुझे इस पर दुख है मेरी जान।'

'मम्मी?'

'म्म।'

लैला मम्मी को देखती हुई बैठ गई। मम्मी के बालों में अब कुछ स्याह, हल्की काली धारियां भी थीं। और लैला यह देख कर धक से रह गई कि उसकी हमेशा की भारी-भरकम मम्मी का वज़न कितना गिर गया था। उनके गाल खोखले, दुबले दिख रहे थे। जो ब्लाउज़ उन्होंने पहन रखी थी, वो उनके कंधों पर झूल रही थी और उनकी गर्दन और ब्लाउज़ के कॉलर के बीच कितनी खाली जगह थी। इससे भी ज़्यादा लैला ने देखा मम्मी की शादी की अंगूठी उनकी अंगुली से फिसल गई थी।

'मैं आपसे कुछ पूछना चाहती थी, मम्मी।'

'क्या?'

'आप नहीं...' लैला ने बोलना शुरू किया।

उसने हसीना से इस पर बात की थी। हसीना की सलाह पर उन दोनों ने बोतल की सारी एस्प्रिन गटर में फेंक दी थी, रसोई की छुरियां और कबाब की नुकीली सीखें पलंग की दरी के नीचे छुपा दी थीं। हसीना को आंगन में

एक रस्सी मिली थी। जब बाबी अपना रेज़र खोज रहे थे जो उनको नहीं मिल रहा था तो लैला को अपने डर के बारे में बताना पड़ा। वे पलंग के किनारे पर अपने दोनों हाथों को घुटनों में दबाए हुए ढह गए। लैला ने उनकी तरफ़ से किसी तरह के दिलासे का इंतज़ार किया। लेकिन वे बस खोए हुए, खाली आंखों से देखते रहे।

'आप नहीं...मम्मी मुझे फिक्र है कि-'

'मैंने इसके बारे में उस रात को सोचा था जिस रात हमें ख़बर मिली थी,' मम्मी ने कहा। 'मैं तुमसे झूठ नहीं बोलूंगी। मैंने तब से इसके बारे में सोचा है। लेकिन नहीं। फिक्र मत करो लैला। मैं अपने बेटों के सपनों को पूरा होते हुए देखना चाहती हूं। मैं वह दिन देखना चाहती हूं जब सोवियत लोग अपमानित होकर घर लौटेंगे और मुजाहिदीन विजय हासिल करके काबुल में दाख़िल होंगे। जब यह होगा, जब अफ़ग़ानिस्तान आज़ाद होगा तो मैं वहां रहना चाहती हूं, ताकि मेरे बेटे इसे देख सकें। वे इसे मेरी आंखों के ज़रिए देखेंगे।'

जल्दी ही मम्मी सो गईं और लैला को जज़्बात से जूझने को छोड़ गईं: उसे दिलासा मिली थी कि मम्मी का इरादा जीने का है, लेकिन उसे यह बात चुभ भी रही थी कि इस इरादे की वजह लैला नहीं है। वो अपनी मम्मी के दिल पर उस तरह से छाप नहीं छोड़ सकेगी जैसी छाप उसके भाइयों ने छोड़ी थी। क्योंकि मम्मी का दिल एक नीरस समुद्र तट जैसा है जहां लैला के पैरों के निशानों को दर्द की लहरें पोंछती-मिटाती हैं, पोंछती-मिटाती हैं।

इक्कीस

सोवियत जीपों और हथियारबंद गाड़ियों के कारवां को रास्ता देने के लिए ड्राइवर ने अपनी टैक्सी किनारे कर ली। तारिक़ सामने वाली सीट पर ड्राइवर की ओर झुका और चिल्लाया, *'पाजालुस्ता! पाजालुस्ता!'*

एक जीप की सीटी बजी और तारिक़ ने जवाब में खुश होकर और हाथ हिलाते हुए सीटी बजाई। 'इतनी प्यारी बंदूकें!' वो चिल्लाया। 'इतनी शानदार जीपें! इतनी शानदार फौज! कितना बुरा है कि तुम लोग गुलेल चलानेवाले किसानों से हार रहे हो!'

कारवां गुज़र गया। ड्राइवर वापस बीच सड़क पर आ गया।

'और कितनी दूर?' लैला ने पूछा।

'ज़्यादा से ज़्यादा एक घंटा,' ड्राइवर ने बताया। 'अगर कोई कारवां या चेकपोस्ट नहीं मिला तो।'

लैला, बाबी और तारिक़ एक दिन के दौरे पर थे। हसीना भी आना चाहती थी, उसने अपने अब्बा से फरियादें कीं लेकिन उन्होंने इसकी इजाज़त नहीं दी। यह दौरा बाबी का आइडिया था। हालांकि वे अपनी तनख्वाह से इसका खर्च मुश्किल से ही उठा सकते थे, लेकिन उन्होंने एक दिन के लिए ड्राइवर को भाड़े पर रखा। उन्होंने लैला को नहीं बताया था कि वो लोग कहां जा रहे हैं। उन्होंने बस इतना ही बताया था कि यह उसकी पढ़ाई के लिए मददगार होगा।

वे लोग सवेरे पांच बजे से सड़क पर थे। खिड़कियों से लैला के सामने

नज़ारा बदल रहा था, बर्फ़ से ढकी चोटियां रेतीली ज़मीन में बदलीं और फिर सीधी खड़ी वादियों और धूप में झुलसी चट्टानों में। रास्ते भर वे घास-फूस की छतों वाले मिट्टी के घरों और गेहूं के बंडलों से भरे हुए खेतों से होकर गुज़रे। लैला ने धूल से भरे मैदानों में यहां-वहां खड़े कूची बंजारों के तंबू देखे। और कभी-कभी उसकी नज़रों से सोवियत तोपों और टूटे हुए हेलीकॉप्टरों के अंजर-पंजर गुज़रते। उसने सोचा कि यह अहमद और नूर का अफ़ग़ानिस्तान है। यह सूबा बहरहाल ऐसी जगह था जहां जंग लड़ी जा रही थी। यह काबुल नहीं था। काबुल में तो काफ़ी अमन था। उधर काबुल में तो अगर कभी-कभार फायरिंग नहीं हो जाती, सिगरेट पीते हुए सोवियत फौजी फुटपाथों पर नहीं चलते और सड़कों पर सोवियत जीपें नहीं उछलती-कूदतीं तो वहां जंग महज़ एक अफवाह मानी जाती।

दो चेकपोस्टों को पार करने के बाद ढलती सुबह में वे एक वादी में दाख़िल हुए। बाबी सीट पर लैला की तरफ़ झुके और उसे दूर खड़ी पक्की ईंटों से बनी पुरानी दीवारों की एक कतार को दिखाया।

'इसे शहर-ए-ज़ोहक़ कहते हैं। यह लाल शहर है। यह एक किला हुआ करता था। नौ सौ साल पहले इसे हमलावरों से वादी की हिफाज़त के लिए बनाया गया था। चंगेज़ खान के पोते ने तेरहवीं शताब्दी में इस पर हमला किया लेकिन वो मारा गया। तब खुद चंगेज़ खान ने इसे तबाह कर दिया।'

'और मेरे नौजवान दोस्तों, यही हमारे देश की कहानी भी है। एक के बाद दूसरे हमलावर।' ड्राइवर ने खिड़की के बाहर सिगरेट की राख झाड़ते हुए कहा। 'मकदूनियाई, सासानी, अरब, मंगोल। अब सोवियत आए हैं। लेकिन हम वहां खड़ी उन दीवारों की तरह हैं। जर्जर और देखने लायक कोई अच्छी बात हममें नहीं है लेकिन हम अब भी खड़े हैं। क्या यह सच नहीं है, बदर?'

'असल में यही सच है,' बाबी ने कहा।

आधे घंटे बाद ड्राइवर ने गाड़ी किनारे की।

'तुम दोनों आओ,' बाबी ने कहा। 'बाहर निकलो और देख लो।'

वे टैक्सी से बाहर निकले। बाबी ने दिखाया। 'वो वहां। देखो।'

तारिक़ हैरान रह गया। लैला भी। और वो जानती थी कि हो सकता है कि वो सौ बरस ज़िंदा रहे और ऐसी शानदार चीज़ फिर से न देख पाए।

दो विशालकाय, आसमान छूते बुद्ध वहां थे। लैला ने उनके फ़ोटो देख कर जैसी कल्पना की थी, वे उससे भी कहीं ऊंचे थे। धूप में धुली हुई एक पहाड़ी चोटी में छेनी से गढ़े हुए वे बुद्ध उनकी ओर उसी तरह देख रहे थे जैसे लैला ने कल्पना की कि वे दो हज़ार साल पहले रेशम मार्ग पर वादी से गुज़रते कारवांओं को देखा करते होंगे। उनकी दूसरी तरफ़ एक लटकती हुई चोटी थी जिसमें बड़ी गुफाएं थीं।

'मैं ख़ुद को कितना छोटा महसूस कर रहा हूं।' तारिक़ ने कहा।

'तुम वहां चढ़ना चाहते हो?' बाबी ने कहा।

'मूर्तियों पर?' लैला ने पूछा। 'हम चढ़ सकते हैं?'

बाबी मुस्कुराए और उनका हाथ पकड़ लिया। 'चलो, आओ।'

तारिक़ के लिए चढ़ाई मुश्किल थी, जिसे एक गोल, संकरी और हल्की रोशनी वाली सीढ़ी पर चढ़ते हुए बाबी और लैला को पकड़ कर एक एक इंच सरकना पड़ा। उन्होंने रास्ते में चोटी में बनी अंधेरी गुफाएं और मधुमक्खी के छत्तों जैसी सुरंगे देखीं।

'सावधानी से पांव रखना,' बाबी ने कहा। उनकी आवाज़ गूंज गई। 'ज़मीन धोखा दे सकती है।'

बुद्ध के शरीर में बने छेदों पर कुछ हिस्सों में सीढ़ी खुली हुई थी।

'नीचे मत देखो बच्चो। बस सीधे आगे देखते रहो।'

चढ़ते हुए बाबी ने उनके बताया कि बामियान नौवीं सदी में इस्लामी अरब हुकूमत के मातहत आने के पहले एक मज़बूत बौद्ध केंद्र हुआ करता था। पत्थर की यह चोटियां बौद्ध भिक्षुओं का घर हुआ करती थीं जिन्होंने इन चोटियों में गुफाएं खोदीं ताकि वे उनका इस्तेमाल रहने के लिए और थके हुए तीर्थयात्रियों के ठहरने के लिए कर सकें। बाबी ने बताया कि भिक्षुओं ने इन गुफाओं की दीवारों और छतों में ख़ूबसूरत तस्वीरें बनाई हैं।

'एक समय तो,' उन्होंने बताया, 'इन गुफाओं में पांच हज़ार भिक्षु एकांतवासियों की तरह रह रहे थे।'

ऊपर पहुंचते-पहुंचते तारिक़ का दम फूल गया। बाबी भी हांफ रहे थे। लेकिन उनकी आंखें उत्तेजना से चमक रही थीं।

'हम अब इनके सिर के ऊपर खड़े हैं,' उन्होंने अपनी भौंहों को रूमाल

से पोंछते हुए कहा। 'यहां ऐसी जगह है जहां से हम दूर-दूर तक का नज़ारा देख सकते हैं।'

वे ऊपर की एक चट्टान पर धीरे-धीरे आगे बढ़े और साथ-साथ खड़े हुए। बाबी के दोनों तरफ़ खड़े हुए बच्चे नीचे पसरी हुई वादी को देख रहे थे।

'देखो!' लैला ने कहा।

बाबी मुस्कुराए।

नीचे बामियान की वादी में हरे-भरे खेतों की कालीन बिछी थी। बाबी ने बताया कि वे सर्दियों की गेहूं और अल्फाल्फा की फसलें हैं। उनमें आलू की फसल भी है। खेतों की मेंड़ों पर पोपलार खड़े थे और उनके बीच में नालियां और सिंचाई के लिए गड्ढे बने हुए थे। उनके किनारों पर औरतों बैठी कपड़े धो रही थीं। बाबी ने ढलान पर बिछे हुए धान और जौ के खेतों को दिखाया। यह पतझड़ का मौसम था और लैला चमकीली ट्यूनिक पहने लोगों को मिट्टी की ईंटों वाले घरों की छतों पर सूखने के लिए अनाज डालते हुए देख सकती थी। शहर की तरफ़ जाने वाली मुख्य सड़क के दोनों किनारों पर भी पोपलार की कतारें थीं। गांव के उस पार, नदी और नाले के पार लैला को पहाड़ों का नंगा और धूसर निचला हिस्सा दिख रहा था। उसके उस पार बर्फ़ से भरा हिंदुकुश था, जो अफ़ग़ानिस्तान की हर चीज़ के उस पार मौजूद था।

इन सबके ऊपर साफ़, बिना धब्बे वाला नीला आसमान था।

'यह इतना शांत है,' लैला ने सांस ली। वो छोटी भेड़ों और घोड़ों को देख सकती थी लेकिन उनका मिमियाना और हिनहिनाना नहीं सुन सकती थी।

'यहां के बारे में यही बात मुझे हमेशा याद रहती है,' बाबी ने कहा। 'ख़ामोशी। इसकी शांति। मैं चाहता था कि तुम भी इसे महसूस करो। लेकिन मैं यह भी चाहता था कि तुम अपने देश की धरोहरों को देखो बच्चों, इसके समृद्ध इतिहास के बारे में जानो। देखो, कुछ चीज़ें मैं तुम्हें सिखा सकता हूं। कुछ चीज़ें तुम किताबों से जान सकते हो। लेकिन ऐसी चीज़ें भी हैं जिन्हें तुमको बस देखना और महसूस करना होता है।'

'देखो,' तारिक़ ने कहा।

उन्होंने एक गांव के ऊपर गोल-गोल ऊड़ते बाज़ को देखा।

'क्या आप कभी मम्मी को यहां लाए हैं?' लैला ने पूछा।

'ओह, कई बार। लड़कों के पैदा होने के पहले। बाद में भी। तुम्हारी

मां तब जोखिम उठाने वाली हुआ करती थीं, और...इतनी जीवंत। मैं अब तक जितने लोगों से मिला हूं, उनमें वो सबसे जीवंत और खुश रहने वाली इनसान थी।' वे याद करते हुए मुस्कुराए। 'क्या हंसती थी वो। मैं कसम खाकर कहता हूं मैंने इसी बात पर, उसकी हंसी के ऊपर उससे शादी की थी लैला। वह तुमको हिला कर रख देती। तुम उसके आगे टिक नहीं सकतीं।'

स्नेह की एक लहर लैला पर छा गई। इसके बाद उसने बाबी को हमेशा इसी तरह याद किया : चट्टान पर कुहनी टिका कर, अपनी ठोढ़ी को दोनों हथेलियों में थामे, मम्मी की पिछली बातों के बारे में बताते हुए बाबी, जिनके बाल हवा में उड़ रहे थे और आंखें धूप में सिकुड़ी हुई थीं।

'मैं कुछ गुफाएं देखना चाहता हूं,' तारिक़ ने कहा।

'सावधानी से,' बाबी ने कहा।

'मैं सावधान रहूंगा काका जान,' तारिक़ की आवाज़ गूंजी।

लैला को नीचे काफ़ी दूर बाड़ से बंधी हुई एक गाय के पास तीन लोग बातें करते हुए दिखे। उनके चारों ओर के पेड़ों का रंग पीला हो रहा था और संतरे का लाल।

'मुझे लड़के भी याद आते हैं, पता है,' बाबी ने कहा। उनकी आंखें पूरी ऊपर थीं। उनकी ठोढ़ी कांप रही थी। 'हो सकता है कि मैं नहीं...तुम्हारी अम्मी की खुशियां और उदासी दोनों ही चरम पर पहुंच जाती हैं। वो इनको छुपा नहीं पाती। वह कभी ऐसा नहीं कर पाई। मैं, मुझे लगता है कि मुझमें फ़र्क़ है। मेरा रुझान...लेकिन लड़कों की मौत ने मुझे भी तोड़ दिया है। मुझे भी उनकी याद आती है। एक भी दिन ऐसा नहीं गुज़रता कि मैं...यह बहुत मुश्किल है लैला। इतना मुश्किल है।' उन्होंने अपनी आंखों के भीतरी कोनों को उंगली के पोरों और अंगूठे से दबाया। जब उन्होंने बात करने की कोशिश की तो उनकी आवाज़ टूटी हुई थी। उन्होंने अपने होंठों को अपने दांतों पर चढ़ा लिया और इंतज़ार किया। उन्होंने एक लंबी, गहरी सांस ली और उसे देखा। 'लेकिन मुझे खुशी है कि मेरे पास तुम हो। हर रोज़ मैं तुम्हारे लिए खुदा का शुक्रिया अदा करता हूं। हर रोज़। कभी-कभी जब तुम्हारी अम्मी का मिजाज़ सचमुच में बहुत ही ख़राब होता है तो मुझे लगता है कि मेरे पास बस तुम्हीं हो, लैला।'

लैला उनके करीब चली आई और उसने अपने गालों को उनके सीने

पर टिका दिया। बाबी थोड़े भौंचक लगे- मम्मी के उलट वे अपना लगाव शारीरिक रूप से ज़ाहिर नहीं करते थे। उन्होंने लैला के ललाट पर हल्के से चूम लिया और उसे अटपटे तरीके से गले लगाया। वे कुछ देर तक इसी तरह खड़े रहे और नीचे बामियान की वादी को देखते रहे।

'मैं इस जगह को जितना प्यार करता हूं, कभी-कभी मैं इसे छोड़ कर चले जाने के बारे में सोचता हूं,' बाबी ने कहा।

'कहां जाने के लिए?'

'कहीं भी, जहां भूलना आसान हो। मेरा अंदाज़ा है कि पहले तो पाकिस्तान। शायद एक या दो बरसों के लिए। वहां रह कर आगे जाने के लिए काग़ज़ी कार्रवाई का इंतज़ार करूंगा।'

'और तब?'

'और तब खैर, यह एक बहुत बड़ी दुनिया है। शायद अमेरिका। समंदर के करीब कोई जगह। जैसे कि कैलीफोर्निया।'

बाबी ने बताया कि अमेरिकी बहुत खुले दिल वाले लोग हैं। वे कुछ समय तक पैसे और खाने से मदद करते हैं जब तक कि हम अपने पैरों पर न खड़े हो जाएं।

'मैं काम खोज लूंगा और कुछ बरसों में जब हम काफ़ी बचत कर लेंगे तो हम एक छोटा-सा अफ़ग़ानी रेस्टोरेंट खोल लेंगे। ग़ौर करना कि ज़्यादा सजावटी नहीं, बस एक छोटी-सी जगह जहां कुछ टेबल, कुछ दरियां होंगी। शायद काबुल की कुछ तस्वीरें भी हों। हम अमेरिकियों को अफ़ग़ानी खाने का मज़ा देंगे। और तुम्हारी अम्मी के बनाए खाने से तो खाने वालों की सड़क पर कतार लग जाएगी।

'और तुम, बेशक तुम स्कूल जाना जारी रखोगी। तुम जानती हो कि मैं इसके बारे में क्या सोचता हूं। यह हमारी सबसे बड़ी प्राथमिकता होगी कि तुमको अच्छी तालीम मिले। हाई स्कूल के बाद कॉलेज। लेकिन अपने खाली वक़्त में अगर तुम चाहो तो ऑर्डर लेने में, पानी के डिब्बे भरने में, ऐसी ही चीज़ों में हमारी मदद कर सकती हो।'

बाबी ने कहा कि वे रेस्टोरेंट में जन्मदिन की दावतें, सगाइयों का जश्न, नए साल के जमावड़े करेंगे। यह दूसरे अफगानियों के लिए भी मिलने-जुलने का एक अड्डा बन जाएगा जो उनकी तरह जंग की वजह से वहां चले आएंगे।

और देर रातों में सबके चले जाने पर, जगह साफ़ करने के बाद वे तीनों खाली टेबलों के बीच बैठे चाय पीऐंगे। तब वे थके हुए होंगे लेकिन अपनी अच्छी किस्मत के लिए शुक्रगुज़ार भी होंगे।

बात ख़त्म कर बाबी चुप हो गए। वे दोनों ही चुप थे। वे जानते थे कि मम्मी कहीं नहीं जानेवालीं। अफ़ग़ानिस्तान को छोड़ने के बारे में वे तब भी सोच नहीं सकती थीं जबकि अहमद और नूर अभी ज़िंदा थे। अब जब वे शहीद हो गए थे तो सामान समेट कर चले जाना तो उससे भी बुरा अपमान होता। उनके बेटों ने जो कुरबानी दी थी, यह उनके साथ गद्दारी और बेपरवाही होती।

तुम इसके बारे में सोच भी कैसे सकते हो? लैला मम्मी को यह कहते हुए सुन सकती थी। *क्या उनके मारे जाने का तुम्हारे लिए कोई मतलब नहीं है भाईजान? मुझे बस यही जान कर तसल्ली मिल जाती है कि मैं उसी ज़मीन पर चल रही हूं जिनमें उनका ख़ून जज़्ब है। नहीं। कभी नहीं।*

और लैला जानती थी कि बाबी उनके बग़ैर कभी नहीं जाएंगे। भले ही मम्मी उनके लिए अब बीवी उतनी नहीं रह गई थीं जितनी वो लैला की अम्मी थीं। वो दिन में देखे गए इन सपनों को मम्मी की खातिर उसी तरह झाड़ देते जैसे वे काम से घर लौटने के बाद अपने कोट से आटा झाड़ते थे। और इसलिए वे यहीं रहेंगे। जंग ख़त्म होने तक वे इंतज़ार करेंगे। और जंग के बाद भी जो सामने आएगा उसके लिए वे यहीं रहेंगे।

लैला को याद आया कि एक बार मम्मी बाबी से कह रही थीं कि उन्होंने एक ऐसे आदमी से शादी की थी जो अपने विचारों का पक्का नहीं था। मम्मी नहीं समझी थीं। वो नहीं समझी थीं कि अगर वो शीशे में देखतीं तो पातीं कि वो एक ऐसे आदमी थे जो पूरी ज़िंदगी एक अडिग और मज़बूत विचार पर टिके हुए थे—वो हमेशा मम्मी का ख़याल रखते थे।

उबले हुए अंडों और आलुओं के साथ रोटी खाने के बाद तारिक़ ने शोर मचाती हुई बहती धारा के किनारे एक पेड़ के नीचे झपकी ली। उसने अपने कोट को सफाई के साथ मोड़ कर तकिया बनाया और सोते हुए उसने अपने हाथ सीने पर बांध लिए। ड्राइवर बादाम ख़रीदने के लिए गांव में चला गया। बाबी मोटे तने वाले अकासिया के पेड़ की जड़ों पर बैठ कर एक पेपरबैक पढ़ने लगे।

लैला इस किताब के बारे में जानती थी। यह सांतियागो नाम के एक बूढ़े मछुआरे की कहानी कहती थी जिसने एक बहुत बड़ी मछली पकड़ ली थी। नाव को महफूज जगह पर पहुंचाने तक उसकी मछली का कुछ भी हिस्सा नहीं बचा था। शार्कों ने उसके टुकड़े-टुकड़े कर दिए थे।

लैला ने नाले के किनारे बैठ कर अपने पांव उसके ठंडे पानी में उतार दिए। ऊपर मच्छर भनभना रहे थे और भूए नाच रहे थे। एक पतंगे ने पास में ही पर मारे। लैला को घास की एक पत्ती से दूसरी पर उड़ते हुए इसके परों पर चमकती धूप की एक झलक मिली। पहले वे जामुनी लगे, फिर हरे, नारंगी। नाले के पार मुकामी हज़ारा लड़कों का एक झुंड ज़मीन पर से गाय के सूखे हुए गोबर के टुकड़े बीन कर अपनी पीठ पर बंधी झोली में जमा कर रहा था। कही कहीं गधे घूम रहे थे। एक जेनरेटर चल रहा था।

लैला ने फिर से बाबी के छोटे-से सपने के बारे में सोचा। समंदर के करीब किसी जगह।

कुछ था, जिसे लैला ने बुद्ध के ऊपर खड़े हुए बाबी को नहीं बताया था। वह ये बात थी कि एक तरह से अच्छा ही था कि वे नहीं जा सकते थे। उसे गीती और उसके खुशी से चमकते चेहरे की बहुत कमी महसूस होती, हां और हसीना की भी। उसके साथ की पागलपन से भरी हंसी और निर्मम मज़ाकों की कमी महसूस होती। लेकिन सबसे ज़्यादा लैला को याद आई तारिक़ के बिना बिताए गए उन चार हफ़्तों की बेचैनी जब वो गज़नी चला गया था। उसे याद आया कि किस तरह उसके बिना समय घिसट-घिसट कर बीतता था और कैसे उसे लगता था कि वो भटक गई है, उसने संतुलन खो दिया है। वो हमेशा के लिए तारिक़ से अलग हो जाने को कैसे बर्दाश्त कर पाएगी?

शायद ऐसे देश में किसी के करीब रहने की ऐसी ज़बर्दस्त इच्छा बेतुकी हो, जहां उसके अपने भाइयों को गोलियों ने छलनी कर दिया था। लेकिन लैला को बस वह दृश्य याद करने भर की देर थी जिसमें तारिक़ अपना नकली पैर उठाए खादिम की तरफ़ बढ़ रहा था, और फिर दुनिया की कोई भी चीज़ उसे अपने से ज़्यादा मुनासिब नहीं लगती।

छह महीनों के बाद 1988 के अप्रैल महीने में बाबी एक बड़ी ख़बर के साथ घर लौटे।

'उन्होंने एक करार किया है!' उन्होंने कहा। 'जेनेवा में। यह आधिकारिक करार है! वो जा रहे हैं। नौ महीनों के भीतर-भीतर अफ़ग़ानिस्तान में कोई सोवियत नहीं रह जाएगा!'

मम्मी बिस्तर पर बैठी थीं। उन्होंने कंधे झटके।

'लेकिन कम्युनिस्टों की हुकूमत तो बनी रहेगी,' वो बोलीं। 'नजीबुल्ला सोवियतों का कठपुतली सदर है। वो कहीं नहीं जानेवाला। नहीं, जंग जारी रहेगी। यह अंत नहीं है।'

'नजीबुल्लाह नहीं टिकेगा,' बाबी ने कहा।

'वो जा रहे हैं, मम्मी! वो सचमुच जा रहे हैं!'

'तुम दोनों चाहो तो जश्न मना सकते हो। लेकिन मुझे तब तक चैन नहीं जब तक विजेता मुजाहिदीन यहां काबुल में परेड नहीं करते।'

और इसी के साथ वो फिर से लेट गईं और कंबल खींच लिया।

बाईस

जनवरी, 1989

लैला के ग्यारह साल का होने से तीन महीने पहले यानी 1989 की जनवरी के एक सर्द और लंबे लगनेवाले दिन में लैला, उसके अम्मी-अब्बू और हसीना शहर से जा रहे आख़िरी सोवियत कारवां को देखने गए। वज़ीर अकबर खान के पास मिलिटरी क्लब के बाहर रास्ते के दोनों तरफ़ तमाशबीन जमा थे। कीचड़ में सनी बर्फ़ में खड़े होकर उन्होंने तोपों, हथियारबंद ट्रकों और जीपों की कतारों को देखा। गिरती हुई हल्की बर्फ़ उनकी गुज़रती हुई हेडलाइटों में चमक रही थी। लोग उन पर चिल्लाते हुए फब्तियां कस रहे थे। अफ़ग़ानी फौजी लोगों को सड़क से दूर कर रहे थे। कभी-कभी उनको चेतावनी में गोलियां दागनी पड़तीं।

मम्मी ने अहमद और नूर की एक तस्वीर अपने सिर के ऊपर उठा रखी थी। यह वो तस्वीर थी, जिसमें वे नाशपाती के पेड़ के नीचे पीठ से पीठ सटाए बैठे हुए थे। उनकी तरह दूसरी औरतों ने भी अपने शहीद शौहरों, बेटों, भाइयों की तस्वीरें उठा रखी थीं।

किसी ने लैला और हसीना के कंधे थपकाए। यह तारिक़ था।

'तुम्हें यह चीज़ कहां से मिली?' हसीना जोश में चिल्लाई।

'मैंने सोचा कि मौक़े के हिसाब से पहन कर जाऊं।' तारिक़ ने कहा। उसने एक बड़ी-सी रूसी फर की टोपी पहन रखी थी। उसमें कान के फीते भी लगे थे जिनको तारिक़ ने खींच रखा था। 'मैं कैसा दिख रहा हूं?'

'अजीब,' लैला हंसी।

'यही तो आइडिया है।'

'तुम्हारे अम्मी-अब्बू ऐसी पोशाक में तुम्हारे साथ आए हैं?'

'वे घर पर हैं, असल में,' उसने कहा।

पिछले पतझड़ में गजनी में तारिक़ के चाचा दिल के दौरे से गुज़र गए और कुछ हफ़्तों के बाद तारिक़ के अब्बा को भी दिल का दौरा पड़ा। इसके बाद वे कमज़ोर हो गए, जिन पर अब हफ़्तों लंबे उत्तेजना और निराशा के दौरे पड़ते थे। लैला तारिक़ को ऐसे देख कर खुश थी। उसे पुराने, आत्मविश्वासी तारिक़ को फिर से पाकर अच्छा लगा। अपने अब्बा की बिमारी के बाद हफ़्तों लैला ने उसे फटेहाल, मुंह लटकाए और चुप-चुप सा देखा था।

वे तीनों घूमने-फिरने लगे जबकि मम्मी और बाबी खड़े सोवियतों को देखते रहे। सड़क पर एक फेरी वाले से तारिक़ ने उबली हुई फलियों की एक प्लेट ख़रीदी, जिसके ऊपर धनिए की ख़ूब सारी चटनी लगी थी। दरियों की एक बंद दुकान के सामने बैठ कर उन्होंने उसे खाया। इसके बाद हसीना अपने घर वालों को खोजने चली गई।

घर लौटने के सफ़र में तारिक़ और लैला उसके अम्मी-अब्बू के पीछे बैठे। मम्मी खिड़की के पास बैठी हुई बाहर देख रही थीं। तस्वीर को उन्होंने अपने सीने से चिपका रखा था। उनकी बग़ल में बिना कोई भाव लिए बाबी एक आदमी की बातें सुन रहे थे जो यह कह रहा था कि भले ही सोवियत चले गए हों, लेकिन वे नजीबुल्लाह को हथियार भेजते रहेंगे।

'वो उनकी कठपुतली है। वो उसकी ज़रिए जंग को जारी रखेंगे, तुम चाहो तो शर्त लगा सकते हो।'

अगली कतार में किसी ने अपनी दलील शुरू कर दी।

मम्मी खुद से ही बुदबुदा रही थीं। ये एक ही सांस में कही जा रही उनकी दुआएं थीं जिसके आख़िरी के कुछ शब्द छोटी, तेज़ चीखों में बदल जाते थे।

बाद में उस दिन लैला और तारिक़ सिनेमा पार्क गए और एक सोवियत फ़िल्म देखी जो फ़ारसी में डब किए जाने से अनजाने में ही हास्यास्पद हो गई थी। उसमें एक सौदागर जहाज़ दिखाया गया था, जिसका फर्स्ट मेट कैप्टन की बेटी

के प्यार में पड़ जाता है। लड़की का नाम अल्योना है। फिर एक भयानक तूफान आता है, बिजली कड़कती है और बारिश होने लगती है, जिससे जहाज़ समुद्र में हिलकोरें खाने लगता है। डरे हुए जहाज़ी चीखते हुए कुछ कहते हैं, जिसका अनुवाद करते हुए एक शांत अफ़ग़ानी आवाज़ कहती है : 'मेरे प्रिय महाशय, क्या आप रस्सी हमें देंगे?'

यहां तारिक़ की खिलखलाहट फूट पड़ी। और जल्दी ही वो दोनों हंसी के निर्बाध हमले की गिरफ्त में थे। जब एक थक जाता कि तभी दूसरे की नाक से आवाज़ उठती और फिर हंसी का दूसरा दौरा शुरू हो जाता। दो कतार आगे बैठा एक आदमी उनकी तरफ़ मुड़ा और उसने उनको चुप रहने का इशारा किया।

अंत में एक शादी का सीन था। कैप्टन ने इल्योना को फर्स्ट मेट से शादी करने की इजाज़त दे दी थी। नया-नया शादीशुदा जोड़ा एक दूसरे को देखते हुए मुस्कुरा रहा था। हर कोई वोदका पी रहा था।

'मैं कभी शादी नहीं करूंगा,' तारिक़ फुसफुसाया।

'मैं भी नहीं,' लैला ने कहा, लेकिन यह बात वो पल भर के लिए असहज हुए और हिचके बगैर नहीं कह पाई। उसे फिक्र हुई कि उसकी आवाज़ से तारिक़ की बात पर उसकी निराशा ज़ाहिर न हो जाए। बैठ रहे दिल के साथ उसने यह बात जोड़ी, 'कभी नहीं।' इस बार उसने बात पर ज़्यादा ज़ोर दिया।

'शादियां बेवकूफ़ी हैं।'

'पूरी बकवास।'

'इतना सारा पैसा खर्च होता है।'

'किस पर?'

'ऐसे कपड़ों पर जिन्हें आप फिर कभी नहीं पहनेंगे।'

'हा!'

'अगर मैं कभी शादी करूंगा,' तारिक़ ने कहा, 'तो लोगों को शादी के स्टेज पर तीन लोगों के लिए जगह बनानी पड़ेगी। मेरे लिए, मेरी दुल्हन के लिए और एक उस आदमी के लिए जो मेरे सिर में गोली मारेगा।'

सामने की कतार वाले उस आदमी ने उस पर गुस्से से भरी हुई निगाह डाली।

पर्दे पर अल्योना और उसके नए शौहर एक दूसरे को होंठों पर चूम रहे

थी।

चुंबन को देखते हुए लैला को एकबारगी लगा कि अजीब तरह से वो सबके सामने ज़ाहिर हो गई है। वह अपने उछलते हुए दिल और कानों में शोर मचाते ख़ून और अपनी बग़ल में बैठे हुए तारिक़ के प्रति सचेत हो गई। वो तन कर स्थिर बैठा हुआ था। चुंबन लंबा खिंच गया। लैला को अचानक यह बात बेहद ज़रूरी लगने लगी कि वो हिले नहीं और न ही कुछ बोले। उसने महसूस किया कि तारिक़ उसे उसी तरह देख रहा था, जैसे वो तारिक़ को देख रही थी। तारिक़ की एक आंख चुंबन पर थी और दूसरी लैला पर। उसने जानना चाहा कि क्या वो उसकी नाक से ज़ोर-ज़ोर से निकलती हवा को सुन रहा था और किसी हल्की-सी ग़लती का, किसी अनियमितता का इंतज़ार कर रहा था जो उसके मन में उमड़ रहे ख़यालों को ज़ाहिर कर देती।

और तारिक़ को चूमना, अपने होंठों पर उसके होठों के ऊपर के नर्म घुंघराले बालों को महसूस करना कैसा होगा?

तब तारिक़ अपनी सीट पर बेचैनी से हिला। तनाव से भरी हुई आवाज़ में उसने कहा, 'क्या तुम जानती हो कि अगर तुम साइबेरिया में गुलेल से पत्थर छोड़ो तो धरती पर गिरने से पहले वह जम कर बर्फ़ हो जाएगा?'

वे दोनों हंस पड़े लेकिन इस बार की हंसी कम देर की और असहज थी। और जब फ़िल्म ख़त्म हुई और वे बाहर निकले तो लैला ने यह देख कर राहत महसूस की कि आसमान में अंधेरा छा गया था और उसे दिन की जगमगाती रोशनी में तारिक़ से आंखें नहीं मिलानी पड़ेंगी।

तेईस

अप्रैल, 1992

तीन साल गुज़र गए।

इस बीच तारिक़ के अब्बा को एक के बाद एक दौरे पड़े। इससे उनका बायां हाथ बेजान हो गया और उनकी आवाज़ में हल्की-सी लड़खड़ाहट आ गई। जब उनका मिजाज़ ख़राब होता, और उनका मिजाज़ अक्सर ही ख़राब होता, तो उनकी लड़खड़ाहट बेहद बढ़ जाती।

तारिक़ का नकली पांव फिर से छोटा पड़ गया था और उसे रेड क्रॉस से नया पैर मिल गया था। हालांकि इसके लिए उसे छह महीने तक इंतज़ार करना पड़ा था।

जैसा हसीना को डर था, उसका परिवार उसे लाहौर लेकर गया, जहां उसके ऑटो की दुकान वाले उसके चचेरे भाई से उसकी शादी कर दी गई। जिस सुबह वो काबुल से रवाना हो रहे थे, लैला और गीती हसीना के घर उसे विदा कहने गई थीं। हसीना ने उनको बताया कि उसके चचेरा भाई, यानी उसका होने वाला शौहर जर्मनी जाने की तैयारियां शुरू कर चुका है, जहां उसके भाई रहते थे। उसने लगा था कि साल भर के भीतर वे फ्रैंकफर्ट में होंगे। इसके बाद वे तीनों गले मिल कर रोई थीं। लैला ने हसीना को आख़िरी बार तब देखा जब हसीना के अब्बा उसे एक भरी हुई टैक्सी की पिछली सीट पर बैठा रहे थे।

सोवियत संघ इतनी जल्दी बिखर गया कि लोग हैरान रह गए। लैला

को ऐसा लगता कि हर कुछ हफ़्ते में बाबी आज़ादी का ऐलान करने वाले बाल्टिक गणतंत्रों की ख़बरों के साथ आते थे। लिथुआनिया। एस्टोनिया। यूक्रेन। क्रेमलिन पर से सोवियत झंडा उतार लिया गया। रूसी गणराज्य का जन्म हुआ।

काबुल में नजीबुल्लाह ने चालें बदलीं और ख़ुद को एक ईमान वाले मुसलमान के रूप में पेश करने की कोशिश की। 'यह काफ़ी नहीं है और बहुत देर हो चुकी है,' बाबी ने कहा। 'ऐसा नहीं हो सकता कि आप एक दिन *खाद* के मुखिया रहें और अगले दिन मस्जिद में जाकर उन लोगों के साथ नमाज़ पढ़ें जिनके रिश्तेदारों को आपने यातनाएं दी हों और मार डाला हो।' काबुल के गिर्द कस रहे फंदे को महसूस करते हुए नजीबुल्लाह ने मुजाहिदीनों के साथ एक समझौता करने की कोशिश की लेकिन मुजाहिदीनों ने इसे ठुकरा दिया।

अपने बिस्तर पर से मम्मी ने कहा, 'उनके लिए अच्छा हुआ।' वे रात-रात भर मुजाहिदीनों के लिए जागतीं और उनकी परेड का इंतज़ार करतीं। वे अपने बेटों के दुश्मनों की हार का इंतज़ार कर रही थीं।

और आख़िरकार वे हारे। यह अप्रैल, 1992 में हुआ, जब लैला चौदह साल की हुई।

नजीबुल्लाह ने आख़िरकार आत्मसमर्पण कर दिया और उसे शहर के दक्षिण में दारुलामान महल के करीब संयुक्त राष्ट्र के परिसर में पनाह मिली।

जिहाद पूरा हो गया था। लैला के पैदा होने वाली रात के बाद से जितनी कम्युनिस्ट हुकूमतें आई थीं, वो सारी हराई जा चुकी थीं। मम्मी के हीरो, अहमद और नूर के जंगी भाई जीत गए थे। और अब हरेक चीज़ को कुर्बान कर चुकने, अपने परिवारों को पहाड़ों में जीने के लिए छोड़ने और अफ़ग़ानिस्तान की संप्रभुता के लिए अपनी लड़ाई के एक दशक के बाद मुजाहिदीन काबुल आ रहे थे। मांस, ख़ून और जंग में थकी हुई हड्डियों के साथ सचमुच के मुजाहिदीन।

मम्मी उन सबको उनके नाम से जानती थीं।

उनमें शानदार उज़्बेक कमांडर दोस्तम थे जो जुंबिश-ए-मिल्ली गुट के रहनुमा थे। उनको अपनी वफादारियां बदलते रहने की शोहरत हासिल थी। उग्र और बदमिजाज़ गुलबुद्दीन हिक़मतियार थे जो हिज़्ब-ए-इस्लामी गुट के नेता

थे। वे एक पश्तून थे, जिन्होंने इंजीनियरिंग की पढ़ाई की थी और एक बार एक माओवादी छात्र की हत्या कर दी थी। उनमें जमात-ए-इस्लामी गुट के ताजिक नेता रब्बानी थे जो बादशाहत के दिनों में काबुल यूनिवर्सिटी में इस्लाम पढ़ाया करते थे। पगमान के एक पश्तून सय्याफ थे, जिनके रिश्ते अरब दुनिया से भी जुड़ते थे। वे मोटे थे और इत्तेहाद-ए-इस्लामी गुट के नेता था। अब्दुल अली मज़ारी भी उनमें थे, जो हिज़्ब-ए-वहदत गुट के नेता थे। वे अपने साथी हज़ारा लोगों में बाबा मज़ारी के नाम से भी जाने जाते थे। उनके ईरान के शियाओं से पुख़्ता संबंध थे।

और बेशक उनमें मम्मी के हीरो, रब्बानी के साथी, भयानक, करिश्माई ताजिक कमांडर, पंजशेर के शेर अहमद शाह मसूद भी थे। मम्मी ने उनका एक पोस्टर अपने कमरे में लगा रखा था। मसूद का ख़ूबसूरत, ख़यालों में डूबा हुआ चेहरा, तनी हुई भौंहें और उनकी पहचान बन गई झुकी हुई पकोल काबुल में हर जगह मौजूद थे। उनकी जानदार काली आंखें बड़े-बड़े बोर्डों, दीवारों, दुकानों की सामने की खिड़कियों, टैक्सियों के ऊपर एंटीना में लगे हुए छोटे से झंडों में से लोगों को देखतीं।

मम्मी के लिए यह वो दिन था, जिसके लिए वो अरसे से तरस रही थीं। यह उनके बरसों के इंतज़ार का फल था।

आख़िरकार अब वे अपने रतजगे ख़त्म कर सकती थीं और उनके बेटे चैन की नींद सो सकते थे।

नजीबुल्लाह के आत्मसमर्पण करने के अगले दिन मम्मी बिस्तर से उठीं तो वो एक नई ही औरत थीं। पांच बरस पहले अहमद और नूर के शहीद होने के बाद से पहली बार उन्होंने काले कपड़े नहीं पहने। उस दिन मम्मी ने गहरे नीले रंग की लिनेन की पोशाक पहनी जिस पर सफ़ेद पोल्का डॉट्स थीं। उन्होंने खिड़कियां साफ़ कीं, फ़र्श बुहारी, घर में ताज़ी हवा के लिए पर्दे हटाए और उस दिन देर तक नहाईं। उनकी आवाज़ में ख़ुशी भरी हुई थी।

'एक दावत ज़रूरी है,' उन्होंने ऐलान किया।

लैला को उन्होंने पड़ोसियों को दावत देने के लिए भेजा। 'उनसे कहना कि हम कल दोपहर में एक बड़ी दावत कर रहे हैं।'

रसोई में कूल्हों पर हाथ रखे खड़ी हुई और चारों तरफ़ का जायज़ा लिया।

फिर दोस्ताना लहजे में बोलीं, 'तुमने मेरी रसोई के साथ क्या कर डाला है लैला? उई। हर चीज़ अलग जगह पर है।'

उन्होंने इस नाटकीय अंदाज़ में बर्तनों और तसलों की जगह बदलनी शुरू की मानो वो उन पर नए सिरे से दावेदारी ठोंक रही हों। मानों वे अब लौट कर आ गई हों और अपनी ज़मीन पर फिर से दखल कर रही हों। लैला उनके रास्ते में नहीं आई। यह अच्छा ही था। मम्मी खुशियों के जोश में भी उतनी ही अजेय हुआ करती थीं जितनी ग़ुस्से के आवेग में। बेकरारी से भरी हुई ऊर्जा के साथ मम्मी ने खाने की तैयारी की : राजमा और सूखा हुआ सोआ डला अ़उश सूप, कोफ्ता, ताज़ा दही मिला कर बनाया हुआ गरमागरम मंटू जिसके ऊपर पुदीने से सजावट की जाएगी।

'तुम अपनी भौंहों के बाल नोच रही हो,' मम्मी ने रसोई के ओटे पर चावल का बड़ा सा थैला खोलते हुए कहा।

'बस थोड़ा-बहुत।'

मम्मी ने थैले से ढेर सारा चावल निकाल कर पानी से भरे एक बड़े काले भगोने में डाला। उन्होंने अपनी आस्तीनें ऊपर चढ़ाईं और उसे चलाने लगीं।

'तारिक़ कैसा है?'

'उसके अब्बा बीमार चल रहे हैं,' लैला ने कहा।

'वैसे कितनी उमर होगी उसकी?'

'पता नहीं। साठ पार कर गए होंगे, शायद।'

'मैं तारिक़ की उमर पूछ रही हूं।'

'ओह। सोलह।'

'वो अच्छा लड़का है। तुमको नहीं लगता?'

लैला ने कंधे झटक दिए।

'हालांकि अब वो लड़का नहीं रहा। है न? सोलह। लगभग एक पूरा मर्द। तुमको नहीं लगता?'

'तुम क्या जानना चाह रही हो मम्मी?'

'कुछ नहीं,' मम्मी ने मासूमियत से मुस्कुराते हुए कहा। 'कुछ नहीं। बस ये कि तुम...अह, कुछ नहीं। अच्छा होगा कि कुछ न कहा जाए।'

'मैं देख रही हूं कि तुम कहना चाहती हो,' मम्मी जिस तरह घुमा-फिरा कर, मज़ाक में उस पर आरोप लगा रही थीं, लैला उससे चिढ़ गई थी।

'ख़ैर,' मम्मी ने भगोने की रिम पर हाथों को मोड़ा। उन्होंने जिस तरह से 'ख़ैर' कहा था, और अपने हाथ मोड़े थे, उसमें लैला को एक असहजता की झलक मिली, मानो इसे कितनी बार मन ही मन दोहराया गया होगा। उसे डर लगा कि अब वो भाषण देंगी।

'बचपन में तुम लोगों का साथ-साथ भाग-दौड़ करना एक बात थी। उसमें कोई नुक़सान नहीं था। यह ख़ूबसूरत था। लेकिन अब। अब। मैंने देखा कि तुम अब ब्रा पहनने लगी हो लैला।'

लैला भौंचक रह गई।

'और जो भी हो, तुम मुझे ब्रा के बारे में बता सकती थीं। मैं नहीं जानती थी। मैं निराश हूं कि तुमने मुझे नहीं बताया।' अपना असर होते देख मम्मी और ज़ोर देकर बोलने लगीं, 'बहरहाल, मैं अपने या ब्रा के बारे में बात नहीं कर रही थी। मैं तुम्हारे और तारिक़ के बारे में बोल रही थी। देखो, वो एक लड़का है, और उस तरह से मान-मर्यादा से उसे क्या लेना-देना? लेकिन तुम? एक लड़की की मान-मर्यादा, ख़ास कर तुम्हारी जैसी ख़ूबसूरत लड़की की मान-मर्यादा तो बहुत नाज़ुक चीज़ होती है। लैला। यह तुम्हारे हाथ में एक मैना चिड़िया की तरह है। तुम्हारी पकड़ थोड़ी सी भी हल्की हुई और चिड़िया फुर्र।'

'और तुम्हारा वो सब दीवार पर चढ़ना और बागीचे में बाबी के चारों ओर मंडराना?' लैला जल्दी से उबर जाने पर खुश होती हुई बोली।

'हम तो रिश्ते में चचेरे भाई-बहन थे। और हमने शादी की। क्या इस लड़के ने तुम्हारा हाथ मांगा है?'

'वो एक दोस्त है, रफ़ीक है। हम लोगों के बीच वैसा कुछ नहीं है,' लैला अब बहुत मज़बूत लगने के बजाए अपना बचाव करती लग रही थी। 'वो मेरे लिए भाई की तरह है,' उसने थोड़ा भटकते हुए यह भी जोड़ा। और इस पर मम्मी के चेहरे पर एक भाव के आने और गुज़र जाने और उनका चेहरा गंभीर हो जाने के भी पहले वो जान गई थी कि उसने एक ग़लती कर दी है।

'जो कि वो नहीं है,' मम्मी ने सीधे-सीधे कहा। 'तुम उस बढ़ई के एक टांग वाले बेटे को अपने भाइयों में मत मिलाओ। तुम्हारे भाइयों जैसा कोई नहीं है।'

'मैंने यह नहीं कहा कि वो...मेरा ये मतलब नहीं था।'

मम्मी ने नाक से गहरी सांस ली और अपने दांत भींचे।

'जो भी हो,' उन्होंने अपनी अधूरी बात पूरी की, लेकिन इस बार उनकी बातों में कुछ पल पहले का छिपा हुआ ख़ुशी से भरा अंदाज़ नहीं था। 'मैं जो कहने की कोशिश कर रही हूं वो ये है अगर तुम सावधान नहीं रहोगी तो लोग बातें बनाएंगे।'

लैला ने कुछ कहने के लिए मुंह खोला। ऐसा नहीं था कि मम्मी की बात में सच्चाई नहीं थी। लैला जानती थी कि तारिक़ के साथ सड़कों पर मासूम, बेरोक-टोक हंसी-खेल के दिन गुज़र गए थे। कुछ समय से एक साथ बाहर निकलने पर लैला एक नए तरह के अजनबीपन को महसूस करने लगी थी। उसे लगता कि लोग उन्हें देख रहे हैं, उनकी निगाहें उन दोनों को परख रही हैं, उनके बारे में फुसफुसा कर बातें की जा रही हैं। लैला ने ऐसा पहले कभी महसूस नहीं किया था। और अब भी उसने महसूस नहीं किया होता अगर उसने वह बुनियादी तथ्य नहीं जान लिया होता : वह तारिक़ पर फिदा हो गई थी। वो उसको लेकर हताश और बेकरार रहती थी। जब भी वो करीब होता तो वो उसको लेकर बुरे ख्यालों में उलझ जाती कि कैसे तारिक़ की खुली हुई दुबली देह लैला की देह से लिपटी हुई है। रातों में बिस्तर पर पड़े हुए वो कल्पना करती कि तारिक़ उसके पेट को चूम रहा है। वो उसके होंठों की कोमलता के बारे में जानना चाहती। वो जानना चाहती कि जब तारिक़ के हाथ उसकी गर्दन, उसकी छाती, उसकी पीठ और फिर उससे भी नीचे जाएंगे तो लैला को कैसा महसूस होगा। जब वो तारिक़ के बारे में इस तरह से सोचती तो वो गुनाह के एहसास से भर जाती लेकिन साथ ही उसके पेट के निचले हिस्से से एक अजीब सी गर्म सनसनाहट ऊपर उठती और फिर वो महसूस करती कि उसका चेहरा गुलाबी हो गया है।

नहीं। मम्मी की बात में दम है। असल में वो जितना जानती हैं, उससे भी ज़्यादा। लैला को संदेह हो रहा था कि उसके सारे नहीं तो कुछ पड़ोसी तो ज़रूर उसके और तारिक़ के बारे में बातें करने लगे थे। लैला ने छुपी हुई मुस्कानों पर ग़ौर किया था। वो मुहल्ले में चल रही इस कानाफूसी के बारे में जानती थी कि लोग कहते थे कि वो दोनों एक जोड़े थे। मिसाल के लिए उस दिन वो और तारिक़ सड़क पर साथ साथ चल रहे थे और जब वे जूता बनाने वाले रशीद और बुर्के में ढंकी उसकी बीवी मरियम के पास से गुज़रे।

उनके पास से गुज़रते हुए रशीद ने कहा, 'क्या लैला और मजनूं हैं।' उसका इशारा बारहवीं शताब्दी के शायर नेज़ामी की मशहूर फ़ारसी शायरी की तरफ़ था। बाबी ने बताया था कि यह रोमियो एंड जूलियट की तरह फ़ारसी की अपनी प्रेम कहानी है। फ़र्क़ यह है कि, उन्होंने यह भी जोड़ा था, नेज़ामी ने अपने बदकिस्मत प्रेमियों की यह दास्तान शेक्सपीयर से चार सदी पहले लिखी थी।

मम्मी की बात में दम था।

लैला को ग़ुस्सा इस बात पर आ रहा था कि मम्मी को यह कहने का हक़ नहीं था। अगर बाबी ने यह मामला उठाया रहता तो बात अलग थी। लेकिन मम्मी? इतने बरसों की उदासीनता के बाद, इसने बरसों तक ख़ुद को दड़बे में बंद किए रहने के बाद और लैला कहां गई, किससे मिली और उसने क्या सोचा, इसकी परवाह भी नहीं करने के बाद...यह तो नाइंसाफ़ी थी। लैला को लगा कि उसकी हैसियत इन बर्तनों और तसलों से बेहतर नहीं है, कि जब भी जी चाहे, उनसे नज़रें फेर ली जाएं और फिर जब मर्ज़ी हो उन पर दावा ठोंक दिया जाए।

लेकिन यह उन सबके लिए एक बड़ा और अहम दिन था। उसे इन बातों के लिए ख़राब करना अच्छी बात नहीं होती। इसी जज़्बे में लैला ने बात को ख़त्म करना चाहा।

'मैं तुम्हारी बात समझ गई,' उसने कहा।

'अच्छा!' मम्मी ने कहा। 'तो तय रहा। अब हाकिम कहां हैं? कहां, ओह मेरे वो प्यारे, नन्हे शौहर कहां हैं?'

यह एक बिना बादलों का, चौंधिया देने वाला दिन था, जो एक दावत के लिहाज से पूरी तरह माकूल था। मर्द आंगन में जर्जर फोल्डिंग कुर्सियों पर बैठे। उन्होंने चाय पी, सिगरेटें फूंकीं और मुज़ाहिदीनों के मंसूबों के बारे में ज़ोर-ज़ोर से हंसी-मज़ाक किया। लैला को बाबी से मंसूबे का खाका पता लगा था : अफ़ग़ानिस्तान को अब इस्लामिक स्टेट ऑफ अफ़ग़ानिस्तान कहा जा रहा था। कई मुजाहिदीन गुटों ने पेशावर में एक इस्लामी जिहाद काउंसिल बनाई थी, जो दो महीनों के लिए सारी चीज़ों की देखभाल करनी थी। इसके रहनुमा सिबगतुल्लाह मोज़द्दिदी थे। इसके बाद रब्बानी की रहनुमाई में एक रहनुमा

काउंसिल आनी थी जो चार महीनों के लिए हुकूमत का ज़िम्मा लेने वाली थी। इन छह महीनों के दौरान एक लोया जिरगा होनी थी जो रहनुमाओं को बुज़ुर्गों की सबसे बड़ी काउंसिल है। यह लोया जिरगा ही दो बरसों के लिए एक अंतरिम हुकूमत बनाने वाली थी। इसके बाद जम्हूरी चुनाव होने थे।

एक आदमी कामचलाऊ भट्टी के ऊपर भुने जा रहे भेड़ के सीख़ कबाब को पंखा झल रहा था। बाबी और तारिक़ के अब्बा पुराने नाशपाती के पेड़ के नीचे शतरंज के खेल में जुटे थे। खेल में गहराई से डूबे होने की वजह से उनके चेहरे सिकुड़े हुए थे। तारिक़ भी एक तख़्त पर बैठा हुआ बारी-बारी से उनका खेल देख रहा और बग़ल की टेबल पर चल रही सियासी बातचीत सुन रहा था।

औरतें बैठक, गलियारे और रसोई में जमा हुई थीं। बातचीत करने के साथ-साथ वे अपने बच्चों को उछालतीं और हल्के से कूल्हे खिसका कर उन्हें लपक रही थीं। बच्चे पूरे घर में एक दूसरे के पीछे भाग रहे थे। कैसेट प्लेयर पर उस्ताद सरहंग की ग़ज़लें बज रही थीं।

रसोई में लैला गीती के साथ मिल कर गिलासों में *दोघ* भर रही थी। गीती अब पहले की तरह उतनी शर्मीली या उतनी गंभीर नहीं रह गई थी। पिछले कई महीनों से उसकी भौंहों पर हमेशा बनी रहने वाली त्यौरियां अब गायब हो गई थीं। इन दिनों वो अब अक्सर खुल कर और अदा के साथ हंसती, जिस पर लैला ने ग़ौर किया। अब उसने नीरस चोटियों से छुटकारा पा लिया था और अपने बालों को खुला रखती थी, जिनको वो लाल धारियों से सजाए रखती थी। लैला ने आख़िरकार जान ही लिया कि उसमें आए इस बदलाव की वजह एक अट्ठारह साल का लड़का था, जिस पर गीती मोहित थी। उसका नाम साबिर था और वो गीती के बड़े भाई की फुटबॉल टीम में गोलकीपर था।

'ओह, उसकी मुस्कान सबसे अच्छी है और उसके मोटे, मोटे काले बाल!' गीती ने लैला को बताया। कोई उनके आपसी आकर्षण के बारे में नहीं जानता था। गीती उससे चाय के बहाने दो बार छिप कर मिल चुकी थी। हर बार वे शहर के दूसरे सिरे पर तैमानी में एक छोटे से चायख़ाने में पंद्रह-पंद्रह मिनट साथ रहे थे।

'वो मेरा हाथ मांगने जा रहा है, लैला! हो सकता है इन्हीं गर्मियों में ही। तुम यकीन करोगी? मैं कसम खा कर बता रही हूं कि मैं इसके बारे में

सोचना बंद ही नहीं कर पाती।'

'और स्कूल का क्या होगा?' लैला ने पूछा। गीती ने अपना सिर एक तरफ़ झुका लिया और उसने लैला को इस तरह देखा जिसका मतलब था कि हम दोनों ही अच्छी तरह जानती हैं कि उसका क्या होगा।

हमारे बीस के होने तक, हसीना कहा करती थी, गीती और मैं, हममें से हरेक चार-पांच बच्चे इस पेट से निकाल चुके होगा। लेकिन तुम, लैला, हम दोनों का सिर ऊंचा करोगी। तुम कुछ बनने जा रही हो। मैं जानती हूं कि एक दिन मैं अखबार उठाऊंगी और पाऊंगी कि उसके पहले पन्ने पर तुम्हारी तस्वीर है।

गीती अभी लैला की बग़ल में खड़ी खीरे काट रही थी। उसका चेहरा खोया हुआ-सा, सपनों में डूबा हुआ दिख रहा था।

पास ही में गर्मियों की अपनी सबसे बेहतरीन पोशाक में सजी हुई मम्मी दाई वाज्मा और तारिक़ की अम्मी के साथ मिल कर उबले हुए अंडे छील रही थीं।

'मैं कमांडर मसूद को अहमद और नूर की तस्वीर देने जा रही हूं,' मम्मी वाज्मा को बता रही थीं। वाज्मा ने यह दिखाने के लिए सिर हिलाया कि वो इस बात में रुचि ले रही है और ईमानदारी से सुन रही है।

'उन्होंने खुद उनके कफन-दफन की देख-रेख की थी। उन्होंने उनकी कब्रों पर दुआ पढ़ी थी। मैं यह उनकी शराफत का शुक्राना होगा।' मम्मी ने एक अंडा तोड़ा। मैंने सुना कि वो एक सोच-समझ वाले, इज़्ज़तदार इनसान हैं। मुझे लगता है कि वे इसे कबूल क़रेंगे।'

उनके आसपास औरतें रसोई में आ-जा रही थीं। वो कारमे के कटोरे, मस्तवा की प्लेटें, रोटियों के टुकड़े ले जाकर बैठक की फर्श पर बिछी हुई दस्तरख्वान पर सजा रही थीं।

हर कुछ देर में तारिक़ भीतर टहलते हुए आता। वह वहां पड़े सामान में से इसे उठाता, उसे कुतरता।

'मर्दों को इजाज़त नहीं है,' गीती ने कहा।

'बाहर, बाहर जाओ,' वाज्मा चिल्लाई।

औरतों द्वारा हंसी-मज़ाक में इस तरह भगाए जाने पर तारिक़ मुस्कुरा देता। ऐसा लगता कि वो इसके मज़े ले रहा था कि कोई यहां उसका स्वागत

नहीं कर रहा था। वो मानो इस औरताना माहौल को अपनी हल्की मुस्कान वाली मर्दाना अनादर पर ख़ुश हो रहा था।

लैला पूरी कोशिश कर रही थी कि उसकी ओर न देखे ताकि इन औरतों को बातें बनाने का कुछ और मसाला न मिल पाए। इसलिए वो अपनी आंखें झुकाए रही और उससे कुछ नहीं बोली। लेकिन उसे कुछ रात पहले देखे गए एक सपने की याद आई, जिसमें उसे एक नर्म, हरी नकाब के नीचे एक शीशे में अपना और तारिक़ का चेहरा साथ में दिखाई दिया था। उसके बालों में से चावल के कुछ दाने शीशे पर गिरते हुए टिंक की आवाज़ कर रहे थे।

तारिक़ ने आलू के साथ पके बछड़े के गोश्त का जायका लेना चाहा।

'हो बच्चा!' गीती ने उसके हाथ के पीछे मारा। लेकिन तारिक़ ने किसी तरह उसे छीन ही लिया और हंसने लगा।

वो अब लैला से लगभग एक फुट लंबा हो गया था। उसने दाढ़ी शेव कर रखी थी। उसका चेहरा झुका हुआ, तिकोना था। उसके कंधे चौड़े थे। तारिक़ को प्लेटेड पतलून, काले चमकते जूते और छोटी आस्तीन की कमीज़ें पहनना अच्छा लगता था, जिनमें उसकी युवा मांसल बांहें दिखतीं। उसे ये भरी हुई बांहें एक जोड़े पुराने, जंग लगे बारबेल से हासिल हुई थीं, जिन्हें वो रोज़ अपने आंगन में उठा कर अभ्यास करता था। इधर उसके चेहरे पर चंचलता से भरे हुए झगड़ालू होने का भाव दिखने लगा था। जब वो बोलता तो उसका सिर सचेत रूप से एक तरफ़ झुके हुए तन जाता, और जब वो हंसता तो उसकी एक भौंह मेहराब की शक्ल अख़्तियार कर लेती। उसने अपने बाल बढ़ा लिए थे और लटके हुए गुच्छों को अक्सर यों ही झटकते रहने की आदत डाल ली थी। तिरछी मुस्कान भी नई चीज़ों में शामिल थी।

आख़िरी बार जब तारिक़ को रसोई से भगाया जा रहा था, तो उसकी अम्मी ने लैला को उसे छुप कर देखते हुए पकड़ लिया। लैला का दिल उछला और उसकी कसूरवार आंखें फड़फड़ाईं। फुर्ती के साथ वो कटे हुए खीरे को उस सुराही में डालने में लग गई, जिसमें पहले से नमक और पानी में फेंटी हुई दही डाल दी गई थी। लेकिन वो तारिक़ की अम्मी की समझदारी से भरी हल्की मुस्कान को महसूस कर पाई।

मर्दों ने अपनी तश्तरियां और गिलासें भर लीं और उन्हें लेकर आंगन में चले गए। मर्दों के अपना हिस्सा लेकर चले जाने के बाद औरतें और बच्चों

दस्तरख़्वान पर बैठे और उन्होंने खाना शुरू किया।

दस्तरख़्वान साफ़ किया जा चुका था और प्लेटें रसोई में जमा कर दी गई थीं और इसके बाद यह याद करने का सिलसिला चल रहा था कि कौन ग्रीन टी लेगा और कौन काली चाय, कि तभी तारिक़ ने अपना सिर हिला कर इशारा किया और दरवाज़े से बाहर चला गया।

लैला ने पांच मिनटों तक इंतज़ार किया और फिर वो भी चली गई।

तारिक़ उसे गली में तीन घरों के बाद मिला। वो एक दो घरों के बीच में एक संकरी सी गली के मुहाने पर एक दीवार से टेक लगाए खड़ा था। वो उस्ताद अव्वल मीर का गाया एक पुराना पश्तो गीत गुनगुना रहा था;

दा ज़े मा ज़िबा वतन
दा ज़े मा दादा वतन
ये हमारा ख़ूबसूरत वतन
ये हमारा महबूब वतन

और वो सिगरेट पी रहा था। यह उसकी नई आदत थी। उसे सिगरेटें लिए घूमते लड़कों से सिगरेटें लेते लैला ने देखा था। लैला तारिक़ के नए दोस्तों को पसंद नहीं करती थी। वो सारे एक ही तरह से कपड़े पहनते; प्लेटों वाली पतलून और चुस्त कमीज़ें जो उनकी बाहों और सीने पर तन जाती थीं। वो सब बहुत ज़्यादा कोलोन लगाते और सारे के सारे सिगरेटें पीते। वो टोलियों में पूरे मुहल्ले में मज़ाक करते, ज़ोर-ज़ोर से हंसते और कई बार तो लड़कियों पर फब्तियां कसते घूमते रहते। उन सबके चेहरों पर एक सी बेवकूफ़ भरी, आत्म-संतुष्ट मुस्कुराहट रहती। तारिक़ का एक दोस्त लोगों से ख़ुद को रैंबो कहलाने पर ज़ोर देता, इसकी वजह बस यह थी कि वो सिल्विस्टर स्टैलॉन से कुछ-कुछ मिलता था।

'तुम्हारी अम्मी अगर जान गईं कि तुम सिगरेट पीते हो तो वो तुम्हें मार डालेंगी,' लैला ने कहा। उसने पहले एक तरफ़ और फिर दूसरी तरफ़ निगाह डाली और गली में घुस गई।

'लेकिन वो नहीं जानतीं,' तारिक़ ने कहा। लैला के लिए जगह छोड़ते हुए बोला।

'लेकिन वो जान भी सकती हैं।'

'कौन बताएगा उन्हें? तुम?'

लैला ने अपने पांव थपथपाए। 'अपने राज हवाओं को बताओ लेकिन उन पर इसका इल्ज़ाम मत लगाओ कि उन्होंने वह राज़ पेड़ों को बता दिया।'

तारिक़ एक भौंह को मेहराब की तरह तानते हुए मुस्कुराया। 'किसने कही है यह बात?'

'खलील जिब्रान।'

'बस तुम यों ही दिखा रही हो।'

'मुझे एक सिगरेट दो।'

तारिक़ ने सिर झटक कर मना कर दिया और अपने हाथ बांध लिए। वह तरीका भी उसने हाल में सीखा था; पीठ दीवार से सटी हुई, हाथ बंधे हुए, मुंह के कोने में लटकती हुई सिगरेट, अच्छी टांग हल्की-सी मुड़ी हुई।

'क्यों नहीं?'

'तुम्हारे लिए अच्छा नहीं है,' उसने कहा।

'और क्या यह तुम्हारे लिए बुरी नहीं है?'

'मैं यह लड़कियों के लिए पीता हूं।'

'लड़कियों के लिए क्यों?'

नखरे दिखाते हुए वो मुस्कुराया। 'वो इसे सेक्सी मानती हैं।'

'ऐसा नहीं है।'

'नहीं?'

'यकीन मानो।'

'सेक्सी नहीं है?'

'तुम बेवकूफ़ लग रहे हो।'

'इस बात से दिल पर चोट लगी,' वो बोला।

'वैसे किन लड़कियों के लिए पीते हो?'

'तुम जल रही हो।'

'मैं बस यों ही पूछ रही हूं।'

'तुम यों ही नहीं पूछ सकतीं।' तारिक़ ने एक और कश लिया और धुएं की वजह से आंखें सिकोड़ीं। 'मैं शर्त लगा सकता हूं कि वहां लोग अब हमारे बारे में बातें कर रहे होंगे।'

लैला के दिमाग में मम्मी की आवाज़ गूंज रही थी। यह तुम्हारे हाथ में एक मैना चिड़िया की तरह है। तुम्हारी पकड़ थोड़ी सी भी हल्की हुई और चिड़िया

फुर्र। अपराध बोध लैला को चुभने लगा। तब लैला ने मम्मी की आवाज़ को दबा दिया। इसकी जगह वो उस लहजे का मजा लेने लगी जिसमें तारिक़ ने हम कहा था। उससे यह सुनना कैसा रोमांचक, कितना साजिशभरा लगा। और उसे यह कहते हुए सुनना कितना भरोसा देने वाला था। हम। इसमें उनके जुड़ाव की कबूलियत थी। उनका जुड़ाव इनमें घनीभूत हो गया था।

'और वे क्या कर रहे होंगे?'

'कि हम गुनाहों की नदी में तैर रहे हैं,' वो बोला। 'कि हम वो हलवा खा रहे हैं, जिसे खाना मना है।'

'पागलपन के रिक्शे पर सवार हैं?' लैला चहकी।

'हराम कोरमा बना रहे हैं।'

वे दोनों हंसे। फिर तारिक़ ने कहा कि लैला के बाल लंबे होते जा रहे हैं। 'यह अच्छा है,' उसने कहा।

लैला की इच्छा हुई कि वो लाल न पड़ जाए। 'तुमने विषय बदल दिया।'

'किससे?'

'वो खाली दिमाग वाली लड़कियां जो सोचती हैं कि तुम सेक्सी हो।'

'तुम जानती हो।'

'क्या जानती हूं?'

'कि मेरी नज़र सिर्फ़ तुम्हारे लिए है।'

भीतर ही भीतर लैला बेसुध हो गई। उसने तारिक़ का चेहरा पढ़ने की कोशिश की, लेकिन उसको ऐसा चेहरा दिखा जिसको पढ़ पाना नामुमकिन था; उसकी ख़ुशी से भरपूर हल्की मुस्कान का उसकी सिकुड़ी हुई आंखों की कुछ-कुछ बेकरारी भरी निगाह से कोई मेल नहीं था। एक चालाक सधी हुई नज़र, जो चाहती थी कि उसे मज़ाक और ईमानदारी के बीच की कोई चीज़ माना जाए।

तारिक़ ने अपने अच्छे पैर के जूते की एड़ी पर अपनी सिगरेट बुझाई। 'तो तुम इन सबके बारे में क्या सोचती हो?'

'दावत?'

'अब बताओ कि बुद्धू कौन है? मेरा मतलब मुजाहिदीनों से है, लैला। वो काबुल आ रहे हैं।'

'ओह।'

उसने बाबी से सुनी हुई यह बात बताना शुरू ही किया था कि बंदूक

और अहं का एक परेशान कर देने वाला गठबंधन हो गया है, कि तभी उसने घर से आता शोरगुल सुना। लोग ज़ोर से चिल्ला रहे थे।

लैला दौड़ पड़ी। तारिक़ उसके पीछे लंगड़ाता हुआ चला।

आंगन में हंगामा हो रहा था। दो लोग आपस में झगड़ते हुए ज़मीन पर लोट रहे थे और उनके बीच में एक छुरी थी। लैला ने पहचाना कि उनमें से एक आदमी कुछ देर पहले सियासत पर बातें कर रहा था। दूसरा वो था जो कबाब के सीखों को पंखा झल रहा था। कई लोग उनको अलग करने की कोशिश कर रहे थे। बाबी उनमें नहीं थे। वो इस झगड़े से दूर, एक दीवार से लग कर खड़े थे। उनके साथ ही तारिक़ के अब्बा खड़े थे जो चिल्ला रहे थे।

अपने आस-पास उत्तेजित आवाज़ों के बीच लैला ने टुकड़ों-टुकड़ों में जो देखा-सुना उनको एक साथ रखने पर उसे बात कुछ इस तरह समझ आई : टेबल के पास सियासत की बातें करने वाला वो पश्तून अहमद शाह मसूद को गद्दार बता रहा था। उसका कहना था कि मसूद ने 1980 की दहाई में सोवियतों के साथ 'समझौता किया था'। कबाब के पास वाला एक ताजिक था और उसने इसे बेइज़्ज़ती के रूप में लिया और बात को वापस लेने की मांग की। पश्तून ने मना कर दिया। ताजिक ने कहा कि मसूद नहीं बल्कि अब भी उस पश्तून की बहनें सोवियत फौजियों के 'हवाले की जाती हैं'। वो भिड़ गए। तब उनमें से एक ने छुरी भांजनी शुरू की और इस पर लोगों की राय अलग-अलग थी कि छुरी किसने निकाली थी।

लैला ने आतंकित होते हुए देखा कि तारिक़ इस हाथापाई के बीच में कूद पड़ा था। उसने यह भी देखा कि अमन लाने की कोशिश कर रहे कुछ लोगों ने भी मुक्के चलाने शुरू कर दिए थे। उसे लगा कि उसने एक दूसरी छुरी भी चलते हुए देखी है।

बाद में उस शाम को लैला ने सोचा कि कैसे वो हंगामा ख़त्म हुआ था। लोग एक दूसरे पर गिरे पड़ रहे थे, चीखें-चिल्लाहटें उठ रही थीं और मुक्के चल रहे थे। इन सबके बीच तारिक़ मुंह बनाते हुए अपने बालों को झटक रहा था। उसका पांव खुल गया था और वो उसे पहनने की कोशिश कर रहा था।

जिस तरह से फ़ौरन हर चीज़ सुलझ गई थी, यह चक्कर में डालने वाली बात थी।

रहनुमा काउंसिल वक़्त से पहले ही बन गई थी। इसने रब्बानी को सदर चुना। दूसरे गुटों ने परिवारवाद की चीख़-पुकार मचाई। मसूद ने अपने और सब्र की अपील की।

इन सबसे अलग कर दिए गए हिक़मतियार भीतर ही भीतर सुलग रहे थे। उत्पीड़न और उपेक्षा के लंबे इतिहास के साथ हज़ारा लोग भी खौल रहे थे।

गालियां दी गईं। इशारे किए गए। तोहमतों का रेला बह निकला। गुस्से में बैठक ख़त्म कर दी गई और दरवाज़े धड़ाम से बंद किए गए। शहर सांस रोके हुए था। पहाड़ों में भरी हुई मैगज़ीनें कलाश्निकोवों में खड़खड़ाईं।

हथियारों से सजे हुए मुजाहिदीनों के पास अब कोई साझा दुश्मन नहीं था, तो उन्होंने आपस में ही एक दूसरे को दुश्मन बना लिया।

आख़िरकार अब काबुल को भी अपना हिसाब अदा करना था।

और जब काबुल पर रॉकेटों की बारिश शुरू हुई तो लोग पनाह मांगते हुए भागे। मम्मी भी, सचमुच भागी। उन्होंने फिर से काले कपड़े पहने, अपने कमरे में जाकर पर्दे खींचे और ख़ुद को सिर तक कंबल से ढक लिया।

चौबीस

'फिर सीटी बज रही है,' लैला ने तारिक़ से कहा। 'मुई सीटी से मुझे सबसे ज़्यादा नफ़रत है।' तारिक़ ने समझदारी से सिर हिलाया।

लैला ने बाद में सोचा कि केवल सीटी का बजना ही बुरा नहीं लग रहा था। बल्कि जिस पल वो शुरू होती और जब तक उसका असर रहता उसके बीच का पूरा समय ही बुरा लगता। ऊहापोह से भरा वह संक्षिप्त लेकिन अपार समय। जब आप कुछ नहीं जानते। जब आप इंतज़ार कर रहे होते हैं। मानो कोई मुलज़िम अदालत में फैसले का इंतज़ार करता है।

अक्सर यह रात के खाने के वक़्त होता था जब लैला और बाबी टेबल पर होते। जब यह शुरू होता तो वे टेबल से सिर उठा कर सीटी को सुनने लग जाते। कांटे हवा में ही उठे रह जाते और बिना चबाया हुआ खाना मुंह में ही रुक जाता। लैला को काली खिड़की में अपने और बाबी के आधे रोशन चेहरों के प्रतिबिंब दिखते। दीवार पर उनकी परछाइयां हिल-डुल नहीं रही थीं। सीटी फिर बजी। इसके बाद एक धमाका होता और उनको ख़ुशी होती कि यह धमाका कहीं और हुआ है और रुकी हुई सांसें छोड़ते हुए वे यह जान कर ख़ुश होते कि आज के लिए वे बख़्श दिए गए हैं। जबकि कहीं दूसरी जगह चीख़-चिल्लाहटों और धुएं के दमघोंटू बादलों के बीच सब कुछ तहस-नहस हो गया होता। उन्माद से भरे हुए लोग ख़ाली हाथों से खोदते हुए मलबा हटा रहे होते। वहां बस किसी की बहन, भाई या पोते के बचे-खुचे अंग पड़े

होने।

लेकिन जो लोग बचे नहीं रह पाए, उनके बारे में जानने की इच्छा बख़्श दिए जाने के अहसास से जुड़ी हुई थी। लैला दुआ पढ़ती हुई गली में भागती हुई जाती। यकीनन, इस बार तो यकीनन ही तारिक़ मलबे में दफ़्न हो गया होगा।

रात में बिस्तर में पड़े हुए लैला अपनी खिड़की पर चमकती सफ़ेद रोशनियों को देखती रहती। वो ऑटोमेटिक बंदूकों से होने वाली गोलीबारी की आवाज़ें सुनती और उन रॉकेटों को गिनती जिनके घर के ऊपर से गुज़रने से घर हिलने लगता और छत से प्लास्टर के टुकड़ों की बारिश होती। कुछ रातों में रॉकेट से निकलती रोशनी इतनी तेज़ होती कि उसमें किताब पढ़ी जा सकती थी। उन रातों में नींद नहीं आती। और अगर आती भी तो लैला के सपनों में आग और बिखरे हुए हाथ-पैर और ज़ख़्मियों की कराहें भरी रहतीं।

सुबह भी कोई राहत नहीं लाती। मुअज़्ज़िन की अज़ान गूंजती तो मुजाहिदीन अपनी बंदूकें रख देते। अपने चेहरे पश्चिम की तरफ़ मोड़ कर वे नमाज़ पढ़ते। इसके बाद वे जानेमाज़ मोड़ते, बंदूकें भरते और फिर पहाड़ियों और काबुल के बीच गोलीबारी का सिलसिला शुरू हो जाता। लैला और पूरा शहर इसे बेचारगी से देखता रहता, जैसे बूढ़ा सांतियागो अपनी मछली के टुकड़े-टुकड़े होना देखता रहा था।

लैला जहां भी जाती उसे मसूद के लोग दिखते। वो उनको गलियों में घूमते और हर पांच सौ गज़ पर कारों को रोक कर पूछताछ करते देखती। अपनी वर्दी और अपनी पहचान बन गई पकोलें पहने हुए वो तोपों के ऊपर बैठे सिगरेटें फूंकते। चौराहों पर रेत से भरी बोरियों के पीछे से वे राहगीरों को देखते रहते।

अब लैला उतना बाहर नहीं जाती थी। और जब जाती तो हमेशा तारिक़ के साथ जाती, जो इसे अपना बहादुरी भरा फ़र्ज़ समझता था।

'मैंने एक बंदूक ख़रीदी है,' एक दिन तारिक़ ने कहा। वे लैला के घर के बाहर आंगन में नाशपाती के पेड़ के नीचे ज़मीन पर बैठे थे। उसने बंदूक लैला को दिखाई। तारिक़ ने बताया कि यह सेमी ऑटोमेटिक बेरेट्टा बंदूक है। लैला को वह बस काली और डरावनी लगी।

'मुझे वह पसंद नहीं है,' उसने कहा। 'बंदूकें मुझे डराती हैं।'

तारिक़ ने मैगज़ीन हाथ में उलटी-पलटी।

'पिछले हफ़्ते कारतेह सेह में एक घर से तीन लाशें मिलीं,' उसने कहा। 'सुना तुमने? वो बहनें थीं। उन सबके साथ बलात्कार किया गया था। उनके गले काट दिए गए थे। किसी ने उनकी अंगुलियों से अंगूठी निकालने के लिए उन्हें दांतों से काट डाला था। तुम देख कर ही बता सकती हो, उन पर दांतों के निशान थे।'

'मैं यह सुनना नहीं चाहती।'

'मैं तुमको घबराना नहीं चाहता,' तारिक़ ने कहा। 'लेकिन मैं बस...मुझे लगता है कि इसे लेकर चलना अच्छा है।'

लैला अब तारिक़ से ही जानती कि सड़कों पर क्या हो रहा है। वो जो कुछ भी सुनता, उसे लैला को बताता। मिसाल के लिए तारिक़ ने ही उसे बताया था कि मीलिशिया के लोग पहाड़ों में ठहरे हुए हैं। वहां वो अपने निशानेबाज़ों को और तेज़ बना रहे हैं। उन्होंने निशानेबाज़ों से कह रखा है कि नीचे मर्दों, औरतों, बच्चों या जिनको भी वे चुन लें, उन पर गोली दाग कर वे अभ्यास कर सकते हैं। उसने लैला को बताया कि वो कारों पर रॉकेट दागते हैं लेकिन कुछ वजहों से टैक्सियों को छोड़ देते हैं, जिससे लैला को समझ में आया कि क्यों लोगों में अपनी कारों को पीले रंग में रंगने की होड़ लगी हुई है।

तारिक़ ने उसे उन धोखेबाज़ों के बारे में बताया जो काबुल में अपनी वफ़ादारियां बदल रहे हैं। मिसाल के लिए लैला को उससे पता लगा कि इसी सड़क पर बाईं तरफ़ दूसरे अकासिया पेड़ के साथ लगा हुआ घर एक सेनापति का है, कि गिरा दी गई फार्मेसी के बाद बेकरी के पास ख़त्म हो रहे आगे के चार ब्लॉक एक और सेनापति के सेक्टर हैं। और अगर वो सड़क पार करके आधा मील पश्चिम की तरफ़ जाए तो वो खुद जिस ज़मीन पर पाएगी, वो एक और सेनापति की है। और इस तरह वो निशानेबाज़ों की गोलियों की जद में आ जाएगी। मम्मी के जांबाज़ अब इसी नाम से पुकारे जाते थे। सेनापति। लैला ने उनको तोफंगदार कहे जाते भी सुना था। राइफलमैन। दूसरे लोग अब भी उनको मुजाहिदीन कहते थे लेकिन बोलते वक़्त उनके चेहरे से लगता कि वे मज़ाक उड़ा रहे हैं। नापसंदगी ज़ाहिर करने वाले अपने चेहरे के साथ वो गहरी नफ़रत भरी और अपमानित करने वाली बातें कहते। मानों वो उनको ज़लील कर रहे हों।

तारिक़ ने मैगज़ीन को बंदूक में लगा दिया। 'क्या ये तुममें है?' लैला ने कहा।

'क्या?'

'तुम इसके इस्तेमाल करोगे? लोगों को मारोगे?'

तारिक़ ने अपनी डेनिम की कमर में बंदूक खोंस ली। इसके बाद उसने एक प्यारी और डरावनी बात कही। 'तुम्हारे लिए,' उसने कहा। 'मैं इससे तुम्हारे लिए लोगों को मार सकता हूं, लैला।'

वो उसके करीब सरक आया और उनके हाथ आपस में रगड़ खा गए। एक बार और फिर दोबारा। जब तारिक़ की उंगलियां यों ही उसकी उंगलियों में सरकने लगीं तो लैला ने ऐसा होने दिया। और जब तारिक़ एकाएक उसके ऊपर झुक आया और अपने होठों से उसके होंठों को दबाने लगा तो एक बार फिर लैला ने उसे ऐसा करने दिया।

उस पल लैला को लगा कि मम्मी की मान-मर्यादा और मैना चिड़िया की सारी बातें बेकार थीं। यहां तक कि वे उसे बकवास लगीं। इस सारे कत्लेआम और लूट के बीच, इस सारी बदसूरती के बीच एक पेड़ के नीचे बैठ कर तारिक़ को चूमने में कोई नुक़सान नहीं था। यह तो एक छोटी सी बात थी। इसे माफ़ किया जा सकता था। इसलिए उसने तारिक़ को चूम लेने दिया और जब वो पीछे हटा तो लैला झुकी और उसने तारिक़ को चूमा। तब उसका दिल गले तक आ रहा था, चेहरा सिहर रहा था और उसकी पेट की गहराइयों में आग जल रही थी।

उस साल, 1992 के जून महीने में पश्चिमी काबुल में सेनापति सय्याफ के पश्तून बलों और हज़ाराओं के वहदत गुट के बीच भारी गोलीबारी हुई। गोलियों की वजह से बिजली के तार टूट कर गिर गए, दुकानों और घरों के पूरे के पूरे ब्लॉक ज़मींदोज़ हो गए। लैला ने सुना कि पश्तून मिलीशिया हज़ारा घरों पर हमले कर रही है और पूरे के पूरे परिवारों को गोलियां मार रही है। तुरत-फुरत सजाएं दे रही है। उसने यह भी सुना कि हज़ारा लोग पलटवार करते हुए आम पश्तून लोगों को अगवा कर रहे हैं, पश्तून लड़कियों का बलात्कार कर रहे हैं और पश्तून मुहल्लों पर गोलियां बरसा रहे हैं और कत्लेआम कर रहे हैं। हर रोज़ पेड़ से बंधी हुई लाशें मिलतीं। कभी कभी वो इतनी जली हुई होतीं कि

पहचानना नामुमकिन होता। अक्सर उनके सिर में गोली मारी गई होती और उनकी आंखें निकाल ली गई होतीं, उनकी ज़बानें कटी हुई होतीं।

बाबी ने काबुल छोड़ कर चले जाने के लिए मम्मी को मनाने की कोशिश की।

'वो कर लेंगे,' मम्मी ने कहा। 'यह लड़ाई तो कुछ वक़्त के लिए है। वो लोग बैठ कर कुछ उपाय निकाल लेंगे।'

'फरीबा, ये लोग बस जंग लड़ना ही जानते हैं,' बाबी ने कहा। 'उन्होंने एक हाथ में दूध की बोतल और दूसरे में बंदूक लेकर चलना सीखा है।'

'तुम कौन होते हो कहने वाले?' मम्मी ने उनकी बात काट दी। 'क्या तुमने जिहाद लड़ी है? क्या तुमने अपनी कोई चीज़ छोड़ दी है और अपनी जिंदगी जोखिम में डाली है? अगर मुजाहिदीन नहीं होते तो हम अब भी सोवियतों के गुलाम होते, याद रखना। और अब तुम चाहते हो कि हम उनको धोखा दे दें!'

'उनको हम धोखा नहीं दे रहे हैं, फरीबा।'

'तो जाओ। अपनी बेटी को साथ लेकर भाग खड़े होओ। मुझे पोस्टकार्ड लिखना। लेकिन अमन आ रहा है और मैं अकेले ही इसका इंतज़ार करूंगी।'

सड़कें इतनी असुरक्षित हो गई थीं कि बाबी ने एक ऐसा काम किया जिसके बारे में सोचा भी नहीं जा सकता था: उन्होंने लैला का स्कूल जाना बंद करा दिया।

पढ़ाने की ज़िम्मेदारी उन्होंने अपने ऊपर ले ली। लैला सूरज डूबने के बाद उनके पढ़ने के कमरे में जाती। जब हिक़मतियार शहर के दक्षिणी इलाकों से मसूद पर रॉकेटें दागना शुरू करता तो बाबी और लैला हाफिज़ की गज़लों और पसंदीदा अफ़ग़ानी शायर खलीलुल्लाह खलीली की शायरी पर बहस करना शुरू करते। बाबी ने उसे क्वाड्रेटिक इक्वेशन निकालना सिखाया। उसे दिखाया कि पॉलिनोमियल कैसे निकालें और पैरामीटरिक कर्व कैसे बनाएं। जब वो पढ़ा रहे होते तो बाबी बदल जाते। वो अपनी किताबों के बीच लैला से लंबे दिखते। उनकी आवाज़ एक शांत, गहरी जगह से आती हुई लगती और वो पलकें लगभग नहीं झपकाते। लैला कल्पना करती कि एक समय वे टीचर के रूप में ब्लैकबोर्ड झाड़ते हुए और बच्चों को पिताओं की तरह चौकस निगाहों से देखते हुए कैसे लगते होंगे।

लेकिन उनकी बातों को ध्यान से सुनना आसान नहीं था। लैला का ध्यान बार-बार भटक जाता।

'पिरामिड का एरिया क्या है?' बाबी के पूछने पर लैला बस तारिक़ के होंठों की संपूर्णता के बारे में, उसकी सांसों और उसके मुंह की गर्माहट के बारे में, उसकी धुंधली आंखों में अपनी परछाई के बारे में ही सोच पाती। उसने तारिक़ को उस पुराने पेड़ के नीचे चूमने के बाद दो बार और चूमा था। और बाद का यह चूमना ज़्यादा लंबा, ज़्यादा जोश से भरा हुआ था और उसे लगा था कि इस बार कम अनाड़ीपन था। दोनों बार वो उस अंधेरी गली में छिप कर मिले थे, जहां मम्मी के दोपहर के दावत वाले दिन तारिक़ सिगरेट पी रहा था। दूसरी बार जब वे मिले थे तो लैला ने उसे अपनी छातियां छूने दी थीं।

'लैला?'

'हां, बाबी।'

'पिरामिड। एरिया। तुम कहां हो?'

'सॉरी, बाबी। मैं, उंह...देखते हैं। पिरामिड। पिरामिड। आधार के एक तिहाई में ऊंचाई से गुणा करते हैं।'

बाबी गैरयकीनी के साथ सिर हिलाते। उनकी निगाह लैला पर ठहरी रहती और लैला के ख़यालों में तारिक़ का हाथ होता, जो उसकी छातियों को दबा रहा होता, उसकी पीठ सहला रहा होता और वे दोनों एक दूसरे को चूम रहे होते।

उसी जून महीने में एक दिन गीती अपनी क्लास की दो लड़कियों के साथ घर लौट रही थी। गीती के घर से बस तीन ब्लॉक पहले लड़कियों को एक रॉकेट आकर लगा। बाद में उसी भयानक दिन, लैला को पता लगा कि जिस सड़क पर गीती मारी गई थी, उस पर गीती की अम्मी लीला उन्माद में चीखते हुए, अपनी बेटी के मांस के टुकड़ों को एक एप्रन में बटोर रही थीं। गीती का जर्जर दाहिना पांव दो हफ़्तों के बाद एक छत पर मिला। उसमें अभी भी नायलॉन के मोज़े थे।

हत्याओं के अगले दिन, गीती के फातिहा पर रोती हुई औरतों से भरे कमरे में लैला सन्न सी बैठी थी। यह पहली बार था जब कोई ऐसा मरा था जिसे लैला जानती थी, जिसके करीब रही थी, जिसे उसने प्यार किया था। वो

इस अथाह हक़ीकत को कबूल नहीं कर पा रही थी कि गीती अब ज़िंदा नहीं थी। वो गीती जिसके साथ लैला ने क्लास में ख़ुफिया नोट्स साझा किए थे, जिसके नाखूनों को उसने पॉलिश किया था, जिसकी ठोढ़ी के बालों को वो चिमटी से उखाड़ती थी। वो गीती जो गोलकीपर साबिर से शादी करने वाली थी। वही गीती मर चुकी थी। मर चुकी थी। उसके चीथड़े उड़ गए थे। आख़िर में लैला अपनी दोस्त के लिए रोने लगी। और वे सारे आंसू जो उसके भाइयों के दफ़न होने पर नहीं बहे थे, वे सारे निकल पड़े।

पच्चीस

लैला को हिलने में मुश्किल हो रही थी, मानो उसके हर जोड़ में सीमेंट जम गया हो। बातचीत चल रही थी और लैला जानती थी कि बात उसी से की जा रही है। लेकिन उसे महसूस हो रहा था कि उसे वहां से हटा दिया गया है और मानो वो छिप कर बातें सुन रही है। तारिक़ बोल रहा था और लैला को लग रहा था कि उसकी ज़िंदगी एक सड़ी हुई रस्सी है, जो टूट रही है, उधड़ रही है और जिसके रेशे-रेशे बिखर रहे हैं।

वो 1992 के अगस्त की एक गर्म, उमस से भरी हुई दोपहर थी। वो लोग लैला के घर की बैठक में थे। मम्मी को पूरे दिन पेटदर्द था और कुछ ही मिनटों पहले बाबी दक्षिण से हिक़मतियार द्वारा छोड़े जा रहे रॉकेटों के बावजूद उनको डॉक्टर के पास ले गए थे। और अब यहां तारिक़ था जो पलंग पर लैला की बग़ल में बैठा हुआ ज़मीन पर देख रहा था। उसने अपने हाथ घुटनों में दबा रखे थे।

वो कह रहा था कि वो जा रहा है।

मुहल्ले से नहीं। काबुल से भी नहीं। बल्कि अफ़ग़ानिस्तान से।

जा रहा है।

लैला की आंखों के आगे अंधेरा छा गया था।

'कहां? कहां जाओगे तुम?'

'पहले तो पाकिस्तान। पेशावर। इसके बाद मैं नहीं जानता। शायद

हिंदुस्तान। ईरान।'

'कितने दिनों के लिए?'

'मुझे नहीं पता।'

'मेरा मतलब है कि तुम यह बात कब से जानते थे?'

'कुछ दिनों से। मैं तुमको बताने ही जा रहा था लैला, कसम से। लेकिन मैं हिम्मत नहीं जुटा पाया। मैं जानता था कि तुम कितनी परेशान हो जाओगी।'

'कब?'

'कल।'

'कल?'

'लैला मुझे देखो।'

'कल।'

'अब्बा की वजह से। उनका दिल अब और यह सब बर्दाश्त नहीं कर सकता, यह सारा लड़ाई-झगड़ा, हत्याएं।'

लैला ने अपने हाथों में अपना चेहरा छुपा लिया। उसके सीने में डर का एक बुलबुला फूल रहा था।

उसने सोचा कि वो पहले ही देख सकती थी यह होने वाला है। जितने लोगों को वो जानती थी, लगभग सारे लोग अपना सामान समेट कर चले गए थे। मुहल्ले में अब जाने-पहचाने चेहरे नहीं रहे थे। मुजाहिदीनों के गुटों की चार महीनों की लड़ाई में ही ऐसी हालत हो गई थी कि सड़क पर कोई पहचान वाला मिलना मुश्किल था। हसीना का परिवार मई में ही तेहरान चला गया था। वाज्मा और उसका खानदान उसी महीने इस्लामाबाद चला गया था। गीती के मारे जाने के फौरन बाद जून में उसके अम्मी-अब्बू और भाई-बहन चले गए थे। लैला नहीं जानती थी कि वो कहां गए थे। उसने अफवाह सुनी थी कि वो ईरान में मशहद की ओर गए थे। लोगों के जाने के बाद घर कुछ दिन तक खाली पड़े रहते। फिर या तो मिलीशिया वाले कब्ज़ा कर लेते या अजनबी लोग रहने लगते।

हर कोई जा रहा था। और अब तारिक़ भी।

'और मेरी अम्मी भी नौजवान औरत नहीं रहीं,' वो कह रहा था। 'वो लोग हमेशा डरे रहते हैं। लैला मुझे देखो।'

'मुझे बताना चाहिए था।'

'प्लीज़, मेरी तरफ़ देखो।'

लैला ने एक आह भरी। और वो बिलख पड़ी। जब वो रो रही थी और तारिक़ अपने अंगूठे से उसके गालों पर के आंसू पोंछने के लिए बढ़ा तो लैला ने उसका हाथ हटा दिया। यह मतलबपरस्ती और बेवकूफ़ी थी, लेकिन वो इस बात को लेकर तारिक़ पर गुस्सा थी कि वो उसे छोड़ रहा था। वो तारिक़ जो उसी का एक हिस्सा था, जिसकी परछाईं हर याद में उसके साथ जुड़ी हुई थी। वो उसे कैसे छोड़ सकता है? उसने तारिक़ को एक थप्पड़ लगाया। उसने उसे दोबारा थप्पड़ मारा और उसके बाल खींचे। तब तारिक़ को उसकी कलाइयां पकड़नी पड़ीं और वो कुछ कह रहा था जिसे लैला नहीं समझ पाई। वो नर्मी और समझदारी से बोल रहा था। और फिर आख़िर में किसी तरह उनकी भौंहों से भौंहे मिलीं, नाक से नाक और ऐसा हुआ कि लैला अपने होंठों पर फिर से उसकी सांसों की गर्मी महसूस कर सकती थी।

और एकाएक जब वो उसकी तरफ़ झुका, तो वो भी झुक गई।

बाद में जो हुआ था, उसको याद रखने के लिए कई दिनों और हफ़्तों तक लैला को अपनी यादें कुरेदनी पड़ीं। किसी जलते हुए अजायबघर ने निकल रहे किसी कला प्रेमी की तरह जो भी चीज़ वो बटोर सकती थी, बटोर लेती, ताकि उसे मिट जाने से बचा सके, ताकि उसे सहेज कर रख सके। लेकिन वक़्त आग के लिए सबसे निर्मम चीज़ होता है और आख़िर में वो हर चीज़ को नहीं बचा सकी। अब भी उसके पास ये सारी चीज़ें थीं; नीचे उठी दर्द की वो पहली टीस। दरी पर तिरछी धूप। तारिक़ के ठंडे, सख़्त पैर पर रगड़ती लैला की एड़ी। पास-पास लेटे हुए जल्दी-जल्दी कपड़ों का खोलना। लैला के हाथों में तारिक़ की कोहनी। तारिक़ के कॉलरबोन के नीचे उल्टी मेंडोलिन की शक्ल का पैदाइशी निशान और उसका दमकता हुआ लाल रंग। लैला के चेहरे के ऊपर मंडराता उसका चेहरा। लैला के होंठों और ठोढ़ी को गुदगुदाती हुई उसकी काली लटें। वो आतंक जो उन लोगों ने खोज निकाला था। उनकी अपनी निर्भीकता और साहस में भरोसे की कमी। दर्द में लिपटा हुआ वो अजीब-सा आनंद जिसे बयान नहीं किया जा सकता था। और तारिक़ पर वो निगाह, अनगिनत निगाहें, जिनमें तारीफ, प्यार, माफ़ी, शर्मिंदगी भरी होती लेकिन सबसे ज़्यादा, सबसे ज़्यादा होती भूख।

इसके बाद बस उन्माद था। जल्दी-जल्दी कमीज़ें खोली गईं, बेल्ट निकाले गए, बालों में उंगलियां धंस गईं। जब यह ख़त्म हुआ तो वे बैठे। पास पास बैठे हुए वे एक दूसरे को सूंघते रहे। उनके चेहरे गुलाबी हो गए थे। अभी-अभी जो हुआ था, अभी अभी जो उन्होंने किया था, उसकी विशालता के आगे वे दोनों ही स्तब्ध और अवाक हो गए थे।

लैला ने दरी पर अपने ख़ून की तीन बूंदें देखीं। उसने सोचा कि जो गुनाह उसने कर दिया था, उससे बेख़बर उसके अम्मी-अब्बू बाद में इसी पलंग पर बैठेंगे। और तब शर्म और कसूरवार होने के एहसास का दौर आया। ऊपर बजती हुई घड़ी लैला के कानों में ज़ोर-ज़ोर से आवाज़ कर रही थी। मानों एक जज की हथौड़ी उसको गुनाहगार साबित करती हुई बार-बार बज रही है।

तब तारिक़ ने कहा, 'मेरे साथ चलो।'

कुछ पलों के लिए लैला को भी लगा यह मुमकिन है। वो, तारिक़ और उसके अम्मी-अब्बू एक साथ तैयारियां कर रहे हैं। सामान पैक करते हुए, बस में चढ़ते हुए, इस सारे ख़ून-ख़राबे को पीछे छोड़ते हुए वो सुकून की तलाश में जा रहे थे। हो सकता है उन्हें मुसीबतों का सामना करना पड़ता, लेकिन जो भी हो, एक साथ मिल कर वो उसका सामना करते। एक उदास अलगाव, एक हत्यारा अकेलापन उसकी ताक में बैठे थे। तब तो ऐसा नहीं हुआ होता।

वो जा सकती है। वो साथ रह सकते हैं।

तब बहुत सारी ऐसी दोपहरें आएंगी।

'मैं तुमसे शादी करना चाहता हूं लैला।'

जब वे फ़र्श पर थे, तब से पहली बार लैला ने अपनी आंखें उठा कर तारिक़ की आंखों में देखा। उसने तारिक़ के चेहरे में कुछ तलाशा। इस बार उसके चेहरे पर मज़ाक का कोई निशान नहीं था। उसकी निगाह इरादों की पक्की और निष्कपट लग रही थी, तब भी उसकी ईमानदारी पर लोहे की परत चढ़ी हुई थी।

'तारिक़'

'मुझे तुमसे शादी करने दो लैला। आज। हम आज ही शादी कर सकते हैं।'

मस्जिद जाकर मुल्ला तलाशने, एक जोड़ी गवाहों को तैयार करने और जल्दी से निकाह पढ़ा लेने के बारे में वो बताने लगा...

लेकिन लैला मम्मी के बारे में सोच रही थी, जो मुजाहिदीनों की तरह ही ज़िद्दी और अड़ियल थीं। लैला के चारों ओर की हवा विद्वेष और निराशा से भर गई। और वो बाबी के बारे में सोच रही थी जिन्होंने बहुत पहले ही अम्मी के आगे हार मान ली थी। वो मम्मी के विरोधी के रूप में उदास कर देने वाले एक दयनीय इन्सान थे।

कभी-कभी...मुझे महसूस होता है कि बस तुम्हीं मेरी सब कुछ हो, लैला।

ये थे उसकी ज़िंदगी के हालात और इन हालातों की सच्चाइयां, जिनसे भाग पाना नामुमकिन था।

'मैं हाकिम काका से तुम्हारा हाथ मांगूंगा। वो हमें दुआएं देंगे, मैं जानता हूं लैला।'

वो सही था। बाबी ऐसा ही करेंगे। लेकिन इससे वो बिखर जाएंगे।

तारिक़ अब भी बोले जा रहा था। उसकी आवाज़ पहले तो दबी-दबी थी, फिर ऊंची हुई और फिर मिन्नतें करने लगा और फिर उसने तर्क का सहारा लिया। उम्मीद से भरेपूरे उसके चेहरे पर दुख उभर आया।

'मैं नहीं कर सकती,' लैला ने कहा।

'ऐसा मत कहो। मैं तुमको प्यार करता हूं।'

'मुझे माफ़ करो।'

'मैं तुम्हें प्यार करता हूं।'

इन शब्दों को सुनने के लिए उसने कितना इंतज़ार किया था। कितनी बार उसने इन अबोले शब्दों के बारे में सपने देखे थे? आख़िरकार अब वो यहां उसके आगे बोल दिए गए थे, और इस वक़्त की विडंबना ने लैला को तोड़ कर रख दिया।

'मैं अपने अब्बा को नहीं छोड़ सकती,' लैला ने कहा। 'उनके पास बस मैं ही बची हूं। उनका दिल भी इसे बर्दाश्त नहीं कर पाएगा।'

तारिक़ यह जानता था। वो जानता था कि तारिक़ की ही तरह लैला भी अपनी ज़िंदगी की ज़िम्मेदारियों से हाथ नहीं झटक सकती थी। लेकिन यह सिलसिला जारी रहा। वो फरियादें करता रहा, वो इन्कार करती रही। वो प्रस्ताव रखता रहा और लैला माफ़ी मांगती रही। दोनों आंसू बहाते रहे।

आख़िर में लैला ने उसे वापस लौटा दिया।

दरवाज़े पर उसने तारिक़ से वादा लिया कि वो उसे अलविदा कहे बगैर

चला जाएगा। उसने तारिक़ के पीछे दरवाज़ा बंद कर दिया। लैला ने उससे अपनी पीठ टिका ली। दरवाज़े पर बजती तारिक़ की मुट्ठियों के बीच कांपती हुई लैला ने एक हाथ से अपना पेट पकड़ रखा था और दूसरे हाथ से अपना मुंह दबा रखा था। दरवाज़े की दूसरी तरफ़ से तारिक़ वादा कर रहा था कि वो उसके लिए लौट आएगा। तारिक़ के थक कर चुप हो जाने तक वो वहीं खड़ी रही। वो उसके लड़खड़ाते हुए कदमों की दूर जाती आहट को सुनती रही जो अंत में एक़दम ख़त्म हो गई। बची रही पहाड़ियों पर गोलीबारी की आवाज़ें और उसके पेट में, उसकी आंखों में, उसकी हड्डियों में दिल का तेज़-तेज़ धड़कना।

छब्बीस

यह साल का अब तक का सबसे गर्म दिन था। पहाड़ हड्डियों को झुलसाने वाली गर्मी में घिरे हुए थे और शहरों पर गर्मी धुएं की तरह छाई हुई थी। बिजली कई दिनों से गायब थी। पूरे काबुल में बिजली के पंखे मुंह चिढ़ाते हुए बेजान पड़े थे।

लैला बैठक के पलंग पर सुस्त पड़ी थी। उसकी ब्लाउज़ से पसीना बह रहा। हरेक छोड़ी गई सांस उसकी नाक के ऊपरी सिरे को जला रही थी। वो जानती थी कि मम्मी के कमरे में मम्मी-बाबी बात कर रहे हैं। दो रात पहले और पिछली रात भी वो जग पड़ी थी और उसे लगा था कि उसने नीचे उनकी आवाज़ें सुनी हैं। जब से एक गोली ने दरवाज़े में नया छेद किया था, तब से हर रोज़ अब वो बातें करने लगे थे।

बाहर दूर कहीं तोपखाना गरज रहा था। और कहीं पास में एक के बाद एक गोलियां चल रही थीं।

लैला के भीतर भी एक जंग लड़ी जा रही तीः एक तरफ़ शर्मिंदगी से भरा हुआ अपराधबोध था तो दूसरी तरफ़ यह पक्की राय थी कि उसने और तारिक़ ने जो किया था वो गुनाह नहीं था। उसे लग रहा था कि यह एक कुदरती, अच्छा, ख़ूबसूरत और अपरिहार्य काम था, जिसके पीछे यह भावना थी कि वो शायद फिर कभी एक दूसरे को न देख पाएं।

लैला ने करवट ली और कुछ याद करने की कोशिश करने लगी : उस वक़्त, जब वो और तारिक़ फर्श पर थे और तारिक़ ने अपनी ललाट उसकी

अपना झुका रखा थी। तब हांफते हुए तारिक़ कुछ कह रहा था। शायद क्या मैं तुम्हें दर्द पहुंचा रहा हूं? या क्या इससे तुम्हें दर्द हो रहा है?

लैला नहीं तय कर सकी कि उसने क्या कहा था।

क्या मैं तुम्हें दर्द पहुंचा रहा हूं?

क्या इससे तुम्हें दर्द हो रहा है?

उसे गए हुए केवल दो हफ़्ते ही हुए हैं और यह शुरू हो गया था। यादों के धारदार किनारों को वक़्त कुंद कर रहा था। लैला दिमागी रूप बेचैन हो जाती। उसने क्या कहा था? यह बात उसे एकाएक अहम लगने लगती, जिसे वो जानती थी।

लैला ने अपनी आंखें बंद कर लेती। खुद को एकाग्र करती।

वक़्त गुज़रने के साथ वो धीरे-धीरे इससे ऊब गई। वो पाती कि जो मर चुका था उसे फिर तरोताज़ा करना, उसकी धूल झाड़ना और उसे फिर से ज़िंदा करना दिन पर दिन थकाऊ होता जा रहा था। असल में बरसों बाद एक दिन ऐसा आएगा जब उसको खो देने पर इतना नहीं पछताएगी। या इतनी बेचैन से, इतनी नज़दीकी से नहीं पछताएगी। एक दिन आएगा जब उसके चेहरे के छोटे-छोटे ब्योरे यादों की पकड़ से फिसलने लग जाएंगे। जब सड़क पर कोई मां तारिक़ नाम के अपने बच्चे को पुकारेगी तो उसका ध्यान नहीं भटकेगा। वो उसकी कमी उस तरह से महसूस नहीं करेगी, जैसी अभी कर रही है। आज, जब उसकी गैरमौजूदगी का दर्द उसका अनवरत साथी बना हुआ है मानो किसी कटे हुए अंग का भुतहा दर्द हो।

बस बहुत दिनों में कभी-कभार जब एक सयानी औरत हो चुकी होगी तो किसी कमीज़ का इस्तिरी करना या अपने बच्चे को झूले पर झुलाना या कोई हल्की सी बात, किसी गर्म दिन पांवों के नीचे की दरी की गर्माहट या किसी अजनबी की ललाट का घुमाव उसे उस दोपहर की याद दिलाएगा, जब वो दोनों साथ थे। और तब सारा कुछ एक साथ सामने आ जाएगा। इसकी स्वतःस्फूर्तता। उनका हैरान कर देने वाला अविवेक। उनकी फूहड़ता। उस काम का दर्द, उसका आनंद, उसकी उदासी। आपस में उलझी हुई उनकी देहों की गर्माहट।

यह सब उसे बहा ले जाएगा। वो सांस लेना भूल जाएगी।

लेकिन फिर यह भी गुज़र जाएगा। वह पल गुज़र जाएगा। पीछे रह जाएगी दबी-कुचली लैला, जो बस एक धुंधली सी बेचैनी भर महसूस कर रही होगी।

उसने तय किया कि तारिक़ ने यही कहा था क्या मैं तुम्हें दर्द दे रहा हूं? हां। यही था वो। लैला ख़ुश थी कि उसे याद आ गया था।

तभी बाबी गलियारे में आए और सीढ़ियों के ऊपर खड़े होकर उसका नाम लेकर पुकारा, उसे जल्दी से ऊपर आने को कहा।

'वो राज़ी हो गई हैं!' उन्होंने कहा। दबी हुई ख़ुशी की वजह से उनकी आवाज़ कांप रही थी। 'हम जा रहे हैं, लैला। हम तीनों। हम काबुल से जा रहे हैं।'

मम्मी के कमरे में वो तीनों बिस्तर पर बैठे थे। बाहर हिक्मतियार और मसूद की सेनाएं आपस में लड़ रही थीं और उनके छोड़े हुए रॉकेट आसमान में सनसनाते हुए गुज़र रहे थे। लैला जानती थी कि शहर में कहीं कोई अभी अभी मरा है, और कोई इमारत अभी धूल में मिली है जिसके ऊपर काले धुएं का एक बादल मंडरा रहा है। सुबह में लाशें निकालनी होंगी। कुछ निकाली जा सकेंगी, कुछ नहीं। फिर काबुल के कुत्ते दावत उड़ाएंगे, जिनके मुंह इनसानी गोश्त लग गया था।

फिर भी, लैला को सड़कों पर दौड़ने की इच्छा जगी। वो अपनी ख़ुशी को मुश्किल से ज़ब्त कर पाई। ख़ुशी से उछल पड़ने के बदले, बैठने के लिए उसे कोशिश करनी पड़ी। बाबी ने बताया कि वे पहले तो पाकिस्तान जाएंगे और वीज़ा के लिए अर्ज़ी दायर करेंगे। पाकिस्तान, जहां तारिक़ था। तारिक़ तो बस सत्रह दिन पहले ही गया है, लैला ने उत्साह के साथ गिना। अगर मम्मी ने अपना मन सत्रह दिन पहले बना लिया होता तो वो साथ-साथ जाते। वो अभी, इस वक़्त तारिक़ के साथ होती! लेकिन इससे कोई फ़र्क़ नहीं पड़ता। वो पेशावर जा रहे हैं। वो, मम्मी, बाबी और वो तारिक़ और उसके अम्मी-अब्बू को खोज लेंगे। यक़ीनन वो खोज लेंगे। वो अपने काग़ज़ाती काम साथ-साथ करेंगे। तब, किसे पता है? किसे पता है? यूरोप? अमेरिका? शायद समंदर के किनारे कहीं, जैसा कि बाबी हमेशा कहा करते थे...

मम्मी सिरहाने के तख़्ते से टिक कर आधा लेटी और आधा बैठी थीं। उनकी आंखें सूजी हुई थीं। वो अपने बाल नोच रही थीं।

तीन दिनों पहले लैला हवा खाने बाहर गई थी। वो सामने के दरवाज़े के पास उससे टिक कर खड़ी थी जब उसने दरकने की एक ज़ोरदार आवाज़ सुनी। उसके दाएं कान के पास हवा में कुछ सरसराया और उसकी आंखों के

सामने लकड़ी के छोटे टुकड़े उड़ने लगे। गीती की मौत के बाद और हज़ारों राउंड गोलियां चलने और काबुल पर बेहिसाब रॉकेटों को गिरने के बाद अब उनके दरवाज़े में बन गए एक छोटे-से छेद का दिखना था, जिसने मम्मी को झकझोर कर जगा दिया था। लैला का सिर जहां था, वहां से महज़ तीन उंगलियों से भी कम दूरी पर वह छेद बना था। इस छेद ने मम्मी को दिखा दिया था कि एक जंग ने पहले ही उनके दो बच्चों की जान ले ली थी, इस ताज़ा जंग में उनके बचे हुए बच्चे की जान भी जा सकती है।

कमरे की दीवारों से अहमद और नूर की मुस्कानें उतार ली गईं। लैला ने मम्मी की निगाहों को एक से दूसरी तस्वीर पर कसूरवाराना तरीके से आते-जाते हुए देखा। मानो वो उनकी सहमति मांग रही हों। उनकी दुआ। मानो उनसे माफ़ी मांग रही हों।

'अब हमारे लिए यहां कुछ नहीं बचा,' बाबी ने कहा। 'हमारे बेटे जा चुके हैं, लेकिन हमारे पास अब भी लैला है। हम अब भी एक दूसरे के साथ हैं, फरीबा। हम एक नई ज़िंदगी की शुरुआत कर सकते हैं।'

बाबी बिस्तर की दूसरी तरफ़ पहुंचे। जब वो मम्मी का हाथ थामने के लिए झुके तो मम्मी ने उन्हें ऐसा करने दिया। मम्मी के चेहरे पर रियायत का भाव था। लग रहा था कि उन्होंने खुद को सौंप दिया हो। उन्होंने एक दूसरे का हाथ हल्के से पकड़े रखा और फिर धीरे-धीरे सरक कर वे गले मिले। मम्मी ने अपना चेहरा बाबी की गर्दन में छुपा दिया। उन्होंने बाबी की कमीज़ मुट्ठी में थाम ली।

उस रात उत्तेजना ने लैला को घंटों जगाए रखा। वो बिस्तर में पड़ी रही और दूर भड़कीले नारंगी और पीले रंगों में रोशन आसमान को देखती रही। इसी तरह किसी समय भीतर के उल्लास और बाहर में तोपखाने की गरज के बावजूद उसे नींद आ गई।

उसने एक सपना देखा।

वो एक समुद्र तट की पट्टी पर लिहाफ पर बैठे हुए हैं। यह ठंडा, लंबा दिन था लेकिन कंधों पर कंबल लपेटे हुए तारिक़ के पास बैठना गर्माहट से भरा हुआ था। वो उन कारों को देख सकती थी जो हवा में हिल रहे खजूर के पेड़ों के नीचे, उखड़ी हुई सफ़ेद पेंट से रंगी एक नीची बाड़ के पीछे खड़ी थीं। हवा से उसकी आंखों में पानी आ रहा था और जूतों में रेत भर रही थी।

हवा रेत के एक टीले से दूसरे पर सूखी हुई घास की गांठें उछाल रही थी। वो दूर बहती नावों का डोलना देख रहे थे। उनके आस-पास सीगल चीख रही थी और हवा में हिल-डुल रही थी। हवा उथली ढलानों पर से रेत उड़ा रही थी। फिर वहां ऐसा मंत्रों के गाने जैसा शोर था। लैला ने तारिक़ को वह बात बताई जो बाबी ने उसे गानेवाली रेत के बारे में बताई थी।

तारिक़ ने उसकी भौंहों को सहलाया और उसमें से रेत के टुकड़े झाड़े। लैला की निगाह तारिक़ की उंगली की अंगूठी पर पड़ी। यह उसकी अपनी अंगूठी जैसी ही थी—सोने के छल्ले पर जाली जैसी लकीरें खींची हुई थी।

यह सही है, उसने तारिक़ से कहा। *यह दाने से दाने का घिसना है।* सुनो। उसने सुना। उसने त्यौरियां चढ़ाईं। उन्होंने इंतज़ार किया। उन्हें यह फिर से सुनाई दिया। हवा जब हल्की होती तो एक कराहती हुई आवाज़ आती, और जब यह तेज़ होती तो ऊंचे कोरस की मिमियाती हुई आवाज़ आती।

बाबी ने कहा कि उन्हें सिर्फ़ वही सामान साथ लेना चाहिए जो बहुत ज़रूरी हो। बाक़ी को वो बेच देंगे।

'इससे हमारे पेशावर में रहने का खर्च निकल आएगा। तब तक मैं काम देखूंगा।'

अगले दो दिनों तक वो बेचा जाने वाला सामान जमा करते रहे। उन्होंने उनके ढेर लगा दिए।

अपने कमरे में लैला ने पुरानी ब्लाउज़ों, पुराने जूतों, किताबों और खिलौनों को परे रख दिया। बिस्तर के नीचे देखने पर उसे पीले रंग की शीशे की एक छोटी-सी गाय मिली, जो उसे हसीना ने पांचवे दर्जे में छुट्टियों के दौरान दी थी। एक छोटा सा फुटबॉल का चाबी का छल्ला मिला जो गीती का तोहफ़ा था। लकड़ी का छोटा-सा पहियों वाला जेब्रा। सेरामिक का एक छोटा-सा एस्ट्रोनॉट जो लैला और तारिक़ को एक गटर में मिला था। तब वो छह साल की थी और वो आठ का। लैला को याद आया कि इस पर उनमें छोटी-सी तकरार भी हुई थी कि वो किसको मिला था।

मम्मी भी चीज़ें जमा कर रही थीं। उनकी गतिविधियां हिचक से भरी हुई थीं। उनकी आंखें सुस्त और खोई-खोई सी लगतीं। उन्होंने अपनी अच्छी प्लेटें, रूमालें, अपने सारे गहने और अपने अधिकतर पुराने कपड़े अलग कर दिए। बस उन्होंने अपनी शादी की अंगूठी अपने पास रखी।

'आप ये बेच नहीं रही हैं, बेच रही हैं क्या?' लैला ने मम्मी की शादी का जोड़ा उठाते हुए कहा। वो उसकी गोद में सरसराते हुए खुल गया। उसने उसके गले में लगी लेस और रिबन को छुआ। आस्तीनों पर हाथ से टांके गए नन्हें मोतियों पर उंगलियां फेरीं।

मम्मी ने कंधे झटके और उससे जोड़ा ले लिया। उन्होंने रुखाई से उसे कपड़ों के ढेर पर फेंक दिया। मानो एक झटके में बैंड-एड को अलग कर रही हों, लैला ने सोचा।

सबसे दर्दनाक काम बाबी को करना था।

लैला ने उनको अपने पढ़ने के कमरे में पाया जहां वे विषाद से भरा चेहरा लिए किताब रखने के खानों को देख रहे थे। उन्होंने एक सेकंडहैंड टी-शर्ट पहन रखी थी, जिस पर सान फ्रांसिस्को के लाल पुल का फोटो था। सफ़ेदी से ढंके हुए पानी में से निकले घने कोहरे ने पुल के टावरों को अपने में समा लिया था।

'तुम वो पुरानी कहानी जानती हो?' बाबी ने कहा। 'तुम एक उजाड़ द्वीप पर हो। तुम पांच किताबें ले सकती हो। तुम किनको चुनोगी? मैंने कभी नहीं सोचा था कि मुझे सचमुच ऐसा करना पड़ेगा।'

'हमें एक नया संग्रह बनाना पड़ेगा, बाबी।'

'म्म।' वो मुस्कुराए। 'मैं यकीन नहीं कर सकता कि मैं काबुल से जा रहा हूं। मैं यहां स्कूल गया, यहां मैं पहली नौकरी पाई, इसी शहर में बाप बना। यह सोचना अजीब लगता है कि जल्दी ही मैं किसी दूसरे शहर के आसमान के नीचे सो रहा होऊंगा।'

'मेरे लिए भी ये अजीब है।'

'सारे दिन काबुल पर लिखी गई यह नज़्म मेरे दिमाग में उमड़ती रही है। मुझे लगता है कि साइब-ए-तबरीज़ी ने इसे सत्रहवीं शताब्दी में लिखा था। कभी मुझे यह पूरी नज़्म याद थी, लेकिन अब मैं बस इसकी दो लाइनें ही याद कर पाता हूं :

''इसकी छतों पर चमकते माहताबों को नहीं गिना जा सकता है

और न गिने जा सकते हैं इसकी दीवारों के पीछे छुपे हज़ारों दमकते आफ़ताब''

लैला ने निगाह ऊपर की तो देखा कि वो रो रहे थे। उसने अपनी एक

बांह उनकी कमर में लपेटी। 'ओह, बाबी। हम लौटेंगे। जब ये जंग ख़त्म हो जाएगी। इंशाअल्लाह हम काबुल लौट आएंगे। देखना।'

तीसरी सुबह लैला ने सामान के ढेरों को आंगन में लाकर सामने के दरवाज़े के पास रखना शुरू कर दिया। इसके बाद वो एक टैक्सी बुला कर उसे गिरवी रखने वाली दुकान में ले जाने वाले थे।

लैला घर और आंगन में दौड़ते हुए कपड़ों, बर्तनों के ढेर और बाबी की किताबों के बक्से ढोती रही। दोपहर तक उसे थक जाना चाहिए था, जब सामने के दरवाज़े के पास सामान का ढेर उसकी कमर जितनी उंचाई तक आ गया। लेकिन वो जानती थी कि हर चक्कर के साथ ही वो तारिक़ को फिर से देखने के और करीब होती जा रही है। और हर चक्कर उसके पांवों को और ज़्यादा फुर्ती से भर देता था और उसके हाथ और अधिक तरोताज़ा होते जा रहे थे।

'हमें एक बड़ी टैक्सी की ज़रूरत पड़ेगी।'

लैला ने ऊपर देखा। ऊपर अपने सोने के कमरे से मम्मी बोल रही थीं। वो खिड़की से झुकी हुई थीं और अपनी कोहनियां उन्होंने ओटे पर टिका रखी थीं। चमकती गर्म धूप उनके स्याह बालों से उलझी हुई थी और उनके मुर्झाए हुए पतले चेहरे पर चमक रही थी। मम्मी ने वही गहरी नीली पोशाक पहनी थी जिसे उन्होंने चार महीने पहले की दोपहर वाली दावत के दिन पहना था। यह एक नौजवान औरत की ख़ूबसूरत पोशाक थी लेकिन लैला को एक पल के लिए मम्मी एक बूढ़ी औरत लगीं। पतली बांहों और धंसी हुई कनपटियों वाली एक बूढ़ी औरत, जिसकी धीमी आंखों के गिर्द थकान से भरे हुए स्याह घेरे थे। ये तो शादी के पुराने फोटो में दिखती उस मोटी, गोल चेहरे वाली, चमकती हुई औरत से अलग ही कोई जीव थीं।

'दो बड़ी टैक्सियां,' लैला ने कहा।

लैला बाबी को भी देख सकती थी। वो बैठक में किताबों के बक्से एक के ऊपर एक सजा रहे थे।

'जब ये पूरा हो जाए तो ऊपर आना,' मम्मी ने कहा। 'हम दोपहर के खाने के लिए बैठेंगे। उबले हुए अंडे और बची हुई फलियां।'

'मेरे पसंदीदा,' लैला ने कहा।

एकबारगी उसने अपने सपने के बारे में सोचा। लिहाफ पर बैठे हुए वो और तारिक़। समंदर। हवा। टीले।

उसका मन यह जानने को कर रहा था कि गाती हुई रेत की आवाज़ कैसी लग रही थी?

लैला रुक गई। उसने ज़मीन की दरार के निकलते एक भूरे गिरगिट को देखा। इसका सिर अगल-बग़ल में डोल रहा था। इसने पलकें झपकाईं और एक चट्टान के नीचे उछल कर घुस गया।

लैला ने फिर से समुद्र तट की कल्पना की। अब बस गीत की आवाज़ ही आ रही थी। और ऊंची हो रही थी। हर पल के साथ वो तेज़ होती जा रही थी, तेज़ और तेज़। बाढ़ के पानी की तरह वो उसके कानों में भर थी। उसने हर दूसरी चीज़ को बहा दिया था। परों से ढकी सीगल अब उसकी नकल भर कर रही थीं और बिना आवाज़ निकाले बस अपनी चोंच को खोल-बंद कर रही थीं। बिना गरज के लहरें झाग और बौछारों के साथ उठ रही थीं। रेत गाए जा रही थी। अब वो चिल्ला रही थी। एक आवाज़ जैसे कि...खनखनाहट।

खनखनाहट नहीं। नहीं। बल्कि सीटी।

लैला ने किताबें अपने पैरों पर गिरा लीं। उसने आसमान में देखा। अपनी आंखों पर हाथ से ओट बना लिया।

तभी एक भयानक गरज आई। उसके पीछे सफ़ेद चमक उभरी।

उसके पैरों के नीचे ज़मीन लरज उठी।

पीछे से कुछ गर्म और ज़ोरदार चीज़ ने उसे धक्का दिया। उसके पांवों की चप्पल निकल गई। वो हवा में उठ गई। और अब वो उड़ रही थी, हवा में बल खाते हुए, घूमते हुए उसने आसमान को देखा, फिर ज़मीन को, फिर आसमान को और फिर ज़मीन को। लकड़ियों के जलते हुए ढेर सारे टुकड़े आसमान में उछले। इसी तरह शीशे के हज़ारों टुकड़े भी। और लैला को लगा कि वो उनमें से एक एक टुकड़े को अपने आसपास उड़ते हुए देख सकती थी। वो देख सकती थी कि वो धीरे-धीरे उलट-पलट रहे हैं और उनमें से हरेक में धूप चमक रही है। नन्हें, ख़ूबसूरत, इंद्रधनुष।

तभी लैला दीवार से टकराई। फिर वो ज़मीन पर आ गिरी। उसके चेहरे और बांहों पर धूल और कंकड़ और शीशे की बौछारें थीं। जो आख़िरी चीज़ उसे पता थी, वो ये था कि अपनी बग़ल में ज़मीन पर एक धमाके को उसने देखा है। ख़ून से तरबतर टुकड़ों का एक ढेर। और इसके सबसे ऊपर घने कोहरे में से एक लाल पुल झांक रहा था।

भाग तीन

सत्ताईस

मरियम

तुम्हें पता है कि मैं कौन हूं?

लड़की की आंखें हिलीं।

'तुम्हें पता है कि क्या हुआ है?'

लड़की का मुंह कांपा। उसने अपनी आंखें बंद कर लीं। उसने कुछ निगला। उसके हाथ ने अपने बाएं गाल को सहलाया। उसने कुछ कहा।

मरियम करीब झुक आई।

'इस कान से,' लड़की ने सांस ली। 'मैं सुन नहीं सकती।'

पहले हफ़्ते में लड़की उन गुलाबी गोलियों की मदद से बस सोती रही, जिनके लिए रशीद ने अस्पताल को पैसे चुकाए थे। वो नींद में बड़बड़ाती। कभी-कभी वो बस यों ही कुछ कहती, चिल्लाती, ऐसे नाम लेती जिनको मरियम नहीं जानती थी। सोते हुए वो रोती, गुस्सा हो जाती, कंबल को लात मार कर हटा देती और तब मरियम को उसे पकड़ना पड़ता। कभी-कभी उसे उबकाई आती और मरियम का खिलाया सारा कुछ बाहर निकाल देती।

जब वो गुस्सा नहीं होती तो वो लड़की बस उदास आंखों का जोड़ा हुआ करती थी, जो कंबल के नीचे से घूरती रहतीं। मरियम और रशीद के कुछ पूछने पर वो बहुत छोटे जवाब देती। कुछ दिन जब मरियम और फिर रशीद उसे खिलाने की कोशिश करते तो वो बच्चों की तरह सिर को अगल-बग़ल

हिला कर मना करती। मरियम जब उसके पास चम्मच लिए आती तो वो अड़ जाती। लेकिन वो जल्दी ही थक जाती और मरियम की नियमित मनुहार के आगे हार मान लेती। इसके बाद इसके बाद देर तक वो रोती।

रशीद ने मरियम से कहा कि वो लड़की के चेहरे और गरदन पर कटे हुए जख्मों और कंधे के गहरे घावों तथा पूरी बांहों और निचले पैरों पर एंटीबायोटिक मलहम लगा दे। मरियम उसकी दवाओं की पट्टियां बदलती, जिनको वो धो-धोकर इस्तेमाल में लाती। जब लैला को उबकाई आती तो मरियम उसके बालों को पीछे पकड़े रखती।

'वो कब तक रहने जा रही है?' उसने रशीद से पूछा।

'जब तक वो ठीक नहीं हो जाती। उसे देखो। वो कहीं जाने लायक नहीं है। बेचारी।'

वो रशीद को मिली थी। उसने मलबे से उसे खोद कर बाहर निकाला था।

'किस्मत की बात है कि मैं घर पर था,' उसने लड़की से कहा। वो मरियम के बिस्तर की बग़ल में एक फोल्डिंग चेयर पर बैठा हुआ था, जहां वो लेटी थी। 'मेरा मतलब है कि तुम्हारी किस्मत थी। मैंने तुम्हें अपने हाथों से खोद कर निकाला। वहां इतना बड़ा लोहे का कबाड़ था-' उसने अपना अंगूठा और तर्जनी अंगुली फैला कर बताया। मरियम का अंदाज़ा था कि वो असली आकार को दोगुना बढ़ा कर बता रहा है। 'इतना बड़ा। तुम्हारे कंधे से चिपका हुआ था। वो सचमुच वहां घुस गया था। मुझे लगा कि मुझे प्लायर्स लगा कर निकालना पड़ेगा। लेकिन तुम अब ठीक हो। तुम्हें फिर से भली-चंगी बन जाने में देर नहीं लगेगी।'

रशीद ने ही हाकिम की कुछ किताबें बचा ली थीं।

'उनमें से अधिकतर राख हो चुकी थीं। मुझे डर है कि बाकियों को लोगों ने लूट लिया।'

पहले हफ़्ते उसने लड़की की देखभाल करने में मरियम की मदद की। एक दिन वो अपने काम पर से लौटते वक़्त नया कंबल और तकिया लेकर आया। एक दूसरे दिन गोलियों की एक शीशी।

'विटामिन,' उसने कहा।

राशिद ने ही लैला को बताया कि उसके दोस्त तारिक़ के घर पर कब्ज़ा

कर लिया गया है।

'एक तोहफ़ा,' उसने कहा। 'सय्याफ के कमांडरों में से एक ने अपने तीन आदमियों को उसे तोहफ़े में दे दिया है। तोहफ़ा। हा!'

वो तीनों आदमी असल में अभी लड़के ही थे, जिनके जवान चेहरे धूप में झुलस गए थे। मरियम जब उधर से गुज़रती तो उनको देखती, वो हमेशा वर्दी में होते, तारिक़ के घर के सदर दरवाज़े के सामने बैठ कर ताश खेलते, सिगरेटें पी रहे होते। उनके कलाश्निकोव दीवार से टिका कर रखी गई होतीं। अपमानजनक रवैए वाला, भूरे रंग का लड़का उनका नेता था, जो अपने में संतुष्ट दिखता था। सबसे छोटा सबसे चुप रहता था। यही वो लड़का था, जो अपने दोस्तों के छुट्टे रवैए को खुले दिल से कबूल करने में हिचक दिखाता था। जब मरियम उधर से गुज़रती तो वो मुस्कुराता और सिर हिलाकर सलाम करता। जब वो ऐसा करता तो उसकी आत्मसंतुष्टि चली जाती और मरियम को उसकी दीनता की एक झलक मिल जाती, जो अब भी नापाक नहीं हुई थी।

तभी एक सुबह उस घर पर रॉकेट आकर गिरे। बाद में अफवाह चली कि वहदत के हज़ारा लोगों ने वो रॉकेट छोड़े थे। कुछ समय तक पड़ोसी मलबे में से लड़कों के टुकड़े बीनते रहे।

मरियम सोचती कि रॉकेट ने जिस तरह उसके घर को धुएं से घिरे हुए मलबे में बदल दिया था, ऐसे में लड़की गैर मामूली तौर पर किस्मत वाली थी कि उसे बहुत छोटे जख्म आए थे। और धीरे-धीरे लड़की ठीक हो गई। वह अब ज़्यादा खाने लगी और अपने बालों को कंघा करने लगी थी। वो खुद से नहा लेती। अब रशीद और मरियम के साथ खाना खाने नीचे आने लगी।

लेकिन तब बिना बुलाए कुछ यादें उभरतीं और एक पथरीली खामोशी फैल जाती या रूखाई छा जाती। वो चुपचाप बैठ जाती या फिर ढह पड़ती। फीकी नज़रों से देखती। डरावने सपने आते और एकाएक अथाह गम में डूब जाती। वो उल्टियां करती।

और कभी कभी पछताती।

'मुझे यहां होना भी नहीं चाहिए,' उसने एक दिन कहा।

मरियम चादरें बदल रही थी। लड़की फर्श पर से उसे देख रही थी। अपने जख्मी घुटने उसने सीने से लगा रखे थे।

'मेरे अब्बा डिब्बे बाहर निकालना चाहते थे। किताबें। उन्होंने कहा कि वो डिब्बे मेरे लिहाज के काफ़ी भारी थे। लेकिन मैंने उनको ढोने नहीं दिया। मैं इतनी बेकरार थी। जब घर के साथ ये हादसा हुआ तो मुझे उसके भीतर होना चाहिए था।

मरियम ने साफ़ चादर झटकी और इसे बिस्तर पर स्थिर होने दिया। उसने लड़की को देखा। उसने उसके भूरे घुंघराले बालों को, उसकी छरहरी गरदन और हरी आंखों को, उसकी ऊंची गालों की हड्डियों को और मोटे होंठों को देखा। उसे याद आया कि लड़की जब छोटी थी तो वो सड़कों पर दिखती—तंदूर जाती हुई अपनी अम्मी के आगे-पीछे डगमगाते हुए चल रही होती, अपने भाई के कंधों पर सवार होती, वो उसका छोटा भाई होता जिसके कानों पर बालों का एक गुच्छा था। बढ़ई के लड़के के साथ कंचे खेल रही होती।

लड़की मरियम को देख रही थी मानो वो उससे इच्छाशक्ति के कुछ टुकड़े मांग रही हो, मानो चाहती हो कि वो उसका हौसला बढ़ाते हुए कुछ कहे। लेकिन मरियम उसे क्या समझदारी दे सकती थी? कैसा हौसला? मरियम को याद आया कि नाना को दफनाए जाने के दिन उसे कितनी कम राहत मिली थी, जब मुल्ला फैज़ुल्ला ने उसे क़ुरान की लाइनें पढ़कर सुनाई थीं: शुक्रिया उसका जिसके हाथों में जहान है और जिसकी सारी चीज़ों पर हुक्म चलता है, जिसने मौत और ज़िंदगी बनाई है वह एक दिन तुमको आज़मा सकता है।' क़ुरान ने सच्ची बात कही है। हमारे कंधों पर आ पड़ी हरेक आज़माइश और हरेक दुख के पीछे खुदा की हिक़मत होती है। या फिर जब उन्होंने उसके अपराधबोध के बारे में बताया था, ऐसे ख़याल सही नहीं मरियम जो। वो तुमको तबाह कर देंगे। इसमें तुम्हारा कोई कसूर नहीं था। यह तुम्हारी ग़लती नहीं थी।

वो इस लड़की से क्या कहती, जो उसके बोझ को हल्का कर सके। लेकिन हुआ ये कि मरियम को कुछ कहना नहीं पड़ा। क्योंकि लड़की का चेहरा सिकुड़ गया था और वो हाथों-पैरों के बल पड़ कर बोलने लगी कि वो बीमार पड़ने वाली है।

'रुको! रोके रखो। मैं तसला लाती हूं। फर्श पर नहीं करो। मैं बस अभी साफ़ किया है...ओह...ओह...खुदाया।'

तब उस धमाके से, जिसने लड़की के अम्मी-अब्बू की जान ले ली थी, महीने

भर बाद एक दिन एक आदमी ने दस्तक दी। मरियम ने दरवाज़ा खोला। उस आदमी ने अपने आने का मकसद बताया।

'एक आदमी तुमसे मिलने आया है,' मरियम ने कहा।

लड़की ने तकिए से अपना सिर उठाया।

'वो कहता है उसका नाम अब्दुल शरीफ है।'

'मैं किसी अब्दुल शरीफ को नहीं जानती।'

'खैर, वो तुम्हें तलाशते हुए यहां आया है। नीचे आकर उससे तुम्हारा मिलना ज़रूरी है।'

अट्ठाईस

लैला

लैला अब्दुल शरीफ के सामने बैठी थी। शरीफ एक दुबला-सा, छोटे सिर वाला आदमी था, जिसकी गोल नाक उसके गालों के जख्मों के निशानों के बीच से झांक रही थी। उसके बाल छोटे और स्याह थे और पिनकुशन पर लगे पिनों की तरह उसके सिर पर तन कर खड़े थे।

'तुमको मुझे माफ़ करना होगा हमशीरा,' उसने अपना ढीला कॉलर ठीक करते हुए और रूमाल से भौंहें पोंछते हुए कहा। 'मुझे डर है कि मैं भी पूरी तरह उबर नहीं पाया हूं। अभी पांच दिन और मुझे लेनी पड़ेंगी, क्या कहते हैं उन्हें...सल्फा गोलियां।'

लैला ने अपनी सीट पर स्थिति बदली ताकि वो अपना दाहिना अच्छा कान उसके करीब ला सके। 'क्या आप मेरे अम्मी-अब्बू के दोस्त थे?'

'नहीं, नहीं,' अब्दुल शरीफ ने जल्दी से कहा। 'माफ़ कीजिए।' उसने एक उंगली उठाई और मरियम द्वारा सामने रखे गए पानी से एक लंबी घूंट भरी।

'मेरा अंदाज़ा है कि मुझे शुरू से बताना चाहिए।' उसने अपने होंठों और फिर से भौंहों को सुखाया। 'मैं एक कारोबारी हूं। मेरी कपड़े की एक दुकान है, जहां अधिकतर मर्दों के कपड़े बिकते हैं। चापन, टोपियां, तुंबन, सूट, टाई—जो भी नाम लो। काबुल में दो स्टोर थे एक तैमानी में और दूसरा शार-ए-नौ में। हालांकि अभी-अभी मैंने उन्हें बेच दिया है। और दो पाकिस्तान में हैं, पेशावर

में। वहीं मेरा गोदाम भी है। इसलिए मैं काफ़ी सफ़र करता हूं, आता-जाता रहता हूं। इन दिनों यह'—उसने अपना सिर हिलाया और थकान भरी हंसी हंसा 'बस कहिए कि एक बहादुरी का ही काम है।

'हाल में कारोबार के सिलसिले में, ऑर्डर लेने और स्टॉक देखने जैसे कामों के सिलसिले में मैं पेशावर में था। मैं अपने परिवार से भी मिलने गया था। हमारी तीन बेटियां है अल्हम्दुलिल्लाह। जब मुजाहिद्दीनों ने एक दूसरे का गला काटना शुरू किया तो मैंने अपने परिवार को पेशावर पहुंचा दिया। मैं नहीं चाहता था कि उनका नाम भी शहीदों की फेहरिश्त में जुड़ जाए। न ही मेरा, ईमानदारी से कहूं तो। जल्दी ही मैं भी उनके साथ ही रहने लगूंगा, इंशाअल्लाह।

'बहरहाल, मुझे पिछले बुधवार से पहले काबुल लौट आना था। लेकिन जैसा नसीब में था, मैं बीमार पड़ गया। मैं तुमको यह सुना कर ऊबाऊंगा नहीं, हमशीरा। बस इतना कहना काफ़ी है कि जब मैं चलता तो लगता कि टूटे हुए शीशों से गुज़र रहा हूं। मैं तो नहीं चाहूंगा कि हिक्मतियार को भी ऐसी बीमारी हो। मेरी बीवी नादिया जान ने, उस पर अल्लाह का करम हो, मुझसे फरियाद की कि मैं डॉक्टर को दिखाऊं। लेकिन मैंने सोचा कि मैं इसे एस्प्रिन और ख़ूब सारे पानी से मात दे दूंगा। नादिया जान ज़ोर देती रहीं और मैंने कहा कि नहीं। हम आगा-पीछा करते रहे। तुमको यह कहावत तो पता ही होगी कि एक बेवकूफ़ गधे को एक बेवकूफ़ हांकने वाला चाहिए होता है। इस बार लगता है कि गधा जीत गया। यानी मैं।'

उसने बाक़ी पानी पीकर गिलास मरियम की तरफ़ बढ़ा दिया। 'अगर आपको ज़्यादा ज़हमत न हो तो।'

मरियम ने गिलास लिया और उसे भरने चली गई।

'कहने की ज़रूरत नहीं है कि मुझे उसकी बात सुन लेनी चाहिए थी। वो हमेशा ज़्यादा समझदार रही है। खुदा उसकी उम्र दराज़ करे। वक़्त गुज़रा और मैं अस्पताल में था जहां मैं बुखार में तप रहा था और ऐसे कांप रहा था जैसे हवा में बेद पेड़ कांपता है। मुश्किल से ही मैं खड़ा हो पा रहा था। डॉक्टर ने कहा कि मुझे ब्लड प्वाइज़निंग हो गई है। उसने बताया कि अगर दो या तीन दिनों की देर हो गई रहती तो मैंने अपनी बीवी को बेवा बना दिया होता।

'मुझे स्पेशल यूनिट में रखा गया जो सचमुच में बीमार लोगों के लिए

रिज़र्व रहता है, ऐसा मेरा अंदाज़ा है। ओह तशक्कुर।' उसने मरियम से गिलास ले लिया और अपने कोट की जेब से एक बड़ी सफ़ेद गोली निकाली। 'इन चीज़ों का आकार देखो।'

लैला ने उसे गोली निगलते हुए देखा। वो जानती थी कि उसकी सांसें तेज़ हो गई हैं। उसके पैर भारी लगने लगे हैं मानों उनमें वज़न बांध दिया गया हो। उसने ख़ुद को तसल्ली दिलाई अभी तक उसने बात पूरी नहीं की है, कि अभी तक उसने लैला को कुछ बताया नहीं है। लेकिन अगले ही पल वो बतानेवाला है, और लैला को उठ कर चले जाने की ज़बरदस्त चाहत को दबाना पड़ा। उसे चले जाने की इच्छा हो रही थी, इससे पहले कि वो आदमी उसको ऐसी चीज़ों के बारे में बताए, जिनको वो सुनना नहीं चाहती थी।

अब्दुल शरीफ ने गिलास को टेबल पर रख दिया।

'वहीं तुम्हारे दोस्त से मेरी भेंट हुई। मोहम्मद तारिक़ वलीज़ई।'

लैला का दिल तेज़ हो गया। तारिक़ अस्पताल में था? स्पेशल यूनिट में? जो सचमुच के बीमार लोगों के लिए होता है?

उसने सूखा हुआ थूक निगला। अपनी कुर्सी पर हिली। उसने ख़ुद अपने से भी चुरा लेना था। अगर वो ऐसा नहीं करती तो उसे डर था कि वो पागल न हो जाए। उसने अपने ख़यालों को अस्पताल और स्पेशल यूनिट से हटाया और इस तथ्य पर सोचने लगी कि उसने तारिक़ का पूरा नाम तबसे नहीं सुना था जब से कई साल पहले उन दोनों ने सर्दियों के फ़ारसी कोर्स में नाम लिखाया था। घंटी के बाद टीचर हाज़िरी के लिए उन सबके नाम पुकारते और उसका नाम इस तरह पुकारते–मोहम्मद तारिक़ वलीज़ई। तब उसका पूरा नाम सुन कर लैला को हंसी आ जाती थी।

'उसके साथ जो हुआ था, उसके बारे में मुझे एक नर्स से पता लगा,' अब्दुल शरीफ ने बात आगे बढ़ाई। वो अपना सीना थपथपा रहा था मानो गोली के जाने के लिए रास्ता बना रहा हो। 'जितने वक़्त मैं पेशावर में रहा मुझे उर्दू अच्छी-खासी समझ में आने लगी थी। जो भी हो, बातों को जोड़ कर मुझे यह समझ में आया कि तुम्हारा दोस्त पेशावर जा रही रिफ्यूजियों से भरी हुई एक लॉरी में था। उसमें तेईस लोग सवार थे। सरहद के करीब वे दोतरफ़ा गोली बारी में फंस गए। एक रॉकेट लॉरी से आ लगा। शायद वो निशाना चूक गया था, लेकिन इन लोगों के बारे में कुछ नहीं कहा जा सकता, कुछ

भी नहीं। महज छह लोग बच सके और उन सबको उसी यूनिट में भर्ती किया गया। तीन तो चौबीस घंटों के भीतर मर गए। उनमें से बचे हुए दो मुझे समझ में आया कि वो दोनों बहनें थीं, को तो अस्पताल से छुट्टी दे दी गई। तुम्हारा दोस्त वलीज़ाई उनमें से आख़िरी था। जब मैं वहां पहुंचा तो उसे वहां रहते हुए करीब तीन हफ़्ते हो चुके थे।'

तो वो ज़िंदा था। कितनी बुरी तरह से उसे चोट पहुंचाई थी उन लोगों ने? लैला ने पागलनपन से सोचा। कितनी बुरी तरह? इतनी बुरी तरह कि उसे आख़िरकार स्पेशन यूनिट में रहना पड़ा। लैला जानती थी कि उसके पसीने निकल आए हैं, कि उसका चेहरा गर्म हो उठा है। उसने कुछ और सोचने की कोशिश की, कोई मज़ेदार चीज़ जैसे कि बाबी और तारिक़ के साथ बुद्धों को देखने के लिए बामियान के उस सफ़र के बारे में। लेकिन उसकी जगह तारिक़ के अम्मी-अब्बू की तस्वीरें घूम गईः उल्टी हुई लॉरी में फंसी हुई तारिक़ की अम्मी धुएं के बीच से तारिक़ को पुकार रही हैं, उनकी बांहें और सीना आग में जल रहे हैं, उनकी खोपड़ी पर विग पिघल रहा है...

लैला को जल्दी-जल्दी सांस लेनी पड़ी।

'वो मेरी बग़ल वाले बिस्तर पर था। हमारे बीच कोई दीवार नहीं थी, सिर्फ़ एक पर्दा था। इसलिए मैं उसे अच्छी तरह देख सकता था।'

अब्दुल शरीफ को अचानक अपनी शादी की अंगूठी के साथ खेलने की ज़रूरत महसूस हुई। वो अब ज़्यादा धीरे-धीरे बोल रहा था।

'तुम्हारा दोस्त, वो बुरी तरह—बहुत ही बुरी तरह—जख्मी था, समझीं। उसकी देह में हर कहीं से रबर ट्यूब लगे हुए थे। पहले तो-' उसने अपना गला साफ़ किया। 'पहले तो मैंने सोचा कि इसी हमले में उसने दोनों पांव खोए हैं, लेकिन नर्स ने बताया कि एसा नहीं था। इस हमले में उसने केवल दाहिना पांव खोया है। बाएं पांव का मामला किसी पुराने जख्म से जुड़ा था। कुछ भीतरी चोटें भी थीं। वो उसका तीन बार ऑपरेशन कर चुके थे। उसकी आंतों के कुछ हिस्से निकाले जा चुके थे और मुझे याद नहीं कि और क्या था। और वो जल गया था। बहुत बुरी तरह से। मैं बस इतना ही बता सकता हूं। यकीनन तुम ख़ुद भी बहुत बुरे ख़्वाबों से गुज़री हो हमशीरा। उनमें कुछ और जोड़ने में कोई समझदारी नहीं है।'

तारिक़ के अब पांव नहीं थे। अब वो दो कटे हुए पैरों वाला धड़ भर

था। बिना पांवों वाला। लैला को लगा कि वो अब शायद ढह जाएगी। ज़ोर लगा कर, भरपूर कोशिश करके उसने अपने दिमाग से सूत्रों को कमरे से बाहर भेजा। इस खिड़की से बाहर, इस आदमी से दूर, सड़क पर, शहर पर, इसकी सपाट छतों वाले घरों और बाज़ारों के ऊपर, रेत की अटारियों में बदल गए इसकी गलियों के भूलभूलैए के ऊपर।

'वो अधिकतर समय बेहोश रहता। दर्द से। लेकिन ऐसा भी वक़्त आता जब बेहोशी दूर हो जाती और वो भला-चंगा रहता। दर्द रहता लेकिन दिमाग सही रहता। मैं उससे अपने बिस्तर से बातें करता। मैंने उसे बताया कि मैं कौन था, कहां से आया था। मुझे लगा कि वो खुश हुआ कि उसकी बग़ल में एक हमवतन था।

'अधिकतर मैं ही उससे बातें करता। उसके लिए बातें करना मुश्किल था। उसकी आवाज़ बहुत फटी हुई थी और मुझे लगता है कि होठों को हिलाने में उसे दुखता था। इसलिए मैंने उसे अपनी बेटियों और पेशावर में अपने घर के बारे में बताया, जिसके पीछे मैं और मेरे साले मिल कर एक बरामदा बना रहे थे। मैंने उसको बताया कि मैंने काबुल में अपने स्टोर बेच दिए हैं और काग़ज़ी कार्रवाई पूरी करने जा रहा हूं। यह उतना नहीं था, लेकिन इसने उसका दिल भर आया। कम से कम, मुझे तो ऐसा ही लगता है।

'कभी-कभी वो भी बोलता। आधे वक़्त तो मैं समझ नहीं पाता कि वो क्या बोल रहा है। लेकिन मैं काफ़ी बातें समझ लेता। उसने बताया कि वो कहां रहता था। उसने ग़ज़नी में अपने चाचा के बारे में बताया। और अपनी अम्मी के खाने और अब्बा की बढ़ईगीरी और उनके अकार्डियन बजाने के बारे में बताया।

'लेकिन सबसे ज़्यादा वो तुम्हारे बारे में बातें करता था, हमशीरा। उसने बताया कि तुम उसकी सबसे पुरानी याद थीं, उसने ऐसा ही बताया। मुझे लगता है कि यह सही था, हां। मैं बता सकता हूं कि वो तुम्हारी बहुत परवाह करता था। ठीक, यह तो बहुत साफ़ दिखता था। लेकिन उसने कहा कि वो खुश था कि तुम वहां नहीं थीं। उसने कहा कि वो नहीं चाहता था कि वो तुमको वैसे देखे।'

लैला को फर्श पर टिके अपने पांव फिर से वज़नी लगने लगे, मानो उसका सारा का सारा खून नीचे जमा हो गया हो। लेकिन उसका दिमाग कहीं दूर

था, आज़ाद और उड़ता हुआ, तेज़ी से भागते हुए मानो कोई मिसाइल काबुल के पार जा रहा हो, उबड़-खाबड़ भूरी पहाड़ियों के पार जा रहा हो, सेज के पेड़ों के झुरमुटों से भरे हुए रेगिस्तानों के पार, नुकीली लाल चट्टानों वाले दर्रों को पीछे छोड़ता हुआ और बर्फ़ से भरे पहाड़ों के पार जाता हुआ...

'जब मैंने उसे बताया कि मैं काबुल लौट रहा था तो उसने मुझसे कहा कि मैं तुमको ढूंढूं। उसने कहा कि मैं तुमको बताऊं कि वो तुम्हारे बारे में सोच रहा था। कि वो तुम्हें याद कर रहा था। मैंने वादा किया मैं यह करूंगा। देखो, मैं उसे कुछ-कुछ पसंद करने लगा था। वो एक अलग तरह का लड़का था, मैं कह सकता हूं।'

अब्दुल शरीफ ने रूमाल से अपनी भौंहें पोंछीं।

'एक रात मैं जगा,' उन्होंने कहना जारी रखा, शादी की अंगूठी में उनकी दिलचस्पी फिर जग गई थी, 'मुझे लगता है कि रात ही रही होगी। उन जगहों पर इसके बारे में बताना मुश्किल ही है। वहां खिड़कियां नहीं थीं। सूरज उगता, डूब जाता और आपको इसकी ख़बर ही नहीं होती। लेकिन मैं जगा और मेरी बग़ल के बिस्तर पर शोरगुल जैसा कुछ हो रहा था। तुम्हें समझना होगा कि मैं भी ख़ूब सारी दवाएं खाता था और सोता-जागता रहता था। इसलिए यह बताना मुश्किल होता कि आपने क्या सपने में देखा और क्या हक़ीक़त में। मुझे बस इतना याद था कि बिस्तर के चारों ओर डॉक्टर जमा थे और इस या उस को बुला रहे थे, अलार्म बज रहे थे और ज़मीन पर सुइयां पड़ी थीं।

'सवेरे बिस्तर खाली था। मैंने नर्स से पूछा। उसने बताया कि लड़के ने बहादुरी से संघर्ष किया था।'

लैला हल्के-हल्के जानती थी कि वो सिर हिला रही थी। वो जानती थी। बेशक वो जानती थी। वो यह बात तब से ही जानती थी जब से वो इस आदमी के सामने आकर बैठी थी कि वो यहां क्यों आया है। कि वो कौन सी ख़बर अपने साथ लाया है।

'पहले तो, देखो, पहले तो मैं नहीं सोचता था कि तुम्हारा कोई वजूद है भी,' वो अब बोल रहा था। 'मुझे लगा कि वो मॉर्फिन की बेहोशी में बोल रहा है। शायद मैंने यह उम्मीद भी की थी कि तुम सचमुच में नहीं हो। मुझे बुरी ख़बरें सुनाने में हमेशा डर लगता है। लेकिन मैंने उससे वादा किया था। और जैसा कि मैंने कहा, मैं उसको पसंद करने लगा था। इसलिए मैं कुछ दिन

पहले यहां आया। मैंने तुम्हारे बारे में आसपास पूछा, कुछ पड़ोसियों से बात की। उन्होंने इस घर की तरफ़ इशारा किया। उन्होंने यह भी बताया कि तुम्हारे अम्मी-अब्बा के साथ क्या हुआ। जब मैंने इसके बारे में सुना तो, खैर, मैं वापस चला गया। मैं तुमको बताने नहीं जा रहा था। मैंने तय किया कि तुम्हारे लिए यह बहुत ज़्यादा हो जाएगा। किसी के लिए भी।'

अब्दुल शरीफ ने टेबल पार किया और लैला के घुटनों पर एक हाथ रखा। 'लेकिन मैं लौट आया। क्योंकि आख़िरकार मैंने सोचा कि वो चाहता था कि तुम जानो। मैं यही मानता था। मुझे बेहद अफसोस है। मैं चाहता...'

लैला अब सुन नहीं रही थी। वो उस दिन को याद कर रही थी जब एक आदमी पंजशेर से उसके भाइयों अहमद और नूर की मौत की ख़बर लेकर आया था। उसे बाबी याद आए जिनका चेहरा सफ़ेद पड़ गया था और वो पलंग में कंधे झुकाए धंस गए थे। मम्मी याद आईं जिनका हाथ यह ख़बर सुनते ही मुंह पर चला गया था। लैला ने देखा था कि मम्मी उस दिन तबाह हो गई थीं और इससे लैला डर गई थी, लेकिन उसे सचमुच में कोई दुख महसूस नहीं हुआ था। वो अपनी अम्मी के नुक़सान की भयानकता को नहीं समझ पाई थी। अब एक और मौत की ख़बर लेकर आया एक और अजनबी। अब वो कुर्सी पर बैठी हुई है। क्या यह इस बात के लिए उसे मिला दंड है, सज़ा है कि वो अपनी अम्मी के दुख से दूर रही थी।

लैला को याद आया कि कैसे मम्मी ज़मीन पर गिर गई थीं, कैसे वो चिल्ला रही थीं, अपने बाल नोच रही थीं। लेकिन लैला वो भी नहीं कर सकी। वो तो हिल-डुल भी सकी। वो अपनी पेशियां तक न हिला सकी।

इसके बजाए वो कुर्सी पर बैठी रही, उसके हाथ गोद में पड़े रहे, आंखें शून्य में ताकती रहीं और उसने अपने दिमाग को उड़ने के लिए खुला छोड़ दिया था। उसने इसे तब तक उड़ने दिया जब तक उसने जगह नहीं खोज ली, एक अच्छी और महफ़ूज़ जगह, जहां जौ के हरे खेत थे, साफ़ पानी बह रहा था और हज़ारों भुए हवा में उड़ रहे थे। जहां बाबी अकासिया के एक पेड़ के नीचे किताब पढ़ रहे थे और तारिक़ अपने सीने पर हाथ बांधे झपकी ले रहा था, और जहां लैला धारा में अपने पांव डुबो सकती थी और कदीम, धूप में धुली हुई चट्टानों के खुदाओं की ताकती निगाहों के नीचे सपने देख सकती थी।

उनतीस

'मुझे दुख है,' रशीद ने लड़की से कहा। तब वो मरियम पर बिना नज़र डाले उससे मस्तवा और कोफ्ते का कटोरा ले रहा था। 'मैं जानता हूं कि तुमलोग बेहद नज़दीकी...दोस्त थे...तुम दोनों। हमेशा साथ रहे, बचपन से ही। जो भी हुआ वो बहुत भयानक है। इस तरह कितने अफ़ग़ानी नौजवान मर रहे हैं।'

रशीद ने बेसब्री से हाथ से इशारा किया तो मरियम ने उसे एक रूमाल थमाया। वो अब भी लड़की की तरफ़ देखे जा रहा था।

बरसों से मरियम ने उसे खाते हुए देखा था, चबाते हुए हिलती हुई उसकी कनपटियों की पेशियां, एक हाथ से उसका छोटा सा भात का गोला बनाना, दूसरे हाथ को उलट कर चिकनाई पोंछना, मुंह के कोने में चिपक गए दानों को हटाना। बरसों से वो बिना ऊपर देखे, बिना बोले खाता आ रहा था। अपराधी ठहराती हुई उसकी खामोशी, मानो कोई फैसला सुनाया जा रहा हो, जो फिर एक तोहमत लगाती घुरघुराहट से टूटती, जीभ ऐसे कुटकुटाती मानो नापसंदीदगी ज़ाहिर कर रही हो, और रोटी या पानी के लिए एक शब्द में वो हुक्म सुनाता।

आज वो एक चम्मच से खा रहा था। रूमाल इस्तेमाल कर रहा था। पानी मांगते हुए उसने लुत्फ़ैन कहा। और बातें कीं। जोश में और लगातार बातें।

'तुम मुझसे पूछो तो अमेरिकियों ने हिक़मतियार को हथियार देकर ग़लती की। सीआईए ने अस्सी की दहाई में सोवियतों से लड़ने के लिए उसे सारी

बंदूकें दीं। सोवियत तो चले गए, लेकिन उसके पास अब भी बंदूकें हैं और अब उसने उनका रुख तुम्हारे अम्मी-अब्बू जैसे मासूम लोगों की तरफ़ कर दिया है। और वो इसे जिहाद कहता है। क्या मज़ाक है! औरतों और बच्चों को मारने का जिहाद से क्या लेना देना? बेहतर था कि सीआईए ने कमांडर मसूद जैसों को हथियार दिए।'

मरियम की भौंहें खुद-ब-खुद तन गईं। कमांडर मसूद? अपने दिमाग में वो मसूद के ख़िलाफ़ रशीद के इल्ज़ामों को सुन सकती थी, कि कैसे वो गद्दार और कम्युनिस्ट था। लेकिन फिर मसूद बेशक एक ताजिक था। लैला की तरह।

'अब, एक समझदार आदमी है। एक ईमानदार अफ़ग़ान। ऐसा इन्सान जो शांतिपूर्ण समाधान में ईमानदारी से दिलचस्पी दिखा रहा है।'

रशीद ने कंधे झटके और गहरी सांस ली।

'ऐसा नहीं है कि अमेरिकी उन पर लानत भेज रहे होंगे। उन्हें क्या परवाह कि पश्तून और हज़ारा और ताजिक और उज़्बेक एक दूसरे को मार रहे हैं? कितने अमेरिकी एक से दूसरे में फ़र्क़ भी करते होंगे? मैं कहता हूं कि उनसे किसी मदद की उम्मीद मत करो। हम उनके किसी काम के नहीं, अब सोवियत तो तबाह हो गए। हमसे उनका मकसद पूरा हो गया। उनके लिए, अफ़ग़ानिस्तान एक पाखाने का गड्ढा है। मेरी ज़ुबान के लिए माफ़ करना, लेकिन सच्चाई यही है। तुम क्या सोचती हो, लैला जान?'

लड़की ने बुदबुदा कर कुछ कहा, जिसे समझना मुश्किल था, और अपने कटोरे में एक कोफ्ते को दबाया।

रशीद ने सोच में डूबे हुए सिर हिलाया मानो लड़की ने कोई ऐसी बात कही हो जो रशीद की अब तक सुनी बातों में सबसे समझदारी की बात थी। मरियम को दूसरी तरफ़ देखते रहना पड़ा।

'पता है, तुम्हारे अब्वा, खुदा उनको चैन अता फरमाए, तुम्हारे अब्बा और मैं इसी तरह की बहसें किया करते थे। बेशक यह तुम्हारी पैदाइश के पहले की बात है। हम लगातार सियासत की बातें करते। और किताबों के बारे में भी। नहीं करते थे, मरियम? याद है तुम्हें?

मरियम ने पानी की एक घूंट लेते हुए खुद को व्यस्त कर लिया।

'जो भी हो, मुझे उम्मीद है कि मैंने सियासत की इन बातों से तुमको

ंग नहीं किया होगा।'

बाद में मरियम रसोई में साबुन के पानी में बर्तनों को भिगो रही थी और उसका पेट ऐंठ रहा था।

उसे रशीद की बातों पर उतना दुख नहीं था। उसके खुलेआम झूठ, उसकी झूठी हमदर्दी या इस तथ्य पर भी उतना दुख नहीं था कि जबसे उसने उस लड़की को ईंटों में से खोद कर निकाला था, तबसे उसने मरियम की तरफ़ हाथ नहीं बढ़ाया था।

उसे दुख उसके नाटक पर था। यह किसी की अभिनय जैसा था। यह उस लड़की को प्रभावित करने की, उसे मोह लेने की उसकी एक मक्कारी से भरी हुई दयनीय कोशिश थी।

और अचानक मरियम जान गई कि उसका शक सही था। वो समझ गई और इससे उसे डर भी लगा, जो उसको अंधा कर देने वाले सिर के झटके जैसा था, कि वो जो देख रही थी वो कुछ और नहीं बल्कि एक प्रणय निवेदन था।

जब आख़िरकार वो साहस जुटा पाई तो मरियम रशीद के कमरे में गई।

रशीद ने एक सिगरेट जलाई और बोला, 'क्यों नहीं?'

मरियम तभी जान गई थी कि वो हार चुकी है। वो उम्मीद कर रही थी कि शायद रशीद हर बात से इन्कार कर देगा, वो इन सबसे जो मतलब निकाल रही थी, उस पर वो हैरान होने का दिखावा करेगा, शायद गुस्सा भी हो जाए। तब शायद मरियम को थोड़ी बढ़त मिलेगी। तब शायद वो उसे शर्मिंदा कर सकेगी। लेकिन रशीद के शांति से कबूल लेने और उसके सपाट लहजे ने मरियम का साहस छीन लिया।

'बैठो,' उसने कहा। वो अपने बिस्तर पर, दीवार से टेक लगाए पड़ा था और उसके मोटे पैर दरी पर फैले हुए थे। 'बैठ जाओ, इससे पहले कि बेहोश होकर गिर पड़ो और अपना सिर फोड़ लो।'

मरियम ने खुद को उसकी बिस्तर की बग़ल में एक फोल्डिंग कुर्सी पर गिरते हुए महसूस किया।

'मुझे एशट्रे दोगी, दोगी क्या?' रशीद ने कहा,

उसने हुक्म पूरा किया।

रशीद साठ या उससे ज़्यादा का होगा—मरियम ने सोचा। और असल में रशीद खुद अपनी सही उम्र नहीं जानता था। उसके बाल सफ़ेद हो गए थे, लेकिन वो हमेशा की तरह मोटे और खुरदरे थे। उसकी पलकों और गर्दन की चमड़ी में अब झोल आ गए थे, जिनमें झुर्रियां पड़ गई थीं। उसके गाल पहले से ज़्यादा लटक गए थे। सवेरे वो थोड़ा झुक जाता था। लेकिन अब भी उसके कंधे चौड़े थे, बदन मोटा, हाथ मज़बूत और पेट उभरा हुआ था, जो उसके कमरे में दाख़िल होने पर उसके बाक़ी सारे अंगों से सबसे पहले भीतर दाख़िल होता था।

कुल मिला कर मरियम के मुकाबले रशीद पर उम्र की कम मार पड़ी थी, मरियम ने सोचा।

'हमें इस हालात को कानूनी रूप देने की ज़रूरत है,' उसने अब एशट्रे को अपने पेट पर टिक़ाते हुए कहा। उसके होंठों पर एक खिलवाड़ से भरी हुई शिकन आ गई। 'लोग बातें बनाएंगे। यह शर्म की बात होगी कि एक ग़ैरशादीशुदा नौजवान औरत यहां रह रही है। यह मेरी इज़्ज़त के लिए बुरा है। और उसकी इज़्ज़त के लिए भी। और तुम्हारी इज़्ज़त के लिए भी, शायद मुझे कहना चाहिए।'

'अट्ठारह बरस,' मरियम ने कहा। 'और मैंने आपसे एक भी चीज़ नहीं मांगी। एक भी चीज़ नहीं। अब मैं मांग रही हूं।'

उसने धुआं खींचा और धीरे-धीरे छोड़ा। 'वो यहां बस रह नहीं सकती, अगर तुम यह सलाह दे रही हो। मैं उसे खाना खिलाने, कपड़े देने और सोने के लिए जगह देने नहीं जा रहा हूं। मैं रेड क्रॉस नहीं हूं, मरियम।'

'लेकिन यह?'

'यह क्या? क्या? वो बहुत छोटी है, तुम सोचती हो? वो चौदह की है। मुश्किल से ही एक बच्ची है। तुम चौदह की थीं, याद है? मेरी अम्मी तब चौदह की थीं, जब उन्होंने मुझे पैदा किया था। तेरह में उनकी शादी हो गई थी।'

'मैं...मैं यह नहीं चाहती,' मरियम ने अपमान से सुन्न पड़ते हुए और बेचारगी से कहा।

'यह तुम्हारा फैसला नहीं है। यह उसका और मेरा फैसला है।'

'मैं इतनी बड़ी हूं।'

'वो इतनी छोटी है, तुम इतनी बड़ी हो। यह बकवास है।'

'मैं इतनी बड़ी हूं। मेरे साथ तुम्हारे यह सब करने के लिहाज़ से मैं काफ़ी बड़ी हूं,' मरियम ने अपने कपड़े को इतने ज़ोर से मुट्ठी में कसा कि उसके हाथ कांप उठे। 'कि इतने बरसों के बात तुम मुझे एक अंबाग बना दो।'

'इतना नाटक मत दिखाओ। यह आम बात है और तुम यह जानती हो। मेरे ऐसे दोस्त हैं जिनकी दो, तीन, चार बीवियां भी है। तुम्हारे अपने बाप की तीन बीवियां है। इसके अलावा मैं आज जो कर रहा हूं, वो मेरी जानपहचान वाले लोगों ने बहुत पहले कर लिया होता। तुमको पता है कि यही सच है।'

'मैं इसकी इजाज़त नहीं दूंगी।'

इस पर रशीद फीके-से मुस्कुराया।

'एक दूसरा उपाय भी है,' उसने एक पांव के तलवे को दूसरे पांव की खुरदरी एड़ी से रगड़ते हुए कहा। 'वो जा सकती है। मैं उसके रास्ते में नहीं आऊंगा। लेकिन मुझे शक है कि वो दूर नहीं जा पाएगी। खाना नहीं, पानी नहीं, जेब में एक रुपया नहीं और हर कहीं गोलियां और रॉकेट उड़ रहे हैं। तुम्हें क्या लगता है कि कितने दिन वो अगवा होने से, बलात्कार किए जाने से या गला काट कर सड़क के किनारे गड्ढे में फेंक दिए जाने से बची रहेगी? या एक साथ तीनों से ही?'

वो खांसा और उसने अपनी पीठ के पीछे तकिया ठीक किया।

'बाहर सड़कें निर्मम हैं मरियम। मेरा यकीन करो। हर मोड़ पर ख़ून के प्यासे और डाकू हैं। मुझे नहीं लगता है कि उसे उनसे बचने का मौक़ा मिलेगा, बिल्कुल नहीं। लेकिन चलो कहने के लिए मान लेते हैं कि किसी जादू से वो पेशावर पहुंच भी गई तो तुम्हें क्या इसका कुछ अंदाज़ा है कि वहां के कैंप कैसे हैं?'

धुएं के पर्दे के पीछे से वो उसे देख रहा था।

'लोग वहां कार्डबोर्ड के ढेर के नीचे रह रहे हैं। टीबी, पेचिश, अकाल और जुर्म। और यह तो सर्दियों के पहले की बात है। इसके बाद ठंड से सुन्न कर देने वाला मौसम आएगा। न्यूमोनिया। लोग बर्फ़ में बदल जाएंगे। वो कैंप जमे हुए लोगों के कब्रिस्तान में बदल जाएंगे।

'बेशक,' उसने एक अपने हाथों से एक मज़ाकिया अंदाज़ में घुमाया, 'वो पेशावर के रंडीखानों में ख़ुद को गर्म रख सकती है। मैंने सुना है कि

वहां ये धंधा फल-फूल रहा है। उसकी जैसी ख़ूबसूरती अपनी थोड़ी-बहुत किस्मत तो बना ही सकती है, तुम्हें नहीं लगता?'

उसने एशट्रे को तिपाई पर रख दिया और बिस्तर की बग़ल में अपने पांव झुला दिए।

'देखो,' उसने एक ऐसे समझौते के लहजे में कहा जो एक विजेता का लहजा ही हो सकता है। 'मैं जानता हूं कि तुम इसे अच्छे से नहीं लोगी। मैं इसके लिए सचमुच में तुम्हें दोष नहीं दूंगा। लेकिन यही सबसे बेहतर है। तुम देखोगी। इसे इस तरह देखो मरियम। मैं घर में तुम्हारी मदद के लिए एक हाथ और उसे पनाह दे रहा हूं। एक घर और एक शौहर। इन दिनों जैसा वक़्त है एक औरत को एक शौहर की ज़रूरत होती है। क्या तुमने गलियों में सोती बेवाओं पर ग़ौर नहीं किया है? वो तो इस मौक़े के लिए क़त्ल तक कर दें। असल में, यह... खैर, मैं तो कहूंगा कि यह मेरी परोपकारिता है।'

वो मुस्कुराया।

'मैं इसे जिस तरह देखता हूं, मैं एक तमगे के लायक हूं।'

बाद में अंधेरे में मरियम ने लड़की को बताया।

काफ़ी देर तक लड़की ने कुछ नहीं कहा।

'वो सवेरे तक जवाब चाहते हैं,' मरियम ने कहा।

'उन्हें यह अभी ही मिल सकता है,' लड़की ने कहा। 'मेरा जवाब है हां।'

तीस

लैला

अगले दिन लैला बिस्तर में ही पड़ी रही। सुबह जब रशीद ने झांक कर उसे बताया कि वो नाई के पास जा रहा है उस समय वो कंबल के भीतर थी। जब रशीद दोपहर बीतने के काफ़ी बाद घर लौटा तब भी वो बिस्तर में ही थी। उसने लैला को अपनी नई हजामत और नया सेकेंड हैंड सूट दिखाया। यह नीले रंग का सूट था, जिस पर दूधिया धारियां बनी थीं। रशीद ने लैला के लिए एक शादी की अंगूठी भी ख़रीदी थी।

रशीद बिस्तर पर लैला की बग़ल में बैठा और पूरे दिखावे के साथ धीरे-धीरे फीता खोला, फिर डिब्बा खोला और तब अंगूठी को नज़ाकत के साथ बाहर निकाला। उसने बताया कि उसने इसके लिए मरियम की शादी की पुरानी अंगूठी बेच दी है।

'वो परवाह नहीं करेगी। यकीन मानो। वो इस पर ग़ौर तक नहीं करेगी।'

लैला बिस्तर के दूसरे सिरे पर चली गई। वो नीचे मरियम की आवाज़ सुन रही थी, तो अपनी इस्तिरी को फूंक रही थी।

'वैसे भी उसने कभी उसे नहीं पहना था,' रशीद ने कहा।

'मुझे नहीं चाहिए,' लैला ने कमज़ोर आवाज़ में कहा। 'मुझे यह पसंद नहीं। आपको वापस लेना होगा।'

'वापस ले लूं?' उसके चेहरे पर बेसब्री का एक भाव आकर गुज़र गया। वो मुस्कुराया। 'मुझे कुछ रकम भी इसमें जोड़नी पड़ी थी—असल में ख़ूब सारी।

यह बाईस कैरेट सोने की एक बेहतर अंगूठी है। देखो कितनी भारी है? पहन लो, पहन के देखो ना। नहीं?' उसने डिब्बा बंद कर दिया। 'फूल कैसे रहेंगे? यह अच्छा होगा। तुम्हें फूल पसंद है? तुम्हारा पसंदीदा फूल कौन सा है? गुलबहार? ट्यूलिप? लाइलैक? फूल नहीं? अच्छा! मुझे खुद भी इसमें कोई तुक नहीं लगता। मुझे नहीं लगता...अब, मैं यहां देह-माज़ंग में एक दर्ज़ी को जानता हूं। मैं सोच रहा था कि हम तुम्हें वहां ले जाएं और तुम्हारे लिए एक ढंग की ड्रेस बनवाएं।'

लैला ने सिर हिला कर मना कर दिया।

रशीद ने भौंहें चढ़ाईं।

'मैं बस जल्दी ही-' लैला ने कहना शुरू किया।

रशीद ने उसकी गर्दन पर एक हाथ रखा। घबरा कर लैला सिकुड़ कर पीछे हटी। उसकी छुअन ऐसी थी मानो बिना बनियान के गीला, चुभता हुआ पुराना स्वेटर पहन लिया गया हो।

'हां?'

'मैं बस जल्दी ही कर लूंगी, जब हम ये करेंगे।'

रशीद का मुंह खुला और एक पीले दांतों वाली मुस्कान फैल गई। 'फौरन,' उसने कहा।

अब्दुल शरीफ के आने के पहले लैला ने पाकिस्तान चले जाने का फैसला कर लिया था। अब वो सोचती थी कि अब्दुल शरीफ के ख़बर लाने के बाद भी शायद वो चली गई रहती। यहां से कहीं दूर। इस शहर से दामन छुड़ा कर जहां का हर नुक्कड़ एक फंदा था, हर हली अपने भीतर एक भूत छिपाए हुए थी, जो उसके आगे जैक इन द बॉक्स की तरह फूट पड़ता। शायद उसने चले जाने का जोखिम उठा लिया होता।

लेकिन अचानक ही चले जाना एक विकल्प नहीं रह गया।

तब तो नहीं, जब रोज़-रोज़ उल्टियां होने लगी थीं।

उसकी छातियों भरी-भरी लगने लगी थीं।

और वो किसी तरह जान गई थी कि इस सारी उथल-पुथल के बीच उसे माहवारी नहीं हुई थी।

लैला ने ख़ुद की कल्पना एक शरणार्थी कैंप में की, जहां ठंडी, चुभती

हुई हवा के बीच एक सपाट मैदान में प्लास्टिक की हज़ारों चादरें खंभों पर टंगी हुई थीं। उनमें से एक कामचलाऊ तंबू के नीचे उसने अपने बच्चे को देखा—तारिक़ के बच्चे को, उसकी कमज़ोर कनपटियां और शांत जबड़े, नीली-भूरी चित्तीदार चमड़ी देखीं। उसने देखा कि उसकी छोटी सी देह अजनबियों ने धोई, एक पीले तौलिए के कफन में उसे लपेटा और एक गड्ढे में उतार दिया, जो एक तेज़ हवाओं वाली जगह में गिद्धों की निराश निगाहों के नीचे ख़ुदा हुआ था।

अब वो कैसे भाग सकती थी?

लैला ने अपनी ज़िंदगी में आए लोगों की एक फेहरिश्त बनाई जो डरावनी थी। अहमद और नूर, मर चुके थे। हसीना, जा चुकी थी। गीती, मर चुकी थी। मम्मी, मर चुकी थीं। बाबी, मर चुके थे। अब तारिक़...

लेकिन जादुई रूप से उसके पिछले जीवन में से कुछ बचा रह गया था। यह उस आदमी के साथ उसका आख़िरी सूत्र था, जिसके साथ, अभी पूरी तरह अकेली पड़ जाने के पहले, वो हुआ करती थी। तारिक़ का एक हिस्सा अब भी उसके भीतर ज़िंदा था, उसमें से नन्हें हाथ फूट रहे थे, पारभासी हाथ उग रहे थे। अपनी पिछली ज़िंदगी में से, तारिक़ की अकेली बची रह गई चीज़ को वो जोखिम में कैसे डाल सकती थी?

फौरन ही उसने फैसला कर लिया था। तारिक़ के साथ बिताए गए दिनों के बाद छह हफ़्ते बीत चुके थे। देर हुई तो रशीद को संदेह होने लगेगा।

वो जानती थी कि जो वो कर रही थी वो अनैतिक था। अनैतिक, कपट से भरा हुआ और लज्जाजनक। और यह मरियम के प्रति पूरी तरह नाइंसाफ़ी थी। लेकिन अभी जब उसके भीतर का बच्चा अभी शहतूत से भी बड़ा नहीं था, लैला ने इसे देख लिया था कि एक मां को किन-किन चीज़ों की कुरबानियां देनी पड़ती हैं। शराफत इनमें से पहली चीज़ थी।

उसने अपना हाथ अपने पेट पर रखा। अपनी आंखें बंद कर लीं।

लैला उस दबे हुए जश्न को टुकड़ों-टुकड़ों में याद करती। रशीद के सूट की दूधिया धारियां। उसके बालों के स्प्रे की तीखी महक। उसके गले की उभरी हुई हड्डी के ठीक ऊपर दाढ़ी बनाते हुए आई एक छोटी सी खरोंच। अंगूठी पहनाते हुए तंबाकू के धब्बों वाली उसकी उंगलियों की खुरदरी गुद्दी। कलम।

उस कलम का नहीं चलना। एक नई कलम की तलाश। निकाहनामा। दस्तखत किया जाना, रशीद के सधे हुए हाथ और लैला के कांपते हुए। दुआएं। शीशे में यह ग़ौर करना कि रशीद ने अपनी भौंहें कतरी हैं।

और कमरे में कहीं खड़ी होकर मरियम यह सब देख रही थी। उसके अस्वीकार से हवा ठहरी हुई थी।

लैला पुरानी बीवी से निगाहें मिलाने की हिम्मत नहीं जुटा पाई।

उस रात रशीद की ठंडी चादरों के नीचे पड़े हुए उसने उसे पर्दे खींचते हुए देखा। रशीद के हाथ अभी लैला की कमीज़ के बटनों को खोलते और उसकी सलवार के नाड़े को झटक कर खींचते, इसके पहले ही वो कांपने लगी थी। रशीद उत्तेजित हो रहा था। उसकी उंगलियां उसकी अपनी कमीज़ और बेल्ट खोल नहीं पा रही थीं। लैला उसके झुके हुए सीने, उसकी उभरी हुई नाभि, उसके बीच में एक छोटी-सी नीली नस को, उसके सीने पर मोटे सफ़ेद बालों के गुच्छे को, उसके कंधों को और कुहनी के ऊपर बांहों को देख पा रही थी। अपनी देह पर वो उसकी आंखों को रेंगते हुए महसूस कर रही थी।

'ख़ुदा मेरी मदद करो, मुझे लगता है कि मैं तुम्हें प्यार करता हूं,' रशीद ने कहा।

किटकिटाते हुए दांतों से लैला ने बत्तियां बुझा देने को कहा।

बाद में, जब लैला को यकीन हो गया कि रशीद सो गया है, उसने चुपचाप दरी के नीचे से एक छुरी निकाली, जिसे उसने पहले से छुपा रखा था। उसे उसने अपनी तर्जनी उंगली की गुद्दी में चुभो लिया। फिर उसने कंबल उठाई और अपनी उंगली उस जगह पर रख कर ख़ून बहने दिया, जहां उन्होंने प्यार किया था।

इकतीस

मरियम

दिन में लड़की का कोई निशान नहीं मिलता, बस उसके बिस्तर के स्प्रिंग बजते और ऊपर से कदमों की आहटें आतीं। नहाने के कमरे में वो पानी गिरा रही होती या ऊपर से के कमरे से शीशी में खनखनाते चम्मच की आवाज़ आती। कभी-कभी वो दिखाई देती: मरियम की निगाह के दायरे में उसकी लहराती हुई पोशाक का धुंधला सा दृश्य, सीढ़ियों पर भागते हुए चढ़ना, सीने पर बंधे हुए उसके हाथ, एड़ियों पर बजती हुई चप्पलें।

लेकिन उसका आपस में टकरा जाना लाज़िमी था। मरियम को लड़की सीढ़ियों पर या पतले गलियारे में या रसोई में या फिर आंगन से आते हुए दरवाज़े में मिल जाती। जब वो इस तरह मिल जाते, एक असहज सा तनाव उनके बीच पसर जाता। लड़की अपनी स्कर्ट समेटती और एक या दो शब्द माफ़ी के कह कर तेज़ी से चली जाती। मरियम बग़ल से उसे देखती और उसे लड़की का शर्म के मारे लाल हो जाना दिख जाता। कभी कभी मरियम को उसमें से रशीद की महक़ आती। वो लड़की की चमड़ी पर रशीद के पसीने, उसके तंबाकू, उसकी चाहतों की गंध महसूस कर सकती थी। ख़ुशकिस्मती से सेक्स अब उसकी ज़िंदगी का बंद हो चुका अध्याय था। इसे ख़त्म हुए कुछ समय हो चुका था और अब रशीद के नीचे पड़े रहने के उन कठिन पलों का ख़्याल भी उसकी अंतड़ियों में ऐंठन पैदा कर देता।

हालांकि मरियम और लड़की के बीच आपसी सहमति से एक दूसरे से

बचने का खेल रातों में मुमकिन नहीं था। रशीद कहता कि वो एक परिवार हैं। वो जोर देकर कहता कि वो एक परिवार हैं और परिवारों को एकसाथ ही खाना होता है।

'ये क्या है?' वो उंगलियों की मदद से हड्डी से गोश्त अलग करने की कोशिश करते हुए कहता। प्यार भरे बरताव का दिखावा लड़की से शादी के एक हफ्ते बाद ही छोड़ दिया गया था। 'क्या मैंने बुतों की जोड़ी से शादी की है? चलो मरियम, उससे कुछ कहो। तुम्हारे शऊर कहां हैं?'

हड्डी से रोगन चूसते हुए उसने लड़की से कहा, 'लेकिन तुम उसे दोष मत देना। वो तो चुप-चुप सी है। ये तो ख़ुदा का करम है, सचमुच में, क्योंकि वल्लाह अगर किसी इन्सान के पास कहने के लिए बहुत कुछ न हो तो उसके शब्द डंक की तरह चुभने वाले भी हो सकते हैं। हम शहरी लोग हैं, तुम और मैं, लेकिन वो तो देहाती है। देहाती भी नहीं। वो एक गांव के बाहर एक मिट्टी के बने कोल्बा में पली-बढ़ी। उसके बाप ने उसे वहां रखा था। क्या तुमने इसे बताया है मरियम, क्या तुमने इसे बताया है कि तुम हरामी हो? ख़ैर, वो हरामी है। लेकिन वो बिना गुणों वाली नहीं है, सारे गुण हैं उसमें। तुम ख़ुद देख लोगी, लैला जान। एक बात तो ये है कि वो मज़बूत है, अच्छी मेहनती है और उसमें छल-कपट नहीं है। मैं तो इसे यूं कहूंगा कि अगर ये एक कार होती तो ज़रूर ही ये वोल्गा होती।'

मरियम अब तेतीस साल की थी लेकिन वह शब्द, हरामी, उसे अब भी चुभता था। उससे सुन कर मरियम को महसूस होता कि वो एक कीड़ा है, एक तिलचट्टा है। उसे कलाइयां खींचतीं नाना याद आईं। तुम एक फूहड़, छोटी हरामी हो। जितना कुछ मैंने सहा है, यह उसका इनाम है। विरासत में मिली हुई फूहड़ छोटी हरामी।

'तुम,' रशीद ने लड़की से कहा, 'दूसरी तरफ़ तुम एक बेंज़ होतीं। एक नई-नवेली, पहले दर्ज़े की चमचमाती बेंज़। वाह वाह। लेकिन। लेकिन।' उसने अपनी चिकनाई से भरी तर्जनी उंगली उठाई। 'बेंज का...ख़ास ख़याल...रखना होता है। इसकी ख़ूबसूरती और इसकी कारीगरी की इज़्ज़त करनी होती है, देखो। ओह, तुम ज़रूर सोच रही होंगी कि मैं पागल हूं, दीवाना हूं, जो इन सब ऑटोमोबाइल की बात कर रहा हूं। मैं नहीं कह रहा हूं कि तुम कार हो। मैं बस अपनी बात समझा रहा था।'

आगे ये हुआ कि रशीद ने भात का जो गोला बना रखा था उसे प्लेट में रख दिया। उसका हाथ खाने पर झूल गया और उसने नर्म, ख़यालों में डूबा हुआ भाव बनाया।

'मरे हुए लोगों के बारे में बुरी बातें नहीं कहनी चाहिए, शहीदों के बारे में तो और भी नहीं। और जब मैं यह कह रहा हूं तो मेरा इरादा अनादर जताने का नहीं है, लेकिन मैं चाहता हूं कि तुम इसे जान लो...जिस तरह से तुम्हारे अम्मी और अब्बू ने—अल्लाह उन्हें माफ़ करे और जन्नत अता फरमाए तुमको लेकर नर्मी बरती उसको लेकर मेरे अपने कुछ...ख़ास ख़यालात हैं। मुझे माफ़ करना।'

लड़की ने जो ठंडी, हिक़ारत से भरी निगाह रशीद पर डाली वो मरियम से यह छुपी नहीं रह सकी, लेकिन रशीद नीचे देख रहा था और वो यह जान नहीं सका।

'कोई बात नहीं। मामला यह है कि अब मैं तुम्हारा शौहर हूं और अब यह ज़िम्मेदारी मुझ पर है कि मैं न केवल तुम्हारी इज़्ज़त बल्कि हमारी इज़्ज़त, हां, हमारे नंग ओ नामूस की हिफाज़त करूं। यह एक शौहर की ज़िम्मेदारी होती है। तुमने इसको लेकर मुझे फिक्र में डाल दिया है। मेहरबानी करो। अपने आप में तुम मलिका हो, और यह घर तुम्हारा महल है। तुम्हें कोई काम करवाना हो तो तुम मरियम से कहो और वो इसे तुम्हारी खातिर करेगी। करोगी न, मरियम? और तुम्हें कोई फैंसी चीज़ चाहिए, मैं तुम्हें लाकर दूंगा। देखो, इस तरह का शौहर हूं मैं।

'बस मैं बदले में यही चाहता हूं, खैर, यह एक मामूली-सी चीज़ है। मैं चाहता हूं कि मेरे बिना तुम घर से बाहर निकलने से बचो। बस यही। मामूली है, नहीं? अगर मैं नहीं रहूं और तुम्हें फौरन कोई चीज़ चाहिए तो तुम मरियम को भेज सकती हो और वो बाहर जाकर तुम्हारे लिए ला देगी। यकीनन तुमने एक फ़र्क़ पर ग़ौर किया होगा। खैर, कोई वोल्गा और बेंज़ को एक ही तरह से नहीं चला सकता। यह तो बेवकूफ़ाना होगा, नहीं होगा क्या? ओह, मैं यह भी चाहता हूं कि जब हम साथ-साथ बाहर जाएं तो तुम बुर्का पहना करो। बेशक, यह तुम्हारी अपनी हिफाज़त के लिए है। यह सबसे अच्छा है। इतनी फुहश औरतें अब इस शहर में हैं। इतने घिनौने इरादे, एक शादीशुदा औरत को भी बेइज़्ज़त करने की इतनी बेचैनी। इसलिए। बस यही।'

वो खांसा।

'मुझे बता देना चाहिए जब मैं बाहर रहूंगा तो मरियम मेरी आंख और कान होगी।' उसने कहा और मरियम पर ऐसी उड़ती हुई निगाह डाली, जो कनपटी पर लोहे की नोक वाले जूते की चोट जितनी सख़्त थी। 'ऐसा नहीं है कि मैं शक कर रहा हूं। बल्कि बात इसकी उल्टी है। साफ़-साफ़ कहूं तो तुम मुझे अपनी उम्र से ज़्यादा होशियार लगती हो। लेकिन तब भी तुम एक जवान औरत हो लैला जान। एक जवान औरत बदकिस्मती से भरे रास्ते भी चुन सकती है। उसका झुकाव बुराई की तरफ़ होता है। जो भी हो, मरियम ज़िम्मेदार होगी। और अगर क़भी पांव फिसला...'

वो बोलता रहा। मरियम बैठी अपनी आंख के कोने से लड़की को देखती रही और रशीद उन पर मांगों और फैसलों की बौछार करता रहा मानो काबुल पर रॉकेट बरस रहे हों।

एक दिन मरियम बैठक में रशीद की कमीज़ें तह कर रही थी, जिनको उसने आंगन में तार पर से उतारा था। उसे नहीं पता था कि लड़की कब से वहां खड़ी थी, लेकिन जब उसने एक कमीज़ उठाई और मुड़ी तो उसने लड़की को दरवाज़े में खड़ी पाया। हाथों में उसने चाय से भरा एक गिलास पकड़ रखा था।

'मेरा इरादा आपको चौंका देना नहीं था,' लड़की ने कहा। 'मैं माफ़ी चाहती हूं।'

मरियम ने बस उसे देखा।

धूप लड़की के चेहरे, उसकी बड़ी-बड़ी हरी आंखों और चिकने ललाट पर, उसके ऊंची गाल की हड्डियों और मोहक, मोटी भौंहों पर पड़ रही थी। उसकी भौंहें मरियम की भौंहों की तरह पतली और बेजान नहीं थीं। आज सवेरे उसने अपने पीले बालों में कंघी नहीं की थी और वे बीच से दो हिस्सों में बांटे गए थे।

लड़की ने जिस तरह से कप को ज़ोर से पकड़ रखा था और उसके कंधे तने हुए थे, उससे मरियम देख सकती थी कि वो घबराई हुई थी। उसने कल्पना की कि वो बिस्तर में बैठी हुई हिम्मत जुटा रही थी।

'पत्तियां मुड़ रही हैं,' लड़की ने दोस्ताना लहजे में कहा। 'देखा आपने?

पतझड़ मेरा पसंदीदा मौसम है। मुझे इसकी महक़ पसंद है, जब लोग अपने बगीचों में पत्तियां जलाते हैं। मेरी अम्मी को बसंद सबसे ज़्यादा पसंद था। आप मेरी अम्मी को जानती थीं?'

'सचमुच में नहीं।'

लड़की ने अपने हाथ कानों के पीछे बांधे। 'जी, आपने क्या कहा?'

मरियम ने आवाज़ ऊंची की। 'मैंने कहा कि नहीं। मैं तुम्हारी अम्मी को नहीं जानती थी।'

'ओह।'

'क्या तुम कुछ चाहती हो?'

'मरियम जान, मैं चाहती हूं...उन्होंने उस रात जो बातें कहीं, उनके बारे में-'

'मेरा इरादा भी तुमसे इस पर बात करने का था।' मरियम ने उसे बीच में ही रोक दिया।

'हां, मेहरबानी करके,' लड़की ने ईमानदारी से, करीब-करीब बेकरारी से कहा। वो एक क़दम आगे बढ़ आई। अब वो राहत में दिख रही थी।

बाहर एक ओरयल गा रही थी। कोई गाड़ी खींचता हुआ जा रहा था। मरियम इसके चूलों की चरचराहट को, पत्थर पर उसके लोहे के पहिए के उछलने और तेज़ आवाज़ को सुन सकती थी। गोलियों की आवाज़ आई जो उतनी दूर भी नहीं थी। एक गोली के बाद तीन गोलियां चलीं और फिर सन्नाटा।

'मैं तुम्हारी नौकरानी नहीं बनूंगी,' मरियम ने कहा। 'मैं नहीं बनूंगी।'

लड़की घबरा गई। 'नहीं। बेशक नहीं!'

'तुम महल की मलिका हो सकती हो और मैं एक देहाती, लेकिन मैं तुमसे हुक्म नहीं लूंगी। तुम चाहो तो उनसे शिकायत कर सकती हो और वो मेरा गला काट सकते हैं, लेकिन मैं यह नहीं करूंगी। सुना तुमने? मैं तुम्हारी नौकरानी नहीं बनूंगी।'

'नहीं! मैं उम्मीद नहीं करती-'

'और अगर तुम सोचती हो कि तुम अपनी नजर का इस्तेमाल कर मुझसे छुटकारा पा लोगी तो तुम ग़लत हो। यहां पहले मैं थी। मुझे कोई फेंक नहीं सकता। मैं ऐसा नहीं होने दूंगी कि तुम मुझे निकाल बाहर कर दो।'

'यह मैं नहीं चाहती हूं,' लड़की ने कमजोरी से कहा।

'और मैं देखती हूं कि तुम्हारे घाव अब सूख गए हैं। इसलिए अब इस घर के काम में हाथ बंटाना शुरू कर दो-'

लड़की ने जल्दी से सिर हिला कर हामी भरी। उसकी कुछ चाय छलक गई लेकिन उसने ध्यान नहीं दिया। 'हां, नीचे आने की एक वजह ये भी थी, कि मेरी देख-रेख करने के लिए आपको शुक्रिया कहूं-'

'ख़ैर, मैंने नहीं किया होता,' मरियम ने ग़ुस्से में कहा। 'मैंने तुम्हें नहीं खिलाया होता, नहलाया होता और तुम्हारी सेवा की होती अगर मुझे पता होता कि तुम पलट कर मेरा शौहर मुझसे छीन कर चुरा लेने वाली हो।'

'चुरा-'

'मैं अब भी खाना बनाऊंगी और बर्तन धोऊंगी। तुम कपड़े धोओगी और बहारोगी। बाक़ी काम एक दिन मैं करूंगी और एक दिन तुम। और एक और बात। मैं तुम्हारा साथ देने लायक नहीं हूं। मैं यह नहीं चाहती। मैं बस अकेली रहना चाहती हूं। तुम मुझे अकेली छोड़ दो और बदले में मैं तुम्हारा कोई काम कर दूंगी। हम इसी तरह रहेंगी। यही नियम हैं।'

जब उसने बोलना बंद किया तो उसका दिल हथौड़े की तरह बज रहा था और मुंह सूख गया लगता था। मरियम ने कभी भी इस तरह से बात नहीं की थी। अपनी इच्छा को इस तरह ज़ोरदार तरीके से कभी ज़ाहिर नहीं किया था। उसे ख़ुशी तो महसूस होनी ही थी। लेकिन लड़की की आंखें भर आईं और चेहरा लटक गया। इससे मरियम ने इस आवेग जो संतुष्टि हासिल की थी, वो उसे छोटी और नामुनासिब महसूस हुई।

उसने लड़की की तरफ़ कमीज़ें बढ़ा दीं।

'इन्हें अलमारी में रख दो, क्लोज़ेट में नहीं। ऊपर की दराज में सफ़ेद उन्हें पसंद है और मोज़ों समेत बाक़ी का कपड़ा बीच की दराज में।'

लड़की ने कप फर्श पर रख दिया और अपने हाथ कमीज़ लेने के लिए बढ़ा दिए। उसकी हथेलियां ऊपर की तरफ़ थीं। 'मुझे इन सबके लिए बहुत दुख है,' वो फटी हुई आवाज़ में बोली।

'तुम्हें होना चाहिए,' मरियम ने कहा। 'तुम्हें दुखी होना चाहिए।'

बत्तीस

लैला

लैला को अपने घर में बरसों पहले हुआ एक जमावड़ा याद आया। वो मम्मी के अच्छे मिज़ाज वाले दिन थे। औरतें बागीचे में बैठी थीं और तश्तरियों से ताज़े शहतूत खा रही थीं, जिसे वाज्मा ने अपने आंगन के पेड़ पर से तोड़ा था। मोटे-मोटे शहतूत सफ़ेद और गुलाबी रंग के थे और कुछ तो गहरे जामुनी रंग भी थे जिनमें से कुछ फूट कर वाज्मा की नाक पर लग गए थे।

'तुमने सुना कि उसका बेटा कैसे मरा?' वाज्मा ने अपने दुबले-से मुंह में मुट्ठी भर और शहतूत डालते हुए पूछा।

'वो तो डूब गया, नहीं क्या?' गीती की अम्मी नीला ने कहा। 'गार्गा झील में, वहीं न?'

'लेकिन क्या तुम्हें पता है, तुम्हें पता है कि रशीद...' वाज्मा ने एक उंगली उठाई और सिर हिलाया और मुंह में निगला हुआ शहतूत चबाने तक उनसे इंतज़ार करवाया। 'क्या तुम्हें पता है कि वो जब शराब पीता था, कि शराब पीकर चिल्लाता फिरता था? यह सच है। मैंने यही सुना है, शराब पीकर चिल्लाता फिरता था। और अभी तो सुबह ही हुई थी। दोपहर तक वो लाउंज कुर्सी पर पड़ा हुआ था। तुम उसके कान के पास दोपहर की तोप दागते तब भी वो आंख नहीं खोलता।'

लैला को याद आया कि कैसे वाज्मा ने अपना मुंह ढंक कर डकार मारी थी, कि कैसे उसकी जीभ दांतों के बीच बचे हुए टुकड़े तलाश रही थी।

'बाक़ी तो तुम खुद कल्पना कर सकती हो। लड़का पानी में चला गया और किसी ने उस पर ध्यान नहीं दिया। कुछ देर बाद लोगों ने उसे पेट के बल पानी पर बहते देखा। लोग मदद को दौड़े, आधे बेटे को होश में लाने की कोशिश कर रहे थे और आधे बाप को। कोई बेटे के ऊपर झुक कर... मुंह से मुंह लगा कर जो करना चाहिए वो करने लगा। लेकिन इसका कोई फ़ायदा नहीं था। वो साफ़-साथ देख सकते थे कि लड़का जा चुका था।'

लैला को बाब्पा का एक उंगली को उठाना और दया से कांपती उसकी आवाज़ याद आई। 'इसीलिए क़ुराने-पाक ने शराब को हराम बताया है। क्योंकि शराबी के गुनाहों की सज़ा हमेशा होशवाले भुगतते हैं। ऐसा ही हुआ।'

यही कहानी लैला के दिमाग में चक्कर काट रही थी, जब उसने रशीद को बच्चे की ख़बर सुनाई। फौरन वो कूद कर साइकिल पर सवार हुआ और मस्जिद जाकर बच्चे के लिए दुआ मांगी।

उस रात खाने के दौरान लैला ने देखा कि पूरे वक़्त मरियम अपनी प्लेट में गोश्त का एक टुकड़ा घुमाती रही। जब रशीद ने मरियम को ऊंची, नाटकीय आवाज़ में बच्चे की ख़बर सुनाई थी, तो लैला वहीं थी। लैला ने पहले कभी ऐसी खुशी से भरी हुई क्रूरता नहीं देखी थी। मरियम ने जब ख़बर सुनी तो उसकी बरौनियां फड़फड़ा उठीं। उसका चेहरा लाल हो उठा। वो बैठी कुढ़ती रही। वो उदास दिख रही थी।

बाद में जब रशीद रेडियो सुनने के लिए ऊपर चला गया और लैला दस्तरख़्वान साफ़ करने में मरियम की मदद करने लगी।

'अगर तुम पहले एक वेज़ थीं,' मरियम ने भात के दानों और रोटी के टुकड़ों को उठाते हुए कहा, 'मैं नहीं सोच पा रही कि तुम अब क्या हो।'

लैला ने खुले दिल से एक तरकीब आजमाई। 'एक ट्रेन? शायद एक बड़ा जंबो जेट।'

मरियम सीधी तन गई। 'उम्मीद करती हूं कि तुम यह नहीं सोचोगी कि इससे तुम्हें घर के काम से फ़ुर्सत मिल जाएगी।'

लैला ने मुंह खोला, लेकिन न बोलना ही बेहतर समझा। उसने खुद को याद दिलाया कि इस मामले में मरियम ही सबसे बेगुनाह इनसान थी। मरियम और बच्चा।

बाद में बिस्तर पर लैला के आंसू फूट पड़े।

बात क्या थी? रशीद ने उसकी ठोढ़ी उठाते हुए जानना चाहा। क्या वो बीमार थी? क्या इसकी वजह बच्चा था, क्या बच्चे को कुछ हुआ था? नहीं?

क्या मरियम उसके साथ बुरा बर्ताव कर रही थी?

'यही बात है, है न?'

'नहीं।'

'वल्लाह ओ बिल्लाह, नीचे जाकर उसे सबक सिखा दूंगा। वो क्या सोचती है कि वो क्या है, वो हरामी, तुम्हारे साथ इस तरह-'

'नहीं!'

वो तो पहले ही उठ कर तैयार हो गया था और लैला को उसके हाथ पकड़ कर बैठाना पड़ा। 'ऐसा मत करो! नहीं! वो तो मुझसे काफ़ी नर्मी से पेश आती हैं। मुझे बस एक मिनट चाहिए, बस इतना ही। मैं ठीक हो जाऊंगी।'

वो उसकी बग़ल में बैठ गया और कुछ बुदबुदाते हुए उसकी गर्दन पर थपकियां देने लगा। उसका हाथ धीरे-धीरे लैला की पीठ पर फिसला और फिर ऊपर आया। वो उसकी तरफ़ झुका और अपने भरे-पूरे दांत चमकाए।

'तब देखते हैं,' वो गुर्राया, 'कि मैं तुम्हें अच्छा महसूस करा सकता हूं कि नहीं।'

सबसे पहले तो पेड़ों ने जो जलावन के लिए काटे जाने से बच गए थे अपनी चित्तीदार पीली-तांबई पत्तियां गिराईं। फिर आई हवा, जो ठंडी और तेज़ थी और शहर को उधेड़ती हुई गुज़रती रही। उसने बची हुई झूलती पत्तियों को भी गिरा दिया और फीके भूरे पहाड़ों के सामने खड़े पेड़ भुतहा दिखने लगे। मौसम की पहली बर्फ़बारी हल्की थी और बर्फ़ के टुकड़े गिरते ही पिघल जाते। फिर तो सड़कें जम गईं और छतों के ऊपर बर्फ़ के ढेर जमा हो गए। पाले की मारी खिड़कियों की आधी ऊंचाई तक बर्फ़ खड़ी हो गई। बर्फ़ के साथ ही पतंगें बाहर निकल आईं, जिनकी काबुल के आसमान पर कभी हुकूमत चला करती थी। अब तो वो सरसराती रॉकेटों और फाइटर जेटों द्वारा दखल कर लिए गए इलाके के शर्मीली घुसपैठिया थीं।

रशीद ने जंग की ख़बरें घर पर लाना जारी रखा और लैला उन निष्ठाओं पर भौंचक हो जाती थी, जिनके बारे में रशीद बताने की कोशिश करता। सय्याफ हज़ाराओं से लड़ रहा था, उसने बताया। हज़ारा लोग मसूद से लड़ रहे थे।

'और बेशक मसूद हिक्मतियार से लड़ रहे थे, जिनको पाकिस्तानियों की हिमायत हासिल थी। कट्टर दुश्मन हैं ये दोनों, मसूद और हिक्मतियार। सय्याफ मसूद की तरफ़ था। और हिक्मतियार अब हज़ाराओं की हिमायत कर रहा था।'

और जहां तक अप्रत्याशित उज़्बेक कमांडर दोस्तम की बात थी, रशीद का कहना था कि कोई नहीं जानता था कि वो कहां खड़े होंगे। दोस्तम 1980 के दशक में मुजाहिदीनों से मिल कर सोवियतों के ख़िलाफ़ लड़े थे लेकिन सोवियतों के जाने के बाद वो अलग हो गए थे और नजीबुल्लाह की कठपुतली कम्युनिस्ट हुकूमत में शामिल हो गए थे। उन्हें तो एक तमगा भी मिला था जिसे खुद नजीबुल्लाह ने उन्हें दिया था और इसके बाद वो फिर उससे अलग होकर मुजाहिदीनों से आ मिले थे। रशीद ने बताया कि वक़्त बीतने के साथ दोस्तम मसूद की हिमायत कर रहे थे।

काबुल में, ख़ास कर पश्चिमी काबुल में, गोलीबारी चलती और बर्फ़ से ढंकी इमारतों से धुएं के बादल उठते। दूतावास बंद कर दिए गए थे। स्कूल ढह गए थे। रशीद ने बताया कि अस्पतालों के वेटिंग रूमों में जख्मी लोग पड़े रहते, उनका ख़ून बहता और वे मर जाते। ऑपरेशन रूमों में हाथ-पैर बिना एनेस्थिसिया के काटे जा रहे थे।

'लेकिन फ़िक्र मत करो,' उसने कहा। 'तुम मेरे साथ महफ़ूज़ हो, मेरी फूल। जो तुम्हें नुक़सान पहुंचाने की कोशिश करेगा, मैं उसका कलेजा फाड़ कर उसे खिला दूंगा।'

उस सर्दियों के मौसम में लैला जिधर भी रुख करती, दीवारें उसका रास्ता रोक देतीं। वो अपने बचपन के चौड़े-खुले हुए आसमान को देखने के लिए तरसती, जब वो बाबी के साथ बुज़कशी का मुकाबला देखने जाया करती थी और मम्मी के साथ मंडाई में ख़रीदारी करती। वो उन दिनों के लिए तरसती जब वो गीती और हसीना के साथ लड़कों के बारे में बातें करते हुए गलियों में आज़ादी से फिरा करती थी। जिन दिनों कहीं, धारा के किनारे क्लोवर की सेज पर तारिक़ के साथ बैठी पहेलियां और मिठाई आपस में बाटती और सूरज को ढलते हुए देखती।

लेकिन तारिक़ का ख़याल खतरनाक था क्योंकि लैला जब इसके बारे में सोचना बंद करती इससे पहले ही उसके जेहन में तारिक़ की तस्वीर उभर

आती। वो देखती कि घर से दूर, वो एक बिस्तर पर पड़ा है और उसकी जली हुई देह में नलियां लगी हुई हैं। इन दिनों बन रहे पित्त की तरह जो उसके गले को जलाता रहता है, एक गहरी, सुन्न कर देने वाली वेदना लीला के सीने से उठती। उसके पांव पानी की तरह ठंडे हो जाते। उसे कोई चीज़ पकड़े रहनी पड़ती।

लैला ने 1992 की वो सर्दियां घर बुहारते, उस सोने के कमरे की मरियल पीली दीवारें खरोंचते जिसमें वो और रशीद साथ सोते थे, बाहर तांबे की एक बड़ी सी परात में कपड़े धोते हुए बिताईं। कभी कभी उसे लगता कि वो अपनी ख़ुद की देह के ऊपर मंडरा रही है, वो देखती कि वो परात की रिम के पास बैठी हुई है, कोहनियों तक आस्तीन चढ़ा रखी है, उसके गुलाबी हाथ रशीद की बनियान में से साबुन वाला पानी निचोड़ रहे हैं। तब उसे लगता कि वो खो गई है। एक टूटे हुए जहाज़ के बच गए मुसाफिर की तरह खोई हुई भटक रही है और उसे कहीं किनारा नज़र नहीं आ रहा है। सिर्फ़ मीलों तक पानी दिख रहा है।

जब इतनी ठंड होती कि बाहर जाना मुश्किल होता तो लैला धीरे-धीरे घर में ही टहलती। दीवार पर नाखुन घसीटते हुए वो गलियारे को पार करती और फिर लौट आती, सीढ़ियों से नीचे उतरती और फिर ऊपर आ जाती। वो अपना मुंह नहीं धोती, बाल में कंघी नहीं करती। वो तब तक टहलती जब तक उसकी भेंट मरियम से नहीं हो जाती, वो उस पर एक बेजान नज़र डालते हुए फलियां छुड़ाने और गोश्त में से चर्बी काटने के लिए लौट जाती। एक चोट खाई हुई खामोशी कमरे में भर जाती और लैला मरियम से निकलती शब्दहीन दुश्मनी को लगभग देख सकती थी, जैसे अस्फाल्ट से गर्मी की लहरें निकलती हैं। वो अपने कमरे में लौट जाती और बिस्तर पर बैठ कर बर्फ़ को गिरते हुए देखती।

एक दिन रशीद उसे जूतों की अपनी दुकान पर ले गया।

जब वो साथ-साथ बाहर जाते, रशीद लैला की बग़ल में, एक हाथ से उसकी कोहनी पकड़े हुए चलता। लैला के लिए गलियों में चलना चोट खाने से बचने का एक अभ्यास हो गया था। उसकी आंखें अभी भी बुर्के की सीमित जालीनुमा फांक से देखने की आदत ही डाल रही थीं। चलते हुए उसे हमेशा

डर लगा रहता कि वो उलझ कर गिर पड़ेगी और किसी गड्ढे में पांव देकर एड़ी तुड़वा लेगी। तब भी बुर्के से हासिल अपनी छुपी हुई पहचान से उसे राहत मिलती थी। अगर उसका कोई जान-पहचान वाला मिल जाए तो इस तरह उसे पहचान नहीं पाएगा। उसे उनकी आंखों में हैरानी या दया या उत्तेजना का भाव नहीं देखना पड़ेगा, कि वो कहां फंस गई थी, कि कैसे उसकी ऊंची आकांक्षाएं कतर दी गई थीं।

रशीद की दुकान उससे बड़ी और रोशन थी, जितनी लैला ने कल्पना की थी। उसने लैला को अपनी भरी हुई बेंच के पीछे बिठा दिया। उसकी बेंच पर पुराने सोल और बचे हुए चमड़े के ढेर पड़े थे। उसने अपनी हथौड़ियां दिखाई, यह दिखाया कि रेगमार कैसे काम करता है। यह बताते हुए उसकी आवाज़ तेज़ और गर्वीली हो गई थी।

रशीद ने उसके पेट को छुआ, कमीज़ के ऊपर से नहीं, बल्कि उसके नीचे से। उसकी उंगलियों के ठंडे और खुरदरे पोर लैला के उभरे हुए पेट पर खरोंच से रहे थे। लैला को तारिक़ के नर्म लेकिन मज़बूत हाथों की याद आई, जिनके पीठे की तरफ़ उभरी हुई टेढ़ी-मेढ़ी नसें थीं। लैला को हमेशा उनमें मोहक़ मर्दानगी दिखती थी।

'बहुत तेज़ी से फूल रहा है,' रशीद ने कहा। 'यह एक बड़ा लड़का होने जा रहा है। मेरा बेटा एक पहलवान होगा! अपने बाप की तरह।'

लैला ने कमीज़ नीचे कर दी। जब वो इस तरह बातें करता था तो वो डर जाती थी।

'मरियम के साथ कैसा चल रहा है?'

उसने बताया कि बहुत अच्छा चल रहा है।

'अच्छा, अच्छा।'

उसने रशीद को नहीं बताया कि उनमें पहली बार सचमुच लड़ाई हुई थी।

यह कुछ दिनों पहले हुआ था। लैला ने रसोई में जाने पर पाया कि मरियम दराज़ों को ज़ोर-ज़ोर से खोल और बंद कर रही है। मरियम ने कहा कि वो एक लकड़ी का लंबा चम्मच खोज रही थी, जिससे वो भात चलाया करती थी।

'तुमने कहां रख दिया?' उसने लैला के चेहरे के आगे गुस्से से मुड़ते हुए कहा।

'मैंने?' लैला ने कहा। 'मैंने नहीं लिया। मैं तो यहां मुश्किल से ही आती हूं।'

'मैंने देखा है।'

'क्या आप इल्ज़ाम लगा रही हैं? ऐसा ही तो आप चाहती थीं, याद कीजिए। आपने कहा था कि आप खाना बनाएंगी। लेकिन अगर आप चाहती हैं कि हम अदला-बदली-'

'तो तुम कह रही हो कि चम्मच के पांव निकल आए वो कहीं चला गया? टिप, टिप, टिप। क्या ऐसा हो गया?'

'मैं कह रही हूं...' लैला ने संयत बने रहने की कोशिश करते हुए कहा। अमूमन वो मरियम के ताने और उलाहने सह लेती थी। लेकिन उस दिन उसकी एड़ियां सूजी हुई थीं, उसका सिर दुख रहा था और दिल में तेज़ जलन हो रही थी। 'मैं कह रही हूं कि आपने कहीं और रख दिया होगा।'

'कहीं और रख दिया?' मरियम ने एक दराज खोली। उसके भीतर रखी छुरियां खनखनाईं। 'कितने दिन से तुम यहां हो, कुछ महीनों से? मैं इस घर में उन्नीस बरस से रह रही हूं दुख्तर जो। मैं उस चम्मच को तब से इसी दराज में रखती आ रही हूं जब तुम डायपर बदलती होंगी।'

'तब भी,' कगार पर लैला ने दांत भींचते हुए कहा, 'ये मुमकिन है कि आप उसे कहीं और रख कर भूल गई हों।'

'और ये भी मुमकिन है कि मुझे परेशान करने के लिए तुमने उसे कहीं छुपा दिया हो।'

'आप एक चिड़चिड़ी, दयनीय औरत हैं,' लैला ने कहा।

मरियम पहले तो अचकचा गई, लेकिन फिर इससे उबरते हुए अपने होंठ भींच लिए। 'और तुम रंडी हो। रंडी और कुतिया, एक चोर रंडी। यही हो तुम!'

फिर तो वहां चीखना-चिल्लाना था। बर्तन उठाए गए, हालांकि उन्हें फेंका नहीं गया। उन्होंने एक दूसरे को ऐसे-ऐसे नामों से पुकारा, जिन पर लैला को अब शर्म आ रही थी। तब से उन्होंने एक दूसरे से बात नहीं की थी। लैला अब भी इस पर आहत थी कि कैसे आसानी से वो ये सारी बातें कह सकी थी, लेकिन सच तो ये था कि उसके भीतर एक हिस्से को ये अच्छा भी लगा था कि कैसे वो मरियम पर चिल्लाई और उसे कोसा, अपने उबलते हुए गुस्से और दुख का उसको निशाना बना सकी।

लैला को मानो एक अंतर्दृष्टि की तरह जानने की इच्छा हुई कि क्या मरियम को भी ऐसा ही महसूस नहीं हो रहा था।

इसके बाद, वो ऊपर चली गई थी और खुद को रशीद के बिस्तर पर गिरा लिया था। नीचे मरियम अब भी चीख रही थी, 'तुम्हारे दिमाग में मिट्टी है! तुम्हारे दिमाग में मिट्टी है!' लैला बिस्तर पर पड़ी तकिए में विलाप करती रही। अचानक उसे अपने अम्मी-अब्बू की याद आ गई थी और इतनी तेज़ी से आई, जितनी उस भयानक हमले के बाद से अब तक नहीं आई थी। वो चादर को मुट्ठी में समेटे तब तक वहीं पड़ी रही, जब तक उसकी सांस एकाएक रुक नहीं गए। वो उठ बैठी और अपने हाथ पेट पर फिराए।

बच्चे ने पहली बार पांव चलाया था।

तैंतीस

मरियम

अगले बसंत में, 1993 में, एक सुबह मरियम ने बैठक की खिड़की के पास खड़े होकर रशीद को सहारा देकर लड़की को घर से बाहर ले जाते हुए देखा। लड़की कमज़ोरी से चल रही थी और कमर से झुक आई थी। अपने बाहर निकले हुए पेट की हिफाज़त करते हुए उसने एक हाथ उस पर लपेट रखा था। पेट का उभार बुर्के के ऊपर से भी दिख रहा था। रशीद उत्तेजित और गैर मामूली रूप से चौकन्ना था। उसने लैला को कोहनियों से पकड़ रखा था और एक ट्रैफिक पुलिसवाले की तरह उसे आंगन के पार रास्ता दिखा रहा था। उसने वहीं रुकने का इशारा किया और सदर दरवाज़े तक दौड़ कर गया फिर लड़की को आने का इशारा किया और एक पैर से दरवाज़े को खोले रखा। जब लड़की वहां तक पहुंची तो उसने उसे हाथों से पकड़ा और दरवाज़े से निकलने में मदद की। मरियम उसकी आवाज़ सुन सकती थी, 'क़दम संभाल के, अब, मेरी फूल, मेरी गुल।'

वो अगली शाम ढलने के वक़्त लौटे।

मरियम ने सबसे पहले आंगन में रशीद को देखा। उसने दरवाज़े के पल्ले छोड़ दिए और वो लड़की के चेहरे पर लगभग लग ही गए थे। रशीद ने जल्दी-जल्दी क़दम बढ़ाते हुए आंगन पार किया। मरियम ने उसके चेहरे पर एक छाया देखी, जो ढलती हुई शाम के तांबई अंधेरे में दिख रही थी। घर में आकर उसने अपना कोट उतारा और पलंग पर फेंक दिया। मरियम पर फुफकारते

हुए अक्खड़ता से कहा, 'मैं भूखा हूं। खाना तैयार करो।'

घर का बाहरी दरवाज़ा खुला। गलियारे से मरियम ने लड़की को देखा, उसने बाएं हाथ में एक गठरी पकड़ रखी थी। उसका एक पांव बाहर था और दूसरा भीतर आकर दरवाज़े को बंद होने से रोक रहा था, ताकि वो उससे टकरा न जाए। वो झुक कर कराहते हुए काग़ज़ के उस थैले तक पहुंचने की कोशिश कर रही थी, जिसे उसने दरवाज़ा खोलने के दौरान नीचे रख दिया था। इस कोशिश में उसके चेहरे में शिकन आ गई थी। उसने सिर उठाया और मरियम को देखा।

मरियम पीछे मुड़ी और रशीद का खाना गर्म करने के लिए रसोई में चली गई।

'ये ऐसा है मानो कोई मेरे कान में स्क्रू ड्राइवर घुमा रहा हो,' रशीद ने अपनी आंखें मलते हुए कहा। वो मरियम के कमरे के दरवाज़े पर खड़ा था। उसकी आंखें सूजी हुई थीं और उसने एक तुंबन पहन रखी थी और उसे एक ढीली-सी गांठ से बांध रखा था। उसके सफ़ेद बाल बिखरे हुए थे। 'ये रोना। मैं बर्दाश्त नहीं कर सकता।'

नीचे लड़की बच्ची को लेकर टहल रही थी और उसके लिए गाने की कोशिश कर रही थी।

'पिछले दो महीनों से मैं रात में अच्छे से सो तक नहीं सका हूं,' रशीद ने कहा। 'और कमरे से सीवर की तरह बदबू आती है। हर जगह पाखाने में लिपटे कपड़े के टुकड़े पड़े हुए हैं। पिछली रात तो मैं बस एक पर पांव ही रख देता।'

मरियम एक आत्मघाती ख़ुशी से भीतर ही भीतर मुस्कुराई।

'उसे बाहर ले जाओ!' रशीद ने पीछे मुंह करके कहा। 'तुम उसे बाहर नहीं ले जा सकतीं?'

गाना थोड़ी देर के लिए रुका। 'बच्ची को न्यूमोनिया हो जाएगा!'

'ये तो गर्मियों का मौसम है!'

'क्या?'

रशीद ने दांत भींचे और ऊंची आवाज़ में कहा। 'मैंने कहा, बाहर गर्मी है!'

'मैं इसे बाहर नहीं ले जा रही!'

गाना फिर शुरू हो गया।

'कसम से, कभी कभी मैं सोचता हूं कि मैं उस चीज़ को एक डिब्बे में रख कर काबुल नदी में बहा आऊं। नन्हें मूसा की तरह।'

लड़की ने बच्ची को अज़ीज़ा नाम दिया था और मरियम ने कभी रशीद को अपनी बेटी का नाम लेते हुए नहीं सुना था। वो हमेशा बच्ची कहता या फिर जब वो सचमुच ग़ुस्सा होता तो उसे वो चीज़ कहता।

कुछ रातों में मरियम उन दोनों को बहसें करती हुई सुनती। वो दबे पांव उनके दरवाज़े के पास जाती और रशीद को बच्ची के बारे में शिकायतें करते हुए सुनती—हमेशा बच्ची उसका लगातार रोना, बदबू, खिलौने जिनमें वो उलझ जाता, जिस तरह से बच्ची हमेशा दूध पीना चाहती और इसने लैला का ध्यान रशीद पर से हटा दिया था, वो डकारती, उसके कपड़े बदलने होते, उसके लेकर टहलना होता, पकड़े रहना होता। बदले में लड़की रशीद से शिकायत करती कि वो कमरे में सिगरेट पीता है और बच्ची को अपने साथ नहीं सोने देता।

दबी हुई आवाज़ में कुछ दूसरी तरह की बहसें भी होतीं।

'डॉक्टर ने कहा कि छह हफ़्ते।'

'अभी नहीं, रशीद। नहीं। जाने दो। चलो। अभी यह मत करो।'

'दो हफ़्ते तो हो गए।'

'श्श्ट। वहां। तुम बच्ची को जगा दोगे।' फिर अधिक तीखी आवाज़ में, 'अब ख़ुश हो?'

मरियम अपने कमरे में लौट आती।

'तुम मदद नहीं कर सकतीं?' रशीद ने अब कहा। 'तुम तो ज़रूर कुछ कर सकती हो।'

'मैं बच्चों के बारे में क्या जानती हूं?' मरियम ने कहा।

'रशीद! क्या आप एक बोतल ला देंगे? वो अल्मारी में रखी है। वो नहीं पी रही। मैं फिर से बोतल से पिलाने की कोशिश करना चाहती हूं।'

बच्ची का चीखना बढ़ गया था, ये मांस पर चलती छुरी जैसा लग रहा था।

रशीद ने आंखें बंद कर लीं। 'ये चीज़ तो सेनापति है। हिक्मतियार है। मैं तुम्हें कह रहा हूं, लैला ने गुलबुद्दीन हिक्मतियार को पैदा किया है।'

मरियम देखती रहती और लड़की का पूरा वक़्त बच्ची को दूध पिलाने, हिलाने-डुलाने, उछालने और लेकर टहलने में बीत जाता। यहां तक कि जब बच्ची झपकी लेती तो उसके गंदे डायपर रगड़ कर धोने होते और उस डिसइन्फेक्टेंट घोल में डुबो कर रखने होते, जिसे उसने रशीद से ज़िद करके ख़रीदवाया था। उसे रेगमार से नाखुन छोटे करने होते, खोल और पाजामा धोकर सूखने के लिए डालने होते। ये कपड़े भी बच्ची से जुड़ी दूसरी चीज़ों की तरह बहस का मुद्दा बन जाते।

'इनमें क्या दिक्कत है?' रशीद कहता।

'ये लड़कों के कपड़े हैं। बच्चों के।'

'तुम सोचती हो कि वो फ़र्क़ जानती है? मैंने इन कपड़ों पर खासे पैसे खर्च किए हैं। और दूसरी बात है कि मुझे यह लहजा पसंद नहीं है। इसे चेतावनी समझना।'

हर हफ़्ते बिना नागा किए लड़की एक काले तंदूर की लपटों पर गर्म करती, उसमें एक चुटकी ब्राह्मी के बीज डालती और बच्ची को बुरी नज़रों से बचाने के लिए उसका धुआं उड़ाती।

मरियम उस लड़की का यह निरर्थक उत्साह देख कर थक गई—और मन ही मन वो लड़की से स्नेह करने लगी। वो इस पर हैरान हो गई कि इबादत के साथ लड़की की आंखों में कैसी चमक आ जाती है, यहां तक कि शाम को भी जब उसका चेहरा कुम्हलाया हुआ होता और उसका रात-रात भर बच्ची को लेकर टहलने से उसकी रंगत मोम की तरह फीकी पड़ गई थी। बच्ची जब हवाएं निकालती तो लड़की को हंसी का दौरा पड़ जाता। बच्ची में आए छोटे-से बदलाव पर भी वो मुग्ध हो जाती और बच्ची जो कुछ करती वो उसके लिए एलानिया तौर पर एक देखने लायक चीज़ होती।

'देखो! वो झुनझुने की तरफ़ बढ़ रही है। कितनी होशियार है।'

'मैं अखबारों को बुलावा भेज दूंगा,' रशीद ने कहा।

हर रात तमाशे होते। जब लड़की रशीद से कुछ देखने का आग्रह करती कि तो वो अपनी ठोढ़ी ऊपर उठा लेता और बेचैनी से अपनी नाक के नीली नसों वाली नाक की तिरछी निगाहों से देखने लगता।

'देखो। देखो जब मैं उंगलियां चटकाती हूं तो वो कैसे देखती है। ये। देखा? देखा तुमने?'

रशीद घुरघुराता और अपनी प्लेट पर लौट जाता। मरियम को याद आता कि महज लड़की की मौजूदगी ही कैसे रशीद पर हावी हो जाया करती। रशीद को खुश करने के लिए कही गई उसकी हर बात उसे चुभ जाती और वो अपने प्लेट पर देखने लगता और सहमति में सिर हिलाने लगता।

सबसे अजीब बात ये थी कि लड़की का मान घटने से मरियम को ख़ुशी होनी चाहिए थी, उसे अपने पक्ष की पुष्टि होनी चाहिए थी। लेकिन ऐसा नहीं हुआ। ऐसा नहीं हुआ। इस पर मरियम को भी हैरानी हुई कि उसे लड़की पर दया आने लगी थी।

रात के खाने पर ही यह होता कि लड़की अपनी चिंताओं का पिटारा खोल देती। सबसे ऊपर होता न्यूमोनिया, जिसका शक हर छोटी खांसी पर भी होने लगता। इसके बाद पेचिश का नंबर था, जिसका भूत हर पतले पाखाने से उठ खड़ा होता। हर खराश चेचक या खसरा लगती।

'तुम्हें इतना लगाव नहीं होना चाहिए,' रशीद ने एक रात कहा।

'तुम्हारा मतलब क्या है?'

'उस रात मैं रेडियो सुन रहा था। वॉयस ऑफ अमेरिका। मैंने एक दिलचस्प आंकड़ा सुना। उन्होंने बताया कि चार अफ़ग़ानी बच्चों में से एक पांच साल की उम्र से पहले ही मर जाता है। उन्होंने यही कहा। अब, वो—क्या? क्या? कहां जा रही हो तुम? यहां आओ। वापस आओ, फौरन!'

हक्का-बक्का होकर रशीद ने मरियम को देखा। 'इसका मामला क्या है?'

उस रात मरियम बिस्तर में थी, जब कहा-सुनी फिर शुरू हो गई। यह एक गर्म और सूखी गर्मियों की रात थी। यह काबुल में सरातान का आदर्श महीना था। मरियम ने अपनी खिड़की खोली थी, लेकिन जब गर्मी में राहत देने के लिए हवा आने के बजाए मच्छर आने लगे तो उसने उसे बंद कर दिया। वो महसूस कर सकती थी कि बाहर ज़मीन से और आंगन में रखे तख्तों की गेहुएं भूरे रंग की खपच्चियों से, दीवारों से और उसके कमरे में से गर्मी उठ रही थी।

अमूमन कहा-सुनी कुछ मिनटों तक ही चलती थी, लेकिन आधा घंटा बीत गया था और न केवल यह अब भी चल रही थी बल्कि तेज़ ही हो रही थी : मरियम अब रशीद को चिल्लाते हुए सुन सकती थी। उसके नीचे लड़की की अनिश्चय से भरी हुई तीखी आवाज़ थी। जल्दी ही बच्ची चिल्लाने लगी थी।

तब मरियम ने दरवाज़ा खुलने की ज़ोरदार आवाज़ सुनी। सवेरे उसे गलियारे में दीवार पर नॉब का गोल निशान दिखने वाला था। वो बिस्तर में ही थी, जब उसका अपना दरवाज़ा ज़ोर से खुला और रशीद अंदर आया।

वो सफ़ेद अंडरपैंट और उसी से मिलते रंग की बनियान पहने हुए था, जिसकी कांख पर पसीने का पीला धब्बा था। पैरों में उसने फ्लिप-फ्लॉप चप्पल पहन रखी थी। अपने हाथ में उसने एक बेल्ट थाम रखी थी, जिसका छेद वाला सिरा उसकी मुट्ठी पर लिपटा हुआ था। यह बादामी रंग की चमड़े की बेल्ट थी, जिसे वो लड़की से निकाह के दिन ख़रीद कर लाया था।

'यह तुम्हारी करनी है। मैं जानता हूं,' मरियम की तरफ़ बढ़ते हुए वो गुर्रा कर बोला।

मरियम अपने बिस्तर से सरक कर उठी और पीछे की तरफ़ हटने लगी। उसके हाथ सहज रूप से उसके सीने पर गए थे, अक्सर जहां वो पहला वार करता था।

'तुम किसके बारे में बात कर रहे हो?' वो हकलाते हुए बोली।

'उसका मुझे मना करना। यह तुमने उसे सिखाया है।'

इतने बरसों में मरियम ने उसकी नफ़रत और डांट-फटकार, मज़ाक उड़ाए जाने और घुड़के जाने के आगे सख़्त बने रहना सीख लिया था। लेकिन इस डर पर उसका कोई काबू नहीं था। इतने बरसों में भी वो जब ऐसा बन जाता, कोसता, मुट्ठी में बेल्ट कसता, चमड़ा चरमराता और उसकी लाल आंखें चमकतीं तो मरियम डर से कांप उठती। यह उस बकरी का डर था जिसे एक बाघ के पिंजड़े में छोड़ दिया गया था और बाघ अपने पंजे उठाता, गुर्राता हुआ उसे देख रहा होता।

अब लड़की अपनी फैली हुई आंखों और विकृत चेहरे के साथ कमरे में थी।

'मुझे पता होना चाहिए कि तुमने उसे बिगाड़ दिया है,' रशीद बरसा। उसने बेल्ट को अपनी जांघ पर पटक कर उसे परखा। बकल ज़ोर से बजी।

'बस,' लड़की ने कहा। 'रशीद, आप ऐसा नहीं कर सकते।'

'कमरे में जाओ।'

मरियम फिर पीछे हटी।

'नहीं! ऐसा मत कीजिए।'

'अब!'

रशीद ने बेल्ट उठाई और इस बार वो मरियम पर चली।

तभी एक अचंभित कर देने वाली बात हुई : लड़की रशीद पर झपटी। उसने दोनों हाथों से उसके हाथ पकड़े और उसे नीचे घसीटने की कोशिश की, वो उन पर झूल कर रह गई। वो मरियम की तरफ़ बढ़ते रशीद की रफ्तार को धीरे कर पाने में कामयाब हुई।

'छोड़ो!' रशीद चीखा।

'आप जीते। तुम जीते। ऐसा मत कीजिए। मेहरबानी कीजिए रशीद, मारिए नहीं! मेहरबानी कीजिए, ये मत कीजिए।'

वो इसी तरह जूझते रहे, झूलती हुई लड़की फरियादें करती रही और रशीद उसे झटके देकर हटाते हुए एक निगाह मरियम पर रखे रहा, जो इस कदर अवाक थी कि समझ नहीं पा रही थी क्या करे।

मरियम जानती थी कि आख़िर में उस रात पिटाई नहीं होगी। उस रात नहीं होगी। रशीद ने अपनी बात रख दी थी। वो कुछ पल उसी तरह हाथ उठाए, सीना लहराते हुए खड़ा रहा। पसीने की एक पतली परत उसके माथे पर जम गई थी। धीरे-धीरे रशीद ने हाथ नीचे किए। लड़की के पांव जमीन से लगे और तब भी उसने रशीद को नहीं छोड़ा मानो उसे उस पर भरोसा नहीं था। उसे लड़की की पकड़ से छूटने के लिए झटका देना पड़ा।

'मैं तुम लोगों के ऊपर हूं,' उसने बेल्ट को कंधे पर लटकाते हुए कहा। 'मैं तुम दोनों के ऊपर हूं। मैं अपने ही घर में अहमक नहीं बनूंगा।'

आख़िर में उसने मरियम पर एक कातिलाना निगाह डाली और जाते हुए लड़की की पीठ पर धक्का दिया।

उनके दरवाज़े के बंद होने की आवाज़ सुनने के बाद मरियम अपने बिस्तर पर चढ़ी और अपना सिर तकिए में धंसा लिया और कंपकंपाहट रुकने का इंतज़ार करने लगी।

उस रात तीन बार मरियम की नींद खुली। पहली बार तो पश्चिम में कारतेह-चार की तरफ़ से आ रही रॉकेटों की गड़गड़ाहट की वजह से। दूसरी बार नीचे बच्ची के चिल्लाने की वजह से। लड़की शूशू करके उसे चुप करा रही थी और दूध की बोतल में चम्मच के चलने की आवाज़ आ रही थी। आख़िरी

बार उसे प्यास की वजह से बिस्तर से उठना पड़ा।

नीचे बैठक में अंधेरा था, बस खिड़की से आती चांदनी बिखरी हुई पड़ी थी। मरियम कहीं मक्खी के उड़ने की भनभनाहट सुन सकती थी। अंधेरे में वो कोने में लोहे का स्टोव देख सकती थी, जिसकी बाहर को उभरी हुई ऊपर जाती पाइप छत के नीचे एक तीखा कोण बना रही थी।

रसोई जाने के रास्ते में मरियम किसी चीज़ से ठोकर खाते बची। उसके पांवों के पास एक आकृति थी। जब उसकी आंखें अंधेरे की आदी हुई तो उसने देखा कि लड़की और उसकी बच्ची फर्श पर एक लिहाफ के ऊपर लेटी हुई थीं।

लड़की करवट के बल खर्राटे लेते हुए सो रही थी। बच्ची जगी हुई थी। मरियम ने टेबल पर रखी केरोसिन लैंप जलाई और नीचे बैठ गई। रोशनी में उसने पहली बार बच्ची को करीब से देखा, उसके काले बालों का गुच्छा, मोटी बरौनियों वाली भूरी आंखें, गुलाबी गाल और होंठ जिनका रंग पके हुए अनार से मिलता था।

मरियम को लगा कि बच्ची भी उसे परख रही है। पीठ के बल लेटे और सिर एक तरफ़ झुकाए हुए वो मरियम को खुशी, भ्रम और संदेह से देख रही थी। मरियम को जानने की इच्छा हुई कि क्या उसका चेहरा उसे डरा सकता है, लेकिन तभी बच्ची खुशी से किलक उठी और मरियम जान गई कि फैसला उसके पक्ष में पास हो गया है।

'श्श्श,' मरियम फुसफुसाई। 'तुम अपनी अम्मी को जगा दोगी। वैसे ही वो आधी बहरी है।'

बच्ची ने मुट्ठी बांध ली। उसने उसे अपने मुंह की तरफ़ ले जाने के लिए उठाया लेकिन बीच में ही गिर गया। अपना हाथ मुंह में भरते हुए बच्ची मरियम को देख कर मुस्कुराई और उसकी लार के नन्हें-नन्हें बुलबुले उसके होंठों पर चमक उठे।

'खुद को देखो ज़रा। क्या गत बनी हुई है तुम्हारी। लड़कों की कपड़े पहन रखे हैं। और इस गर्मी में तुम गठरी बनी हुई हो। इसमें हैरानी की बात नहीं है कि तुम अभी भी जगी हुई है।'

मरियम ने बच्ची के ऊपर से कंबल हटाया तो देख कर डर गई कि नीचे एक और कंबल था। उसने जीभ चटकाई और दूसरा कंबल भी हटा दिया।

राहत पाकर बच्ची खिलखिलाई। उसने चिड़ियों की तरह अपने हाथ लहराए।

'बेहतर है ना?'

मरियम जब वापस लौटने लगी तो बच्ची ने उसकी छोटी उंगली पकड़ ली। बच्ची की छोटी-सी उंगली खुद ब खुद उसके गिर्द कस गई। वो गर्म, नर्म और लार में लिपटे हुए नम महसूस हो रहे।

'गुनुह,' बच्ची बोली।

'ठीक है, बस, जाने दो।'

बच्ची लटक गई। उसने फिर से अपने पांव मारे।

मरियम ने खींच कर अपनी उंगली छुड़ाई। बच्ची मुस्कुराई और देर तक गले से गड़गड़ की आवाज़ निकालती रही।

'किस बात पर इतनी खुश हो तुम? एं? किस पर मुस्कुरा रही हो? तुम उतनी होशियार नहीं हो जितनी तुम्हारी अम्मी कहती हैं। तुम्हारा बाप एक जानवर है और मां एक बेवकूफ़। अगर तुम यह जानतीं तो इतना नहीं मुस्कुरातीं। नहीं, तुम नहीं मुस्कुरातीं। चलो, सो जाओ, अब। चलो।'

मरियम अपने पांवों पर उठी और कुछ क़दम चली कि बच्ची ने ऊंह, ऊंह की आवाज़ निकालनी शुरू की। मरियम जानती थी कि यह एक गहरी रुलाई शुरू होने का संकेत थी।

'क्या बै? मुझसे क्या चाहती हो तुम?'

बच्ची की दंतहीन मुस्कान खिल गई।

मरियम ने गहरी सांस ली। वो बैठ गई और उसे अपनी उंगली पकड़ लेने दिया। वो लड़की को किलकारी मारते हुए देखती रही। उसने उसे कूल्हों पर पैर मोड़ कर हवा को लातें मारते देखा। मरियम वहीं बैठी देखती रही जब तक बच्ची ने हिलना बंद नहीं कर दिया और हल्के-हल्के खर्राटे लेने लगी।

बाहर नकलची चिड़िया खुशी से गा रही थीं और जब वो उड़ान भरती तो मरियम को उनके परों पर चमकती नीली चांदनी दिखती जो बादलों के पीछे से चमकते चांद से आ रही थी। और हालांकि उसका गला प्यास से सूख गया था और उसके पांवों में देर तक बैठने से सुइयां चुभ रही थीं, उसे बच्ची की पकड़ से धीरे-धीरे अपनी उंगली छुड़ा कर उठने में लंबा वक़्त लगा।

चौंतीस

लैला

इस दुनिया की सारी खुशियों में सबसे ज़्यादा खुशी लैला को अज़ीज़ा के पास सोने में मिलती थी। वो अपनी बच्ची का चेहरा इतना करीब रखती कि वो उसकी पुतलियों का फैलना और सिकुड़ना देख सके। लैला को अज़ीज़ा की आनंददायक, कोमल त्वचा, गद्देदार मुट्ठी और कोहनी के मोड़ पर चर्बी की तहों पर उंगलियां फिराना पसंद था। कभी-कभी वो अज़ीज़ा को अपने सीने पर लिटा लेती और उसके सिर के नाज़ुक तलवे पर फुसफुसाते हुए तारिक़ के बारे में बताती, जो उसका अब्बा था और अज़ीज़ा के लिए हमेशा एक अजनबी रहने वाला था। जिसका चेहरा अज़ीज़ा कभी नहीं जान पाएगी। लैला तारिक़ की पहेलियां बुझाने की भूख, उसकी तरकीबों और शरारतों के बारे में उसे बताती। वो उसकी सहज हंसी के बारे में बताती।

'उसकी सबसे खूबसूरत बरौनियां थीं, तुम्हारे जितनी मोटी। एक अच्छी सी ठोढ़ी, पतली नाक और गोल ललाट। ओह, तुम्हारे अब्बा बहुत खूबसूरत थे अज़ीज़ा। वो मुकम्मल थे। तुम्हारी तरह मुकम्मल।'

लेकिन वो सावधानी बरतते हुए कभी उसका नाम नहीं लेती।

कभी कभी वो देखती कि रशीद अज़ीज़ा को अजीब तरह से देख रहा है। किसी दूसरी रात को सोने के कमरे की फर्श पर बैठे हुए, जहां वो अपने पांव की गांठ काट रहा था, उसने यों ही कहा, 'तो तुम लोगों के बीच कैसा रिश्ता था?'

लैला ने उलझन के साथ उसे देखा, मानो वो समझ नहीं पाई हो।

'लैला और मजनूं। तुम और यकलंगा, लंगड़ा। तुम्हारा उससे क्या रिश्ता था, उसमें और तुममें?'

'वो मेरा दोस्त था,' उसने सावधानी बरतते हुए जवाब दिया कि उसकी आवाज़ बहुत अलग न लगे। उसने बोतल तैयार करने में खुद को मसरूफ कर लिया।

'आप जानते हैं।'

'मुझे नहीं पता कि मैं क्या जानता हूं।' रशीद ने कटे हुए हिस्से को खिड़की के ओटे पर रखा और बिस्तर पर लुढ़क पड़ा। स्प्रिंग ने तेज़ आवाज़ में विरोध किया। उसने पलंग पर अपने पांव फैलाए और जांघों के पास खुजलाया।

'और बतौर...दोस्त, तुम लोगों ने क्या कभी कोई गैर मुनासिब काम किया था?'

'गैर मुनासिब?'

रशीद ने मज़ाकिया अंदाज में मुस्कुराया, लेकिन लैला उसकी सर्द और चौकन्नी निगाह को महसूस कर सकती थी। 'तो मुझे देखने दो अब। क्या उसने तुमको कभी चूमा था? हो सकता है उसने कभी ऐसी जगह हाथ रखा हो जहां नहीं रखना चाहिए?'

लैला पर गुस्से के साथ-साथ दर्द का भाव आया, ऐसा लैला को महसूस हुआ। वो अपने दिल को गले में धड़कते हुए महसूस कर सकती थी। 'वो मेरे लिए भाई की तरह था।'

'तो वो एक दोस्त था या भाई?'

'दोनों। वो—'

'वो क्या था?'

'वो दोनों ही था।'

'लेकिन भाई और बहनें अनोखे जीव होते हैं। कभी कभी एक भाई अपनी बहन को अपना लिंग भी देख लेने देता है और एक बहन—'

'आपकी बातों से मुझे घिन आ रही है,' लैला ने कहा।

'तो फिर ऐसा कुछ नहीं था।'

'मैं इसपर और बात नहीं करना चाहती।'

रशीद ने अपना सिर झुकाया, अपने होंठ भींचे और सिर हिलाया। 'लोग

बातें बनाते थे, पता है। मुझे याद है। वो तुम दोनों के बारे में हर तरह की बातें करते थे। लेकिन तुम कह रही हो कि ऐसा कुछ नहीं था।'

लैला ने साहस करके रशीद को घूरा।

रशीद उसकी आंखों में मर्मांतक रूप से देर तक, बिना पलकें झपकाए इस तरह देखता रहा कि बोतल पकड़ी हुई लैला की उंगलियां कमज़ोर पड़ गईं और लैला को लड़खड़ा जाने से बचने के लिए पूरी ताकत लगानी पड़ी।

वो ये सोच कर कांप गई कि रशीद उसके साथ क्या करेगा अगर उसको पता लग जाए कि वो उससे क्या छुपाती आई है। अज़ीज़ा के पैदा होने के बाद से हर हफ़्ते वो रशीद के सो जाने के बाद या उसके आउटहाउस में होने पर उसका पर्स खोल कर एक नोट निकाल लेती। किसी हफ़्ते, अगर पर्स हल्का हुआ तो वो पांच अफ़ग़ानी का केवल एक नोट निकालती। या फिर इस डर से कुछ भी नहीं निकालती कि वो भांप न जाए। जब पर्स मोटा होता तो वो दस या बीस निकाल लेती, एक बार तो उसने बीस-बीस के दो नोट निकाल लिए थे। यह पैसा वो सर्दियों के चारखानेदार कोट की अस्तर में खुद से सिली गई एक जेब में जमा करती।

उसे यह जानने की इच्छा होती कि अगर रशीद जान जाए कि वो अगले बसंत में भाग जाने का मंसूबा बना रही थी तो वो क्या करेगा। अधिक से अधिक अगली गर्मियों तक। लैला को उम्मीद थी कि वो हज़ार या इससे ज़्यादा अफ़ग़ानी जमा कर लेगी, जिसमें से आधा तो काबुल से पेशावर तक बस के किराए में चले जाएंगे। वक़्त करीब आने पर वो अपनी शादी की अंगूठी और वो दूसरे गहने गिरवी रख देगी, जिनको रशीद ने पिछले साल उसे दिए थे, जब वो अभी उसकी महल की रानी हुआ करती थी।

'जो भी हो,' रशीद ने आख़िर अपने पेट पर उंगलियां बजाते हुए कहा, 'मुझे दोष नहीं दिया जा सकता। मैं एक शौहर हूं। ये चीज़ें शौहर जानना चाहते हैं। लेकिन जो उसने किया था, उसे देखते हुए वो खुशकिस्मत है कि वो मर गया। वरना अभी अगर वो यहां होता, अगर मेरे हाथ उस पर पड़ जाते. ..' उसने दांतों से सांस खींची और अपना सिर झटका।

'मरे हुए लोगों के बारे में बुरा न बोलने के कायदे का क्या हुआ?'

'मेरा अंदाज़ा है कि कुछ लोग उतने मरे हुए भी नहीं हो सकते,' उसने कहा।

दो दिनों के बाद लैला जगी तो उसे अपने सोने के कमरे के बाहर बच्ची के कपड़ों का एक ढेर मिला, जिन्हें सफाई के साथ तह किया गया था। उसमें एक तहों वाली ड्रेस थी, जिसके सीने पर छोटी-छोटी गुलाबी मछलियां सिली हुई थीं। एक नीली फूलदार ऊनी ड्रेस और उसी से मिलते-जुलते मोज़े और दस्ताने भी थे। गाजर के रंग के पोल्का धब्बों वाला एक पीला पाजामा था और एक हरी सूती पैंट थी जिसके पांयचों पर छींटों वाले झालर लगे हुए थे।

'अफवाह है,' रशीद ने उस रात खाने के दौरान कहा। वो होंठों को चटखाते हुए खा रहा था और अज़ीज़ा या उसके पाजामे पर कोई ध्यान नहीं दे रहा था, जिसे लैला ने उसे पहनाया था। 'कि दोस्तम पाला बदल कर हिक़मतियार के साथ जा मिलने वाला है। मसूद को अब उन दोनों से लड़ना होगा और उसे मुश्किल होगी। और हमें हज़ाराओं को नहीं भूलना चाहिए।' उसने बैंगन के अचार से एक चुटकी टुकड़ा उठाया। यह अचार मरियम ने उन्हीं गर्मियों में बनाया था। 'उम्मीद करते हैं कि यह महज़ एक अफवाह हो। क्योंकि अगर ऐसा हो गया, यह जंग,' उसने चिकनाई लगा एक हाथ लहराया, 'पगमान में जुमे की पिकनिक की तरह लगेगी।'

बाद में वो लैला के ऊपर चढ़ा और बिना बोले जल्दी-जल्दी ख़ुद को तनावमुक्त किया। इस दौरान उसने सारे कपड़े पहन रखे थे, बस तुंबन को छोड़ कर जिसे उसने उतारा नहीं बल्कि टखनों तक सरका दिया। जब उत्तेजना ख़त्म हुई तो वो लैला के ऊपर से लुढ़का और चंद मिनटों में ही सो गया।

लैला सोने के कमरे से सरक कर निकली और पाया कि मरियम रसोई में बैठी ट्राउट मछलियों का एक जोड़ा साफ़ कर रही थी। उसकी बग़ल में भिगोए हुए चावलों का एक बर्तन पहले से पड़ा हुआ था। रसोई में ज़ीरे, धुएं और भुने हुए प्याज़ और मछली की महक़ थी।

वो एक कोने में बैठ गई और अपनी पोशाक का किनारा अपने घुटने पर लपेट लिया।

'शुक्रिया,' उसने कहा।

मरियम ने उस पर ध्यान नहीं दिया। उसने पहली मछली को काटने का काम पूरा कर दूसरी को उठाया। एक दांतेदार छुरी से उसने मछलियों के पर काटे, फिर मछली को उलट कर उसका पेट ऊपर किया और उसे सधे हुए

हाथ से गलफड़ों से लेकर पूंछ तक चीर दिया। लैला ने देखा कि उसने अपना अंगूठा मछली के मुंह में, निचले जबड़े से ठीक ऊपर रख कर दबाया और एक ही झटके में गलफड़ और बाक़ी का फालतू हिस्सा बाहर निकाल दिया।

'कपड़े प्यारे हैं।'

'मुझे उनका कोई काम नहीं था,' मरियम बुदबुदाई। उसने चिपचिपे, भूरे तरल में डूबी मछली को अखबार पर रखा और उसका सिर काट कर अलग कर दिया। 'या तो तुम्हारी बेटी के काम आ जाते या कीड़े चाट जाते।'

'आपने इस तरह मछली साफ़ करना कहां-से सीखा?'

'जब मैं छोटी थी तो मैं एक धारा के पास रहती थी। मैं तब खुद मछलियां पकड़ती थी।'

'मैंने कभी मछली नहीं पकड़ी।'

'उतना मज़ेदार भी नहीं है। पूरे वक़्त इंतज़ार करना पड़ता है।'

लैला ने उसे ट्राउट को तीन-तीन हिस्सों में काटते हुए देखा। 'क्या आपने कपड़े खुद सिले थे?'

मरियम ने सिर हिलाया।

'कब?'

मरियम ने मछली के टुकड़ों को कटोरे में रखे पानी में धोया। 'जब मैं पहली बार पेट से थी। या शायद दूसरी बार। अट्ठारह, उन्नीस बरस पहले। जो भी हो, अरसा हुआ। जैसा मैंने कहा, वो कभी मेरे इस्तेमाल में नहीं आए।'

'आप सचमुच में एक अच्छी खाला हैं। शायद आप मुझे सिखा सकती हैं।'

मरियम धुले हुए ट्राउट के टुकड़ों को एक साफ़ कटोरे में रखा। पानी की बूंदें उसकी उंगलियों के पोरों से टपक रही थीं। उसने अपना सिर उठाया और लैला को देखा, मानो पहली बार देख रही हो।

'उस रात, जब वो...पहले कभी कोई मेरी खातिर खड़ा नहीं हुआ था,' उसने कहा।

लैला ने लटकते हुए गालों, थकान से भरी तहों में दबी पुतलियों और उसके मुंह के चारों ओर गहरी लकीरों को देखा—उसने इन चीज़ों को इस तरह देखा मानो वो किसी को पहली बार देख रही हो। और पहली बार, लैला ने एक दुश्मन का चेहरा नहीं देखा था, बल्कि उसने एक अनकही शिकायत को,

बिना विरोध जताए उठाए गए बोझों को, और बर्दाश्त करने के लिए छोड़ दी गई एक नियति को देखा। लैला को जानने की इच्छा हुई कि अगर वो रुकी रहे तो बीस साल बाद क्या यह उसका अपना चेहरा हो सकता है?

'मैं उन्हें नहीं करने देती,' लैला ने कहा। 'मैं ऐसे घर में नहीं पली-बढ़ी हूं जहां लोग ऐसी चीजें करते हों।'

'अब यह तुम्हारा घर है। तुम्हें इसकी आदत डालनी होगी।'

'इसकी नहीं। मैं नहीं डालूंगी।'

'वो तुम्हारे पीछे पड़ेगा, तुम जानती हो,' मरियम ने कपड़े के एक टुकड़े से पोंछ कर हाथ सुखाते हुए कहा। 'जल्दी ही। और तुमने उसे एक बेटी दी है। तो देखो, तुम्हारा गुनाह तो मुझसे भी कम माफ़ी के काबिल है।'

लैला अपने पांवों पर खड़ी हुई। 'मुझे पता है कि बाहर कड़कड़ाती सर्दी है, लेकिन क्या कहती हैं, हम गुनाहगार औरतें आंगन में एक-एक कप चाय पी सकती हैं?'

मरियम हैरान दिखी। 'मैं नहीं पी सकती। अभी मुझे फलियों को काट कर धोना है।'

'मैं सवेरे इसमें आपकी मदद कर दूंगी।'

'और मुझे यहां सफाई करनी है।'

'हम दोनों इसे मिल कर साफ़ देंगी। अगर मैं ग़लती नहीं कर रही तो कुछ हलवा बचा हुआ है। चाय के साथ कमाल का रहेगा।'

मरियम ने कपड़े का टुकड़ा ओटे पर रख दिया। जिस तरह उसने अपनी आस्तीनें खींचीं, अपना हिजाब ठीक किया और बालों की एक लट को पीछे धकेला लैला ने उसमें एक उत्तेजना महसूस की।

'चीनी लोग कहते हैं कि एक दिन चाय से महरूम रहने से अच्छा है कि तीन दिन खाने से महरूम रहा जाए।'

मरियम हल्के से मुस्कुराई। 'अच्छी कहावत है।'

'अच्छी ही है।'

'लेकिन मैं देर तक नहीं रुक सकती।'

'बस एक कप।'

बाहर वो फोल्डिंग कुर्सियों पर बैठीं और एक ही कटोरे से उंगलियों से निकाल कर हलवा खाया। उन्होंने दो-दो कप चाय पी और जब लैला ने तीसरे

कप के लिए पूछा तो मरियम ने कहा कि उसे चाहिए। पहाड़ियों में गोलीबारी चल रही थी और वो चांद के नीचे सरकते बादलों को और मौसम की आख़िरी जुगनुओं को अंधेरे में चमकदार पीले मेहराब बनाते हुए देखती रहीं। और जब अज़ीज़ा जग कर चिल्लाने लगी और रशीद ने उसे ऊपर आ कर चुप कराने के लिए बुलाया तो लैला और मरियम ने एक दूसरे को देखा। यह एक खुले दिल की समझदारी भरी निगाह। और मरियम के साथ पहल भर की, बिना शब्दों वाली इस बातचीत में लैला जान गई कि वो अब दुश्मन नहीं रही थीं।

पैंतीस

मरियम

उस रात के बाद मरियम और लैला मिल कर घर का काम करतीं। वो रसोई में बैठ कर आटा गूंधतीं, हरे प्याज़ काटतीं, लहसुन कूटतीं और खीरे के टुकड़े अज़ीज़ा के आगे पेश करतीं, जो पास ही में चम्मच बजा रही होती और गाजर से खेलती। आंगन में अज़ीज़ा बेंत के पालने में लेटी रहती और कपड़ों की परतों से लैस होती। सर्दियों का एक गुलूबंद उसके गले में चुस्ती से लिपटा होता। कपड़े धोते हुए मरियम और लैला उस पर निगाह बनाए रखतीं। कमीज़ें और पतलून और बच्ची की लंगोटी रगड़ते हुए मरियम की उंगलियां लैला की उंगलियों से टकरा जातीं।

मरियम धीरे-धीरे इस अनिश्चित लेकिन ख़ुशनुमा साथ की आदी हो गई। वो लैला के साथ आंगन में तीन कप चायों का बेसब्री से इंतज़ार करती, जो अब रात में उनकी रस्म बन गई थी। सवेरे मरियम सीढ़ियों पर लैला की फटी हुई चप्पलों की आवाज़ सुनने का इंतज़ार करती, जब वो नाश्ते के लिए उतरती। वो अज़ीज़ा की तीखी हंसी की खनक और उसके नन्हें आठ दांतों को देखने का और उसकी चमड़ी से आती दूध की महक़ का इंतज़ार करती। अगर लैला और अज़ीज़ा सो रहे होते तो वो इंतज़ार करते हुए बेचैन हो जाती। वो उन बर्तनों को धोती जिनको धोने की ज़रूरत नहीं होती। बैठक में गद्दियों-तकियों को फिर से सजाती। खिड़की के साफ़ ओटों को साफ़ करती। वो ख़ुद को तब तक काम में लगाए रखती जब तक अज़ीज़ा को कूल्हों पर

टिकाए लैला रसोई में नहीं दाख़िल हो जाती।

जब अज़ीज़ा सवेरे-सवेरे मरियम को देख लेती, तो हमेशा उसकी आंखें फैल जातीं और वो अपनी मां की पकड़ में ठुनकने और कसमसाने लगती। वो मरियम की तरफ़ बांहें फैला देती और मांग करती कि वो उसे ले ले। उसके नन्हें हाथ जल्दी-जल्दी खुलते, बंद होते और उसके चेहरे पर प्यार और कंपकंपाहट से भरी बेचैनी का भाव आ जाता।

'क्या तमाशा खड़ा कर रही हो,' लैला उसे मरियम की तरफ़ रेंगते हुए जाने के लिए छोड़ देती। 'क्या तमाशा है! शांत हो जाओ। खाला मरियम कहीं नहीं जा रहीं। वो रहीं, तुम्हारी खाला। दिखीं? जाओ, अब।'

मरियम की बांहों में जाते ही अज़ीज़ा अपना अंगूठा मुंह में डाल लेती और अपना चेहरा मरियम के गले में धंसा देती।

मरियम उसे रुखाई से उछालती। उसके होंठों पर आधी हक्की-बक्की और आधी शुक्रगुज़ार मुस्कान तैर जाती। मरियम ने पहले कभी भी ऐसा नहीं चाहा था। मुहब्बत उसे पहले कभी भी इतनी निष्कपटता से, इतने खुले दिल से नहीं मिली थी।

अज़ीज़ा ने मरियम में रोने की चाहत जगा दी।

'क्यों तुमने मुझ जैसी बदसूरत बुढ़िया में अपना नन्हा दिल लगा रखा है?' मरियम अज़ीज़ा के बालों में बुदबुदाती। 'हुं? मैं तो मामूली हूं, दिखता नहीं तुम्हें? एक देहाती। तुम्हें देने के लिए मेरे पास क्या है?'

लेकिन अज़ीज़ा संतोष से बस बुदबुदाती और अपना चेहरा और धंसा लेती। और जब वो ऐसा करती, मरियम निहाल हो जाती। उसकी आंखें भींग आतीं। दिल उड़ानें भरता। और वो इस पर हैरान हो जाती कि कैसे इतने बरसों तक सिर्फ़ खोने के बाद, झूठे रिश्तों से भरी ज़िंदगी में, इस नन्हें से जीव में उसने पहला सच्चा रिश्ता पाया है।

अगले साल की शुरुआत में, यानी 1994 की जनवरी में दोस्तम ने पाले बदले। वो गुलबुद्दीन हिक्मतियार से आ मिला और बाला हिसार के पास जगह बनाई। ये पुराने किले की दीवारें थीं, जो कोहे-शीरदरवाज़ा पहाड़ियों से शहर तक फैली हुई थीं। साथ मिल कर वो मसूद और रब्बानी की फौजों पर रक्षा मंत्रालय और राष्ट्रपति के महल पर गोलियां दागते। काबुल नदी के दोनों तरफ़ तोपखाने

एक दूसरे पर दागते। गलियों में लाशें, शीशे और धातुओं के टूटे हुए मलवे भरे पड़े थे। लूट, कत्ल और दिनों दिन बढ़ती बलात्कार की घटनाएं नागरिकों को धमकाने और मिलीशिया के लोगों को ईनाम देने के लिए इस्तेमाल की जा रही थीं। मरियम ने ऐसी औरतों के बारे में सुना था, जो बलात्कार से बचने के लिए ख़ुदकुशी कर रही थीं और मर्द इज़्ज़त के नाम पर अपनी बीवियों और बेटियों को जान से मार डाल रहे थे, अगर उनका मिलीशिया के लोग बलात्कार कर देते।

अज़ीज़ा गोलीबारी की गरज पर ज़ोर-ज़ोर से रोने लगती। उसका ध्यान बंटाने के लिए मरियम फर्श पर चावल के दानों से घर या मुर्ग़े या सितारा बनाती और अज़ीज़ा को उसे बिखराने को कहती। वो अज़ीज़ा के लिए एक ही बार में हाथी बनाती, जैसा कि जलील ने उसे सिखाया था, बिना कलम की नोक उठाए हुए।

रशीद बताता कि आम लोग दर्जनों की गिनती में रोज़ मारे जा रहे थे। अस्पताल और दवा सप्लाई करने वाली दुकानों पर गोलीबारी होती थी। वो बताता कि शहर में खाने की आपातकालीन खेप लाने वाली गाड़ियों को दाख़िल होने से रोका जा रहा था, उन पर छापा मारा जा रहा था, गोलियां दागी जाती थीं। मरियम को यह जानने की इच्छा होती कि क्या हेरात में भी ऐसी ही लड़ाई चल रही है, और अगर ऐसा है तो मुल्ला फैज़ुल्ला, अगर वो अब भी ज़िंदा हों तो, कैसे उसका सामना कर रहे होंगे? अपने सभी बेटों, बहुओं और पोते-पोतियों के साथ बीबी जो कैसे उसे बरदाश्त कर रही होंगी। और बेशक जलील। मरियम को जानने का मन किया कि क्या वो भी छुपा हुआ था, जैसे कि वो छुपी हुई थी? या क्या वो अपनी बीवियों और बच्चों को लेकर देश से भाग गया था? उसने उम्मीद की कि जलील कहीं महफूज होगा, और वो इस कत्लगारत से दूर जाने में कामयाब हो गया होगा।

एक हफ़्ते तो लड़ाई इतनी उग्र थी कि रशीद को भी घर बैठना पड़ा। उसने आंगन के दरवाज़े पर ताला लगा दिया, फंदे लगा दिए और सदर दरवाज़े पर भी ताला लगा दिया और उसके पीछे पलंग लगा कर बैरिकेडिंग कर दी। वो सिगरेट पीते हुए घर भर में घूमता, खिड़की से झांकता, बंदूक साफ़ करता, उसमें गोलियां भरता और बार-बार भरता। दो बार उसने यह दावा करते हुए सड़क पर फायर भी किया कि उसने किसी को दीवार पर चढ़ने की कोशिश

करते देखा था।

'वो नौजवान लड़कों को जबरन भर्ती कर रहे हैं,' उसने कहा। 'मुजाहिदीन लोग। बंदूक के बल पर, दिन दहाड़े। वो गलियों से लड़कों को पकड़ कर ले जा रहे हैं। और जब मुखालिफ मिलीशिया इन लड़कों को पकड़ती है तो वो उनको यातनाएं देती है। मैंने सुना है कि उनको बिजली के झटके दिए जाते हैं मैंने यही सुना है कि वो उनके अंडकोषों को प्लास से फोड़ देते हैं। वो उन बच्चों को अपने घर तक ले चलने के लिए मजबूर करते हैं। इसके बाद वो घर तोड़ कर घुस आते हैं, उनके बाप को मार डालते हैं और बहनों और मांओं के साथ बलात्कार करते हैं।'

उसने सिर के ऊपर बंदूक लहराई। 'देखते हैं कि वे मेरे घर में कैसे घुसते हैं। मैं उनके अंडकोष फोड़ डालूंगा! उनके सिर उड़ा दूंगा! क्या तुम दोनों को पता है कि तुम दोनों मेरे जैसा मर्द पाकर कितनी खुशकिस्मत हो, जो खुद शैतान से भी नहीं डरता?'

उसने नीचे ज़मीन पर देखा और ग़ौर किया कि अज़ीज़ा उसके पैरों के पास है। 'मेरे पैरों के पास से दफा हो जाओ!' उसने बंदूक से जाने का इशारा करते हुए झिड़क कर कहा। 'मेरे पीछे आना बंद करो! और तुम अपनी कलाइयां उस तरह घुमाना भी बंद कर दो। मैं तुम्हें उठाने नहीं जा रहा। चली जाओ! चली जाओ इससे पहले कि मैं तुम्हें पांवों से दबा दूं।'

अज़ीज़ा घबरा कर पीछे हट गई। रेंगती हुई वो मरियम के पास लौट आई। वो आहत और भ्रमित दिख रही थी। मरियम की गोद में वो अपना अंगूठा खुशी के साथ चूसने लगी और रशीद को बुरा मुंह बनाते हुए चिंता के साथ देखने लगी। कभी कभी वो ऊपर भी देख लेती, ऐसा मरियम ने सोचा, मानो वो भरोसा कर लेना चाहती हो।

लेकिन जब बात अब्बाओं की हो, तो मरियम के पास दिलाने के लिए कोई भरोसा नहीं था।

जब लड़ाई फिर से हल्की पड़ी तो मरियम को राहत मिली। ज़्यादातर तो इसलिए कि उन्हें अब और रशीद के साथ बंद रहना नहीं पड़ेगा, जिसकी बदमिज़ाजी पूरे घर पर छाई रहती थी। और उसने अज़ीज़ा के आसपास भरी हुई बंदूक लहरा-लहरा कर उसे डरा दिया था।

उसी सर्दियों के एक़ दिन लैला ने मरियम से उसके बालों की चोटियां गूंथने के बारे में पूछा।

मरियम चुपचाप बैठी हुई शीशे में लैला की पतली उंगलियों को उसके बालों की तहें बनाते देखती रही। एकाग्र लैला ने चेहरा सिकोड़ लिया था। अज़ीज़ा फ़र्श पर मुड़ी हुई सो रही थी। उसने अपने हाथों में एक गुड़िया दबा रखी थी, जिसे मरियम ने उसके लिए सिला था। उसमें मरियम ने फलियां भरी थीं और चाय की रंगत वाले कपड़े से उसे बनाया था जिसमें उसने धागों की एक चरखी वाले नेकलेस में तार लगा कर सिला था।

तभी अज़ीज़ा ने सोते हुए हवा छोड़ी। लैला हंसने लगी और मरियम भी इसमें शामिल हो गई। वो शीशे में दिखते एक दूसरे के प्रतिबिंब को देखते हुए हंसते रहे और उनकी आंखों में पानी भर आया। यह पल इतना स्वाभाविक, इतना सहज था कि एकाएक मरियम लैला को जलील, नाना और जिन के बारे में बताने लगी। लैला मरियम के कंधों पर हाथ रखे चुपचाप खड़ी शीशे में मरियम के चेहरे पर नज़रें गड़ाए रही। शब्द झड़ते रहे, जैसे नस से ख़ून निकल रहा हो। मरियम ने उसे बीबी जो, मुल्ला फैजुल्ला, जलील के घर तक के अपमानजनक सफ़र और नाना की खुदकुशी के बारे में बताया। उसने जलील की बीवियों के बारे में बताया और रशीद से अपने हड़बड़ी में करा दिए गए निकाह के बारे में बताया। काबुल का उसका सफ़र, गर्भ ठहरना, उम्मीदों और निराशाओं का अंतहीन सिलसिला और फिर रशीद का उससे मुंह फेर लेना।

बाद में, लैला मरियम की कुर्सी के पाए के पास बैठी थी। खोई हुई-सी उसने अज़ीज़ा के बालों में अटके हुए एक धागे के टुकड़े को हटाया। चुप्पी छा गई।

'मुझे भी आपसे कुछ बताना है,' लैला ने कहा।

उस रात मरियम सो नहीं सकी। बिस्तर में बैठी हुई वो बर्फ़ को चुपचाप गिरते हुए देखती रही।

मौसम आए और गए, काबुल में सदरों ने गद्दी संभाली और कत्ल किए गए, एक साम्राज्य हरा दिया गया, पुरानी जंगें ख़त्म हुईं और नई शुरू हुईं। लेकिन मरियम ने मुश्किल से ही इन पर ग़ौर किया होगा, इसकी परवाह की होगी। उसने इन बर्सों को अपने दिमाग के किसी दूर-दराज कोने में धकेल

दिया था। एक सूखी, पथरीली ज़मीन, चाहतों और अरमान से परे, सपनों और भ्रमों से परे। वहां भविष्य मायने नहीं रखता। और गुज़रे हुए दौर के बारे में भी यह समझ बनती है: वो मुहब्बत एक नुकसानदेह गलती थी, और इसकी मददगार, उम्मीद एक धोखे से भरा हुआ वहम था। और जब भी ये दोनों ज़हरीले फूल उस ज़मीन के सूखे हुए टुकड़े पर खिल उठे, मरियम ने उन्हें जड़ से उखाड़ दिया। उसने जड़ से उखाड़ दिया और फिर से जड़ जमाने से पहले ही उनको अलग कर दिया था।

लेकिन किसी तरह, इन पिछले महीनों में, लैला और अज़ीज़ा—पता चला कि वो उसकी की तरह एक हरामी थी—मरियम का ही एक विस्तार हो गए थे और अब उनके बिना मरियम जिस ज़िंदगी को बर्दाश्त करती आई थी, वो नाकाबिले बर्दाश्त लग रही थी।

हम इस वसंत में जा रहे हैं, अज़ीज़ा और मैं। हमारे साथ चलिए मरियम।

गुज़रे हुए बरस मरियम के लिए रहमदिल नहीं रहे थे। उसने सोचा कि लेकिन शायद रहमदिल बरस उसका इंतज़ार कर रहे थे। एक नई ज़िंदगी, एक ऐसी ज़िंदगी जिसमें वो ऐसी सौगात हासिल कर पाएगी जिनके बारे में नाना कहती थीं कि उसकी जैसी हरामी को वो कभी नहीं मिलेगी। उसकी ज़िंदगी में दो नए फूल अप्रत्याशित तौर से खिल उठे थे और बर्फ़ को गिरती हुई देखती मरियम को तस्बीह घुमाते मुल्ला फ़ैज़ुल्ला का ख्याल आया। वो झुके हुए, मद्धिम आवाज़ में उससे कह रहे थे, लेकिन खुदा ने ही उन्हें रोपा है, मरियम जो। और यह उसी की ख्वाहिश है कि तुम उनकी देखभाल करो। यह उसकी ख्वाहिश है, मेरी बच्ची।

छत्तीस

लैला

1994 के उस बसंत की सुबह को जब सुबह की रोशनी ने आसमान से अंधेरे को धो-पोंछ दिया था, लैला को यकीन हो चला था कि रशीद को पता था कि अब किसी भी पल वो उसे बिस्तर से खींच कर पूछेगा कि क्या वो सचमुच उसे एक गधा समझती थी कि वो यह बात पता नहीं कर लेगा? लेकिन अज़ान हुई और सुबह का सूरज छतों पर चढ़ने लगा और मुर्गे बोलने लगे थे और कोई भी गैर मामूली बात नहीं हुई।

वो अब नहाने के कमरे में उसकी आवाज़ें सुन सकती थी, वो बेसिन के किनारे पर अपना रेज़र ठकठका रहा था। इसके बाद वो नीचे टहलते हुए चाय गर्म कर रहा था। अब वो आंगन पार कर रहा था और फिर साइकिल ले कर जा रहा था।

लैला ने बैठक के पर्दों की एक दरार में से झांका। उसने उसे साइकिल के पैडल मारते हुए दूर जाते देखा, एक बड़ा सा आदमी एक छोटी सी साइकिल पर, जिसके हैंडलों पर सुबह की धूप चमक रही थी।

"लैला?"

मरियम दरवाज़े में थी। लैला बता सकती थी कि मरियम भी नहीं सोई थी। उसे जानने का मन किया कि क्या मरियम पर भी रात भर उत्तेजना और मुंह सुखा देने वाली बेचैनी छाई रही थी।

'हम आधे घंटे में चल देंगे,' लैला ने कहा।

टैक्सी की पिछली सीट पर बैठे हुए उन्होंने कोई बातचीत नहीं कर रही थीं। अजीज़ा मरियम की गोद में थी और अपनी गुड़िया को पकड़े हुए वो तेज़ी से पीछे छूटते शहर को उलझन भरी फैली आंखों से देख रही थी।

'ओना!' वो रस्सियां कूदती लड़कियों के एक झुंड की ओर दिखाते हुए चिल्लाई। 'मायाम! ओना!'

लैला जिधर भी देखती, उसे रशीद दिखाई देता। उसे वो कोयले की धूल की रंगत वाली खिड़कियों वाले हज्जाम की दुकान से निकलता दिखाई दिया, खिचड़ी बेचने वाली छोटी दुकानों से, टूटे-फूटे खुले दरवाज़ों वाले स्टोरों से जिनमें पुराने टायर फ़र्श से लेकर छत कर भरे हुए थे।

वे अपनी सीट पर नीचे धंस गई। उसकी बग़ल में मरियम दुआ पढ़ रही थी। लैला की इच्छा हुई कि वो उसका चेहरा देख सकती। लेकिन मरियम बुर्के में थी-उन दोनों ने ही बुर्का पहन रखा था—और वो बस जाली में से उसकी आंखों की चमक ही देख सकती थी।

अगर पिछले दिन रेहन रखनें वाली दुकान तक के छोटे से सफ़र को छोड़ दें तो कई हफ़्तों में पहली बार लैला घर से निकली थी। वहां अपनी शादी की अंगूठी शीशे के काउंटर पर रखते हुए जानती थी कि लौटने का कोई रास्ता नहीं है। वो उस घड़ी की निर्णयात्मकता से रोमांचित थी।

लैला अब अपने चारों तरफ़ उस लड़ाई के नतीजे देख रखी थी, जिसकी आवाज़ें वो अपने घर में से सुनती थी। बिना छतों वाले घर ईंट के खंडहरों और नुकीले पत्थरों के मलबे के रूप में खड़े थे। टूटी हुई इमारतों में से गिरी हुई शहतीरें छेदों में से झांक रही थीं, जले हुए, कटे-फटे कारों के चदरे, उल्टे और कभी-कभी एक दूसरे के ऊपर लदे हुए थें, दीवारों में हरेक कल्पनीय गोले के छेद थे, हर कहीं शीशे के टुकड़े बिखरे पड़े थे। उसने एक मस्जिद की तरफ़ जाती मय्यत को देखा, उसके पीछे चलनेवाली काले कपड़ों में लिपटी औरतें अपने बाल नोच रही थीं। वो एक कब्रिस्तान से होकर गुज़रे जहां पत्थरों के ढेर वाली कब्रें और हवा में फड़फड़ाते शहीद परचम के टुकड़े थे।

लैला ने सूटकेस के पार हाथ बढ़ाया और अपनी बेटी के हाथ की नर्मी के गिर्द उंगलियां लपेट दीं।

पुरानी काबुल के पोन महम्मद खान के पास लाहौर गेट बस स्टेशन पर पटरी के सटी हुई बसों की एक कतार खड़ी थी। पगड़ी बांधे हुए मर्द बस की छतों पर गठरियां और पेटियां चढ़ा रहे थे और रस्सियां बांध कर सूटकेसों को महफ़ूज़ कर रहे थे। स्टेशन के भीतर मर्द टिकट बूथ के पास एक लंबी कतार लगा कर खड़े थे। बुर्के में लिपटी औरतें झुंडों में खड़ी बातें कर रही थीं। उनका सामान उनके पैरों के पास जमा था। बच्चे उछल-कूद कर रहे थे और थोड़े बड़े बच्चों को ज़्यादा दूर जाने पर डांट पड़ रही थी।

मुजाहिदीन मिलीशिया मेन स्टेशन और पटरी के किनारे गश्त कर रहे थे, रुखाई से यहां-वहां कुछ चिल्ला रहे थे। उन्होंने बूट, पकोल और धूल भरी हरी वर्दी पहन रखी थी। उन सबने कलाश्निकोव ले रखे थे।

लैला को लगा कि उसे देखा जा रहा है। उसने किसी का चेहरा नहीं देखा, लेकिन उसे महसूस हो रहा था कि वहां मौजूद हरेक आदमी यह जानता था, कि लैला और मरियम जो कर रही थीं उसे वो अस्वीकृति के साथ देख रहे थे।

'आपने किसी को देखा?' लैला ने पूछा।

मरियम ने अज़ीज़ा को दूसरे हाथ में लिया। 'मैं देख रही हूं।'

लैला जानती थी कि यह पहला जोखिम भरा हिस्सा है, जिसके तहत एक ऐसे मर्द की तलाश करनी थी जिसके साथ खड़े होकर एक पारिवारिक सदस्य होने का भ्रम पैदा किया सके। 1978 से लेकर 1992 के बीच औरतों को जो आज़ादी और मौक़े मिले थे वो अब गुज़री हुई बातें हो चुके थे—लैला अब भी बाबी को कम्युनिस्ट हुकूमत के उन बरसों के बारे में बताते हुए याद कर सकती थी, अफ़ग़ानिस्तान में औरत होने के लिहाज से यह अच्छा वक़्त है, लैला। अप्रैल, 1992 में जब से मुजाहिदीनों ने हुकूमत संभाली है, अफ़ग़ानिस्तान का नाम बदल कर इस्लामिक स्टेट ऑफ अफ़ग़ानिस्तान हो गया है। रब्बानी के मातहत सुप्रीम कोर्ट कट्टरपंथी मुल्लाओं से भरा पड़ा है, जिन्होंने कम्युनिस्टों के दौर के उन फरमानों को रद्द कर दिया है जिनमें महिलाओं को ताकत दी गई थी और उसकी जगह पर सख़्त इस्लामी कानून शरिया पर आधारित नियम लागू किए हैं, जिनमें औरतों को पर्दे में रहने को कहा गया है और बिना मर्द रिश्तेदार के सफ़र करने की मनाही की गई है और नाजायज़ शारीरिक रिश्तों के लिए पत्थर से मारने की सज़ा का प्रावधान है। तब भी अगर इन कानूनों

को छिटपुट तरीके से लागू किया जा रहा है, लैला का कहना था कि वो इसे हम पर अधिक सख़्ती से लागू करते अगर वो आपस में एक दूसरे को और हमें मारने में मसरूफ नहीं होते।

इस सफ़र का दूसरा सबसे जोखिम भरा हिस्सा तब आता जब वो वास्तव में पाकिस्तान पहुंच जाते। पहले से ही बीस लाख अफ़ग़ानी शरणार्थियों का बोझ उठा रहे पाकिस्तान ने उस साल जनवरी में अफगानियों के लिए अपनी सरहदें बंद कर दी थीं। लैला ने सुना था कि जिनके पास वीज़ा होगा, सिर्फ़ उन्हीं को मंज़ूरी मिलेगी। लेकिन हमेशा की तरह सरहद को कई तरीको से पार किया जा सकता था, और लैला जानती थी कि हज़ारों अफ़ग़ानी अब भी पाकिस्तान में रिश्वत देकर या इनसानी बुनियादों पर पाकिस्तान में दाख़िल हो रहे हैं। और फिर तस्कर भी थे, जिनको भाड़े पर लिया जा सकता था। मरियम को उसने बताया था कि जब हम पहुंच जाएंगे तो हम उपाय खोज लेंगे।

'उसके बारे में क्या ख्याल है?' मरियम ने अपनी ठोढ़ी से इशारा किया।

'वो भरोसे के लायक नहीं लग रहा है।'

'और वो?'

'बहुत बूढ़ा है। और वो दो और मर्दों के साथ सफ़र कर रहा है।'

आख़िरकार लैला को वो बाहर एक पार्क में बेंच पर बैठा हुआ मिला। उसके साथ बगल में बैठी एक नकाबपोश औरत और टोपी पहने एक छोटा-सा लड़का था, जिसकी उम्र अज़ीज़ा जितनी होगी। वो उसके घुटनों पर उछल रहा था। वो लंबा और दुबला था, उसकी दाढ़ी थी और उसने खुले कॉलर की कमीज और हल्के स्याह रंग का कोट पहन रखा था, जिसके बटन गायब थे।

'यहीं रुकिए,' उसने मरियम से कहा। दूर जाते हुए उसने सुना कि मरियम अब भी दुआ बुदबुदा रही थी।

जब लैला उस नौजवान के पास पहुंची तो उसने सिर उठाया और धूप से बचने के लिए आंखों पर हथेली की ओट कर ली।

'माफ़ कीजिएगा, भाईजान, लेकिन क्या आप पेशावर जा रहे हैं?'

'हां,' उसने अधखुली आंखों से देखते हुए कहा।

'मैं जानना चाह रही थी कि क्या आप हमारी मदद करेंगे। क्या आप हमारा एक काम कर देंगे?'

उसने लड़के को अपनी बीवी के हवाले किया। वो और लैला कुछ क़दम आगे बढ़ आए।

'क्या बात है हमशीरा?'

उस नौजवान की नर्म आंखें और मेहरबान चेहरा देख कर लैला का हौसला बढ़ा।

उसने उसे वो कहानी सुनाई जिसपर वो और मरियम राज़ी हुई थीं। उसने कहा कि वो एक बेवा थी। वो और उसकी अम्मी और बेटी का काबुल में कोई नहीं बचा था। वो अपने चाचा के साथ रहने के लिए पेशावर जा रही थीं।

'आप मेरे परिवार के साथ चलना चाहती हैं,' नौजवान ने कहा।

'मैं जानती हूं कि ये आपके लिए एक ज़हमत है। लेकिन आप एक अलग बिरादर दिखे और मैं-'

'फिक्र मत कीजिए। यह तो सवाब का काम है। ख़ुदा याद रखेगा।'

लैला ने बुर्के के भीतर जेब से एक लिफाफा निकाला और उसे थमा दिया। उसमें ग्यारह अफ़ग़ानी थे। उसने पिछले साल जितनी रकम जोड़ी थी और अंगूठी बेच कर जो रकम हासिल की थी, यह उसकी आधी रकम था। नौजवान ने अपनी पतलून की जेब में लिफाफा रख लिया।

'यहीं रुकिए।'

उसने नौजवान को स्टेशन में दाख़िल होते देखा। वो आधे घंटे के बाद लौटा।

'बेहतर यही रहेगा कि आपके टिकट मैं रखूं,' उसने कहा। 'बस घंटे भर में, ग्यारह बजे निकलनी है। हम सब उस पर साथ सवार होंगे। मेरा नाम वकील है। अगर वो पूछें—हालांकि उन्हें पूछना तो नहीं चाहिए—मैं उनको बता दूंगा कि आप मेरी चचेरी बहन हैं।'

लैला ने उसे अपने नाम बताए और उसने कहा कि वो उन्हें याद रखेगा।

'करीब ही रहिए,' उसने कहा।

वो वकील और उसके परिवार के पास वाली बेंच पर बैठे। यह धूप से चमकती हुई गर्म दोपहर थी। आसमान में दूर पहाड़ों के ऊपर कुछेक हल्के बादल मंडरा रहे थे। मरियम अज़ीज़ा को कुछ पतले बिस्कुट खिलाने लगी जो वो सामान बांधने की हड़बड़ी के बीच याद से साथ लेती आई थी। उसने लैला

को भी बिस्कुट पेश किए।

'मैं उल्टी कर दूंगी,' लैला हंसी। 'मैं इतनी उत्तेजित हूं।'

'मैं भी।'

'शुक्रिया मरियम।'

'किसलिए।'

'इसके लिए। हमारे साथ आने के लिए,' लैला ने कहा। 'मुझे नहीं लगता कि मैं अकेले यह कर पाती।'

'तुम्हें अकेले करना ही नहीं होता।'

'सब ठीक हो जाएगा, है न। मरियम, हम कहां जा रहे हैं?'

मरियम का हाथ बेंच की दूसरी तरफ़ गया और उसने लैला के हाथ थाम लिए। 'क़ुरान कहता है कि अल्लाह ही पूरब है और पश्चिम है, इसलिए तुम जिधर रुख करो, उधर ही अल्लाह का मकसद है।'

'बोव!' अज़ीज़ा बस को दिखाते हुए चिल्लाई। 'मयम, बोव!'

'देखती हूं अज़ीज़ा जो,' मरियम ने कहा। 'सही है, बोव। जल्दी ही हम एक बस पर सवार होंगे। ओह, कैसी चीज़ें तुम देखनेवाली हो।'

लैला मुस्कुराई। उसने सड़क की दूसरी तरफ़ एक बढ़ई को अपनी दुकान में लकड़ी काटते और उसके टुकड़े उछलते हुए देखा। उसने तेज़ी से भागती कारों को देखा, जिनकी खिड़कियों पर कालिख और मनहूसियत पुती हुई थी। उसे पटरी से लगी बसों को खड़ी-खड़ी गुर्राते देखा। उनकी बग़लों में मोर, शेर, उगते हुए सूरज और चमकदार तलवारें पेंट की गई थीं।

सुबह की धूप की गर्माहट में लैला ने खुद चंचल और निडर महसूस किया। उस पर उत्तेजना का एक और छोटा सा दौरा पड़ा और जब पीली आंखों वाला एक आवारा कुत्ता लंगड़ाते हुए पास आया तो आगे झुकी और उसे थपथपाया।

ग्यारह से कुछ मिनट पहले एक छोटे से लाउडस्पीकर वाले आदमी ने पेशावर जाने वाली सवारियों को बैठने के लिए बुलाया। बस के दरवाज़े भारी हिस्स की आवाज़ के साथ खुले। सवारियों का एक जुलूस उसकी तरफ़ बढ़ा और सब एक दूसरे को धक्का देते हुए आगे बढ़ने की कोशिश कर रहे थे।

वकील ने अपने बेटे को उठाते हुए लैला को इशारा किया।

'हम जा रहे हैं,' लैला ने कहा।

वकील आगे आगे चला। बस तक पहुंच कर लैला को खिड़की में दबते नाक और हथेलियां दिखाई दिए। उनके चारों तरफ़ विदाइयों की चीख़-पुकार थी।

बस के दरवाज़े पर एक नौजवान मिलीशिया टिकट जांच रहा था।

'बोब!' अज़ीज़ा चिल्लाई।

वकील ने फौजी को टिकट दिए, जिसने आधे टिकट फाड़ कर लौटा दिया। वकील ने पहले अपनी बीवी को सवार होने दिया। लैला वकील और मिलीशियामैन के बीच से गुज़री। वकील ने पहला पांव बस पर रखा और मिलीशियावाले के कान में कुछ कहने के लिए झुका। मिलीशियावाले ने सिर हिलाया।

लैला का दिल बैठ गया।

'बच्चे के साथ आप दोनों बग़ल में आ जाइए,' फौजी ने कहा।

लैला ने नहीं सुनने का बहाना किया। वो ऊपर चढ़ना चाहती थी लेकिन फौजी ने उसे पीछे से पकड़ लिया और उसे रुखाई से कतार से बाहर कर दिया। 'आप भी,' उसने मरियम से कहा। 'जल्दी! आप लोग लोगों का रास्ता रोक रहे हैं।'

'क्या परेशानी है बिरादर?' लैला ने सुन्न पड़े होंठों से कहा। 'हमारे पास टिकट हैं। क्या मेरे भाई ने आपको टिकट नहीं दिए?'

उसने अपनी उंगली से चुप रहने का इशारा किया और एक दूसरे गार्ड से धीमी आवाज़ में बात की। दूसरे गार्ड ने सिर हिलाया। वो एक गोल-मटोल आदमी थी और उसके दाहिने गाल पर एक कटे का निशान था।

'मेरे साथ आइए,' उसने लैला से कहा।

'हमें इस बस पर सवार होना है,' लैला चिल्लाई। वो जानती थी कि उसकी आवाज़ कांप रही है। 'हमारे पास टिकट है। आप हमारे साथ ऐसा क्यों कर रहे हैं?'

'आप लोग इस बस से नहीं जा रहे हैं। आपको शायद इसे कबूल कर लेना चाहिए। आप मेरे साथ आएंगे। अगर आप नहीं चाहते कि आपकी यह नन्ही लड़की आपको घसीटे जाते हुए देखे।'

जब उनको ट्रक की तरफ़ ले जाया जा रहा था, लैला ने मुड़ कर पीछे देखा। उसे बस के पीछे वकील का बेटा दिखा। लड़के ने भी उसे देखा और ख़ुश होकर हाथ हिलाया।

⁂

तोरबाज़ खान चौराहा पुलिस थाने में उनको एक लंबे, भरे हुए गलियारे के दोनों सिरों पर अलग अलग बिठाया गया। उनके बीच में एक डेस्क थी, जिसके पीछे एक एक के बाद एक सिगरेटें पी रहा एक आदमी बैठा टाइपराइटर खटखटा रहा था। इसी तरह तीन घंटे बीत गए। अज़ीज़ा डगमगाते हुए लैला से मरियम तक गई और फिर लौट आई। वो एक काग़ज़ के क्लिप से भी खेली, जिसे डेस्क वाले आदमी ने उसे दिया। उसने बिस्कुट ख़त्म कर दिया। आख़िरकार वो मरियम की गोद में सो गई।

करीब तीन बजे लैला को एक इंटरव्यू रूम में ले जाया गया। मरियम को गलियारे में ही अज़ीज़ा के साथ इंतज़ार करने को कहा गया।

इंटरव्यू रूम में डेस्क की दूसरी तरफ़ बैठा आदमी तीस के करीब का होगा और उसने सादी पोशाक पहन रखी थी—काला सूट, टाई, काले जूते। उसकी दाढ़ी साफ़-सुथरी कतरी हुई थी और उसकी भौंहें मिल रही थीं। डेस्क पर पेंसिल के रबर वाले सिरे को पटकता हुआ वो लैला को घूर रहा था।

'हम जानते हैं,' गला साफ़ करते हुए और नर्मी से हथेली से मुंह ढंकते हुए उसने कहा, 'कि आप आज पहले ही एक झूठ बोल चुकी हैं, हमशीरा। स्टेशन वाला वो नौजवान आपका रिश्ते का भाई नहीं था। ये बात उसने खुद हमें बताई है। सवाल ये है क्या आप आज और झूठ बोलेंगी। निजी तौर पर मैं आपको इसकी उल्टी सलाह दूंगा।'

'हम अपने चाचा के पास रहने जा रहे थे,' लैला ने कहा। 'यह सच है।'

पुलिसवाले ने सिर हिलाया। 'गलियारे में बैठीं वो हमशीरा, आपकी अम्मी हैं?'

'हां।'

'उनके बोलने में हेराती लहजा है। आपमें नहीं।'

'वो हेरात में पहली बढ़ी हैं, मैं यहीं काबुल में पैदा हुई।'

'बेशक। और आप बेवा हैं? आपने कहा कि आप थीं। मेरी हमदर्दी आपके साथ है। और ये चाचा, ये काका, वे कहां रहते हैं?'

'पेशावर में।'

'हां, आपने यह बताया था।' उसने पेंसिल की नोक छूकर उसे एक सादे काग़ज़ पर टिकाया। 'लेकिन पेशावर में कहां? किस मुहल्ले में, मेहरबानी होगी? सड़क नंबर, सेक्टर नंबर।'

लैला ने अपने सीने में उठती हौल को दबाने के कोशिश की। उसने पेशावर की उस अकेली सड़क का नाम बता दिया, जो उसे पता था—जमरूद रोड। इस नाम का ज़िक्र उसने तब सुना था, जब उसकी मम्मी ने मुजाहिदीनों के पहली बार काबुल आने पर दावत दी थी।

'ओह, हां। वही सड़क, और पर्ल कॉन्टिनेंटल होटल। शायद उसने इसका ज़िक्र किया था।'

लैला ने हाथ आए मौक़े को पकड़ा और बोल पड़ी, 'ठीक वही सड़क, हां।'

'फ़र्क़ बस ये है कि होटल खैबर रोड पर है।'

लैला को गलियारे में अज़ीज़ा का रोना सुनाई पड़ा। 'मेरी बेटी डर गई है। शायद मैं उसे ले आऊं बिरादर?'

'मैं 'अफसर' सुनना पसंद करूंगा। और आप यहां उसके साथ फौरन लौटिए, क्या आपके पास इन चचा का कोई टेलीफोन नंबर है?'

'मेरे पास है। मेरे पास था। मैं...' उनके बीच में बुर्का था, इसके बावजूद लैला उसकी बेधती हुई आंखों से महफ़ूज़ नहीं थी। 'मैं इतनी परेशान हूं कि लगता है कि मैं यह भूल गई हूं।'

आदमी ने नाक से गहरी सांस ली। उसने चाचा का नाम और उनकी बीवी का नाम पूछा। उनके कितने बच्चे थे? उनके नाम क्या थे? वो कहां काम करते थे? चाचा की उम्र क्या था? उसके सवालों से लैला घबरा गई।

उसने अपनी पेंसिल रख दी, उंगलियां आपस में बांध लीं और इस तरह आगे झुक आया, जिस तरह मां-बाप अपने छोटे बच्चों को कुछ कहने के लिए झुकते हैं। 'आप समझ लीजिए हमशीरा, कि एक औरत का भागना एक जुर्म है। हमने ढेरों मामले देखे हैं। औरतों का अकेले सफ़र करना और यह दावा करना कि उनके शौहर मर चुके हैं। कभी-कभी वो सच बोल रही होती हैं, लेकिन ज़्यादातर नहीं। आपको भागने के लिए कैद किया जा सकता है और मेरा अंदाज़ा है कि आप यह समझती हैं, है ना?'

'हमें जाने दीजिए, अफसर...' उसने उसकी वर्दी में लगी पट्टी पर उसका

नाम पढ़ा। 'अफसर रहमान। अपने नाम के मतलब की इज़्ज़त रखिए और रहमदिली दिखाइए। महज दो औरतों को जाने देना आपके लिए क्या मायने रखता है? हमें छोड़ देने में क्या नुक्सान है? हम मुजरिम नहीं हैं।'

'मैं नहीं कर सकता।'

'मैं भीख मांगती हूं, मेहरबानी कीजिए।'

'यह कानून का मामला है, हमशीरा,' रहमान ने अपनी आवाज़ में गंभीरता और खुद को अहमियत देने वाला अंदाज़ लाते हुए कहा। 'यह मेरी जिम्मेवारी है कि मैं सबकुछ दुरूस्त रखूं।'

बावजूद इसके कि लैला घबराई हुई हालत में थी, वो करीब-करीब हंस देती। वो हैरान थी कि मुजाहिदीन जो कर रहे थे, उसके सामने अफसर ने इस शब्द का इस्तेमाल किया—हत्याएं, लूट, बलात्कार, यातनाएं, फांसियां, बमबारी, एक दूसरे पर वो दसियों हज़ार टन रॉकेट दाग चुके थे और उन मासूम लोगों से बेपरवाह थे कि जो उनकी आपसी गोलीबारी में मारे जाएंगे। इंतज़ाम। लेकिन उसने अपनी जीभ काट ली।

'अगर आप हमें वापस भेज देंगे,' उसने धीरे से आग्रह किया, 'तो वो हमारे साथ क्या करेगा ये कहा नहीं जा सकता।'

लैला ने देखा कि अफसर को अपनी आंखें फेरने के लिए कोशिश करनी पड़ी। 'एक मर्द अपने घर में क्या करता है, ये उसका अपना मामला है।'

'तब कानून का क्या मतलब है अफसर रहमान?' गुस्से के आंसू उसकी आंखों में चुभने लगे। 'क्या आप वहां कायदा बनाए रखने के लिए वहां होंगे?'

'नीति के मुताबिक हम परिवार के निजी मामलों में दखलअंदाज़ी नहीं करते हैं, हमशीरा।'

'बेशक आप नहीं करते हैं। जब इससे मर्द को फायदा होता है। और क्या यही वो 'परिवार का निजी मामला' नहीं है, जैसा कि आप कहते हैं? है कि नहीं?'

डेस्क पर से पीछे हटते हुए वो उठा। उसने अपनी जैकेट सीधी की। 'मुझे यकीन है कि यह इंटरव्यू ख़त्म हो गया है। मुझे कहना ही होगा हमशीरा कि आपने अपनी कमज़ोर हिमायत की है। बहुत ही कमज़ोर, असल में। अब अगर आप बाहर इंतज़ार करें तो आपकी...वो जो भी हों, उनसे मैं दो बातें कर लूंगा।'

लैला ने इस पर विरोध किया, फिर चिल्लाई और अफसर को उसे अपने दफ्तर से घसीट कर निकालने में मदद करने के लिए दो लोगों को बुलाना पड़ा।

मरियम का इंटरव्यू बस कुछ मिनटों तक ही चला। जब वो बाहर निकली, तो वो विचलित लग रही थी।

'उसने इतने सारे सवाल किए,' वो बोली। 'मुझे दुख है, लैला जो। मैं तुम्हारी जितनी होशियार नहीं हूं। उसने इतने सारे सवाल किए। मुझे जवाब पता नहीं थे। मुझे दुख है।'

'इसमें आपका कसूर नहीं है, मरियम,' लैला ने कमज़ोर आवाज़ में कहा। 'यह मेरी ग़लती है। पूरी ग़लती मेरी है। हर चीज़ मेरी ग़लती है।'

छह बज चुके थे जब पुलिस की गाड़ी घर के बाहर रुकी। लैला और मरियम को पिछली सीट पर इंतज़ार करने को कहा गया, जिनकी पहरेदारी सवारी सीट पर बैठा एक मुजाहिद फौजी कर रहा था। गाड़ी से ड्राइवर उतरा और उसने दरवाज़ा खटखटाया और रशीद से बात की। उसी ने उन दोनों को आने का इशारा किया।

'घर पर आपका खुशआमदीद,' अगली सीट पर बैठे आदमी ने सिगरेट जलाते हुए कहा।

'तुम,' उसने मरियम को कहा। 'तुम यहीं रुको।'

मरियम चुपचाप पलंग पर बैठ गई।

'तुम दोनों ऊपर चलो।'

रशीद ने लैला को कुहनियों से पकड़ा और उसे धक्का देते हुए सीढ़ियां चढ़ने लगा। वो अब भी वही काम पर जाने वाले जूते पहने हुए थे। उसने अभी तक घर पर पहनी जानेवाली फीतों वाली चप्पल नहीं पहनी थी और न घड़ी उतारी थी, न ही उसने अपना कोट ही उतारा था। लैला ने कल्पना की कि घंटा भर पहले, या शायद कुछ मिनटों पहले वो एक कमरे से दूसरे में भाग रहा होगा, दरवाज़े पटक कर बंद कर रहा होगा, गुस्से और गैर यकीनी में होंठों ही होंठों में कोस रहा होगा।

ऊपर पहुंच कर लैला उसकी तरफ़ मुड़ी।

'वो यह नहीं करना चाहती थीं,' उसने कहा। 'मैंने ही उनको करने के

लिए कहा। वो नहीं जाना चाहती थीं-'

लैला अपनी तरफ़ आते मुक्के को न देख सकी। एक पल वो बोल रही थी और अगले ही पल वो चारों खाने चित्त पड़ी थी—आंखें फैली हुई, चेहरा लाल और सांस खींचने की कोशिश करती हुई। यह ऐसा था मानो भरपूर गति से आ रही एक कार ने उसे पसलियों और नाभी के बीच की नाजुक जगह में टक्कर मार दी हो। उसे समझ में आया कि अज़ीज़ा उससे गिर गई थी और चिल्ला रही थी। उसने फिर से सांस लेने की कोशिश की और एक भारी, घुटी हुई आवाज़ निकल कर रह गई। उसके मुंह से लार निकल गया।

फिर उसके बाल पकड़ कर उसे घसीटा जा रहा था। उसने अज़ीज़ा को उठाए जाते और उसके चप्पलों को निकाले जाते देखा। उसने देखा कि उसके नन्हें पांवों का घूमना देखा। बाल लैला के सिर से उखड़ रहे थे और उसकी आंखों में दर्द से पानी भर आया था। उसने रशीद को लात मार कर मरियम का दरवाज़ा खोलते और अज़ीज़ा को बिस्तर पर फेंकते देखा। उसने लैला के बाल छोड़ दिए और फिर उसने रशीद के जूते की नोक को अपने बाएं कूल्हे पर महसूस किया। जब उसने धड़ाम से दरवाज़ा बंद किया तो वो दर्द से विलाप कर रही थी। ताले में एक चाबी आवाज़ करती हुई घूमी।

अज़ीज़ा अब भी चीख रही थी। लैला अब भी फर्श पर सिकुड़ी हुई पड़ी हांफ रही थी। हाथों पर ज़ोर डालते हुए वो बिस्तर की तरफ़ रेंगने लगी जहां अज़ीज़ा पड़ी थी। वो अपनी बेटी तक पहुंची।

नीचे पिटाई शुरू हुई। लैला को जो आवाज़ें सुनाई दे रही थीं, वो पुरानी, जानी-पहचानी कार्रवाई थीं। कोई कोसना नहीं, चिल्लाहट नहीं, फरियाद नहीं, हैरानी से भरी हुई कोई चीख नहीं। सिर्फ़ मशीनी तरीके से पिटाई और पिटा जाना, थंप, थंप की आवाज़ जो लोहे जैसी कठोर चीज़ के मांस से लगातार टकराने से निकल रही थी। कुछ, कोई धड़ाम से दीवार से टकराया, कपड़े फटे। तभी लैला ने कदमों के भागने की आवाज़ सुनी, एक बेआवाज़ दौड़, फर्नीचर पलटे, शीशे चूर हुए और फिर से थंप की आवाज़ आने लगी।

लैला ने अज़ीज़ा को बांहों में लिया। अज़ीज़ा ने पेशाब करने से उसके सामने की पोशाक पर गर्माहट पसर गई।

नीचे भागना और पीछा करना आख़िरकार बंद हो गया था। अब ऐसी आवाज़ आ रही थी मानो लकड़ी के डंडे से गाय के गोश्त को लगातार कूटा

जा रहा हो।

आवाज़ें बंद होने तक लैला अज़ीज़ा को हाथों में उठाए रही और जब उसने बाहर के स्क्रीन डोर को चरमरा कर खुलते और धड़ाम से बंद होते सुना तो उसने अज़ीज़ा को नीचे रखा और खिड़की से झांक कर देखा। उसने मरियम की गर्दन पकड़ कर आंगन के पार ले जाते रशीद को देखा। मरियम नंगे पांव थी और दोहरी हो रही थी। उसके हाथों में ख़ून लगा था, उसके चेहरे पर, उसके बालों में, गर्दन के नीचे और पीठ पर ख़ून था। उसकी कमीज़ सामने से फट गई थी।

'मुझे अफसोस है मरियम,' लैला शीशे में चिल्लाई।

उसने उसे मरियम को औज़ारों वाले छप्पर में धकेलते देखा। वो भीतर गया और फिर एक हथौड़े और लकड़ी के कुछ लंबे तख़्ते लेकर आया। उसने छप्पर के दोहरे दरवाज़े बंद कर दिए, अपनी जेब से चाबी निकाली और ताला लगा दिया। उसने दरवाज़ों को परखा, फिर छप्पर के पिछवाड़े गया और एक सीढ़ी उठा आया।

कुछ मिनटों के बाद लैला की खिड़की में उसका चेहरा था और उसके मुंह के कोने में कीलें दबी थीं। उसके बाल बिखरे हुए थे। उसके माथे पर ख़ून की लकीर थी। उसे देखते हुए अज़ीज़ा सिहर गई और उसने लैला की बग़ल में अपना मुंह गड़ा लिया।

रशीद तख़्तों को खिड़की पर ठोंकने लगा।

बस अंधेरा ही था। अथाह और घना अंधेरा, जिसमें कोई परत या रोशनी की फांक नहीं थी। रशीद ने तख़्तों के बीच की दरारों को किसी चीज़ से भर दिया था और दरवाज़े के नीचे कोई बड़ी, स्थिर चीज़ रख दी थी, जिससे उसके नीचे से भी रोशनी नहीं आ सकती थी। चाबी के छेद में भी कुछ भर दिया गया था।

लैला ने पाया कि आंखों के सहारे वक़्त के बारे में पता लगा पाना नामुमकिन है, इसलिए यह काम उसने अपने अच्छे कान की मदद से किया। अज़ान और मुर्गों का बोलना सुबह की निशानी थी। नीचे रसोई में तश्तरियों का खनखनाने और रेडियो के बजने का मतलब शाम होना था।

पहले दिन वो अंधेरे में एक दूसरे को टटोलते, छूते रहे। लैला देख नहीं

सकती थी कि अज़ीज़ा कब रो रही थी, कब वो रेंग रही थी।

'आइशी,' अज़ीज़ा मिनमिना कर कहती। 'आइशी।'

'जल्दी ही।' लैला अपनी बेटी के माथे का अंदाज़ा लगाते हुए उसे चूमती और पाती कि यह उसकी खोपड़ी है। 'जल्दी ही हमारे पास दूध होगा। बस तुम सब्र करो। मम्मी के लिए एक अच्छी, सब्र करने वाली लड़की बनो और मैं तुम्हें आइशी ला दूंगी।'

लैला ने उसके लिए कुछ गीत गाए।

दूसरी बार अज़ान हो चुकी थी और रशीद ने उनको कोई खाना नहीं दिया था और सबसे बदतर यह कि पानी भी नहीं दिया था। उस दिन एक भारी, दमघोंटू गर्मी उन पर हावी थी। कमरा एक प्रेशर कुकर बन गया। लैला बाहर के कुएं और ठंडे-ताज़े पानी के बारे में सोचते हुए अपने सूखी जीभ होंठों पर फिराती। अज़ीज़ा ने रोना जारी रखा और लैला ने परेशानी के साथ ग़ौर किया कि जब वो उसके गालों को पोंछने के लिए उन पर हाथ फिराती तो उसके हाथ सूखे लौटते। उसने अज़ीज़ा के कपड़े निकाल दिए और उसको हवा झलने के लिए कुछ खोजा और आख़िर में उसको फूंकने लगी जब तक कि वो खुद ही अचेत जैसी न हो गई। जल्दी ही अज़ीज़ा ने रेंगना बंद कर दिया। उसे भी नींद के झोंके आने लगे।

उस दिन कई बार लैला ने दीवारों पर मुक्के मारे, मदद के लिए पूरी ताकत से चीखी। वो उम्मीद कर रही थी कि पड़ोसी सुन लेंगे। लेकिन कोई नहीं आया और हुआ केवल यह कि चिल्लाने से अज़ीज़ा डर गई और उसने फिर से रोना शुरू कर दिया। इस बार उसकी कमज़ोर और आवाज़ फटी हुई थी। लैला ज़मीन पर सरक आई। उसने मार खाई हुई और ख़ून से लथपथ मरियम के बारे में कसूरवाराना तरीके से सोचा, जिसे इस गर्मी में औज़ारों के छप्पर में बंद किया गया था।

किसी समय लैला सो गई। उसकी देह गर्मी में तप रही थी। उसने सपना देखा कि वो और अज़ीज़ा तारिक़ की तरफ़ दौड़ रही हैं। वो सड़क के पार एक दर्ज़ी की दुकान के छज्जे के नीचे था। वो रानों के बल बैठा था अंजीर की टोकरियों से नमूने ले रहा था। वो तुम्हारे अब्बा हैं, लैला ने कहा। वहां, वो आदमी, उन्हें देखा तुमने? वो तुम्हारे असली बाबा हैं। उसने उसका नाम लेकर पुकारा लेकिन सड़क के शोरगुल में उसकी आवाज़ डूब गई और तारिक़

सुन नहीं सका।

ऊपर से सरसरा कर गुज़रते रॉकेटों की सीटी से उसकी नींद खुल गई। कहीं आसमान धमाकों से हिल गया, जिसे वो देख नहीं सकती थी, और एक लंबी, पागलपन से भरपूर मशीनगन से गोली चलने की गरज आ रही थी। लैला ने आंखें बंद कर लीं। गलियारे में रशीद के भारी कदमों का आवाज़ से फिर उसकी नींद खुली। वो दरवाज़े तक घिसटती हुई गई और उस पर हथेलियां पीटीं।

'बस एक गिलास राशिद। मेरे लिए नहीं। उसके लिए दे दो। अपने हाथों पर उसका ख़ून मत लगाओ।'

वो चला गया।

वो उससे फरियाद करने लगी। उसने माफ़ कर देने की भीख मांगी, वादे किए। उसे कोसा।

रशीद का दरवाज़ा बंद हो गया। रेडियो चालू हुआ।

मुअज्जिन ने तीसरी बार अजान पुकारा। फिर से गर्मी। अज़ीज़ा और अधिक अचेत हो गई। उसने रोना और हिलना-डुलना बिल्कुल ही बंद कर दिया था।

लैला हर बार डरते हुए अज़ीज़ा के मुंह पर कान लगाती कि उसे उसके सांस लेने की आवाज़ नहीं सुनाई देगी। इसके लिए थोड़ा सा उठने भर से ही सिर घूमने लगता। वो बेहोश हो गई और उसने सपने देखे, जिसे वो याद नहीं कर सकी। जब वो जगी तो उसने अज़ीज़ा को टटोला, उसके सूखे होंठों की दरारों को महसूस किया, उसकी नब्ज़ का फीका पड़ना महसूस किया और फिर से लेट गई। वो यहीं मर जाएंगे, लैला को यकीन हो गया था। उसे डर इस बात का लग रहा था कि अज़ीज़ा उससे पहले मर जाएगी, वो नन्हीं और नाज़ुक जीव थी। वो कितना बर्दाश्त कर पाएगी? इसी गर्मी में अज़ीज़ा मर जाएगी और अज़ीज़ा उसकी अकड़ी हुई नन्हीं देह की बग़ल में लेटी हुई अपनी मौत का इंतज़ार कर रही होगी। फिर से उसे नींद आ गई। जगी। नींद आ गई। सपने और जगे होने के बीच की लकीर धुंधली हो गई।

इस बार उसे मुर्ग या अजान ने नहीं जगाया बल्कि यह किसी भारी चीज़ के घसीटे जाने की आवाज़ थी। उसने खरोंचे जाने की आवाज सुनी। अचानक कमरे में रोशनी भर गई। उसकी आंखें सिकुड़ गईं। लैला ने अपना सिर उठाया,

घबरा कर पीछे हटी और अपनी आंखों पर हाथ से ओट कर ली। अपनी उंगलियों के बीच फांक से उसने एक बड़ी, धुंधली परछाई को रोशनी के चौखटे में खड़ा 2पाया। परछाई हिली। अब एक आकृति उसकी बग़ल में झुक रही थी, उसके ऊपर फैलती हुई उसके कानों में कह रही थी।

'फिर से तुम ऐसा करो और मैं तुमको खोज निकालूंगा। मैं रसूल के नाम की कसम खाकर कहता हूं कि तुम्हें खोज निकालूंगा। और जब मैं खोज निकालूंगा तो जो मैं तुम्हारा करूंगा उस पर मुझे ज़िम्मेवार ठहरा सके, ऐसी कोई अदालत इस अभागे देश में नहीं है। पहले मरियम का और इसके बाद आख़िर में तुम्हारा। मैं तुम्हें दिखाऊंगा। समझीं तुम? मैं तुम्हें दिखा दूंगा।'

और इसी के साथ वो कमरे से चला गया। लेकिन जाने से पहले उसने लैला की पेट में बग़ल से इतने ज़ोर से लात मारी कि अगले कई दिनों तक पेशाब में ख़ून आता रहा।

सैंतीस

मरियम
सितंबर, 1996

ढाई बरस के बाद 27 सितंबर को मरियम एक सुबह उठी तो चिल्लाहट, सीटियों, पटाखों और संगीत की आवाज़ें आ रही थीं। वो बैठक में भागी और पाया कि लैला पहले से ही खिड़की के पास खड़ी है। अज़ीज़ा उसके कंधों पर सवार थी। लैला मुड़ी और मुस्कुराई।

'तालिबान आ गए,' उसने कहा।

मरियम ने पहली बार तालिबान के बारे में दो बरस पहले अक्तूबर, 1994 में तब सुना था, जब रशीद ख़बर लेकर आया था कि उन्होंने कांधार के सेनापतियों को उखाड़ फेंका है और शहर को अपने कब्ज़े में ले लिया है। उसने बताया कि वो गुरिल्ला संगठन था, जो उन पश्तून नौजवानों से मिल कर बना था, जिनके परिवार वाले सोवियत विरोधी जंग के दौरान पाकिस्तान चले गए थे। उनमें से अधिकतर पाकिस्तान से लगी सरहद पर रिफ्यूजी कैंपों में पले-बढ़े थे और उनमें से कइयों का तो जन्म ही वहां हुआ था। वो वहीं के मदरसों में पढ़े थे जहां उनको मुल्लाओं ने शरिया की तालीम दी थी। उनका रहनुमा एक रहस्यमय, अनपढ़, एक आंख वाला एकांतसेवी मुल्ला उमर था जो, रशीद ने मज़ाक में बताया, ख़ुद को अमीर-उल-मोमिनीन यानी सारे ईमानवालों का रहनुमा कहता था।

'सही है कि इन बच्चों की कोई जड़ नहीं है,' रशीद ने कहा। वो ये

बात न तो मरियम से कह रहा था न लैला से। ढाई साल पहले जब उन्होंने भागने की नाकाम कोशिश की थी, तबसे मरियम जानती थी कि रशीद के लिए लैला और मरियम एक जैसी ही थी, उतनी ही अभागी, उसकी ग़ैरयकीनी, नफ़रत और उपेक्षा की बराबर की भागीदार। मरियम ने महसूस किया था कि जब वो बोलता था तो उसका भाव ऐसा होता था कि वो ख़ुद से बोल रहा हो या फिर कमरे में किसी अदृश्य मौजूदगी से बात कर रहा हो जो मरियम और लैला के उलट, उसकी राय के लायक हो।

'हो सकता है कि उनका अतीत न हो,' धुआं उड़ाते हुए छत की ओर देख कर वो बोला। 'हो सकता है कि वो इस दुनिया या देश के इतिहास के बारे में कुछ नहीं जानते हों। हां। और उनके मुकाबले, मरियम किसी यूनिवर्सिटी की प्रोफेसर मालूम पड़ेगी। हा! सच है। लेकिन अपने चारों तरफ़ देखो। क्या दिखता है? भ्रष्ट, लालची मुजाहिदीन कमांडर, हथियारों से लैस, हेरोईन से लदे हुए, एक दूसरे के ख़िलाफ़ जिहाद बोल रहे हैं और बीच में आए हर इन्सान को मार रहे हैं—यह क्या है। कम से कम तालिबान गरीब हैं और वो भ्रष्ट नहीं हो सकते। कम से कम वो भले मुसलिम लड़के हैं। वल्लाह, जब वो आएंगे तो इस जगह को साफ़ कर के रख देंगे। वो अमन और इंतज़ाम लेकर आएंगे। तब दूध लाने जाते लोग गोलियों का शिकार होकर मरेंगे नहीं। तब और रॉकेट नहीं होंगे! सोचो।'

अब दो बरसों में तालिबान काबुल की राह बनाते रहे थे, उन्होंने मुजाहिदीनों से शहर ले लिए और जहां भी उनका कब्ज़ा हुआ, उन्होंने गुटों की आपसी लड़ाई को बंद करा दिया। उन्होंने हज़ारा कमांडर अब्दुल अली मज़ारी को पकड़ कर फांसी दे दी। महीनों से वो काबुल के बाहर दक्षिण में जमे हुए शहर पर गोलियां बरसाते रहे थे और अहमद शाह मसूद के साथ रॉकेटों की जंग लड़ते रहे थे। 1996 के उस सितंबर की शुरुआत में उन्होंने जलालाबाद और सरोबी शहरों पर कब्ज़ा कर लिया था।

रशीद का कहना था कि तालिबानों में एक बात है जो मुजाहिदीनों में नहीं थी। वो एकजुट हैं।

'उन्हें आने दो,' उसने कहा। 'मैं, अकेला, उन पर गुलाब की पंखुड़ियों की बारिश करूंगा।'

उस दिन वो चारों अपनी नई दुनिया और नए रहनुमाओं का स्वागत करने के लिए बाहर गए। रशीद उन्हें एक बस से दूसरी बस में ले गया। मरियम ने देखा कि हरेक तबाह मुहल्ले में लोग मलबों से निकल कर जमा हो रहे और सड़कों पर आ रहे हैं। उसने देखा कि एक बूढ़ी औरत अपने चेहरे पर लटकी हुई, दंतहीन मुस्कान लिए हुए मुट्ठी भर चावल रास्ते से गुज़र रहे लोगों पर उछाल रही है। एक गिरी हुई इमारत के पास दो लोग गले मिल रहे थे। उनके ऊपर आसमान में सीटियां बज रही थीं, लोग फुफकार कर बोल रहे थे और छतों पर बच्चों द्वारा छोड़े गए पटाखे फूट रहे थे। कैसेट डेकों में बज रहा कौमी गीत कारों की सीटियों से होड़ लगा रहा था।

'देखो, मायाम!' अज़ीज़ा ने जादेह मेवांड में दौड़ते बच्चों के एक झुंड की तरफ़ दिखाया। वो हवा में मुक्के मार रहे थे और धागों में बंधे जंग लगे लोहे के डिब्बे घसीट रहे थे। वो चिल्लाते हुए कह रहे थे कि मसूद और रब्बानी काबुल से दफा हो गए हैं।

हर जगह शोर थाः अल्लाह-ओ-अकबर!

मरियम ने जादेह मेवांड पर एक खिड़की से बिछाने वाली चादर को लटकते हुए देखा। उस पर किसी ने तीन बड़े, काले अक्षरों में पेंट कर रखा थाः ज़िंदाबाद तालिबान!

गलियों में चलते हुए मरियम ने यही बात कहते हुए और भी निशान देखे—खिड़कियों पर रंगे हुए, दरवाज़ों पर कीलों से ठोंके हुए, कार के एंटेना पर लगाए हुए।

मरियम ने अपनी ज़िंदगी के पहले तालिबान को उसी दिन, बाद में पश्तूनिस्तान चौक पर देखा। वो लैला, रशीद और अज़ीज़ा के साथ थी। लोगों की एक भीड़ वहां जमा हो गई थी। मरियम ने लोगों को अपनी गर्दनें तानते हुए देखा। लोग चौराहे के बीच में नीले फव्वारे के चारों ओर जमा थे और इसके सूखे तले पर चढ़े हुए थे। वो चौराहे के एक सिरे पर, पुराने खैबर रेस्टोरेंट के पास की एक झलक लेने की कोशिश कर रहे थे।

रशीद ने अपने कद का इस्तेमाल किया और तमाशबीनों को पीछे धकेलते हुए उन लोगों को उस जगह पर ले गया जहां कोई लाउडस्पीकर पर बोल रहा था।

जब अज़ीज़ा ने देखा तो सिहर उठी और अपना चेहरा मरियम के बुर्के में गड़ा लिया।

लाउडस्पीकर पर आ रही आवाज़ एक दुबले, दाढ़ी वाले, नौजवान की थी, जिसने एक काली पगड़ी पहन रखी थी। वो एक जल्दी में बनाए गए मचाननुमा चीज़ पर खड़ा था। अपने खाली हाथ में उसने एक रॉकेट लॉंचर पकड़ रखी थी। उसकी बग़ल में ट्रैफिक लाइट के खंभे में लटकती रस्सियों में ख़ून से लथपथ दो लोग टंगे हुए थे। उनके कपड़े तार-तार हो गए थे। उनके सूजे हुए चेहरे जामुनी-नीले रंग के हो गए थे।

'मैं उसे जानती हूं,' मरियम ने कहा। 'बाईं तरफ़ वाले आदमी को।'

मरियम के आगे की नौजवान औरत पीछे मुड़ी और बोली कि वो नजीबुल्ला था। दूसरा आदमी उसका भाई था, मरियम को नजीबुल्लाह का भरा हुआ, मूंछों वाला चेहरा याद आया, जो सोवियतों के ज़माने में बिलबोर्डों और दुकान की खिड़कियों पर चमकता रहता था।

बाद में उसे यह बात पता लगने वाली थी कि तालिबान नजीबुल्लाह को दारुलअमन पैलेस के करीब संयुक्त राष्ट्र की उसकी पनाहगाह से घसीट कर ले आए थे। उन्होंने उसे घंटों यातनाएं दी थीं, उसके पांवों को एक ट्रक से बांध कर उसकी बेजान देह को घंटों सड़कों पर घसीटते रहे थे।

'उसने अनेक, अनेक मुसलमानों का कत्ल किया था!' नौजवान तालिब लाउडस्पीकर पर चिल्ला रहा था। उसने पश्तो लहजे में फ़ारसी बोली और फिर पश्तो बोलने लगा। अपने हथियार से लाश की तरफ़ इशारा करते हुए उसने शब्द कहे। 'उसके जुर्मों के बारे में सब जानते हैं। वो एक कम्युनिस्ट था और एक काफिर था। बिना ईमान वाले जो लोग इस्लाम के ख़िलाफ़ जुर्म करते हैं उनके साथ हम यही करते हैं!'

रशीद खींसे निपोर रहा था।

मरियम की बांहों में अज़ीज़ा रोने लगी थी।

अगले दिन काबुल में ट्रक ही ट्रक भर गए। खैर खाना में, शारे-नौ में, कारतेह-परवान में, वज़ीर अकबर खान और तैमानी में लाल टोयोटा ट्रक सड़कों पर उड़ते फिर रहे थे। उनकी सीटों पर काली पगड़ी पहने दाढ़ियों वाले लोग बैठे रहते। हरेक ट्रक से एक लाउडस्पीकर शोर करता हुआ पहले फ़ारसी और

और पश्तो में ऐलान कर रहा था। यही पैगाम मस्जिदों के ऊपर लगे लाउडस्पीकरों और रेडियो पर भी बजाया जा रहा था, जिसे अब वॉयस ऑफ शरिया के नाम से जाना जाने लगा था। सड़कों पर बिखेरे गए पर्चों में भी यही पैगाम लिखा हुआ था। ऐसा ही एक पर्चा मरियम को अपने आंगन में मिला।

हमारा वतन अब इस्लामिक अमीरात ऑफ अफ़ग़ानिस्तान के नाम से जाना जाएगा। ये वो कानून हैं, जिनको हम लागू करेंगे और आप उनका पालन करेंगे:

सभी नागरिक पांचों वक़्त की नमाज़ें पढ़ेंगे। अगर वह नमाज़ का वक़्त है और आप कुछ और करते हुए पकड़े गए तो आप पीटे जाएंगे।

सभी मर्द अपनी दाढ़ी बढ़ाएंगे। इसकी सही लंबाई कम से कम ठोढ़ी के नीचे बंधी हुई मुट्ठी भर है। अगर आप इसका पालन नहीं करते तो आप पीटे जाएंगे।

सभी लड़के पगड़ी पहनेंगे। पहले दर्जे से छठे दर्जे तक के लड़के काली पगड़ियां पहनेंगे, इससे ऊंचे दर्जे के लड़के सफ़ेद पहनेंगे। सभी लड़के इस्लामी कपड़े पहनेंगे। कमीज़ के कॉलर बटनबंद होंगे।

गाने पर पाबंदी है।

नाचने पर पाबंदी है।

ताश खेलने, शतरंज खेलने, जुआ और पतंगबाज़ी पर पाबंदी है।

किताबें लिखने, फ़िल्में देखने और तस्वीरें बनाने पर पाबंदी है।

अगर आप तोते रखते हैं तो आप पीटे जाएंगे। आपकी चिड़िया मार दी जाएगी।

अगर आप चोरी करते हैं तो आपके हाथ कलाई से काट दिए जाएंगे। अगर आप दोबारा चोरी करते हैं तो आपके पांवों को काट दिया जाएगा।

अगर आप मुसलमान नहीं हैं तो ऐसी जगह इबादत मत कीजिए, जहां आप मुसलमानों के द्वारा देखे जा सकते हों। अगर आप ऐसा करते हैं तो आप पीटे जाएंगे और कैद कर लिए जाएंगे। अगर आप किसी मुसलमान को अपने मज़हब में लाने की कोशिश करते हुए पकड़े गए तो आपको मौत की सज़ा दी जाएगी।

औरतें ध्यान दें:

आप पूरे वक़्त घरों में ही रहेंगी। औरत के लिए बिना मकसद सड़कों

पर घूमना गैर मुनासिब है। अगर आप घर से बाहर जाती हैं तो आपके साथ ज़रूर से ज़रूर एक महरम यानी आपका मर्द रिश्तेदार होना चाहिए। अगर आप सड़क पर अकेली पकड़ी गई तो आपको पीटा जाएगा और घर भेज दिया जाएगा।

किसी भी हालत में आप अपना चेहरा खुला नहीं रखेंगी। जब बाहर निकलेंगी तो उसे बुर्के से ढंकेंगी। अगर आप ऐसा नहीं करतीं तो आपको बुरी तरह पीटा जाएगा।

कॉस्मेटिकों पर पाबंदी है।

गहनों पर पाबंदी है।

आप लुभावने कपड़े नहीं पहनेंगी।

जब आपसे बोला नहीं जाए, आप नहीं बोलेंगी।

आप मर्दों के साथ आंख नहीं मिलाएंगी।

आप सरेआम नहीं हंसेंगी। अगर आप ऐसा करती हैं तो आपको पीटा जाएगा।

आप नाखुन नहीं रंगेंगी। अगर आप रंगेंगी तो आप एक उंगली खो बैठेंगी।

लड़कियों के स्कूल जाने पर पाबंदी है। लड़कियों के सारे स्कूल फ़ौरन बंद किए जाते हैं।

औरतों के काम करने पर पाबंदी है।

अगर आप व्यभिचार की कसूरवार पाई गईं तो आपको संगसार कर मार दिया जाएगा।

सुनिए। अच्छे से सुनिए। पालन कीजिए। अल्लाह-ओ-अकबर।

रशीद ने रेडियो बंद कर दिया। वो बैठक के फ़र्श पर बैठे हुए रात का खाना खा रहे थे। नजीबुल्लाह की लाश को रस्सी से लटकते देखे हुए उन्हें हफ़्ते भर से भी कम वक़्त गुज़रा था।

'वो ऐसा नहीं कर सकते कि आबादी का आधा हिस्सा घर पर बैठ जाए और कुछ नहीं करे,' लैला ने कहा।

'क्यों नहीं?' रशीद ने कहा। कम से कम इस बार मरियम उससे सहमत थी। रशीद ने उसके और लैला के साथ सचमुच में यही तो किया था, नहीं क्या? यकीनन लैला ने यह देखा था।

'ये कोई गांव नहीं है। ये काबुल है। औरतें यहां डॉक्टरी और वकालत

कर रही हैं। सरकारी दफ्तरों में वे अफसर हैं-'

रशीद ने दांत पीसे। 'शायरी पढ़ने वाले यूनिवर्सिटी के मर्द की मगरूर बेटी की तरह बोल ही दीं आख़िर तुम। कैसी भली, कैसी ताजिक हो तुम। तुम सोचती हो कि तालिबान कोई नया, अनोखा उसूल पेश कर रहे हैं? क्या तुम काबुल में अपने छोटे से कीमती खोल से बाहर रही हो मेरी गुल? कभी तुमने असली अफ़ग़ानिस्तान में जाने की ज़हमत उठाई है, दक्खिन में, पूरब में, पाकिस्तान से लगी कबीलाई सरहद के इलाके में? नहीं? मैं गया हूं। और मैं तुम्हें बता सकता हूं कि इस देश में अनेक ऐसी जगहें हैं जहां लोग पहले से ही इसी तरह जीते आए हैं या जो भी हो, करीब-करीब इसी तरह से। उस तरह से नहीं, जैसा तुम जानती हो।'

'मैं मानने से इन्कार करती हूं,' लैला ने कहा। 'वो संजीदा नहीं हैं।'

'तालिबान ने नजीबुल्लाह के साथ जो किया वो मुझे संजीदा लगा,' रशीद ने कहा। 'तुम यह मानोगी कि नहीं?'

'वो एक कम्युनिस्ट था! वो खुफिया पुलिस का मुखिया था।'

रशीद हंसा।

उसकी हंसी में मरियम को जवाब सुनाई दियाः कि कम्युनिस्ट होने और खतरनाक *खाद* का रहनुमा होने से नजीबुल्लाह तालिबान की निगाहों में एक औरत से बस थोड़ा ही ज़्यादा घृणित था।

अड़तीस

लैला

तालिबान ने कारनामे शुरू हुए तो लैला को इस बात पर खुशी हुई कि बाबी इसके गवाह बनने के लिए मौजूद नहीं थे। इससे वो टूट कर रह जाते।

फावड़े लिए हुए लोग काबुल म्यूज़ियम में घुस आए और मुजाहिदीनों द्वारा लूटे जाने से बची रहीं, इस्लाम से पहले की मूर्तियों को चूर-चूर कर दिया। यूनिवर्सिटी को बंद करके इसमें पढ़नेवालों को घर भेज दिया गया। पेंटिंगों को दीवारों से उखाड़ दिया गया और ब्लेड से उनके टुकड़े-टुकड़े कर दिए गए। टीवी के पर्दे लात मार कर तोड़ डाले गए। क़ुरान छोड़ कर सारी किताबों के ढेर लगा कर जला दिए गए। उनको बेचने वाली दुकानें बंद करा दी गई। खलीली, पजवाक, अंसारी, हाजी दहक़ान, अशराकी, बेताब, हाफिज़, जामी, निज़ामी, रूमी, खय्याम, बेदिल और दूसरे बहुत सारे धुएं की नज़र चढ़ गए।

लैला ने लोगों के नमाज़ छोड़ने के इल्ज़ाम में सड़कों से घसीट कर मस्जिदों में धकेले जाने के बारे में सुना। उसने जाना कि चिकन स्ट्रीट के करीब मार्को पोलो रेस्टोरेंट को एक पूछताछ केंद्र में बदल दिया गया है। कभी कभी इसकी काले रंग में रंगी खिड़कियों के पीछे से चीखें सुनाई पड़ती हैं। हर कहीं टोयोटा ट्रकों पर दाढ़ी गश्ती दल क्लीन शेव चेहरों को लहूलुहान करने की ताक में घूमता रहता।

उन्होंने सिनेमा घरों को भी बंद करा दिया। सिनेमा पार्क। आरियाना। अर्युब। प्रोजेक्शन रूमों को लूट लिया गया और फ़िल्म रीलों में आग लगा

दी गई। लैला को वो वक़्त याद आया जब वो और तारिक़ उन थिएटरों में बैठ कर हिंदी फ़िल्में देखते थे, वो सारी अतिनाटकीय कहानियां याद आईं जिनमें प्रेमी नसीब के किसी त्रासद मोड़ पर बिछड़ जाते थे, कोई किसी दूर दराज के इलाके में भटकता फिरता, तो दूसरे को शादी करने पर मजबूर कर दिया जाता और वो रोते हुए गेंदे के खेतों में गीत गाता, मिलन के लिए तरसता। उसे याद आता कि किस तरह उन फ़िल्मों पर उसे रोते देख तारिक़ हंसता था।

'मुझे जानने का मन करता है कि उन्होंने मेरे अब्बा के सिनेमा घर के साथ क्या किया,' मरियम ने एक दिन उससे कहा। 'क्या वो अब भी है। या क्या वो अब भी उनके पास है।'

काबुल की पुरानी संगीत बस्ती ख़राबात को चुप करा दिया गया। संगीतकारों को पीटा गया और जेल में डाल दिया गया। उनके रुबाब, तंबूरा और हारमोनियम को तोड़ डाला गया। तालिबान तारिक़ के सबसे पसंदीदा संगीतकार अहमद ज़ाहिर की कब्र पर गए और उसमें गोलियां दागीं।

'उन्हें मरे हुए करीब बीस बरस हो चुके हैं,' लैला ने मरियम से कहा। 'मर जाना ही काफ़ी नहीं है?'

रशीद को तालिबान से बहुत परेशानी नहीं थी। उसे बस दाढ़ी ही तो बढ़ानी थी, जो उसने बढ़ा ली थी और मस्जिद जाना था। वो यह भी करने लगा था। रशीद ऐसी रहमदिली और नासमझी से पैदा हुए लगाव के साथ तालिबान का आदर करता जैसे कोई अपने चंचल स्वभाव के रिश्ते के भाई का आदर करता हो, जिसका रुझान चुहल और बदनामी पैदा करने वाले अप्रत्याशित कारनामे करने का हो।

हरेक बुधवार की रात को रशीद वॉयस ऑफ शरिया सुनता जब तालिबान सज़ा देने के लिए चुने गए लोगों के नामों का ऐलान किया करते थे। इसके बाद जुमे को वो गाज़ी स्टेडियम जाता, पेप्सी ख़रीदता और फिर पूरा तमाशा देखता। बिस्तर में वो लैला को एक बीमार ख़ुशी के साथ पूरा ब्योरा सुनाता कि उसने कैसे कटे हुए हाथ, कोड़े, लोगों को लटकाए जाते और सिर कलम किए जाते देखा।

'आज मैंने एक आदमी को देखा जिसने अपने भाई के कातिल का गला

रैता,' एक रात उसने धुआं उड़ाते हुए कहा।

'वो जंगली हैं,' लैला ने कहा।

'तुम सोचती हो?' उसने कहा। 'किनके मुकाबले में? सोवियतों ने दसियों लाख लोगों को मारा। तुम्हें पता है कि इन चार बरसों में मुजाहिदीनों ने अकेले काबुल में कितने लोगों को मारा है? पचास हज़ार लोगों को। पचास हज़ार लोग! इसके मुकाबले कुछ चोरों का हाथ काट दिया जाना क्या इतनी ज़्यादा असंवेदनशीलता है? आंख के बदले आंख, दांत के बदले दांत। यह क़ुरान में है। इसके अलावा मुझे एक बात बताओ। अगर कोई अज़ीज़ा का कत्ल कर दे, तो क्या तुम उसका बदला नहीं लेना चाहोगी?'

लैला ने उसे नफ़रत से देखा।

'मैं बस एक बात-कह रहा था,' उसने कहा।

'तुम भी बस उन्हीं के जैसे हो।'

'अज़ीज़ा की आंखों का रंग दिलचस्प है। तुम्हें नहीं लगता? न तुम्हारी आंखें वैसी हैं न मेरी।'

रशीद ने उसके चेहरे के रू ब रू आने के लिए करवट ली, अपनी तर्जनी उंगली के टेढ़े नाखुन से उसकी जांघों को हल्के से खरोंचा।

'मुझे समझाने दो,' उसने कहा। 'अगर मुझे सूझे-मैं नहीं कह रहा है सूझेगा, लेकिन सूझ सकता है—ऐसा हो सकता है—तो अज़ीज़ा को अपने से दूर कर देना मेरे अधिकार में होगा। तुम्हें यह कैसा लगेगा? या मैं एक दिन तालिबान के पास जाऊंगा, बस जाऊंगा और तुम्हारे बारे में अपने संदेहों को बता दूंगा। बस इतना ही करना होगा। तुम्हें क्या लगता है कि वो किसकी बातों पर भरोसा करेंगे? तुम्हें क्या लगता है कि वो तुम्हारा क्या करेंगे?'

लैला ने अपनी जांघ उसके पास से हटा ली।

'वो मैं नहीं करूंगा,' रशीद ने कहा। 'मैं नहीं करूंगा। ना। शायद नहीं। तुम मुझे जानती हो।'

'तुम नीच हो,' लैला ने कहा।

'यह एक बड़ी बात है,' रशीद ने कहा। 'तुम्हारी यह बात मुझे हमेशा नापसंद रही है। यहां तक कि तुम जब छोटी थीं, जब तुम उस लंगड़े के साथ दौड़ती फिरती थीं, तो तुम्हें लगता था कि तुम अपनी किताबों और शायरी के साथ बहुत होशियार हो। तुम्हारी वो सारी समझदारी अब तुम्हारा क्या भला

कर रही है? तुम्हें सड़कों से दूर कौन रख रहा है, तुम्हारी समझदारी या मैं? मैं नीच हूं? मेरे जैसा शौहर पाने के लिए इस शहर की आधी औरतें जान ले लेंगी। वो इसके लिए जान ले लेंगी।'

वो वापस लेट गया और छत की तरफ़ धुआं उड़ाने लगा।

'तुम्हें बड़ी बातें पसंद हैं? मैं भी एक बात कहूंगाः नजरिया। मैं यहां यही कर रहा हूं लैला। मैं यह पक्का कर रहा हूं कि तुम अपना नज़रिया न खो बैठो।'

लैला का पेट रात भर रशीद की उन बातों पर ऐंठता रहा जो उसने कही थीं, उसकी हर आख़िरी बात सही थी।

लेकिन सवेरे और आनेवाली अनेक सुबहों में उसके पेट की वो मतली बनी रही और फिर उससे भी बदतर हो गई। वो जाने-पहचाने डर जैसी किसी चीज़ में बदल गई।

एक सर्द, लंबी दोपहर के बाद लैला सोने के कमरे के फर्श पर लेटी हुई थी। मरियम अपने कमरे में अज़ीज़ा के साथ सो रही थी।

लैला के हाथों में लोहे का एक तार था, जिसे उसने एक बेकार साइकिल के पहिए से प्लायर के सहारे निकाला था। यह उसे उसी गली में मिला था, जिसमें बरसों पहले उसने तारिक़ को चूमा था। देर तक लैला फर्श पर पड़ी अपने दांतों के बीच से सांस लेती रही। अपने पांव उसने फैला रखे थे।

वो अज़ीज़ा को उसी पल से प्यार करती आई थी, जब वो उसके वजूद से वाकिफ हुई थी। ऐसा कोई आत्म-संदेह या ऐसी गैर यकीनी नहीं थी। लैला अब सोच रही थी कि एक मां के लिए इसका डर कितनी भयावह बात है कि वो अपने ख़ुद के बच्चे को प्यार नहीं कर सकेगी। कैसी अस्वाभाविक बात है। और तब भी फर्श पर पड़े-पड़े, तार संभालने के लिए पसीने में डूबे हाथ को संतुलित किए हुए, उसे जानने का मन कर रहा था कि क्या वो असल में रशीद के बच्चे को प्यार कर पाती, जैसा उसने तारिक़ के बच्चे को किया था।

आख़िर में लैला यह नहीं कर सकी।

ख़ून बहने से मर जाने का डर नहीं था, जिसने उससे तार को रखवाया, न ही इस ख्याल ने कि यह काम निंदनीय है—जिसके बारे में उसे संदेह था।

लैला ने तार को रखा क्योंकि वो उस बात को कबूल नहीं कर सकती थी जिसे मुजाहिदीन बेधड़क करते थेः कि जंग में कभी कभी बेगुनाह जानें भी लेनी पड़ती हैं। उसकी जंग रशीद के साथ थी। बच्ची का कोई कुसूर नहीं था। और फिर पहले ही इतनी जानें जा चुकी थीं। लैला ने दुश्मनों की दोतरफा गोलीबारी में बेगुनाहों की काफ़ी हत्याएं देखी थीं।

उनतालीस

मरियम
सितंबर, 1996

'इस अस्पताल में अब औरतों का इलाज नहीं होता,' गार्ड चिल्लाते हुए बोला। वो सबसे ऊपर वाली सीढ़ी पर खड़ा था और मलालाई अस्पताल के सामने जमा हो आई भीड़ की तरफ़ सर्द निगाहों से देख रहा था।

भीड़ में से लंबी आह निकली।

'लेकिन यह औरतों का अस्पताल है!' मरियम के पीछे से एक औरत चिल्लाई। इसकी हिमायत में कई और आवाज़ें उठीं।

मरियम ने अज़ीज़ा को एक हाथ से दूसरे हाथ में लिया। अपने खाली हाथ से उसने लैला को सहारा दिया, जो कराह रही थी और जिसने अपनी बांह रशीद की गर्दन में लपेट रखी थी।

'अब नहीं,' तालिब ने कहा।

'मेरी बीवी को बच्चा होने वाला है!' एक गठीला आदमी चिल्लाया। 'आप क्या उसे यहां सड़क पर बच्चा पैदा करने देंगे बिरादर?'

मरियम ने उस साल जनवरी में ऐलान सुना था कि मर्द और औरतों का इलाज अलग-अलग अस्पतालों में होगा, कि काबुल अस्पताल के स्टाफ की सारी औरतों को निकाल कर एक सेंट्रल फैसिलिटी में काम करने भेज दिया गया था। किसी ने इस पर यकीन नहीं किया था और तालिबान ने इस नीति का पालन नहीं किया था। अब तक नहीं किया था।

'अली अब्बासी अस्पताल में?' एक दूसरा आदमी चिल्लाया।

गार्ड ने सिर झटका।

'वज़ीर अकबर खान?'

'सिर्फ़ मर्द,' उसने कहा।

'हम फिर क्या करें?'

'राबिया बाल्खी में जाइए,' गार्ड ने कहा।

एक नौजवान औरत धक्के देते हुए आगे आई और बोली कि वो वहां गई थी। उसने बताया कि वहां न साफ़ पानी है, न ऑक्सीजन, न दवाएं, न बिजली। 'वहां तो कुछ भी नहीं है।'

'आपको वहीं जाना होगा,' गार्ड ने कहा।

आहों और चीखों, एकाध गालियों की आवाज़ें भी आईं। किसी ने एक पत्थर फेंका।

तालिब ने अपनी कलाश्निकोव उठाई और हवा में कई राउंड फायर किए। उसके पीछे के दूसरे तालिब ने एक कोड़ा फटकारा।

भीड़ फौरन ही तितर-बितर हो गई।

राबिया बाल्खी का प्रतीक्षा कक्ष बुर्के वाली औरतों और बच्चों से भरा हुआ था। हवा में पसीने और बिना नहाई हुई देहों, पांवों, पेशाब, सिगरेट के धुएं और एंटीसेप्टिक दवाओं की गंध थी। छत में लगे स्थिर पंखे के नीचे बच्चे एक दूसरे के पीछे भाग रहे थे और झपकी ले रहे अब्बाओं के पसरे हुए पांवों को फांद रहे थे।

मरियम ने लैला को एक दीवार के सहारे बैठने में मदद की। दीवार से प्लास्टर झड़ने से देशों के नक्शों जैसी शक्लें बनी हुई थी। लैला आगे-पीछे हिल रही थी और उसने हाथों से पेट दबा रखा था।

'मैं तुम्हें देखती रहूंगी, लैला जो। वादा करती हूं।'

'जल्दी करो,' रशीद ने कहा।

रजिस्ट्रेशन की खिड़की के आगे औरतों का एक झुंड था। वो एक दूसरे को धक्के दे रही थीं। कुछ ने अपने बच्चे तक पकड़ रखे थे। कुछ भीड़ से अलग होकर तेज़ी से डबल डोर की तरफ़ बढ़ीं, जहां इलाज वाले कमरे थे। एक हथियारबंद तालिब ने उनका रास्ता रोक कर उन्हें वापस भेज दिया।

मरियम मज़बूती से जुट पड़ी। उसने एड़ियां टिका दीं और अजनबी कोहनियों, कूल्हों, कंधों के बीच से राह बनाने लगी। किसी ने उसकी पसलियों में अपनी कोहनी गड़ाई और उसने भी पलट कर कोहनी मारी। उसके चेहरे को एक बेताब हाथ ने पकड़ना चाहा। उसने उसे झटक दिया। वो ज़ोर लगा कर आगे बढ़ने के लिए गर्दनों पर, हाथों और कोहनियों पर, बालों पर पंजे मार रही थी और जब पास की एक औरत ने फुफ़कारा तो पलट कर उसने भी फुफकार भरी।

मरियम ने अब जाकर देखा था कि एक मां को किन चीज़ों की क़ुर्बानियां देनी होती हैं। शराफत उसमें सबसे पहली होती है। उसने अफसोस के साथ नाना के बारे में सोचा, उनके द्वारा दी गई क़ुर्बानियों के बारे में सोचा। नाना उसे छोड़ देतीं, या कहीं गड्ढे में फेंक कर भाग जातीं। लेकिन उन्होंने ऐसा नहीं किया था। नाना ने एक हरामी को लिए फिरने की शर्म को बर्दाश्त किया था, और मरियम को बड़ा और अपनी तरह से उसे प्यार करने के नाशुक्रगुज़ार काम के आसपास अपनी ज़िंदगी लगा दी थी। और आख़िर में मरियम ने उनकी बजाए जलील को चुना। इस ढीठ धुन के साथ भीड़ में अपनी राह बनाने के लिए जद्दोजहद करते हुए मरियम ने चाहा कि वो नाना की एक बेहतर बेटी हुई रहती। उसने चाहा कि वो तब मातृत्व के बारे में वो बात समझ गई होती जिसे वो अब समझ रही है।

उसने पाया कि वो एक नर्स के सामने खड़ी है, जो एक गंदे, स्याह बुर्के से एड़ी से चोटी तक ढंकी हुई थी। नर्स एक नौजवान औरत से बात कर रही थी, जिसके बुर्के का सिर का हिस्सा जमे हुए ख़ून में सना हुआ था।

'मेरी बेटी का पानी बह गया है और बच्चा नहीं निकला है,' मरियम ने कहा।

'मैं इनसे बात कर रही हूं!' ख़ून में सनी नौजवान औरत चिल्लाई। 'अपनी बारी का इंतज़ार कीजिए!'

उनकी पूरी भीड़ उनकी अगल-बग़ल डोल रहा था, कोल्बा के चारों ओर की लंबी घास की तरह, जो सपाट जगह में हवा बहने पर डोला करती थी। मरियम के पीछे एक औरत चिल्ला रही थी कि उसकी बेटी ने पेड़ से गिर कर कोहनी तोड़ ली है। एक दूसरी औरत चिल्ला रही थी कि उसे ख़ून के पाख़ाने हो रहे हैं।

'क्या उसे बुखार है?' नर्स ने पूछा। मरियम को यह समझने में एक पल का वक़्त लगा कि उसी से बात की जा रही है।

'नहीं,' मरियम ने कहा।

'ख़ून बह रहा है?'

'नहीं।'

'कहां है वो?'

मरियम ने बुर्के से ढंके हुए सिरों के ऊपर उस तरफ़ दिखाया जहां लैला रशीद के साथ बैठी हुई थी।

'हम उसके पास आएंगे,' नर्स ने कहा।

'कितनी देर में?' मरियम चिल्लाई। किसी ने उसके कंधे पकड़ रखे थे और पीछे घसीट रहा था।

'मुझे पता नहीं,' नर्स ने कहा। उसने कहा कि सिर्फ़ दो ही डॉक्टर थीं और दोनों इस वक़्त ऑपरेशन कर रही थीं।

'उसे दर्द हो रहा है,' मरियम ने कहा।

'मुझे भी!' वो औरत चिल्लाई जिसकी खोपड़ी पर ख़ून लगा हुआ था। 'अपनी बारी का इंतज़ार करो!'

मरियम को पीछे घसीटा जा रहा था। अब कुछ कंधों और सिरों के पीछे के हिस्सों ने नर्स को उसकी नज़रों से ओझल कर दिया था। उसे एक बच्चे की दूध मिली डकार की गंध आई।

'उसे टहलाने ले जाइए,' नर्स चिल्लाई। 'और इंतज़ार कीजिए।'

बाहर अंधेरा हो चुका था, तब आख़िरकार नर्स ने उनको भीतर बुलाया। डिलीवरी रूम में आठ बिस्तर थे, जिन पर औरतें कराह और ऐंठ रही थीं। उनकी देखभाल पूरी तरह ढंकी हुई नर्सें कर रही थीं। बिस्तरों के बीच में कोई पर्दा नहीं था। लैला को एक दूर के कोने का बिस्तर दिया गया। यह एक खिड़की के नीचे था, जिसे किसी ने काले रंग में रंग दिया था। पास ही में एक चटका और सूखा हुआ सिंक था, जिसके ऊपर बंधे तार में सर्जिकल दस्ताने लटके हुए थे। कमरे के बीच में मरियम ने एक अल्युमीनियम की टेबल देखी। इसके सबसे ऊपर के खाने में कालिख के रंग का एक कंबल पड़ा हुआ था। नीचे का खाना

खाली था।

एक औरत ने मरियम को ये देखते हुए देखा।

'वो जिंदा बच्चों को ऊपर वाले खाने में रखते हैं,' उसने थकी हुई आवाज़ में कहा।

छोटे कद की, गहरे नीले रंग के बुर्के वाली डॉक्टर चिड़ियों जैसी एक फुर्तीली औरत थी। जो कुछ भी वो बोल रही थी, वो बेसब्री से भरा हुआ और बेहद महत्वपूर्ण लग रहा था।

'पहला बच्चा।' उसने यह बात ऐसे कही मानो यह सवाल नहीं बल्कि एक बयान हो।

'दूसरा,' मरियम ने कहा।

'लैला चीखते हुए करवट हो कर लेट गई। उसकी उंगलियों ने मरियम की उंगलियां पकड़ रखी थीं।

'पहली डिलीवरी में. कोई मुश्किल?'

'नहीं।'

'आप अम्मी हैं?'

'हां,' मरियम ने कहा।

डॉक्टर ने अपने बुर्के के नीचे के आधे हिस्से को उठाया और धातु के एक शंकु जैसा आला निकाला। उसने लैला का बुर्का उठाया और आले के चौड़े हिस्से को उसके पेट से लगाया। दूसरे पतले सिरे से अपना कान सटाया। उसने लगभग एक मिनट सुना, जगहें बदलीं, फिर से सुना, फिर से जगहें बदलीं।

'मैं अब बच्चे को महसूस कर सकती हूं, हमशीरा।'

उसने सिंक के ऊपर क्लिप में टंगे दस्ताने पहने। फिर उसने एक हाथ से लैला का पेट दबाया और दूसरा भीतर डाल दिया। लैला ठुनठुनाई। जब डॉक्टर ने काम पूरा कर लिया तो उसने दस्ताना नर्स को थमा दिया जिसने उसे धो कर फिर से तार पर लटका दिया।

'आपकी बेटी को सीज़ेरियन की ज़रूरत है। आपको पता है कि ये क्या होता है? हमें उनका पेट खोल कर बच्चा निकालना होगा, क्योंकि उसके पैर आगे हैं।'

'मैं समझ नहीं पाई।'

डॉक्टर ने बताया कि बच्चे की पोजीशन ऐसी है कि वो खुद से बाहर

नहीं निकल सकता है। 'और काफी समय गुजर गया है। हमें अभी ऑपरेटिंग रूम में आना जरूरी है।'

लैला ने मुंह बनाते हुए सिर हिला कर रजामंदी दी और अपना सिर एक तरफ लटका लिया।

'मुझे आपको कुछ बताना है,' डॉक्टर ने कहा। वो मरियम के करीब आ गई, झुकी और धीमी आवाज में, खुफिया लहजे में बोली। अब उसकी आवाज में शर्मिंदगी की झलक थी।

'वो क्या कह रही हैं?' लैला ने आह भरी। 'क्या बच्चे को कुछ हुआ है?'

'लेकिन वो इसे कैसे बर्दाश्त करेगी?' मरियम ने कहा।

डॉक्टर ने इस सवाल में छुपे इल्जाम को भी सुन लिया होगा, क्योंकि उसका लहजा बचाव का हो गया था।

'आप सोचती हैं कि मैं ऐसा चाहती हूं?' उसने कहा। 'आप क्या चाहती हैं कि मैं क्या करूं? मुझे जिसकी जरूरत है, वो मुझे देंगे नहीं। मेरे पास एक्स-रे नहीं है, न खींच कर निकालने का आला है, न ऑक्सीजन है, यहां तक कि मामूली एंटीबायोटिक्स तक नहीं हैं। जब एनजीओ पैसे की पेशकश करते हैं तो तालिबान उन्हें ठुकरा देते हैं। या फिर पैसे को उन जगहों पर भेज देते हैं जहां मर्दों का इलाज होता है।'

'लेकिन, डॉक्टर साहिब, क्या ऐसा कुछ नहीं है, जिसे आप उसे दे सकें?' मरियम ने पूछा।

'क्या चल रहा है?' लैला कराह उठी।

'आप खुद से दवा खरीद सकती हैं, लेकिन-'

'नाम लिखिए,' मरियम ने कहा। 'आप नाम लिखिए और मैं ले आती हूं।'

बुर्के के नीचे डॉक्टर ने रुखाई से सिर हिलाया। 'वक्त नहीं है,' उसने कहा। 'अव्वल तो आस पास की किसी दवा की दुकान में यह नहीं है। इसलिए आपको ट्रैफिक में रास्ता बनाते हुए एक जगह से दूसरी जगह भागना पड़ेगा, शायद शहर भर में घूमना पड़े और तब भी इसकी गुंजाइश बहुत कम है कि यह आपको मिल जाएगी। अभी ही साढ़े आठ बज चुके हैं, इसलिए शायद आप कर्फ्यू तोड़ने के इल्जाम में गिरफ्तार ही कर ली जाएं। तब भी, अगर आपको दवा मिल जाए तो इसकी गुंजाइश भी है आप उसकी कीमत न चुका

पाएं। या आपको किसी दूसरे ज़रूरतमंद से मुकाबला करते हुए बोली लगानी पड़े। वक़्त नहीं है। इस बच्चे को अभी निकालना ज़रूरी है।'

'मुझे बताइए कि क्या हो रहा है!' लैला ने कहा। वो कोहनियों के बल उठ गई थी।

डॉक्टर ने सांस ली और फिर लैला को बताया कि अस्पताल में एनेस्थेटिक यानी बेहोश करने की दवा नहीं थी।

'लेकिन अगर हम देरी करेंगे तो आप बच्चे को खो देंगी।'

'तब मुझे चीर डालिए,' लैला ने कहा। वो बिस्तर पर गिर पड़ी और अपने घुटने उठा लिए। 'मुझे चीर डालिए और मुझे मेरा बच्चा दे दीजिए।'

पुराने, गंदे ऑपरेटिंग रूम के भीतर लैला एक स्ट्रेचर पर लेटी। डॉक्टर बेसिन में अपने हाथ रगड़-रगड़ कर धो रही था। लैला कांप रही थी। हर बार जब नर्स एक पीले-भूरे लिक्विड में तर कपड़ा उसके पेट पर फिराती, लैला अपने दांतों के बीच से हवा खींचती। एक दूसरी नर्स दरवाज़े पर खड़ी थी। उसने चरमराता हुआ दरवाज़ा खोल रखा था, ताकि बाहर झांक सके।

डॉक्टर ने अब अपना बुर्का उतार दिया था और मरियम ने देखा कि उसकी रुपहले बालों की चोटी थी। उसकी आंखों के पपोटे भारी थे और उसके मुंह के किनारों पर थकान से छोटी थैलियां बन गई थीं।

'वो चाहते हैं कि हम बुर्के में ही ऑपरेशन करें,' डॉक्टर ने अपने सिर से दरवाज़े वाली नर्स को इशारा करते हुए कहा। 'वो नज़र रखती है। वो उनको आते हुए देखती है, तो मैं ढंक लेती हूं।'

उसने यह बात इतनी गुस्ताखी और लगभग बेरुखी से कही कि मरियम समझ गई कि इस औरत ने नाराज़गी को बहुत पीछे छोड़ दिया है। उसने सोचा कि यहां एक ऐसी औरत है, जो यह समझती है कि वो खुशकिस्मत है कि वो काम कर रही है, कि हमेशा ऐसी चीज़ थी, कोई ऐसी चीज, जिसे वो उससे छीन सकते थे।

लैला के कंधों के दोनों तरफ़ खड़े, लोहे के सरिए थे। जिस नर्स ने लैला का पेट साफ़ किया था, उसने क्लिपों के ज़रिए उन पर चादर टांग दी। अब लैला और डॉक्टर के बीच एक पर्दा बन गया था।

मरियम ने लैला के सिर के ठीक पीछे जगह बनाई और अपना चेहरा इतना झुकाया कि उनके गाल छूने लगे। वो लैला के दांतों की कटकटाहट महसूस कर सकती थी। उनके हाथ एक दूसरे में गुंथे हुए थे।

पर्दे पर मरियम ने डॉक्टर की परछाई को लैला की बाईं तरफ़ और नर्स की परछाई को दाहिनी तरफ़ जाते देखा। लैला के होंठ पूरे खिंच गए थे। उसके भिंचे हुए दांतों की सतह पर लार के बुलबुले बन और फूट रहे थे। वो जल्दी-जल्दी फुफकारती हुई आवाज़ें निकाल रही थी।

डॉक्टर ने कहा, 'दिल कड़ा रखें छोटी बहन।'

वो लैला के ऊपर झुक गई।

लैला की आंखें झटके से खुल गईं। इसके बाद उसका मुंह खुला। वो ऐसी बनी रही, ऐसी, ऐसी, कांपती हुई, उसके गले की नसें तनी हुई, चेहरे पर पसीना बहता हुआ, उसकी उंगलियां मरियम की उंगलियों को कसती हुई।

उसके चीख उठने के पहले जितना वक़्त गुज़रा था, मरियम उसके लिए हमेशा लैला की तारीफ करने वाली थी।

चालीस

लैला
पतझड़, 1999

गड्ढा खोदने का इरादा मरियम का था। एक सुबह उसने औजार रखने वाले छप्पर के पीछे मिट्टी के एक टुकड़े की तरफ़ इशारा किया। 'हम वहां खोद सकते हैं,' उसने कहा। 'वो अच्छी जगह है।'

उन्होंने बारी बारी से ज़मीन पर फावड़ा चलाया और फिर मिट्टी निकाल कर बग़ल में रखी। उन्होंने एक बड़े या गहरे गड्ढे का मंसूबा नहीं बनाया था, इसलिए खोदने का काम उतना मुश्किल नहीं होना चाहिए था, जितना यह हो गया। यह सूखा था, जो 1998 में शुरू हुआ था और अब यह दूसरा साल था, जिसने हर जगह तबाही लाई हुई थी। पिछली सर्दियों में मुश्किल से ही बर्फ़ पड़ी थी और बसंत में तो बिल्कुल ही बारिश नहीं हुई थी। पूरे देश में किसान सूखी हुई ज़मीन छोड़ रहे थे, अपना सामान बेच रहे थे, और पानी की तलाश में गांव दर गांव भटक रहे थे। वो पाकिस्तान या ईरान जा रहे थे। वो काबुल में बस रहे थे। लेकिन शहर में भी पानी की सतह नीची थी और उथले कुएं सूख गए थे। गहरे कुओं पर कतारें इतनी लंबी होती थीं कि लैला और मरियम को अपनी बारी के इंतज़ार में घंटों लग जाते। काबुल नदी बसंत की सालाना बाढ़ के बिना सूख गई थी। अब यह एक आम शौचालय थी, जिसमें और कुछ नहीं बस मैला और मलबा भरा था।

इसलिए वो फावड़ा उठा कर चोट करती रहीं लेकिन धूप में जली हुई ज़मीन चट्टान की तरह सख़्त हो गई थी। अड़ियल मिट्टी कठोर थी और लगभग

पथरा गई थी।

मरियम अब चालीस की थी। चेहरे के ऊपर लपेटे हुए उसके बालों में कुछ स्याह लटें भी थीं। उसकी आंखों के नीचे बादामी मांस चांद की शक्ल में थैलियों की तरह लटक गया था। उसने आगे के दो दांत खो दिए थे। एक गिर गया था और दूसरा रशीद ने तोड़ दिया था, जब उससे अनजाने में जल्मै गिर गया था। खुली धूप में पूरे वक़्त आंगन में बैठे रहने से उसकी त्वचा रूखी और गहरे रंग की हो गई थी। वो बैठीं जल्मै को अज़ीज़ा का पीछा करते हुए देखतीं।

जब काम पूरा हुआ, जब गड्ढा खोद लिया गया, तो वो इसके ऊपर खड़ी हुई और नीचे देखा।

'इसे काम करना चाहिए,' मरियम ने कहा।

जल्मै अब दो बरस का था। वो घुंघराले बालों वाला एक गुदगुदा लड़का था। उसकी छोटी, भूरी आंखें थीं और चाहे कोई भी मौसम रहे, उसके गालों पर रशीद की तरह ही एक गुलाबी धब्बा मौजूद रहता था। उसके बाल भी अपने अब्बा की ही तरह थे-मोटे और आधे चांद की शक्ल में जो नीचे उसकी ललाट तक बिखरे रहते।

जब लैला उसके साथ अकेली होती तो जल्मै एक मीठा, हंसमुख और खेलता हुआ बच्चा हुआ करता। वो लैला के कंधों पर चढ़ना पसंद करता, उसके और अज़ीज़ा के साथ आंगन में छुपम-छुपाई खेलना पसंद करता। कभी कभी शांत पलों में वो लैला की गोद में बैठ कर उसे गाने को कहता। उसका पसंदीदा गीत था 'मुल्ला मोहम्मद जान।' जब वो उसके घुंघराले बालों में गाती तो वो अपने मोटे पांव लय में हिलाता और उसके साथ सुर मिलाता। अपनी बेसुरी आवाज़ में वो जो गा सकता, गाता:

आइए और हमें मज़ार तक ले चलिए, मुल्ला मोहम्मद जान,
ट्यूलिप के खेतों के देखने के लिए, ओ प्यारे साथी

लैला को जल्मै के गीले चुंबन अच्छे लगते, जिन्हें वो उसके गालों पर चस्पां कर देता। वो उसकी गड्ढे पड़ती कोहनियों और मोटे, नन्हें पैरों के पंजों को प्यार करती। लैला को उसे गुदगुदाना अच्छा लगता, उसको रेंग कर चलने

के लिए कुशनों और तकियों की सुरंग बनाना अच्छा लगता, उसे अपने हाथों में सोते हुए देखना अच्छा लगता, वो हमेशा अपने एक हाथ से उसका कान पकड़ कर सोता। उस दोपहर के बारे में सोचते हुए उसका पेट मरोड़ उठता, जब वो अपने पांवों के बीच में साइकिल के पहिए के तार के साथ वो फर्श पर लेटी हुई थी। वो तब उसके कितने करीब थी। अब तो वो यह सोच भी नहीं सकती थी कि उसने कभी ऐसे ख्याल पर ग़ौर भी किया था। उसका बेटा एक सौगात था और लैला को यह जान कर सुकून मिला था कि उसका डर बेबुनियाद था। कि वो जल्मै को अपने दिल की गहराइयों से प्यार करती थी, जैसे कि वो अज़ीज़ा को करती थी।

लेकिन जल्मै अपने अब्बा का अंधभक्त था और चूंकि वो ऐसा था, इसलिए जब भी उसके अब्बा उस पर दुलार बरसाने के लिए आसपास होते तो वो बदल जाता। तब जल्मै एक विद्रोही खिलखिलाहट या एक गुस्ताख हंसी के साथ फुर्तीला बन जाता। अपने अब्बा की मौजूदगी में वो आसानी से हमलावर बन जाता। झगड़ता। लैला के डांटने पर भी बदमाशियां करता, जो वो रशीद नहीं रहने पर कभी नहीं करता।

रशीद इन सबको पसंद करता। 'यह होशियारी की निशानी है,' वो कहता। वो रशीद की लापरवाहियों के बारे में भी यही कहता—जब वो गोलियां निकाल कर थूकता, जब वो माचिस जलाता, जब वो रशीद के सिगरेट चबाता।

जब जलील पैदा हुआ था तो रशीद ने उन्हें वह पलंग दे दी थी, जिस पर वो लैला के साथ सोता था। वो उसके लिए एक नया पालना ख़रीद लाया था, जिसकी बग़लों की तख्तियों पर शेर और दुबके हुए तेंदुए पेंट किए हुए थे। उसने नए कपड़ों, नए झुनझुनों, नई बोतलों, नए डाइपरों पर पैसे खर्च किए, यहां तक कि वो इतना खर्च नहीं उठा सकते थे और अज़ीज़ा का पुराना सामान अब भी इस्तेमाल में लाया जा सकता था। एक दिन वो बैटरी से चलने वाले मोबाइल के साथ घर लौटा, जिसे उसने जल्मै के पालने में टांग दिया। नन्हें पीले-काले भौंरे एक सूरजमुखी पर टंगे हुए थे और दबाने पर वो सिकुड़ जाते और आवाज़ें निकालते। उसे पलटने पर उसमें से एक धुन बजती।

'मैंने सोचा कि तुमने बताया था कि कारोबार मंदा है,' लैला ने कहा।

'मेरे ऐसे दोस्त हैं, जिनसे मैं उधार ले सकता हूं,' उसने उपेक्षा से कहा।

'उन्हें पैसे लौटाओगे कैसे?'

'चीज़ें बदलेंगी। वो हमेशा बदलती हैं। देखो, उसे यह पसंद आया। देखा?'

ज़्यादातर दिन लैला अपने बेटे से महरूम रहती। रशीद उसे दुकान लेकर जाता और अपनी भरी हुई काम की मेज़ के नीचे रेंगने तथा पुराने रबड़ के सोलों और चमड़े के बचे हुए टुकड़ों से खेलने के लिए छोड़ देता। रशीद अपनी लोहे की कीलों में डूबा रहता, रेगमाल पलट देता और उस पर एक चौकस निगाह रखता। अगर ज़ल्मै जूतों का एक रैक गिरा देता तो वो नर्मी से, शांति से, हल्के से मुस्कुराते हुए उसे डांटता। अगर वो दोबारा ऐसा करता तो रशीद अपनी हथौड़ी नीचे रख कर उसे डेस्क पर बिठा देता और उससे नर्मी से बात करता।

ज़ल्मै को लेकर उसके सब्र का पैमाना बहुत गहरा था और कभी छलकता नहीं था।

शाम को वो साथ घर लौटते। ज़ल्मै का सिर रशीद के कंधों पर उछलता रहता। दोनों से गोंद और चमड़े की गंध आती। वो इस तरह मुस्कुराते जैसे आपस में राज़ बांटने वाले लोग मुस्कुराते हैं। यह ऐसी कपट भरी मुस्कुराहट होती मानो वो सारे दिन उस हल्की अंधेरी जूतों की दुकान में बैठे जूते नहीं बल्कि खुफिया मंसूबे बनाते रहे हों। रात के खाने पर ज़ल्मै अपने अब्बा के पास बैठना पसंद करता जहां वो अपने निजी खेल खेला करते, जब मरियम, लैला और अज़ीज़ा दस्तरख्वान पर प्लेटें सजातीं। वो बारी बारी से एक दूसरे के सीने को कोंचते, खिलखिलाते, रोटियों के टुकड़े एक दूसरे पर फेंकते, फुसफुसा कर बातें करते जिसे दूसरे नहीं सुन पाते। अगर लैला उनसे बोलती तो इस अनचाही दखलंदाज़ी पर रशीद नाराज़गी से ऊपर देखता। अगर वो ज़ल्मै को रुकने को कहती या इससे भी बुरा अगर ज़ल्मै उसकी तरफ़ हाथ बढ़ाता तो रशीद उसपर आंखें तरेरता।

लैला चिढ़ कर चली जाती।

ज़ल्मै के दो बरस का होने के कुछ हफ़्तों के बाद, एक रात रशीद टेलीविज़न और वीसीआर के साथ घर लौटा। दिन गर्म रहा था, लगभग सुहावना, लेकिन शाम ठंडी थी और बिना सितारों वाली एक घनी, सर्द रात में बदल गई थी।

उसने उसे बैठक की टेबल पर सेट किया। उसने कहा कि उन्हें उसने ब्लैक मार्केट से ख़रीदा है।

'फिर से कर्ज़?' लैला ने पूछा।

'ये मैग्नावोक्स है।'

अज़ीज़ा कमरे में आई। जब उसने टीवी देखा तो उसकी तरफ़ दौड़ पड़ी।

'सावधानी से, अज़ीज़ा जो,' मरियम ने कहा। 'छूना मत।'

अज़ीज़ा के बाल लैला की ही तरह हल्के हो आए थे। लैला उसके गालों में अपने जैसे गड्ढे देख सकती थी। अज़ीज़ा एक शांत, ख़यालों में डूबी हुई नन्हीं लड़की बन गई थी, जिसका बरताव लैला को उसकी छह बरस की उम्र से परे का लगता। वो अपनी बेटी के बोलने के सलीके पर, उसकी आवाज़ की लय और ताल पर, उसके सचेत तरीके से रुकने और उसके सुरों पर मुग्ध होती, जो इतने बालिग और उस देह से इतनी बेमेल होते, जिससे वो निकलते। अज़ीज़ा ने ही अपने खुशमिजाज़ अधिकार के साथ खुद पर ज़ल्मै को रोज जगाने, नाश्ता कराने और उसके बालों में कंघी करने का जिम्मा ले रखा था। वही उसे सुलाती, अपने झगड़ालू भाई के साथ वही सुलह-सफाई करती। उसके आसपास रहते हुए अज़ीज़ा उसे देख कर अजीब, उत्तेजित तरीके से सिर हिलाती रहती।

अज़ीज़ा ने टीवी का पावर बटन दबा दिया। रशीद ने त्यौरियां चढ़ा कर उसे देखा, उसकी कलाई झटक दी और टीवी को रुखाई से टेबल पर सेट करने लगा।

'यह जल्मै का टीवी है,' उसने कहा।

अज़ीज़ा मरियम के पास जाकर उसकी गोद में बैठ गई। उन दोनों को अब एक दूसरे से अलग नहीं किया जा सकता था। इधर, लैला को इससे ख़ुशी होती थी कि मरियम अज़ीज़ा को क़ुरान की आयतें पढ़ना सिखाने लगी थी। अज़ीज़ा अब सूरह इखलास और सूरह फातिहा जबानी पढ़ सकती थी और वो सवेरे की चार रेकात नमाज़ भी अदा कर सकती थी।

उसे मुझे यही सिखाना है, मरियम ने लैला से कहा। यह ज्ञान, ये नमाज़ें। मेरे पास बस यही सच्ची धरोहर रही है।

अब जल्मै कमरे में आ गया था। जिस तरह रशीद पहले से अंदाज़ा लगाते हुए देख रहा था, जैसे कि सड़क पर जादूगरों के करतब देखते हैं, जल्मै ने टीवी का तार खींचा, बटन दबाए और उसके काले पर्दे को हथेलियों से दबाने लगा। जब उसने उन्हें उठाया, शीशे पर घनी, नन्हीं हथेलियां फीकी पड़ गईं।

रशीद नाज़ से मुस्कुराया और जल्मै को अपनी हथेलियां रखते और हटाते देखता रहा।

तालिबान ने टीवी पर पाबंदी लगा दी थी। वीडियो टेपों को सरेआम तोड़ा गया था, उसमें से टेप निकाल कर बाड़ों पर टांग दिए गए थे। सैटेलाइट डिशों को लैंपपोस्टों पर लटका दिया गया था। लेकिन रशीद का कहना था कि चीज़ों पर बस पाबंदी होने मतलब ये नहीं होता कि आप उन्हें हासिल नहीं कर सकते।

'मैं कल से कुछ कार्टून वीडियो खोजूंगा,' उसने कहा। 'मुश्किल नहीं होगा। अंडरग्राउंड बाज़ारों से आप कुछ भी ख़रीद सकते हैं।'

'तब तो शायद तुम हमें एक नया कुआं भी ख़रीद सकते हो,' लैला ने कहा, जिस पर उसे रशीद की तरफ़ से एक अपमानजनक निगाह का सामना करना पड़ा।

बाद में, जब एक और रात सादे भात पर गुज़ारी गई और सूखे को देखते हुए चाय को भुला दिया गया, जब रशीद ने एक सिगरेट पी ली, तब उसने लैला को अपने फैसले के बारे में बताया।

'नहीं,' लैला ने कहा।

उसने कहा कि वो पूछ नहीं रहा था।

'मुझे परवाह नहीं कि तुम पूछ रहे हो या नहीं।'

'तुम परवाह करतीं अगर तुमको पूरी कहानी पता होती।'

उसने कहा कि उसने जितना बताया था, उससे ज़्यादा दोस्तों से कर्ज़ ले रखा था, कि एक दुकान से अब उन पांचों लोगों का गुजर नहीं हो सकता था। 'तुम्हें परेशान होने से बचाने के लिए मैंने पहले नहीं बताया।'

'इसके अलावा,' उसने कहा। 'उनसे इतनी कमाई होगी कि तुम हैरान रह जाओगी।'

लैला ने फिर से मना किया। वो बैठक में थे। मरियम और बच्चे रसोई में थे। लैला बर्तनों की खनखनाहट, जल्मै की तेज़ हंसी और अपनी मज़बूत, समझदारी भरी आवाज़ में मरियम से कुछ कहती अज़ीज़ा की आवाज़ सुन सकती थी।

'उसकी जैसी और भी होंगी, यहां तक कि उससे भी छोटी,' रशीद ने कहा। 'काबुल में हर कोई यही कर रहा है।'

लैला ने कहा कि दूसरे लोग अपने बच्चों के साथ क्या कर रहे हैं, इसकी

उसे परवाह नहीं है।

'मैं उस पर नजदीक से नजर रखूंगा,' रशीद ने कहा। अब वो पहले से बेसब्र हो गया था। 'यह एक महफूज़ नुक्कड़ है। सड़क के उस पार मस्जिद है।'

'मैं तुम्हें अपनी बेटी को सड़क की भिखारिन नहीं बनाने दूंगी,' लैला गुस्से से बोली।

थप्पड़ की एक तेज़ आवाज़ आई, रशीद की मोटी उंगलियों वाला हाथ लैला के गालों के मांस पर पड़ा। इससे उसका सिर झटका खा गया। रसोई से आवाज़ें आनी बंद हो गईं। एक पल के लिए घर पूरी तरह खामोश हो गया। गलियारे में दौड़ते कदमों की आवाज़ आई और फिर मरियम और बच्चे बैठक में थे और लैला और रशीद को बारी बारी से देख रहे थे।

तभी लैला ने रशीद को मुक्का मारा।

पहली बार उसने किसी को मारा था, इसमें उसके और तारिक़ के बीच की खेल-खेल में मुक्केबाज़ी की गिनती शामिल नहीं है। लेकिन तब वो खुली मुट्ठियों से अपने आप में सचेत, दोस्ताना तरीके से खेलते थे, जिनमें मुट्ठियों के बजाए थपकियां इस्तेमाल की जातीं। वो ऐसी उत्तेजनाओं का ज़ाहिर रूप होतीं, जो एक ही साथ पेचीदा भी होतीं और रोमांचक भी। उनका निशाना वो मांसपेशी होती जिसे तारिक़ अपनी प्रोफेसराना आवाज़ में डेल्टाइड कहता।

लैला ने अपनी बंद मुट्ठी के मेहराब को देखा, उसने हवा में लहराते देखा और अपनी मुट्ठी पर रशीद के खूंटियों वाले खुरदरे चमड़े की सलवटों को महसूस किया। ऐसी आवाज़ निकली मानो चावल की बोरी फर्श पर गिर गई हो। उसने उसे ज़ोर से मारा था। इसके असर से वो दो क़दम पीछे हट गया।

कमरे की दूसरी तरफ़ से एक हांफ, एक तीखी आवाज़ और चीख आई। लैला नहीं जान पाई कि कौन सी आवाज़ किसने निकाली थी। उस पल वो इतनी हक्का-बक्का थी कि किसी बात पर ग़ौर नहीं कर रही थी या परवाह नहीं कर रही थी। उसका पूरा दिमाग उसी हरकत पर लगा हुआ उसे समझने की कोशिश कर रहा था, जिसे उसके हाथ ने कर दिया था। जब ये हुआ, उसे यकीन था कि वो शायद मुस्कुराई होगी। शायद वो मुस्कुराई होगी, जब उसे हैरान करते हुए रशीद कमरे से चुपचाप बाहर निकल गया।

एकबारगी लैला को लगा कि उनकी—उसकी, अज़ीज़ा की, मरियम

की-ज़िंदगियों की मुश्किलें सहज रूप से उड़ गई हैं, जैसे जल्मै की हथेली टीवी के पर्दे पर से उड़ गई थी। चाहे यह कितना भी बेतुका हो, ऐसा लगा कि उन लोगों ने जो कुछ भी बर्दाश्त किया था, उसे इस सर्वोच्च पल के लिए बर्दाश्त करना मुनासिब ही था, जिस पल में की गई अवज्ञा से भरी यह कार्रवाई सारी अमर्यादाओं का अंत कर देने वाली थी।

लैला ने इस पर ग़ौर नहीं किया कि रशीद कमरे में लौट आया था। जब तक कि उसका हाथ उसके गले के गिर्द नहीं पड़ा। जब तक उसे अपने पैरों से उठा कर दीवार से नहीं मार दिया गया।

ऊपर से उसका उपेक्षा से भरा हुआ चेहरा नामुमकिन तरीके से बड़ा दिख रहा था। लैला ने ग़ौर किया कि उम्र के साथ वो कितना सूजता जा रहा था, उसकी नाक पर कितनी टूटी हुई नसें राह बनाती निकल रही थीं। रशीद ने कुछ नहीं कहा। और सचमुच में क्या कहा जा सकता था, क्या कहने की ज़रूरत थी, अगर आपने अपनी बीवी के मुंह में बंदूक की नली ठूंस दी हो?

आंगन में गड्ढा खोदने की वजह छापे थे। ये कभी-कभी माहवार पड़ते कभी हफ़्तावार। इधर तो रोज़ होने लगे थे। ज़्यादातर तो तालिबान चीज़ों को जब्त करते, किसी आदमी के पिछवाड़े में एक लात लगाते, एक या दो सिरों को बजाते। लेकिन कभी कभी सरेआम पिटाई होती, पांवों के तलवों और हथेलियों में कोड़े लगाए जाते।

'हल्के से,' मरियम ने अब कहा। उसने कगार पर घुटने टिका रखे थे। उन्होंने प्लास्टिक की चादर के सिरों के पकड़े हुए टीवी को गड्ढे में उतारा, जिसमें उसे लपेट दिया गया था।

'यह कारगर होना चाहिए,' मरियम ने कहा।

काम पूरा हो जाने के बाद उन्होंने गड्ढे को भर कर मिट्टी को हथेलियों से थपथपाया। उन्होंने थोड़ी मिट्टी आस पास भी बिखेर दी ताकि यह अलग न दिखे।

'लो,' मरियम ने अपनी पोशाक पर हाथ फिराते हुए कहा।

उन्होंने राय की थी कि जब सुरक्षित होगा, जब तालिबान छापे कम कर देंगे तो एक या दो या छह महीनों में या शायद इसमें उससे भी ज़्यादा वक़्त लगे, वो खोद कर टीवी निकाल लेंगी।

लैला के सपने में वो और मरियम औजारों के छप्पर के पीछे फिर से खोद रही थीं। लेकिन इस बार वो अज़ीज़ा को गड्ढे में उतार रही थीं। अज़ीज़ा की सांसें प्लास्टिक की चादर पर कोहरा बना रही थीं, जिसमें उन्होंने उसे लपेट रखा था। लैला ने उसकी खौफजदा आंखें, प्लास्टिक को धकेलती उसकी हथेलियों की सफ़ेदी देखीं। अज़ीज़ा फरियादें कर रही थी। लैला उसकी चीखें नहीं सुन पा रही थी। बस कुछ देर के लिए, वो बोल रही थी, बस कुछ देर के लिए। छापा पड़ने वाला है, नहीं जानती तुम मेरी जान? जब छापा ख़त्म हो जाएगा, तो मम्मी और खाला मरियम तुम्हें खोद कर निकाल लेंगी। वादा करती हूं, मेरी जान। फिर हम खेल सकते हैं। तुम जो भी चाहोगी हम वो खेल सकते हैं। उसने फावड़े में मिट्टी भरी। जब मिट्टी का पहला ढेला प्लास्टिक पर लगा तो लैला मुंह में मिट्टी का स्वाद लिए दम घुटने से जग पड़ी थी।

इकतालीस

मरियम

सूखा सन 2000 की गर्मियों में अपने तीसरे और सबसे बदतरीन साल में दाख़िल हो गया था।

हेलमंद, जाबोल, कांधार में गांव खानाबदोश समुदायों में बदल गए थे जो हमेशा पानी और मवेशियों के लिए हरे चारे की तलाश में घूमते रहते थे। जब उन्हें कुछ भी नहीं मिला और उनकी बकरियां और भेड़ें और गाएं मर गई तो वो काबुल चले आए। वो कारतेह-आरियाना पहाड़ी इलाके में कामचलाऊ झोपड़ियां खड़ी करके रहने लगे। इन भरी हुई झोपड़ियों में कभी-कभी एक साथ पंद्रह से बीस लोग रहते थे।

गर्मियों का यही मौसम टाइटैनिक का मौसम भी था, इन्हीं गर्मियों में मरियम और अज़ीज़ा शरारतों, हंसी ठट्ठे में उलझी रहतीं। अज़ीज़ा ज़िद करती कि उसे जैक बनना है।

'चुप हो जाओ, अज़ीज़ा जो।'

'जैक! मुझे बुलाइए, खाला मरियम। बोलिए। जैक!'

'तुमने उन्हें जगा दिया तो तुम्हारे अब्बा गुस्सा करेंगे।'

'जैक! और आप हैं रोज़।'

आख़िर में मरियम पीछे हट जाती, हार मान लेती और फिर से रोज़ बनना कबूल कर लेती। 'ठीक है, तुम जैक हो,' वो हार मानते हुए कहती। 'तुम जवानी में मर जाओ और मैं बूढ़ी होने तक जीऊंगी।'

'हां, लेकिन मैं एक हीरो की तरह मरूंगी,' अज़ीज़ा कहती, 'जबकि तुम रोज़, तुम एक पूरी, बेचारी ज़िंदगी मेरे लिए तरसते हुए गुज़ारोगी।' तब वो मरियम के सीने पर बैठते हुए वो ऐलान करती, 'अब आप मुझे चूमेंगी!' मरियम मना करते हुए सिर हिलाती और अज़ीज़ा अपने हैरान कर देने वाले रवैए के साथ खुश होते हुए खुले हुए होंठे से खिलखिलाती।

कभी कभी जल्मै भी दबे पांव आकर खेल देखता। जब भी वो होता, उससे पूछा जाता।

'तुम बर्फ़ का टीला बन सकते हो,' अज़ीज़ा कहती।

उस गर्मियों में टाइटेनिक का बुखार काबुल को जकड़े रहा। लोग पाकिस्तान से फ़िल्म की पाइरेटेड कॉपियां चोरी-छिपे लाते-कभी कभी तो अपने अंडरवियर तक में छुपा कर। कर्फ्यू के बाद हर कोई अपने दरवाज़े बंद कर लेता, बत्तियां बुझा कर, आवाज़ धीमी करके जैक और रोज़ और बदनसीब जहाज़ की सवारियों के लिए आंसू बहाता। अगर बिजली होगी, मरियम लैला और बच्चे भी इसे देखते। एक दर्जन भर बार या इससे भी ज़्यादा देर उन्होंने रात गए औजारों के छप्पर के पीछे के गड्ढे से टीवी को निकाला और बत्तियां बंद कर और खिड़कियों पर लिहाफ डाल कर देखते।

काबुल नदी में दुकानदार नदी की सूखी पेटी में चले गए थे। जल्दी ही इसकी सख़्त और सूखी हुई पेटी में ठेलों पर लगी गांठों में टाइटेनिक दरियां, टाइटेनिक कपड़े ख़रीदे जा सकते थे। टाइटेनिक डियोडोरेंट, टाइटेनिक टूथपेस्ट, टाइटेनिक परफ्यूम, टाइटेनिक पकोरा और यहां तक कि टाइटेनिक बुर्के भी मिलने लगे थे। एक ख़ास ज़िद्दी भिखारी ने खुद को 'टांइटेनिक भिखारी' कहना शुरू कर दिया था।

'टाइटेनिक शहर' जन्म ले चुका था।

यह गीत है, वो कहते।

नहीं, समुद्र है। लक्ज़री। जहाज़।

यह सेक्स है, वो फुसफुसाते।

लियो, अज़ीज़ा शर्माते हुए कहती। यह कुल मिला कर लियो के बारे में है।

'हर कोई जैक को चाहता है,' लैला ने मरियम से कहा। 'यह ऐसा ही है। हर कोई जैक को तबाही से बचाना चाहता है। लेकिन जैक है ही नहीं।

जैक लौट नहीं रहा है। जैक मर चुका है।'

फिर उन्हीं गर्मियों में, बाद के दिनों में एक कपड़ा बेचने वाला सोने से पहले अपनी सिगरेट बुझाना भूल गया। आग से वह तो बच गया लेकिन उसका स्टोर नहीं बचाया जा सका। आग पास के स्टोर तक फैल गई थी जिसमें एक सेकेंडहैंड कपड़ों की दुकान, फर्नीचर और बेकरी की दुकानें थीं।

लोगों ने रशीद को बताया कि अगर हवा पश्चिम के बजाए पूरब की तरफ़ बह रही होती तो उसकी दुकान बच सकती थी, जो ब्लॉक के कोने पर थी।

उन्होंने हर चीज़ बेच दी।

पहले मरियम की चीजें बिकीं, फिर लैला की। अज़ीज़ा के बचपन के कपड़े, वो थोड़े से खिलौने जिन्हें ख़रीद देने के लिए लैला को रशीद से झगड़ना पड़ा था। अज़ीज़ा इस पूरी कार्रवाई को एक हारी हुई निगाह से देखती रही। रशीद की घड़ी भी बिक गई, उसका पुराना ट्रांज़िस्टर रेडियो, उसकी नेकटाई का जोड़ा, उसके जूते, उसकी शादी की अंगूठी। पलंग, टेबल, कालीन और कुर्सियां भी चली गईं। रशीद ने जब टीवी बेचा तो बौखलाए हुए ज़ल्मै ने ख़ूब रोनाधोना मचाया।

आग के हादसे के बाद रशीद लगभग पूरे दिन घर पर रहता। वो अज़ीज़ा को थप्पड़ मारता। मरियम को लातें लगाता। चीज़ें फेंकता। लैला में वो मीन-मेख खोजा करता, उसके महकने पर, उसके कपड़े पहनने के तरीके पर, बालों को कंघी करने के उसके तरीके पर, उसके पीले पड़ते दांतों पर।

'क्या हो गया है तुम्हें?' वो कहता। 'मैंने एक परी से शादी की थी और अब मैं एक खूसट बुढ़िया के साथ बैठा हूं। तुम मरियम बनती जा रही हो।'

उसे हाजी यागूब मस्जिद के पास कबाब हाउस की नौकरी से निकाल दिया गया, क्योंकि वो और एक ग्राहक झगड़ बैठे थे। ग्राहक ने शिकायत की कि रशीद ने बेरुखी से उसकी टेबल पर रोटी पटकी थी। दोनों ने एक दूसरे को कड़ी बातें कहीं। रशीद ने ग्राहक को बंदर के मुंह वाला उज़्बेक कहा। एक बंदूक निकली। इसके जवाब में कबाब के लिए इस्तेमाल में लाई जाने वाली एक सींख तानी गई। रशीद की कहानी के मुताबिक उसने सींख

तानी थी। मरियम को इसमें संदेह था।

उसे तैमानी के रेस्टोरेंट से भी छुट्टी दे दी गई क्योंकि ग्राहकों ने देर तक इंतज़ार कराए जाने की शिकायत की थी। रशीद का कहना था कि रसोइया ही सुस्त और आलसी था।

'शायद तुम ऊंघने लग जाते होंगे,' लैला ने कहा।

'उसे उकसाओ नहीं, लैला जो,' मरियम बोली।

'औरत, मैं तुमको चेता रहा हूं,' वो बोला।

'या तो सो रहे होंगे या सिगरेट पी रहे होंगे।'

'खुदा कसम।'

'तुम उससे अलग नहीं हो सकते जो तुम हो।'

और फिर वो लैला के पीछे पड़ा, उसके सीने, उसके सिर, उसके पेट पर मुक्के मारने लगा, उसके बाल नोचने लगा, उसे कुएं में धकेलने ले जाने लगा। अज़ीज़ा कांपते हुए उसकी कमीज़ खींच रही थी, जल्मै भी चिल्ला रहा था और उसकी पकड़ से अम्मी को छुड़ाने की कोशिश कर रहा था। रशीद ने बच्चों को परे धकेल दिया, लैला को ज़मीन पर पटका और उसे लात मारने लगा। मरियम लैला के ऊपर लेट गई। रशीद ने लातें मारना जारी रखा था जो अब मरियम को लग रही थीं। रशीद के मुंह से थूक उड़ रही थी, उसकी आंखें कातिलाना इरादे से चमक रही थीं। वो तब तक लात चलाता रहा जब तक थक नहीं गया।

'खुदा कसम, तुम मुझे तुम्हारी जान ले लेने के लिए मजबूर कर रही हो, लैला,' हांफते हुए वो बोला। फिर वो झोंके की तरह घर से निकल गया।

जब पैसे ख़त्म हो गए तो भूख उनकी ज़िंदगियों पर पसरने लगी। जिस तेज़ी से बढ़ती हुई भूख उनकी ज़िंदगियों का अहम हिस्सा बन गई थी, उससे मरियम हैरान रह गई।

उबला हुआ और सफ़ेद भात, जिसके साथ अब गोश्त या सॉस भी नहीं होता, एक दुर्लभ दावत हुआ करती। अब बढ़ती हुई खतरनाक नियमितता के साथ वे उपवास करने लगे थे। कभी-कभी रशीद एक टिन या ब्रिटल में सार्डीन और सूखी रोटियां ले आता, जो स्वाद में लकड़ी के बुरादे जैसी लगतीं। हाथ काट लिए जाने का जोखिम उठा कर कभी कभी वो सेबों के चुराए हुए थैले ले आता। राशन की दुकानों में वो रैविओली के डिब्बे सावधानी से जेब में

छुपा लेता, जिन्हें वो पांच हिस्सों में बांटते। जल्मै को सबसे बड़ा हिस्सा मिलता। वो कच्चे शलजम पर नमक छिड़क कर खाते। रात के खाने में वो प्याज की लंबी पत्तियां और काले पड़ गए केले खाते।

भूख से मौत एकाएक एक ख़ास आशंका बन गई थी। किसी को इसके लिए बहुत इंतज़ार नहीं करना पड़ता। मरियम ने पड़ोस की एक बेवा के बारे में सुना, जिसने सूखी रोटियों में चूहे मारने की दवा मिला कर उसे पीसा और अपने सभी सात बच्चों को खिला दिया। सबसे बड़ा हिस्सा उसने ख़ुद के लिए रख लिया था।

अज़ीज़ा की पसलियां दिखने लगी थीं और उसके गालों की चर्बी गायब हो गई थी। उसके पंजे दुबले हो गए थे और उसकी रंगत हल्की चाय की तरह हो आई थी। जब मरियम उसे उठाती तो वो उसकी तनी हुई चमड़ी पर उसके कूल्हे की चुभती हुई हड्डी को महसूस करती। जल्मै घर में लेटा रहता। उसकी आंखें सुस्त और आधी बंद रहतीं या फिर अपने अब्बा की गोद में दरी की तरह पड़ा रहता। जब वो थोड़ी ऊर्जा जुटा पाता तो वो सोने के लिए रोता लेकिन उसकी नींद दौरों से भरी हुई और अनियमित हो गई थी। मरियम जब उठती तो उसकी नज़रों के आगे सफ़ेद घेरे नाचते। उसका सिर घूमता और उसके कान हमेशा बजते रहते। उसे भूख के बारे में मुल्ला फैज़ुल्ला की बात याद आती, जिसे वो रमज़ान शुरू होने पर कहा करते थेः सांप का काटा हुआ आदमी तक सो सकता है, लेकिन भूखा नहीं सो सकता।

'मेरे बच्चे मरने वाले हैं,' लैला कहती। 'ठीक मेरी आंखों के सामने।'

'वो नहीं मरेंगे,' मरियम कहती। 'मैं उन्हें मरने नहीं दूंगी। सब ठीक हो जाएगा, लैला जो। मुझे पता है कि क्या करना है।'

एक तपते हुए गर्म दिन को मरियम ने बुर्का पहना और वो और रशीद पैदल इंटरकॉन्टिनेंटल होटल गए। बस किराया अब एक महंगी विलासिता थी और खड़ी पहाड़ी के ऊपर पहुंचते-पहुंचते मरियम को देर हो गई। सीढ़ियां चढ़ते हुए उसे चक्कर आए और दो बार उसे रुकना पड़ा ताकि चक्कर थम जाएं।

होटल के दाख़िले पर रशीद एक डोरमैन से दुआ-सलाम करके गले मिला, जिसने बरगंडी सूट और विसर टोपी पहन रखी थी। उनमें कुछ दोस्ताना

लगने वाली बातचीत हुई। रशीद उस डोरमैन की कोहनी थामे हुए बात कर रहा था। उसने एक बार मरियम की तरफ़ भी हाथ उठाया और दोनों उसे देखने लगे। मरियम ने सोचा कि उस डोरमैन में कोई जानी-पहचानी बात थी।

डोरमैन के भीतर जाने के बाद मरियम और रशीद बाहर इंतज़ार करने लगे। उस जगह से, जहां से दूर-दूर तक का नज़ारा दिख रहा था, मरियम को पॉलीटेक्नीक इंस्टीट्यूट और उसके पार पुराना खैर खाना ज़िला और मज़ार की तरफ़ जाता रास्ता दिख रहा था। दक्षिण में वो रोटियों के कारखाने सिलो को देख सकती थी, जो बहुत दिनों से बंद थी। इसकी पीली दीवार उस गोलीबारी के खुले हुए छेदों के साथ सिर उठाए झांक रही थीं, जिसे उसने अपने ऊपर झेला था। उससे भी आगे दक्षिण में वो दारुलअमन पैलेस के गिरे हुए खंडहरों को देख पा रही थी, जहां बरसों पहले रशीद उसे पिकनिक पर ले गया था। उस दिन की याद अतीत का एक ऐसा टुकड़ा थी, जो अब उसकी अपनी ज़िंदगी का अतीत नहीं लगता था।

मरियम अपना ध्यान इन्हीं चीज़ों पर, जगहों और इमारतों पर लगाए रही। उसे डर था कि अगर उसने अपना दिमाग भटकने दिया तो वो होश खो बैठेगी।

हर कुछ मिनट में जीपें और टैक्सियां होटल के दाख़िले तक आतीं। डोरमैन सवारियों का स्वागत करने के लिए भाग कर जाते। सभी सवारियां मर्द होतीं, हथियार लिए हुए, दाढ़ी बढ़ाए, पगड़ी पहने हुए। वो सभी कारों से एक जैसे हौसले और रोब-दाब के साथ निकलतीं। होटल के दरवाज़ों के पार ओझल होते हुए उनकी बातों के टुकड़े मरियम को सुनाई देते। उसे पश्तो और फ़ारसी सुनाई देती, लेकिन उर्दू और अरबी भी।

'हमारे असली मालिकों से मिलो,' रशीद ने धीमी आवाज़ में कहा। 'पाकिस्तानी और अरब इस्लामवादी। तालिबान तो कठपुतलियां हैं। ये बड़े खिलाड़ी हैं और अफ़ग़ानिस्तान उनका खेल का मैदान है।'

रशीद ने बताया कि उसने अफवाहें सुनी हैं कि तालिबान इन लोगों को देश भर में खुफिया कैंप लगाने की इजाज़त दे रहे हैं, जहां नौजवान फिदायीन बमबाज़ और जिहादी लड़ाके बनने के लिए ट्रेन किए जा रहे थे।

'उनको इतनी देर क्यों लग रही है?' मरियम ने कहा।

रशीद ने थूक फेंकी और लात मार कर उसे धूल से ढंक दिया।

घंटे भर बाद वो, मरियम और रशीद उस डोरमैन के पीछे-पीछे भीतर जा रहे थे। खुशनुमा ठंडी लॉबी से होकर ले जाए जाते हुए उनकी एड़ियां टाइलों वाली फर्श पर बज रही थीं। मरियम ने दो लोगों को चमड़े की कुर्सियों पर बैठे देखा। उनके बीच में राइफलें और कॉफी टेबल रखी थी और वो काली चाय पीते हुए, एक प्लेट में रखी रस में डूबी हुई जलेबियां खा रहे थे। मरियम को अज़ीज़ा का ख़याल आया, जिसे जलेबियां बहुत पसंद थीं और उसने नज़र दूसरी तरफ़ फेर ली।

डोरमैन उन्हें बाहर एक बालकनी में ले गया। अपनी जेब से उसने एक छोटा-सा काला कॉर्डलेस फोन और काग़ज़ का एक टुकड़ा निकाला, जिस पर फोन नंबर लिखा हुआ था। उसने रशीद को बताया कि यह उसके सुपरवाइज़र का सैटेलाइट फोन था।

'मैंने तुम्हारे लिए पांच मिनट हासिल किए हैं,' उसने कहा। 'इससे ज़्यादा नहीं।'

'तशक्कुर,' रशीद ने कहा। 'मैं इसे भूलूंगा नहीं।'

डोरमैन ने सिर हिलाया और चला गया। रशीद ने नंबर डायल किया। उसने मरियम को फोन दे दिया।

फोन पर घंटी की खरोंचती हुई आवाज़ सुनते हुए मरियम का दिमाग भटकने लगा। वो वहां जा पहुंचा, जब उसने आख़िरी बार जलील को देखा था। यह तेरह साल पहले 1987 का बसंत था। वो उसके घर के बाहर गली में छड़ी के सहारे झुका हुआ खड़ा था। उसकी बग़ल में हेरात की लाइसेंस प्लेट वाली नीली बेंज़ खड़ी थी, जिसकी छतों, हुड और ट्रंक को एक सफ़ेद पट्टी बांट रही थी। वो घंटों वहां खड़ा उसका इंतज़ार करता रहा। थोड़ी-थोड़ी देर में वो उसका नाम पुकारता, जैसे मरियम एक बार उसके घर के बाहर उसे पुकार रही थी। मरियम ने एक बार बस थोड़ा सा पर्दा सरका कर, उसे एक झलक देखा था। केवल एक झलक, लेकिन यह देख लेने के लिए उतनी ही देर काफ़ी थी कि जलील के बाल सफ़ेद हो गए थे और वो झुकने लगा था। उसने चश्मा पहन रखा था, हमेशा की तरह एक लाल टाई लगा रखी थी और सीने की जेब में एक सफ़ेद रूमाल तिकोना मोड़ कर लगाया हुआ था। सबसे ज़्यादा ध्यान इस पर गया कि वो दुबला हो गया था, पहले से

कहीं ज़्यादा दुबला, और तब उसने याद किया कि उसका गहरा स्याह कोट उसके कंधों पर झूल रहा था और पैंट उसकी एड़ियों तक लटक गई थी।

पल भर के लिए ही सही, लेकिन जलील ने भी उसे देख लिया था। पर्दे की उस झिर्री से ही उनकी आंखें थोड़ी देर को मिली थीं, जिस तरह बरसों पहले वो इसी तरह पर्दों के एक और जोड़े के पीछे से मिली थीं। लेकिन तभी मरियम ने जल्दी से पर्दा खींच लिया था। वो बिस्तर पर बैठ गई और उसके जाने का इंतज़ार करती रही।

उसे अब उस ख़त का ख़याल आया, जिसे जलील उसके दरवाज़े पर छोड़ गया था। कई दिनों तक उसने उसे अपने तकिए के नीचे रखा। कभी-कभी वो उसे उठाती, हाथों में उलट-पलट कर देखती। आख़िर में उसने ख़त के टुकड़े-टुकड़े कर दिए थे।

और अब वो इतने बरसों के बाद उसे फोन कर रही थी।

मरियम को अब अपने लड़कपन की बेवक़ूफ़ी भरी आन पर पछतावा हो रहा था। उसने चाहा कि उसने जलील को भीतर आने दिया होता। उसे भीतर आने देने में, उसके साथ बैठने में, जो बात वो कहने आया था उसे कहने देने में क्या हर्ज था? वो उसका बाप था। यह सही था कि वो एक अच्छा बाप नहीं था, लेकिन रशीद के बुरे व्यवहारों या उस क्रूरता और हिंसा से तुलना करने पर, जिसे उसने लोगों को एक दूसरे के ख़िलाफ़ इस्तेमाल करते देखा था, अब जलील की गलतियां कितनी साधारण लग रही थीं, उन्हें माफ़ किया जा सकता था।

उसने चाहा कि उसने उसका ख़त नहीं फाड़ा होता।

एक मर्द की गहरी आवाज़ उसके कानों में बजी और उसने बताया कि वो हेरात के मेयर के दफ्तर में है।

मरियम ने गला साफ़ किया। 'सलाम, बिरादर। मैं किसी को खोज रही हूं जो हेरात में रहते हैं। या बरसों पहले रहते थे। उनका नाम जलील खान है। वो शार-ए-नौ में रहते थे और उनका एक सिनेमाघर था। क्या आपको उनके पता-ठिकाना के बारे में कुछ मालूम है?'

मर्द की आवाज . में चिढ़ साफ़ सुनाई दे रही थी। 'आपने इसके लिए मेयर के दफ्तर में फोन किया है?'

मरियम ने बताया कि उसे नहीं मालूम कि किसे फोन किया जाए।

'माफ़ कीजिए बिरादर। मुझे पता है कि आपको अहम काम देखने हैं, लेकिन यह ज़िंदगी और मौत का मामला है, यह ज़िंदगी और मौत का सवाल है, जिसके लिए मैं फोन कर रही हूं।'

'मैं उन्हें नहीं जानता। सिनेमाघर तो अनेक बरसों से बंद हैं।'

'शायद कोई हो, जो उन्हें जानता हो, कोई-'

'ऐसा कोई नहीं है।'

मरियम ने आंखें बंद कर लीं। 'मेहरबानी करके बिरादर। बच्चों का मामला है। छोटे-छोटे बच्चों का।'

एक लंबी गहरी सांस।

'शायद कोई हो-'

'यहां एक माली है जो पूरी ज़िंदगी यहीं रहा है।'

'हां, मेहरबानी करके उससे पूछिए।'

'कल फोन कीजिए।'

मरियम ने कहा कि वो ऐसा नहीं कर सकेगी। 'मेरे पास फोन बस पांच ही मिनटों के लिए है। मैं नहीं कर सकूंगी-'

दूसरे सिरे से क्लिक की आवाज़ आई और मरियम ने सोचा कि उसने फोन रख दिया है। लेकिन वो कदमों का आवाज़ें, बातें, दूर से बजती कार की सीटी और क्लिक-क्लिक की लय के साथ किसी मशीन की घरघराहट की आवाज़ें आ रही तीं। शायद ये बिजली का पंखा था। मरियम ने फोन दूसरे कान से लगा लिया और आंखें बंद कर लीं।

ख्यालों में उसने मुस्कुराते हुए जलील को देखा जो अपनी जेब की तरफ़ हाथ बढ़ा रहा था।

आह। बेशक। खैर। तो ये लो। बिना किसी और सजाव...

पत्तियों की शक्ल का एक पेंडेंट, जड़े हुए चांद और सितारों की लटकन वाले नन्हें सिक्के।

पहन कर देखो मरियम जो।

आपको कैसा लगा?

मुझे लगता है कि तुम एक रानी जैसी दिख रही हो।

कुछ मिनट गुज़रे। इसके बाद कदमों की आवाज़ें, चरमराने की आवाज़ और एक क्लिक। 'वो उनको जानता है।'

'वो जानता है?'

'उसने यही बताया।'

'वो कहां हैं?' मरियम ने कहा। 'क्या इस आदमी को पता है कि जलील ख़ान कहां हैं?'

पल भर की चुप्पी। 'उसका कहना है कि वो कुछ बरस पहले 1987 में मर गए।'

मरियम का पेट बैठ गया। बेशक, उसने इस संभावना पर भी सोचा था। जलील अब पचहत्तर पार कर चुका होता, लेकिन...

1987।

तब वो मर रहा था। हेरात से चल कर वो अलविदा कहने आया था।

वो बालकनी की कगार पर चली गई। वहां से वो होटल का स्वीमिंग पूल देख सकती थी, जो कभी मशहूर था और अभी खाली और गंदा था। उसमें गोलियों के छेदों के निशान थे और टाइलें झड़ रही थीं। और एक अस्त-व्यस्त टेनिस कोर्ट था, जिसके बीच में चीथड़े हो चुकी जाली सांप की केंचुल की तरह लटकी हुई थी।

'अब मुझे जाना होगा,' दूसरे सिरे पर आवाज़ ने कहा।

'ज़हमत देने के लिए माफ़ी चाहती हूं बिरादर,' मरियम ने फोन पर बेआवाज़ रुलाई रोते हुए कहा। मन में उसने जलील को अपनी तरफ़ हाथ लहराते हुए, एक पत्थर से दूसरे पत्थर पर उछल कर धारा को पार करते हुए, तोहफ़ों से फूली हुई जेब के साथ देखा। उन सारे वक़्तों को याद किया जब वो दम साधे उसका इंतज़ार करती, ख़ुदा से कहती कि वो उसके साथ कुछ और समय गुज़ारने का मौक़ा दे। 'शुक्रिया,' मरियम ने कहना शुरू किया लेकिन दूसरी तरफ़ वो आदमी फोन रख चुका था।

रशीद उसे देख रहा था। मरियम ने इन्कार में सिर हिलाया।

'बेकार,' उसने मरियम से फोन छीनते हुए कहा। 'जैसी बेटी वैसा बाप।'

लॉबी से निकलते हुए रशीद फुर्ती से कॉफी टेबल की तरफ़ गया, जो अब खाली थी, और वहां बची रह गई आख़िरी जलेबी जेब में रख ली। वो उसे घर ले आया और जल्मै को दे दीया।

बयालीस

लैला

एक कागज़ी थैले में अज़ीज़ा ने ये चीज़ें पैक कीं: अपनी फूलदार कमीज़ और मोज़ों का अकेला जोड़ा, अपने बेमेल ऊनी दस्ताने, एक पुराना, कोंहड़े के रंग का कंबल जिस पर सितारे और धूमकेतू बने हुए थे, एक दरार पड़ा हुआ प्लास्टिक का कप, एक केला और अपने पांसों का सेट।

2001 में लैला के तेईसवें जन्मदिन से कुछ ही दिन पहले की, अप्रैल की एक सर्द सुबह थी। आसमान स्याह था और नाखुशगवार ठंडी हवा स्क्रीन डोर को भड़भड़ा रही थी।

लैला ने कुछ दिन पहले सुना था कि अहमद शाह मसूद फ्रांस गया था और उसने यूरोपीय संसद से बात की थी। मसूद अब अपने उत्तरी इलाके में था जहां वो उत्तरी गठबंधन की रहनुमाई कर रहा था। यह गठबंधन तालिबान के ख़िलाफ़ अभी लड़ रहा अकेला विरोधी समूह था। यूरोप में मसूद ने पश्चिम को अफ़ग़ानिस्तान के आतंकवादी शिविरों के बारे में चेताया था और अमेरिका के साथ-साथ उनसे फरियाद की थी कि वो तालिबान के ख़िलाफ़ लड़ाई में उनकी मदद करें।

'अगर सदर बुश हमारी मदद नहीं करते,' उसने कहा था, 'तो ये दहशतगर्द जल्दी ही अमेरिका और यूरोप को नुक़सान पहुंचाएंगे।'

इसके महीने भर पहले लैला को पता लगा कि तालिबान ने बामियान के विशाल बुद्धों की दरारों में टीएनटी लगा कर उन्हें उड़ा दिया था। उन्होंने

कहा था कि बुद्धों की मूर्तियां बुतपरस्ती और गुनाह की चीज़ें थीं। अमेरिका से लेकर चीन तक पूरी दुनिया ने इसका विरोध किया। पूरी दुनिया की सरकारों, इतिहासकारों और पुरातत्वचेत्ताओं ने चिट्ठियां लिख कर तालिबान से फरियाद की कि अफ़ग़ानिस्तान के इन महान ऐतिहासिक कलाकृतियों को तबाह न किया जाए। लेकिन तालिबान ने अपनी करते हुए दो हज़ार साल पुराने बुद्धों को बम को उड़ा दिया। हर धमाके के साथ वे अल्लाह-ओ-अकबर कहते, हर बार धूल के बादलों में मूर्तियों के हाथ या पैर उड़ने पर ख़ुशी से चिल्लाते। लैला को 1987 में उनमें से बड़े बुद्ध के ऊपर बाबी और तारिक़ के साथ खड़े होना याद आया। धूप से रोशन उनके चेहरों पर हवा के झोंकों का पड़ना, नीचे दमकती हुई वादी में गोल-गोल घूमते बाज़ को उड़ते देखना याद आया। लेकिन जब लैला ने मुर्तियों के तोड़े जाने के बारे में सुना तो उस पर इसका असर नहीं हुआ। उसके लिए मुश्किल से ही ये मायने रखती थी। जब उसकी अपनी ज़िंदगी धूल में मिल गई थी तो उसे मूर्तियों की क्या परवाह होती?

जब तक रशीद ने नहीं कहा कि उसके चलने का वक़्त हो गया है, वो बैठक के एक कोने में फर्श पर बिना कुछ बोले, पत्थर जैसा चेहरा बनाए बैठी रही। उसके बिखरे हुए बालों की लटें चेहरे पर झूल रही थीं। चाहे वो कितनी भी सांस खींचे, लैला को लग रहा था कि वो अपने फेंफड़ों में पर्याप्त हवा नहीं भर पा रही थी।

कारतेह-सेह के रास्ते में जल्मै रशीद के बांहों में उछलता रहा और अज़ीज़ा मरियम का हाथ पकड़े चुपचाप उसकी बग़ल में जल्दी-जल्दी चलती रही। हवा अज़ीज़ा की ठोढ़ी के नीचे बंधी गंदी स्कार्फ को और उसकी पोशाक की किनारी को उड़ा रही थी। हरेक क़दम के साथ अज़ीज़ा अब और उदास होती जा रही थी, ज्यों-ज्यों वो महसूस करने लगी थी कि उससे झूठ बोला गया था। अज़ीज़ा को सच बताने की हिम्मत लैला नहीं जुटा पाई थी। उसने उसे बताया था कि वो एक स्कूल जा रही थी, एक ऐसा ख़ास स्कूल जहां बच्चे खाते और सोते हैं और क्लास के बाद घर नहीं लौटते। अब अज़ीज़ा बार-बार लैला से वो सवाल कर रही थी, जो वो पिछले कई दिनों से उससे पूछ रही थी। क्या बच्चे अलग-अलग कमरों में सोते हैं या सारे एक ही बड़े कमरे में रहते हैं? क्या वो दोस्त बनाएगी?

क्या लैला को यकीन था कि वहां टीचर अच्छे होंगे?

और सबसे ज़्यादा, मुझे वहां कितने समय तक रहना होगा?

वो एक कब्ज़ाई हुई, बैरकनुमा इमारत से दो ब्लॉक पहले रुक गए।

'जल्मै और मैं यहां इंतज़ार करेंगे,' रशीद ने कहा। 'ओह, मैं भूल जाऊं, इससे पहले... '

रशीद ने अपनी जेब से एक च्यूइंग गम का टुकड़ा निकाला और विदाई के वक़्त के तोहफ़े के बतौर अज़ीज़ा की तरफ़ बढ़ाया। वो जड़ और उदार दिख रहा था। अज़ीज़ा ने उसे ले लिया और बुदबुदा कर शुक्रिया कहा। अज़ीज़ा के सलीके और माफ़ कर देने की उसकी बड़ी काबिलियत पर लैला मुग्ध हो गई और उसका आंखें भींग गईं। उसका दिल उमड़ पड़ा और इस दुख से वो बेसुध हो गई कि आज दोपहर में अज़ीज़ा उसकी बग़ल में नहीं सोई होगी, कि वो अपने सीने पर अज़ीज़ा के हल्के हाथ का वज़न, अपनी पसलियों में अज़ीज़ा के सिर का दबाव, उसकी गर्दन को गर्माहट से भरती अज़ीज़ा की सांसों, अपने पेट को दबाती उसकी एड़ियों को महसूस नहीं कर पाएगी।

जब अज़ीज़ा दूर ले जाई जाने लगी तो जल्मै रोने, चिल्लाने लगा, ज़ीज़ा! ज़ीज़ा! अपने अब्बा की बांहों में कसमसाने और पांव झटकने लगा, अपनी बहन को पुकारता रहा जब तक कि सड़क पार एक मदारी के बंदर की तरफ़ उसका ध्यान नहीं बंट गया।

आख़िरी के दो ब्लॉक मरियम, लैला और अज़ीज़ा अकेले गईं। इमारत पर पहुंचे तो लैला को उसकी दरकी हुई बाहरी दीवार, लटकी हुई छतें, गायब खिड़कियों पर कीलों से ठुंके हुए लकड़ी के तख़्ते और गिरती हुई दीवार के ऊपर लगे झूले का ऊपरी सिरा दिखा।

वो दरवाज़े पर रुक गए और लैला ने अज़ीज़ा को फिर से वही बात कही, जो वो उसे पहले कह चुकी थी।

'और जब वो तुम्हारे अब्बा के बारे में पूछेंगे तो तुम क्या कहोगी?'

'उन्हें मुजाहिदीनों ने मार डाला,' अज़ीज़ा ने कहते हुए ऐसा मुंह बनाया मानो वो इसके बारे में बहुत नहीं जानती हो, लेकिन उसे पता हो कि यह जोखिम से भरा हुआ है।

'अच्छा है। अज़ीज़ा, समझ गईं ना?'

'क्योंकि यह एक ख़ास स्कूल है,' अज़ीज़ा ने कहा। अब जब वो यहां

आ चुके थे और इमारत एक हक़ीक़त थी, इस बात से वो छिली हुई दिख रही थी। उसका निचला होंठ कांप रहा था और उसकी आंखें रोने-रोने को हो रही थीं और लैला ने यह देख लिया कि वो बहादुर बनने के लिए कितनी जद्दोजहद कर रही थी। 'अगर हम सच बता दें,' अज़ीज़ा ने एक पतली, आवाज़ में बिना सांस लिए हुए कहा, 'तो वो मुझे नहीं रखेंगे। यह एक ख़ास स्कूल है। मैं घर जाना चाहती हूं।'

'मैं पूरे वक़्त आती रहूंगी,' लैला किसी तरह बोल पाई। 'वादा करती हूं।'

'मैं भी,' मरियम ने कहा। 'हम यहां तुमसे मिलने आएंगे, अज़ीज़ा जो और हमेशा की ही तरह हम साथ खेलेंगे। बस कुछ समय की बात है, जब तक तुम्हारे अब्बा को काम नहीं मिल जाता।'

'यहां खाना मिलता है,' लैला बेचैन होते हुए बोली। उसे बुर्के से सुकून मिला कि अज़ीज़ा यह नहीं देख सकती थी कि वो भीतर ही भीतर कैसे बिखर रही थी। 'यहां तुम भूखी नहीं रहोगी। वो भात और रोटी और पानी देते हैं, शायद फल भी।'

'लेकिन यहां आप नहीं रहेंगी। और मेरे साथ खाला मरियम नहीं होंगी।'

'मैं आकर तुमसे मिला करूंगी,' लैला ने कहा। 'पूरे वक़्त। मुझे देखो अज़ीज़ा, मैं आकर तुमसे मिलूंगी। मैं तुम्हारी अम्मी हूं। अगर इसमें मेरी जान भी चली जाए तब भी मैं तुमसे आकर मिलूंगी।'

यतीमखाने का डायरेक्टर एक झुका हुआ, पतले सीने वाला आदमी था, जिसका चेहरा ख़ुशगवार लकीरों से भरा था। वो गंजा था और उसकी लंबी, बिखरी हुई दाढ़ी थी। आंखें मटर की तरह थीं। उसका नाम ज़मान था। उसने टोपी पहन रखी थी। उसके चश्मे के शीशे चटके हुए थे।

अपने दफ़्तर की तरफ़ ले जाते हुए उसने लैला और मरियम से उनके नाम पूछे। उसने अज़ीज़ा का नाम और उम्र भी पूछा। वो एक कम रोशनी वाले गलियारे से होकर गुज़रे जहां नंगे पांव बच्चे निकल कर झांक रहे थे। कुछ के सिर मुंडे हुए थे कुछ के नहीं। उन्होंने उधड़ी हुई आस्तीनों वाले स्वेटर, घुटनों पर घिस कर तार-तार हो चुकी चीथड़े हो आई जींस पहन रखी थी। उनके कोटों में टेप की पैबंद लगी थी। लैला को साबुन और टेल्कम, अमोनिया

और पेशाब की गंध महसूस हुई। उसने महसूस किया कि लैला भी समझने लगी थी, और अब सुबक रही थी।

लैला को आंगन की एक झलक मिली : घास-पतवार, सूखा हुआ झूला, पिचकी हुई बास्केटबॉल। जिन कमरों से होकर वे गुज़रे उनमें कोई साज-सामान नहीं था, खिड़कियां प्लास्टिक की चादरों से ढंकी गई थीं। एक कमरे से एक लड़का निकला और उसने लैला की कोहनी पकड़ ली और उसकी गोद में चढ़ने की कोशिश करने लगा। एक सहायक ने अपना झाड़न नीचे रखा और बच्चो के हटा दिया।

ज़मान यतीमों के साथ नर्मी से पेश आता दिख रहा था। पास से गुज़रते हुए उसने कुछ के सिरों को थपथपाया, उन्हें एकाध दोस्ताना बातें कीं, उनके बाल सहलाए और यह सब उसने बिना अहसान जताए किया। बच्चों को उसका छूना अच्छा लगता था। लैला को लगा कि वो सारे उसे उम्मीद के साथ देख रहे थे।

वो उन्हें अपने दफ्तर में ले गया, जिसमें बस तीन फोल्डिंग कुर्सियां और बिखरे हुए कागजों के ढेर से भरी डेस्क थी।

'आप हेरात से हैं,' ज़मान ने मरियम से कहा। 'आपके लहजे से मैं बता सकता हूं।'

अपनी कुर्सी पर पीछे की तरफ़ झुक कर पेट पर अपने हाथ बांधते हुए उसने बताया कि उसका साला वहां रहा करता था। इस मामूली हाव-भाव में भी लैला ने उसकी गतिविधियों में मेहनत के काम पर ग़ौर किया। और हालांकि वो फीके से मुस्कुरा रहा था, लैला ने महसूस किया कि उसके इस मज़ाकिया और खुशनुमा मिजाज़ के भीतर कोई परेशानी, कोई घाव, कोई निराशा और पराजय का भाव छुपा हुआ है।

'वो शीशे बनाता था,' ज़मान ने कहा। 'उसने ये ख़ूबसूरत हरे हंस बनाए थे। आप उन्हें धूप में रखे तो वो भीतर से दमक उठते थे, मानो उनके भीतर नन्हें-नन्हें जवाहिरात भरे हुए हों। आप हेरात वापस गई हैं?'

मरियम ने कहा कि वो नहीं गई है।

'मैं खुद कांधार से हूं। क्या आप कभी कांधार गई हैं हमशीरा? नहीं? यह प्यारी जगह है। वो बागीचे! और अंगूर! ओह, अंगूर। वो जीभ पर जादू कर देते।'

दरवाज़े पर जमा हो गए कुछ बच्चे भीतर झांक रहे थे। ज़मान ने पश्तो में नर्मी से उन्हें जाने को कहा।

'बेशक मैं हेरात को भी प्यार करता हूं। कलाकारों और लेखकों, सूफियों और संतों का शहर। आपको वह पुराना मज़ाक पता है कि आप जिस किसी के पैर को भी खरोंचिए आप पाएंगे कि आपने एक शायर को खोद दिया है।

लैला की बग़ल में अज़ीज़ा ने नाक से सांस ली।

ज़मान ने आह भरी। 'आह, वह। मैंने आपको हंसा दिया, नन्हीं हमशीरा। अक्सर ये सबसे मुश्किल काम होता है। मैं कुछ देर के लिए तो फिक्र कर रहा था। मुझे लगा कि मुझे मुर्गे की तरह बांग देना पड़ेगा या गधे की रेंकना पड़ेगा। लेकिन आप तो हंस दीं। और इतनी प्यारी हैं आप।'

उसने अज़ीज़ा को ले जाकर कुछ देर संभाले रखने के लिए एक मददगार को भीतर बुलाया। अज़ीज़ा कूद कर मरियम की गोद में चढ़ गई और उससे चिपट गई।

'हम बस बातें करने जा रहे हैं, मेरी जान,' लैला ने कहा। 'मैं यहीं होऊंगी। ठीक? यहीं।'

'क्यों नहीं हम कुछ मिनटों के लिए बाहर चलें, अज़ीज़ा जो?' मरियम ने कहा। 'तुम्हारी अम्मी काका ज़मान से बातें करना चाहती हैं। बस कुछ मिनटों के लिए। अब, आओ चलें।'

जब वो अकेले रह गए, तो ज़मान ने अज़ीज़ा के पैदा होने की तारीख, उसकी अब तक की बीमारियों का ब्योरा, एलर्जी वग़ैरह के बारे में पूछा। उसने अज़ीज़ा के अब्बा के बारे में पूछा और लैला को एक ऐसा झूठ बोलते हुए अजीब महसूस हुआ जो वास्तव में सच था। ज़मान ने सुना, उसके भाव से न तो वो भरोसा ज़ाहिर हो रहा था और न ही संदेह। उसने कहा कि वो इज़्ज़त के नाम पर यह यतीमखाना चला रहा था। अगर एक हमशीरा कहती हैं कि उनके शौहर मर चुके हैं और वो अपने बच्चे की देखभाल नहीं कर सकतीं, तो वो इस पर सवाल नहीं करता था।

लैला रोने लगी।

ज़मान ने कलम रख दिया।

'मैं शर्मिंदा हूं,' अपनी हथेली से अपना मुंह दबाती हुई लैला फटी हुई आवाज़ में बोली।

'मुझे देखिए हमशीरा।'

'कैसी मां अपने खुद के बच्चे को छोड़ती है।'

'मुझे देखिए।'

लैला ने निगाह उठाई।

'ये आपका कसूर नहीं है। आपने सुना? आपका कसूर नहीं है। कसूरवार वो जंगली, वो वहशी हैं। एक पश्तून होने के नाते उन्होंने मुझे शर्मसार किया है। उन्होंने मेरे लोगों के नाम को जलील किया है। और आप अकेली नहीं हैं, हमशीरा। यहां हर वक़्त आपकी तरह मांएं आती रहती हैं-हर वक़्त-ऐसी मांएं यहां आती रहती हैं जो अपने बच्चों का पेट नहीं भर सकतीं क्योंकि तालिबान उनको बाहर नहीं निकलने देंगे कि वो रोज़ी-रोटी कमा सकें। इसलिए आप खुद को कसूरवार मत ठहराइए। कोई आप पर इल्ज़ाम नहीं लगा रहा। मैं समझता हूं।' वो आगे की तरफ़ झुक आया। 'हमशीरा। मैं समझता हूं।'

लैला ने बुर्के के कपड़े से अपनी आंखें पोंछीं।

'जैसी ये जगह है,' ज़मान ने आह भरी और हाथ से इशारा किया, 'आप देख सकती हैं कि यह बहुत ही भयानक हालत में है। हमेशा हमको बहुत कम माली मदद मिलती है, हमेशा ही हम घिसटते हुए जैसे-तैसे काम चलाते हैं। हमें तालिबान से बहुत कम या कुछ भी मदद नहीं मिलती। लेकिन हम इंतज़ाम कर लेते हैं। आपकी तरह, हम भी वो करते हैं जो हमें करना है। अल्लाह बड़ा और रहमदिल है और वही मदद करता है और जब तक वो मदद करेगा, मैं इसका ख्याल रखूंगा कि अज़ीज़ा को रोटी मयस्सर हो और कपड़े मिलते रहें। इतना मैं वादा करता हूं आपसे।'

लैला ने सिर हिलाया।

'ठीक है?'

वो दोस्ताना तरीके से मुस्कुरा रहा था। 'लेकिन रोइए मत, हमशीरा। अपनी रुलाई उसे देखने नहीं दीजिए।'

लैला ने फिर से आंखें पोंछीं। 'खुदा आपका भला करे,' उसने भरे गले से कहा। 'खुदा आपका भला करे बिरादर।'

लेकिन जब विदा लेने का वक़्त आया तो लैला को जो डर था, वही हुआ।

अज़ीज़ा पर खौफ सवार हो गया।

घर लौटते हुए पूरे रास्ते मरियम के सहारे झुकी हुई लैला को अज़ीज़ा की तीखी चीखें सुनाई देती रहीं। अपने दिमाग में उसने ज़मान का मोटा, गठीला हाथ अज़ीज़ा के हाथों के करीब देखा। उन्हें अज़ीज़ा को लैला से छुड़ाने के लिए खींचते हुए देखा, पहले तो नर्मी से फिर सख़्ती और इसके बाद ताकत से। उसने देखा कि कोने पर जल्दी से मुड़ते हुए ज़मान को अज़ीज़ा लात मार रही है, उसे अज़ीज़ा की चीखें सुनाई दे रही थीं, मानो वो इस धरती से गायब हो रही हो। और लैला ने खुद को देखा, वो गलियारे में सिर ताने दौड़ रही थी और उसके गले से चीखें निकल रही थीं।

'मैं उसकी गंध को महसूस कर सकती हूं,' घर पर उसने मरियम को बताया। उसकी आंखें मरियम के कंधों के पार, आंगन के पार, दीवारों के पार पहाड़ों की तरफ़ उठीं, जो सिगरेट पीने वालों की थूक की तरह स्याह थे। 'मैं उसकी नींद की गंध महसूस कर सकती हूं। आप? क्या आपको भी यह गंध आ रही है?'

'ओह लैला जो,' मरियम ने कहा। 'ऐसा मत करो। इससे क्या होगा? क्या भला होगा इससे?'

पहले पहल रशीद लैला का दिल बहलाता और उनके - उसके, मरियम और जल्मै के - साथ यतीमखाने तक जाता। हालांकि चलते हुए वो यह पक्का कर लेता कि वो उसकी दर्द में डूबी हुई निगाहों से वाकिफ रहे, लैला ने उस पर जो मुश्किलें डाल दी हैं, उन पर उसकी बड़बड़ाहटें सुन पाए, कि कैसे यतीमखाने की आवाजाही में उसके पांव दुख जाते थे। उसने यह सुनिश्चित किया कि लैला जाने की कितने बुरे तरीके से वो थक जाता था।

'मैं अब जवान नहीं रहा,' वो कहता। 'ऐसा नहीं है कि तुम परवाह करती हो। अगर तुम्हारे पास उपाय होता तो तुम मुझे कुचल कर चली जातीं। लेकिन तुम ऐसा नहीं करतीं लैला। तुम्हारे पास कोई उपाय नहीं है।'

वो यतीमखाने से दो ब्लॉक पहले अलग हो जाते और वो वहां पंद्रह मिनटों से ज़्यादा इंतज़ार नहीं करता। वो कहता, 'एक मिनट भी देर हुई तो मैं चल पड़ूंगा। और मैं जो कह रहा हूं वो करूंगा भी।'

लैला उससे मिन्नतें, फरियादें करती रहती ताकि वो अज़ीज़ा के साथ बिताने के लिए कुछ और मिनटों की इजाज़त दे दे। अपने लिए और मरियम के लिए, जो अज़ीज़ा की गैरमौजूदगी में बहुत उदास हो गई थी, हालांकि हमेशा की तरह मरियम अपना दुख खुद ही चुपचाप सहती रहती थी। और ज़ल्मै के लिए भी, जो हर रोज़ अपनी बहन को पूछता रहता था और इस कदर चिल्लाता कि कई बार उसे रोने के दौरे पड़ जाते, जिनसे पार पाना मुश्किल होता।

कभी-कभी यतीमखाने के रास्ते में रशीद रुक कर शिकायत करता कि उसके पांव दुख रहे हैं। फिर वो घूम जाता और घर की तरफ़ लंबे-लंबे क़दम बढ़ाते हुए चलने लगता। तब ऐसा नहीं लगता कि उसके पांव दुख रहे थे। या फिर अपनी चीभ चटकारता और कहता, 'मेरे फेफड़े, लैला। मेरा दम फूल रहा है। शायद कल मुझे बेहतर महसूस हो या शायद परसों। हम देखेंगे।' वो एक उखड़ती हुई सांस का दिखावा भी नहीं करता। अक्सर वो पलट कर तेज़-तेज़ घर की तरफ़ लौट पड़ता और सिगरेट जला लेता। लैला को बेचारगी में, बेचैनी और ग़ुस्से में कांपते हुए उसके पीछे-पीछे घर आना पड़ता।

तभी एक दिन उसने लैला से कहा कि वो अब और उसे लेकर नहीं जाएगा। 'पूरे दिन सड़कों पर चल कर मैं थक गया हूं,' वो बोला, 'काम की तलाश करते हुए।'

'तो मैं खुद चली जाऊंगी,' लैला ने कहा। 'तुम मुझे नहीं रोक सकते रशीद। सुना तुमने? तुम जितना चाहो उतना मुझे मार सकते हो लेकिन मैं जाती रहूंगी।'

'जो तुम चाहो वो करो। लेकिन तुम तालिबान से नहीं बच पाओगी। फिर मत कहना कि मैंने चेताया नहीं था।'

'मैं तुम्हारे साथ चलूंगी,' मरियम ने कहा।

लैला ने इसकी इजाज़त नहीं दी। 'आपको ज़ल्मै के साथ घर पर रुकना होगा। अगर हम रोक लिए गए... मैं नहीं चाहती कि वो उसकी देखभाल करे।'

और इस तरह अचानक लैला की ज़िंदगी अज़ीज़ा से मिलने के उपाय खोजने के इर्द-गिर्द घूमने लगी। आधे वक़्त तो वो यतीम खाने तक जा ही नहीं पाई। सड़क पार करते हुए उसे कोई तालिबान देख लेता और वो सवालों में उलझ कर रह जाती- तुम्हारा नाम क्या है? तुम कहां जा रही हो? तुम अकेली

क्यों हो? तुम्हारा महरम कहां है?- और फिर उसे घर लौटा दिया जाता। अगर वो खुशकिस्मत होती तो फटकारा जाता या पीछे एक लात मारी जाती या पीठ पर धक्का दे दिया जाता। दूसरे मौक़ों पर उसे लकड़ी के डंडे, पेड़ की ताज़ी टहनियों, छोटे कोड़ों, थप्पड़ों और मुक्कों जैसी चीजों का सामना करना पड़ता।

एक दिन एक नौजवान तालिब ने लैला को रेडियो एंटीना से मारा। जब वो मार चुका तो उसने लैला की गर्दन के पीछे आख़िरी धक्का देते हुए कहा, 'अगर मैंने तुम्हें दोबारा देखा तो इतना पीटूंगा कि तुम्हारी हड्डियों से तुम्हारी मां का ख़ून बह निकलेगा।'

इस बार लैला घर लौटी। पेट के बल पड़े हुए लैला को लग रहा था कि वो बेवकूफ़ है, एक दयनीय जानवर है। मरियम उसकी ख़ून से सनी हुई पीठ और जांघों पर गीला कपड़ा रखती तो वो सिसक उठती। लेकिन अक्सर लैला टूटने से इन्कार कर देती। वो ऐसा दिखाती मानो वो घर लौट रही हो, फिर वो सड़क पर दूसरी तरफ़ चली जाती। कभी कभी वो एक ही दिन में दो, तीन या चार बार पकड़ी जाती, उससे सवाल पूछे जाते, डांटा जाता। फिर कोड़े गिरते और एंटीना हवा को चीरते हुए आते और वो बिना अज़ीज़ा की झलक पाए, अपने पांव घसीटते हुए, ख़ून में सनी घर लौटती। जल्दी ही, लैला ने ज़्यादा तहें पहननी शुरू कर दीं, गर्मी में भी वो बुर्के के नीचे दो, तीन स्वेटर पहनती ताकि पिटाई के दौरान चोट से बच सके।

लेकिन लैला अगर तालिबान से बच निकलती तो इसके बाद हासिल तोहफ़ा इन सबके लायक था। वो अज़ीज़ा के साथ जितना चाहे उतना वक़्त गुज़ार सकती थी- यहां तक कि घंटों भी। वो आंगन में, झूलों के सेट के पास दूसरे बच्चों और उनसे मिलने आई मांओं के साथ बैठते और इस हफ़्ते अज़ीज़ा ने जो सीखा था, उस पर बातें करते।

अज़ीज़ा ने बताया कि काका ज़मान ने उन लोगों को हर रोज़ पढ़ाने का कायदा बनाया था, ज़्यादातर दिनों में पढ़ना और लिखना, कभी कभी भूगोल, थोड़ा इतिहास या विज्ञान, पेड़ों और जानवरों के बारे कुछ।'

'लेकिन हमें पर्दे गिरा कर रखने होते हैं,' अज़ीज़ा ने कहा, 'ताकि तालिबान हमें देख न लें।' उसने बताया कि अगर तालिबान जांच-पड़ताल करने आए तो उस मौक़े के लिए काका ज़मान के पास बुनाई के कांटे और धागों के

गोले थे। 'हमें किताबें रख कर बुनाई करने का दिखावा करना था।'

एक दिन अज़ीज़ा से मिलने के दौरान लैला ने बुर्का पीछे खोंसे हुए एक अधेड़ औरत को अपने तीन बेटों और एक बेटी से मिलते देखा। लैला उसका बीमार मुंह और स्याह बाल नहीं पहचान पाई लेकिन उसने उसका तीखा चेहरा, भारी भौंहें पहचान लीं। उसे उसकी चादर, काले स्कर्ट, रूखी आवाज़ याद आ गई। उसे याद आ गया कि कैसे वो अपने ख़ूब काले बालों का इतना कस कर जूड़ा बनाती कि उसकी गर्दन के पीछे आप नन्हें खड़े बालों को देख सकते थे। लैला को उस औरत द्वारा छात्राओं को पर्दा करने से मना करना और यह कहना याद आया कि औरतें और मर्द बराबर होते हैं, कि अगर मर्द पर्दा नहीं करते तो औरतों के पर्दा करने की कोई वजह नहीं है।

एकाएक खाला रंगमाल ने निगाह उठाई और लैला की नज़र उससे मिली, लेकिन लैला को अपनी इस पुरानी टीचर की निगाह में जान-पहचान की कोई रोशनी नहीं दिखी। खाला की निगाह उस पर पल भर को भी नहीं ठहरी।

'वो धरती की सतह में पड़ी दरारें हैं,' अज़ीज़ा ने कहा। 'उनको फॉल्ट कहते हैं।'

यह जून, 2001 के एक जुमे की गर्म दोपहर थी। वो चारों-लैला, जल्मै, मरियम और अज़ीज़ा यतीमखाने के पिछवाड़े में बैठे हुए थे। रशीद इस बार मान गया था- कभी कभार वो मान जाता था—और उन चारों के साथ आया था। वो सड़क पर आगे बस स्टॉप के पास इंतज़ार कर रहा था।

नंगे पांव बच्चे उनके आसपास चल-फिर रहे थे। बच्चे बिना किसी उत्साह के एक पिचकी हुई फुटबॉल को किक मारते हुए उसके पीछे भाग रहे थे।

'और दरारों की दूसरी तरफ़ चट्टानों की परतें हैं, जिनसे धरती की सतह बनती है,' अज़ीज़ा कह रही थी।

किसी ने अज़ीज़ा के चेहरे पर से बालों को हटा कर उन्हें सफाई से उसके सिर के ऊपर करके एक पिन लगा दिया था। लैला को यह देख कर अच्छा लगा कि कौन उसकी बेटी के पीछे बैठा होगा, किसने उसके बालों को एक के ऊपर एक सजाया होगा, किसने उसे स्थिर बैठने को कहा होगा।

अज़ीज़ा अपने हाथ खोले, हथेलियां ऊपर उठाए और उनको एक दूसरे से रगड़ कर कुछ दिखा रही ती। जल्मै पूरे मन से उसे सुन रहा था।

'केक्टॉनिक प्लेटें, कहते हैं उन्हें?'

'टेक्टॉनिक,' लैला ने कहा। बात करने पर दुखता था। उसका जबड़ा, उसकी पीठ और गर्दन अब भी दुख रहे थे। उसके होंठ सूजे हुए थे और उसकी जीभ उसके सामने के नीचे के दांत की खाली जगह पर जा रही थी, जिसे रशीद ने दो दिन पहले तोड़ दिया था। मम्मी और बाबी के मरने और अपनी ज़िंदगी में उलट-पलट हो जाने के पहले लैला ने कभी यकीन नहीं किया था कि एक इन्सानी देह इतनी पिटाई, ऐसी लगातार हिंसा बर्दाश्त कर सकती है और तब भी काम करते रह सकती है।

'ठीक। और जब वो एक दूसरे से होकर गुज़रती हैं, तो वो आपस में रगड़ खाती हैं- देखो मम्मी?- और इससे ऊर्जा निकलती है, जो धरती की तह में दौड़ती है और यह डोलने लगती है।'

'तुम बहुत समझदार होती जा रही हो,' मरियम ने कहा। 'अपनी बुद्धू खाला से ज़्यादा समझदार।'

अज़ीज़ा का चेहरा चमक उठा और चौड़ा हो गया। 'आप बुद्धू नहीं हैं खाला मरियम। और खाला ज़मान कहते हैं कि कभी कभी चट्टानें बहुत, बहुत नीचे अपनी जगह बदलती हैं और वहां नीचे इतना ज़बर्दस्त और डरावना होता है, लेकिन हम सतह पर हल्का सा ज़लज़ला ही महसूस करते हैं। बस हल्का सा ज़लज़ला।'

इससे पहले जब वो मिलने आए थे तो उन्हें हवा में मौजूद उन ऑक्सीजन अणुओं के बारे में सुनने को मिला था, जो सूरज की रोशनी में से नीले रंग को बिखेर देते हैं। अगर धरती पर हवाएं और गैसें नहीं होतीं, अज़ीज़ा ने बिना सांस लिए कहा, तो आसमान नीला नहीं होता बल्कि काला समंदर होता और सूरज अंधेरे में चमकता एक बड़ा सितारा होता।

'इस बार क्या अज़ीज़ा हमारे साथ घर चल रही है?' जल्मै ने कहा।

'जल्दी ही, मेरे जान,' लैला ने कहा। 'जल्दी ही।'

लैला ने उसे जाते हुए देखा, वो अपने अब्बा की तरह झुक कर, पंजे भीतर की तरफ़ मोड़े हुए चल रहा था। वो झूले के सेट की तरफ़ गया, खाली सीट धकेली और आख़िर में एक कंक्रीट पर बैठ गया, जिसकी दरार में घास उगी हुई थी।

पानी पत्तियों पर से उड़ता है—मम्मी, आप नहीं जानतीं?-जैसे रस्सी पर

टंगे हुए धुले कपड़ों से उड़ता है। और इससे पेड़ों में पानी का बहाव होने लगता है। धरती से जड़ों के ज़रिए यह पेड़ के तने में पहुंचता है, जिसमें होकर टहनियों और पत्तियों में जाता है। इसे ट्रांस्पिरेशन कहते हैं।

कई बार लैला सोचती कि अगर काका ज़मान के खुफिया सबकों के बारे में तालिबान को पता लग जाए तो वो उनका क्या करेंगे।

जब वो मिलने आते तो अज़ीज़ा ज़्यादा चुप रहने की इजाज़त नहीं देती। वो पूरे जोश में, ऊंची और गूंजती हुई आवाज़ में बोलती रहती। उसको इन विषयों से बहुत लेना-देना नहीं था और वो बस यों ही अपने हाथ भांजा करती थी। उसके हाथों का हिलाया जाना उसकी अपनी प्रकृति से मेल नहीं खाता था। उसने एक नई हंसी सीख ली थी। सचमुच में यह उतनी हंसी नहीं थी, जितनी वे उसकी घबराहट की निशानी थी, जिसके बारे में लैला ने अंदाज़ा लगाया कि वो दरअसल अपना भरोसा जमाए रखने कोशिश में ऐसा करती है।

कुछ दूसरे बदलाव भी आए थे। अज़ीज़ा के नाखुनों में मैल पर लैला का ध्यान जाता और अज़ीज़ा इस पर ग़ौर करती कि लैला ने यह देख लिया है और फिर अपने हाथों को अपनी जांघों में छुपा लेती। जब आसपास में कोई बच्चा चिल्लाता, उसकी नाक से रेंट बह रही होती या अगर कोई बच्चा नंग-धड़ंग पास से गुज़र जाता, उसके बाल धूल में अटे होते तो अज़ीज़ा की पुतलियां जल्दी-जल्दी नाचतीं और फौरन इसकी वजहें बताने लगती। वो मानो की मेज़बान थी, जो मेहमानों के सामने घर की गंदगी और अपने बच्चों की ज़ाहिर हो जाने से शर्मिंदा थी।

यह पूछने पर कि वो किस तरह यहां रह रही है, वो एक अस्पष्ट लेकिन ख़ुशमिज़ाजी भरा जवाब देती।

'अच्छे से खाला। मैं अच्छी हूं।'

क्या बच्चे तुम्हें तंग करते हैं?

नहीं, मम्मी। हरकोई अच्छा है।

क्या तुम खा रही हो? अच्छे से सो रही हो?

खाना। सोना भी। हां। पिछली रात हमने भेड़ का गोश्त खाया। या शायद पिछले हफ़्ते।

जब अज़ीज़ा इस तरह बोलती तो लैला को उसमें मरियम की अच्छी ख़ासी झलक मिलती।

अज़ीज़ा अब हकलाने लगी थी। सबसे पहले इस पर मरियम ने ग़ौर किया। यह बहुत हल्का था, लेकिन इस पर ध्यान जाता था। वो सबसे ज़्यादा 'त' से शुरू होने वाले शब्दों पर हकलाती। लैला ने ज़मान को इसके बारे में बताया। उन्होंने त्योरियां चढ़ाईं और बोले, 'मुझे लगा कि वो हमेशा से हकलाती रही है।'

उस जुमे को वो थोड़ा घूमने के लिए अज़ीज़ा के साथ यतीमखाने से निकले और रशीद से मिले, जो बस स्टॉप के पास उनका इंतज़ार कर रहा था। जल्मै ने जब अपने अब्बा को देखा तो उसने ख़ुशी में किलक कर कुछ कहा और लैला की बांहों में कसमसाया। अज़ीज़ा शांत भाव से रशीद से मिली, लेकिन इस शांति में विरोध शामिल नहीं था।

रशीद ने कहा कि उन्हें जल्दी चलना चाहिए, काम पर लौट जाने के पहले बस उसके पास दो घंटे बचे हुए हैं। इंटरकॉन्टिनेंटल में डोरमैन के बतौर यह उसका पहला हफ़्ता था। दोपहर से छह बजे तक उसे हफ़्ते में छह दिन ड्यूटी करनी होती। रशीद कारों के दरवाज़े खोलता, सामान ढोता, कई बार कुछ गिर कर बिखर जाता तो वो उसे साफ़ करता। कभी-कभी दिन के आख़िर में रेस्टोरेंट में बफे स्टाइल की दावत के बाद रशीद बचे हुए कुछ खाने के साथ घर लौटता- और वो उसके बारे में बात करने से बचता—तेल में तर ठंडे कोफ्ते, मुर्गे के भुनी हुई बग़लें, जिसकी चमड़ी सख़्त और सूखी होती, भरा हुआ पास्ता चीमड़ हो गया होता, कड़े और कंकड़ीले चावल। रशीद ने लैला से वादा किया कि एक बार वो कुछ पैसों की बचत कर ले तो अज़ीज़ा घर आ सकती है।

रशीद ने अपनी वर्दी पहन रखी थी—एक लाल बरगंडी पॉलिस्टर सूट, सफ़ेद शर्ट, क्लिप-ऑन टाई, विसर टोपी जो उसके सफ़ेद बालों पर कस जाती थी। इस वर्दी में रशीद बदल जाता था। वो डरा हुआ, दयनीय रूप से उलझा हुआ, करीब करीब किसी को नुक़सान नहीं पहुंचाने लायक लगता था। वो किसी ऐसे आदमी की तरह हो गया था जिसने विरोध में एक आह तक भरे बिना, अपने सामने रख दी गई जलालत की जिंदगी को अपना लिया था। वो ऐसा आदमी लगता जिसके हार मान कर टूट जाने में बेचारगी भी थी और जो तारीफ के काबिल भी था।

वो बस पकड़ कर टाइटेनिक सिटी गए। वो नदी की पेटी में चले जिसके सूखे हुए किनारों पर दोनों तरफ़ कामचलाऊ दुकानें खड़ी थीं। पुल के करीब

जब वो सीढ़ियां उतर रहे थे तो नंगे पांवों वाली लाश एक क्रेन से लटकी हुई थी, उसके कान कटे हुए थे और रस्सी के एक सिरे पर बंधी हुई गर्दन लटकी हुई थी। नदी में वो ख़रीदारों, पैसे बदलनेवालों और ऊबे हुए दिख रहे एनजीओ कार्यकर्ताओं, सिगरेट बेचने वालों और बुर्के में ढंकी औरतों की भीड़ में मिल गए, जो लोगों को फर्ज़ी एंटीबायोटिक प्रेस्क्रिप्शन दिखा कर भीख मांग रही थीं ताकि वो उन्हें ख़रीद सकें। कोड़े लहराते, नसवार चबाते तालिब टाइटेनिक सिटी में गैरमुनासिब हंसी, और बिना बुर्के वाले चेहरों की ताक में गश्त कर रहे थे।

पोस्तीन कोट विक्रेता और एक नकली फूलों की दुकान के बीच खिलौनों के एक कियोस्क से जल्मै ने एक रबड़ की बास्केटबॉल चुनी, जिस पर पीले-नीले घेरे थे।

'तुम भी कुछ चुनो,' रशीद ने अज़ीज़ा से कहा।

अज़ीज़ा ने कोई प्रतिक्रिया नहीं दिखाई, शर्मिंदगी के साथ जैसी की तैसी बनी रही।

'जल्दी। मुझे घंटे भर में काम पर लौटना है।'

अज़ीज़ा ने एक गम-बॉल मशीन चुनी- इसमें कैंडी पाने के लिए एक सिक्का डालना होता है, और फिर नीचे के फ्लैप डोर से वो सिक्का वापस मिल जाता है।

लेकिन जब दुकानदार ने कीमत बताई तो रशीद की भौंहे तन गईं। मोलतोल की बकझक का एक दौर चला जिसके आख़िर में रशीद ने अज़ीज़ा को लगभग डपटते हुए कहा मानो अज़ीज़ा उसके साथ बकझक कर रही थी, 'लौटा दो। मैं दोनों नहीं ख़रीद सकता।'

लौटते हुए अज़ीज़ा की ऊपर से दिखती खुशमिजाज़ी यतीमखाने के करीब जाते-जाते मिट गई। उसने हाथों को लहराना बंद कर दिया। उसका चेहरा भारी हो गया। हर बार ये होता था। अब लैला की बारी थी कि वो बातें करती रहे, असहजता से भरी हंसी हंसे, उदासी भरी चुप्पी को अनवरत लेकिन बिना मकसद की बातों से तोड़े। इसमें मरियम भी उसका साथ देती।

बाद में, जब रशीद ने उन्हें पहुंचा कर काम पर जाने के लिए बस पकड़ ली, लैला ने देखा कि अज़ीज़ा यतीमखाने के पिछवाड़े में खड़ी दीवार को खुरचती हुई हाथ हिला कर विदा कह रही है। उसने अज़ीज़ा की हक़लाहट के बारे

में सोचा और अजीज़ा द्वारा बताए गए दरारों और गहराई में होने वाले ताकतवर टकरावों के बारे में सोचा, जिसे हम सतह पर बहुत हल्के कंपन के बतौर ही देख पाते हैं।

'चले जाओ!' जल्मै चिल्लाया।

'हुश,' मरियम ने कहा। 'किस पर चिल्ला रहे हो?'

उसने हाथ से इशारा किया। 'वहां। वो आदमी।'

लैला ने उसकी उठी हुई उंगलियों की दिशा में देखा। घर के दरवाज़े के सामने एक आदमी इसके सहारे झुका हुआ था। जब उसने उन लोगों को पास आते देखा उसने सिर घुमाया। उसने बंधी हुई बांहें खोल दीं। लंगड़ाते हुए उनकी तरफ़ एक क़दम बढ़ा।

लैला रुक गई।

उसके गले से एक घुटी हुई आवाज़ निकली। उसके घुटने की ताकत ख़त्म हो गई। एकाएक उसने चाहा, उसे ज़रूरत महसूस हुई, कि मरियम की बांहों, उसके कंधों, उसकी कमर या किसी भी चीज़ के सहारे वो टेक लगा सके। लेकिन वो नहीं कर पाई। वो हिम्मत नहीं जुटा पाई। वो एक पेशी हिलाने तक की हिम्मत नहीं जुटा पाई। वो सांस लेने या यहां तक कि पलकें झपकाने तक की हिम्मत नहीं कर पाई, क्योंकि उसे डर था कि उससे कुछ दूरी पर एक मृगमरीचिका है, एक नाज़ुक भ्रम है जो हल्की सी हरकत से भी गायब हो जाएगा। लैला जड़ खड़ी रही और तारिक़ को तब तक देखती रही जब तक उसके सीने ने जबरन हवा नहीं खींची और जलती हुई आंखों ने झपक नहीं ली। और किसी तरह, जादू से, सांस लेने के बाद और आंखें खोलने और बंद करने के बाद भी वो वहां खड़ा था। तारिक़ अब भी वहां खड़ा था।

लैला ने ख़ुद को उसकी तरफ़ एक क़दम बढ़ जाने दिया। फिर एक और क़दम। और फिर एक और। और फिर वो दौड़ पड़ी।

तैंतालीस

मरियम

ऊपर मरियम के कमरे में जल्मै बहुत गुस्से में था। कुछ देर तक वो अपनी नई रबड़ की बास्केटबॉल चारों तरफ़, फर्श पर, दीवारों पर उछालता रहा। मरियम ने उसे ऐसा करने से मना किया, लेकिन वो जानती थी उसमें जल्मै को रोक पाने का अधिकार नहीं था और उसने गेंद को उछालना जारी रखा। वो मरियम को तौहीन भरी नज़रों से देखता भी रहता। कुछ देर तक उन्होंने अपनी खिलौना कार चलाई। ये एक एंबुलेंस थी जिसके दोनों तरफ़ लाल, मोटे शब्दों में लिखा हुआ था। वो उसे कमरे में इस पार से उस पार दौड़ाते रहे।

इसके पहले, जब वो दरवाज़े पर तारिक़ से मिले थे, जल्मै ने अपनी बास्केटबॉल को सीने से चिपका लिया था और अपना अंगूठा मुंह में डाल लिया था- ऐसा वो सिर्फ़ तभी करता था, जब उसे कुछ बुरा होने का अंदेशा होता था। वो तारिक़ को संदेह से देख रहा था।

'ये आदमी कौन है?' अब उसने कहा। 'मुझे वो पसंद नहीं।'

मरियम उसे समझाने जा रही थी, इसके बारे में कुछ कहने जा रही थी कि वो और लैला साथ-साथ बड़े हुए थे लेकिन जल्मै ने उसे बीच में ही काट दिया और एंबुलेंस को उसकी सामने की जाली जल्मै की तरफ़ करके उसे वापस भेजने को कहा। और जब मरियम ने ऐसा किया तो जल्मै ने कहा कि उसे फिर से बास्केटबॉल चाहिए।

'कहां है ये?' उसने पूछा। 'वो गेंद कहां है जो बाबा जान ने मुझे दिलाई

थी? कहां है ये? मुझे चाहिए! मुझे चाहिए!' उसकी आवाज़ ऊंची हो रही ती और हर शब्द के साथ तीखी होती जा रही थी।

'ये यही थी,' मरियम बोली और वो चिल्लाया, 'नहीं, ये खो गई है। मैं जानता हूं। मुझे अभी पता लगा कि वो खो गई है! कहां है ये? कहां है?'

'यहां,' अलमारी के नीचे से, जहां वो लुढ़ककर चली गई थी, गेंद निकालते हुए मरियम ने कहा। लेकिन जल्मै ज़ोर-ज़ोर से चिल्ला रहा था और मुक्के चला रहा था और रोते हुए कह रहा था कि यह वही गेंद नहीं है। यह वही नहीं हो सकती क्योंकि उसकी गेंद तो खो गई थी और यह नकली वाली गेंद है, उसकी असली गेंद कहां चली गई? कहां? कहां कहां कहां?

वो तब तक चिल्लाता रहा जब तक लैला को ऊपर आकर उसे पकड़ कर हिलाना-डुलाना नहीं पड़ा। उसने अपनी उंगलियां उसके कसे हुए, काले घुंघराले बालों में, गीले गालों पर फिराईं और उसके कान में अपनी जीभ चटकारी।

मरियम कमरे के बाहर इंतज़ार करती रही। सीढ़ियों के ऊपर से उसे बस तारिक़ के लंबे पांव ही दिख रहे थे, उसका एक असली पांव और दूसरा नकली पांव, और उनके ऊपर पहनी खाकी पैंट। उसके पांव बिना दरी वाली बैठक की फर्श पर फैले हुए थे। तब उसे यह समझ में आया कि जब वो जलील को फोन करने के लिए उस दिन रशीद के साथ कॉन्टिनेंटल होटल गई थी तो डोरमैन का चेहरा जाना-पहचाना क्यों लग रहा था। उसने टोपी और चश्मा पहन रखे थे इसीलिए वो तब समझ नहीं पाई थी। लेकिन अब मरियम को दो बरस पहले नीचे बैठक में उस आदमी का रूमाल से अपनी भौंहें पोंछना और पानी मांगना याद आया। अब उसके दिमाग में हर तरह के सवाल उठे: क्या मुल्फा गोलियां भी नाटक का हिस्सा थीं। किसने झूठ बोला था, कायल कर देने वाले ब्योरे दिए थे? और रशीद ने अब्दुल शरीफ को-अगर सचमुच ये उसी का नाम हो-कितने पैसे दिए थे ताकि वो तारिक़ की मौत की कहानी सुना कर लैला को तोड़ सके?

चवालीस

लैला

तारिक़ ने बताया कि उसके साथ कोठरी में रहे लोगों में से एक के चचेरे भाई को एक बार फ्लमिंगो (मराल पक्षियों) की तस्वीरें बनाने के लिए सरेआम कोड़े लगाए गए थे। उसे इन चिड़ियों के लिए एक लाइलाज लगाव था।

'पूरी स्केचबुक में,' तारिक़ ने बताया। 'उनकी दर्जनों आयल पेंटिंग्स थीं। झीलों में टहलते हुए, दलदल में धूप सेकते हुए, और शायद सूरज के डूबने के दौरान उड़ाने भरते हुए भी।'

'फ्लमिंगो,' लैला ने कहा। वो दीवार के सहारे टेक लगाए, अपना अच्छा पांव घुटनों से मोड़ कर बैठे हुए तारिक़ को देख रही थी। उसमें तारिक़ को फिर से छूना चाह रही थी, जैसा कि इसके पहले उसने सदर दरवाज़े के पास उसे छुआ था, जब वो उसके पास दौड़ी हुई गई थी। अब वो यह सोच-सोच कर शर्मिंदा हो रही थी कि कैसे उसने अपनी बांहें उसके गले में डाल दी थीं और उसके सीने में रोई थी। कैसे उसने लड़खड़ाती हुई मोटी आवाज़ में उसने बार बार उसका नाम लिया था। उसे जानने का मन किया कि क्या उसने कुछ ज़्यादा ही बेकरारी और निराशा ज़ाहिर की थी? शायद उसने ऐसा किया था। लेकिन वो इससे बच नहीं सकती थी। और अब वो फिर से उसे छूने को तरस रही थी ताकि खुद को फिर से यकीन दिला सके कि वो सचमुच वहां मौजूद था, कि वो एक सपना, एक परछाई नहीं था।

'सचमुच,' तारिक़ कह रहा था। 'फ्लमिंगो।'

तारिक़ ने बताया कि जब तालिबान को उसकी तस्वीरें मिलीं तो उन्होंने चिड़िया के लंबे और नंगे पांवों को अपमानजनक माना। तब उन्होंने चचेरे भाई के पैरों को बांध कर उसके तलवे के ख़ून से लथपथ होने तक कोड़े लगाए, उन्होंने कहा कि वो इन दो रास्तों में से चुन सकता है : या तो वो अपनी तस्वीरों को नष्ट कर दे या फिर फ्लमिंगो को तहजीब वाला बनाए। तब चचेरे भाई ने ब्रश उठाई और हर चिड़िया के पैरों के ऊपर पजामे बना दिए।

'और फिर इस्लामी चिड़ियाएं बन गईं,' तारिक़ ने कहा।

लैला को हंसी आई लेकिन उसने उसे दबा दिया। उसे अपने पीले पड़े दांतों और टूटे हुए सामने के दांत पर शर्म आ रही थी। उसे अपने मुरझाए हुए चेहरे और सूजे हुए होंठों पर शर्म आ रही थी। उसने चाहा कि उसे चेहरा धोने या कम से कम बालों में कंघी कर लेने का ही मौक़ा मिला होता।

'लेकिन आख़िरी हंसी उस चचेरे भाई की होगी,' तारिक़ ने कहा। 'उसने पजामे वाटरकलर से बनाए। जब तालिबान चले जाएंगे तो वो बस उन्हें धो देगा।' वो मुस्कुराया। लैला ने ग़ौर किया कि तारिक़ का भी एक दांत गायब था और उसने उसके हाथों की तरफ़ देखा।

'सचमुच।'

उसने सिर पर एक पकोल पहन रखी थी, पैरों में हाइकिंग बूट थे और उसकी खाकी पैंट की कमर में एक काला ऊनी स्वेटर बंधा हुआ था। वो हल्के से मुस्कुरा रहा था और धीरे धीरे सिर हिला रहा था। लैला को याद नहीं आया कि पहले भी उसने यह सचमुच शब्द कभी कहा था। उसे उसका यह उदास हाव-भाव, गोद में तंबू की तरह तनी हुई उंगलियां, सिर का हिलाना भी याद नहीं आया। यह सब नया था। एक ऐसा परिपक्व शब्द, ऐसा परिपक्व हाव भाव, और इसे इतना स्तब्धकारी क्यों होना चाहिए? तारिक़ अब एक बालिग था। पच्चीस साल का आदमी जिसकी हरकतों में धीमापन और मुस्कान में थकान भरी हुई थी। लंबा, दाढ़ीवाला और लैला के सपनों से ज़्यादा पतला लेकिन मज़बूत हाथों वाला, एक मेहनती इन्सान के हाथ जिसमें घुमावदार, भरीपूरी नसें थीं। उसका चेहरा अब भी पतला और ख़ूबसूरत था लेकिन उसकी चमड़ी अब गोरी नहीं रह गई थी। उसके ललाट पर मौसम की मार के, धूप से जले के निशान थे। ऐसे ही निशान उसकी गर्दन पर भी थे। उसका पकोल सिर पर पीछे की ओर खिसका हुआ था और लैला देख सकती थी कि उसके बाल गिरने शुरू

हो गए थे। लैला को जितना याद था, उसके मुकाबले उसकी आंखों का भूरापन अब फीका था, ज़्यादा उदास या शायद कमरे में रोशनी जैसा था।

लैला ने तारिक़ की अम्मी, उनके इत्मीनान से भरे तौर-तरीकों, उनकी समझदार मुस्कुराहट, उनके फीके जामुनी विग के बारे में सोचा। और तारिक़ के अब्बा के बारे में भी सोचा, उनकी भेंगी निगाह, उनकी मज़ाकिया हसी के बारे में सोचा। थोड़ी देर पहले, दरवाज़े पर आंसुओं से भरी आवाज़ में, लड़खड़ाते हुए शब्दों में उसने तारिक़ को बताया कि उसके अम्मी-अब्बू के साथ क्या हुआ होगा, उसने इसके बारे में क्या सोचा था। और तारिक़ ने अपना सिर झटका था। इसलिए उसने अब पूछा कि उसके अम्मी-अब्बू कैसे हैं। लेकिन वो पछताई, जब तारिक़ ने निगाहें नीची कर लीं और थोड़े अनमने ढंग से कहा, 'गुज़र गए।'

'मुझे अफसोस है।'

'खैर। हां। मैं भी। लो।' उसने अपनी जेब से एक छोटा सा कागज़ का थैला निकाला और उसे दे दिया। 'अल्योना की तरफ़ से बधाइयां।' भीतर प्लास्टिक में लिपटी हुई पनीर का एक टुकड़ा था।

'अल्योना। एक प्यारा नाम है।' लैला ने आगे की बात बिना हिक़हिचाए कहने की कोशिश की। 'तुम्हारी बीवी?'

'मेरी बकरी।' वो इस तरह मुस्कुरा रहा था मानो उसे इसकी अपेक्षा थी, मानो वो इंतज़ार कर रहा हो कि लैला कोई बात याद कर सके।

और तब लैला को याद आया। एक सोवियत फ़िल्म। अल्योना कैप्टन की बेटी थी, वो लड़की जिसने पहले मेट से प्यार किया था। ये वो दिन था जब उसने, तारिक़ और हसीना ने सोवियत टैंकों और जीपों को काबुल छोड़ते देखा था, वो दिन जब तारिक़ ने अजीब सी रूसी फर की टोपी पहनी थी।

'मुझे उसे ज़मीन पर खूंटे से बांधना पड़ा,' तारिक़ बता रहा था। 'और भेड़ियों की वजह से एक बाड़ बनानी पड़ी। पहाड़ियों के नीचे, जहां मैं रहता हूं, वहां से करीब-करीब चौथाई मील दूर जंगली इलाका है। ज़्यादातर चीड़ के पेड़ हैं, कुछ फर और देवदार हैं। भेड़िए ज़्यादातर तो जंगलों में ही रहते हैं, लेकिन मिमियाती हुई बकरियां और घूमना-फिरना पसंद करने वाली बकरियां भेड़ियों को बाहर खींच सकती हैं। इसलिए बाड़ बनाई। खूंटा गाड़ा।'

लैला ने पूछा कि वो किन पहाड़ियों के नीचे रहता है।

'पीर पंजाल, पाकिस्तान,' उसने बताया। 'मैं जहां रहता हूं वो जगह मुर्री

कही जाती है। गर्मियों में रहने की जगह है, इस्लामाबाद से घंटे भर की दूरी पर है। यह समुद्र तल से ऊपर, पहाड़ी और हरीभरी जगह है जहां ढेर सारे पेड़ हैं। इसलिए यह गर्मियों में ठंडी रहती है। सैलानियों के लिए सबसे अच्छी जगह है।'

उसने बताया कि ब्रिटिशों ने इसे अपने रावलपिंडी के फौजी मुख्यालय के नज़दीक एक हिल स्टेशन के रूप में बनाया था, ताकि विक्टोरियाई लोग गर्मी से भाग कर शरण ले सकें। तारिक़ ने बताया कि तुम वहां अब भी औपनिवेशिक दौर के कुछ बचे-खुचे निशान देख सकती हो, कभी कभार के चायखानों में, टिन की छतों वाले बंगले जिन्हें कॉटेज कहा जाता है, ऐसी ही चीज़ें। खुद शहर ही छोटा और खुशनुमा था। मुख्य सड़क मॉल कही जाती थी, जहां डाकघर, बाज़ार, कुछ रेस्टोरेंट और दुकानें थीं, जो सैलानियों से रंगे हुए गिलासों और हाथ से बुनी दरियों के लिए कई गुना ऊंचे दाम वसूल करतीं। अजीब था कि मॉल वनवे ट्रैफिक वाली सड़क था, जिस पर एक हफ़्ते एक दिशा में ट्रैफिक चलता और अगले हफ़्ते दूसरी दिशा में।

'मुकामी लोग बताते हैं कि आयरलैंड में भी कई जगहों पर ऐसी ही ट्रैफिक व्यवस्था है,' तारिक़ ने बताया। 'मैं नहीं जानता। जो भी हो, यह प्यारा है। यह एक सादी ज़िंदगी है, लेकिन मुझे पसंद है। मुझे वहां रहना पसंद है।'

'अपनी बकरी के साथ, अल्योना के साथ।'

लैला का इरादा गुपचुप तरीके से बातचीत के एक नए सिलसिले में दाख़िल होने का था, जैसे कि वहां उसके साथ भेड़ियों द्वारा बकरियों के खाने की चिंता करने वाला और कौन था। लेकिन तारिक़ केवल सिर हिलाता रहा।

'मुझे तुम्हारे अम्मी-अब्बू के लिए भी अफसोस है,' तारिक़ ने कहा।

'तुमने सुना।'

'मैंने कुछ पड़ोसियो से पहले बात की थी,' उसने कहा। एक पल की चुप्पी, जिसके दौरान लैला को हैरानी हुई कि पड़ोसियों ने उसे क्या बताया होगा। 'मैं किसी को पहचान नहीं पाया। मेरा मतलब है कि पुराने दिनों का कोई नहीं था।'

'वो सब चले गए। कोई ऐसा नहीं बचा जिसे तुम जानते थे।'

'मैं काबुल को पहचान नहीं पाया।'

'मैं भी नहीं,' लैला ने कहा। 'और मैं कभी यहां से नहीं गई।'

'मम्मी का एक नया दोस्त है,' जल्मै ने तारिक़ के चले जाने पर उसी रात खाने के बाद कहा। 'एक मर्द।'

रशीद ने निगाह उठाई। 'उसका दोस्त है?'

तारिक़ ने पूछा कि क्या वो सिगरेट पी सकता है।

तारिक़ ने एक कटोरी में राख झाड़ते हुए बताया कि वो पेशावर के करीब नासिर बाग रिफ्यूजी कैंप में कुछ वक़्त के लिए ठहरे थे। जब वो और उसके अम्मी-अब्बू पहुंचे तो वहां साठ हज़ार अफ़ग़ान पहले से ही रह रहे थे।

'यह जलोज़ई जैसे दूसरे कैंपों, उनसे खुदा बचाए, जितना बुरा नहीं था,' उसने कहा। 'एक बार तो मैंने अंदाज़ा लगाया कि यह एक तरह का मॉडल कैंप था। शीत युद्ध के दिनों में यह एक ऐसी जगह था, जिसे दिखा कर पश्चिमी देश यह साबित करते कि वो अफ़ग़ानिस्तान में केवल हथियारों की खेप ही नहीं भेज रहे थे।'

लेकिन वह सोवियत जंग के दौरान हुआ करता था, तारिक़ ने बताया, जिहाद के दिनों में जब पूरी दुनिया की दिलचस्पी यहां थी। वो खुले हाथों फंड देने और मारग्रेट थैचर के दौरों के दिन थे।

'बाक़ी तुम जानती हो लैला। जंग के बाद सोवियत बिखर गया और पश्चिम ने मुंह फेर लिया। अफ़ग़ानिस्तान में अब उनका कुछ भी दांव पर नहीं लगा था और रकम ख़त्म हो गई। अब नासिर बाग में बस तंबू, धूल और खुले सीवर भर हैं। जब हम वहां पहुंचे तो उन्होंने हमें एक छड़ी और कैनवस की एक चादर पकड़ाई और हमसे कहा कि हम खुद तंबू बना लें।'

तारिक़ ने उसे वह बात बताई जो उसे नासिर बाग के बारे में सबसे ज़्यादा याद आती थी, जहां वो एक बरस रहा था। यह भूरा रंग था। 'भूरे तंबु। भूरे लोग। भूरे कुत्ते। भूरी खिचड़ी।'

वहां एक ठूंठ था, जिस पर वो रोज़ चढ़ा करता था। वहां वो एक शाखा के दोनों तरफ़ पांव फैला कर बैठ जाता और धूप में लेटे शरणार्थियों को देखा करता। उनके जख्म और ठूंठ साफ़ दिखते। वो नन्हें कमज़ोर बच्चों को जेरी कैनों में पानी ढोते, आग जलाने के लिए कुत्ते की लीद को जमा करते, भोथरी छुरियों से लकड़ी के एक-47 बनाते, आटे की बोरियां घसीटते

देखता। शरणार्थी कस्बे में चारों तरफ़ हवा तंबुओं को फड़फड़ाती, हर जगह घास-पतवार के टुकड़े उड़ाती, मिट्टी की झोंपड़ियों की छतों पर से उड़ाई जाती पतंगों को ऊंचा उठाती।

'ढेर सारे बच्चे मर गए। पेचिश, टीबी, भूख-कुछ भी कह लो। ज़्यादातर तो पेचिश से। उफ खुदा, लैला। मैंने इतने सारे बच्चों को दफनाए जाते देखा। देखने के लिए इससे बदतर चीज़ कोई नहीं होगी।

उसने अपने पांव मोड़े। कुछ देर तक खामोशी रही।

'मेरे अब्बा वो पहली सर्दियां नहीं पार कर पाए,' उसने कहा। 'वो सोते हुए ही मर गए। मुझे नहीं लगता कि उन्हें कोई दर्द हुआ था।'

उसने बताया कि उन्हीं सर्दियों में उसकी अम्मी को न्यूमोनिया हो गया और वो लगभग मर ही गईं, वो मर ही जातीं अगर शिविर का एक कैंप डॉक्टर नहीं होता, जिसने एक स्टेशन वैगन को मोबाइल क्लीनिक बना रखा था। वो सारी रात जगी रहतीं, बुखार में तपती हुईं, गाढ़ा, गहरा लाल बलगम फेंकती रहतीं। तारिक़ ने बताया कि डॉक्टर से मिलने की कतारें लंबी हुआ करती थीं। कतार में खड़ा हर कोई कांपता रहता, कराहता, खांसता, कुछ के पांवों पर पाखाना बहता रहता, कुछ दूसरे इतने थके हुए या भूखे या बीमार होते कि कुछ बोल नहीं पाते।

'लेकिन वो डॉक्टर एक भला आदमी था। उसने मेरी अम्मी की अच्छे से देखभाल की, उन्हें कुछ दवाएं दीं और उन सर्दियों में उनकी जान बचा ली।'

ठीक उन्हीं सर्दियों में तारिक़ ने एक बच्चे पर धौंस जमाई।

'बारह या शायद तेरह साल का होगा,' उसने सपाट तरीके से कहा। 'मैंने शीशे का एक टुकड़ा उसके गले पर रखा और उसकी कंबल उससे छीन ली। उसे मैंने अपनी अम्मी को दे दिया।

तारिक़ ने कहा कि अम्मी की बीमारी के बाद उसने खुद से कसम खाई कि वो अगली सर्दियां शिविर में नहीं गुज़ारेंगे। वो काम करेगा, पैसे बचाएगा और वो पेशावर के एक अपार्टमेंट में चले आएंगे, जहां गर्माहट और साफ़ पानी होगा। जब बसंत आया तो उसने काम की तलाश की। समय-समय पर एक ट्रक सुबह-सुबह शिविर में आता था और दो-एक दर्जन बच्चों को बटोर कर पत्थर हटाने या बागीचों में सेब चुनने के लिए ले जाता था। इसके बदले में छोटी सी रकम मिलती, कभी कभी एक कंबल या जूतों का एक

जोड़ा। तारिक़ ने बताया कि वो उसे नहीं चाहते थे।

'मेरे पांव पर निगाह डालते और बात ख़त्म हो जाती।'

कुछ दूसरे काम भी थे। गड्ढे खोदना, झोंपड़ियां बनाना, पानी ढोना, आउटहाउस में से फावड़े से पाखाना निकालना। लेकिन बड़े लोग इन कामों के लिए एक दूसरे से झगड़ते रहते और तारिक़ को कभी मौक़ा ही नहीं मिला।

तभी एक दिन उसकी भेंट एक दुकानदार से हुई। वह 1993 का पतझड़ का मौसम था।

'उसने चमड़े का एक कोट लाहौर पहुंचाने के लिए मुझे रकम की पेशकश की। रकम अधिक नहीं लेकिन काफ़ी थी। एक या शायद दो महीनों के अपार्टमेंट के किराए के लिए काफ़ी थी।'

तारिक़ ने बताया कि दुकानदार ने उसे एक बस टिकट और लाहौर रेलवे स्टेशन के करीब एक नुक्कड़ का पता दिया, जहां उसे दुकानदार के एक दोस्त को वह कोट पहुंचाना था।

'मैं पहले से ही जानता था। बेशक, मैं जानता था,' तारिक़ ने कहा। 'उसने मुझसे कहा कि अगर मैं पकड़ा जाता हूं तो यह मेरी अपनी ज़िम्मेदारी होगी, कि मुझे यह याद रखना चाहिए कि वो जानता था कि मेरी अम्मी कहां रहती हैं। लेकिन रकम इतनी अच्छी थी कि ये सब बातें बेअसर रहीं। और सर्दियां फिर से आ रही थीं।'

'तुम कितनी दूर तक गए?' लैला ने पूछा।

'बहुत दूर नहीं,' उसने हंसते हुए कहा। उसकी आवाज़ में माफ़ी और शर्मिंदगी का पुट था। 'बस पर भी कभी नहीं चढ़ पाया। लेकिन मैं सोचता था कि मैं सुरक्षित था, महफ़ूज़ था। मानो वहां कहीं कोई एकाउंटेंट था, एक ऐसा आदमी जो अपने कानों के पीछे पेंसिल खोंसे रहता और इन सारी चीज़ों का हिसाब-किताब रखता, चीज़ों को मिलाता और नीचे देखते हुए कहता, 'हां, हां, उसे ये मिल सकता है, हम उसे जाने दे सकते हैं। इस आदमी ने पहले ही बकाए का भुगतान कर दिया है।'

सिलाइयों के नीचे हशीश थी और जब पुलिस ने कोट में छुरी मारी तो वह पूरी सड़क पर बिखर गई।

तारिक़ फिर से हंसा जब उसने यह कहा। यह एक ऊंची होती, हिला

देने वाली हंसी थी और लैला को याद आया कि जब वो छोटे थे तो वो शर्मिंदगी को ढंकने के लिए और अपनी बेवकूफ़ी भरे कारनामों को हल्का करने के लिए कैसे हंसा करता था।

'वो लंगड़ा है,' जल्मै ने कहा।

'क्या ये वही है, जिसके बारे में मैं सोच रहा हूं?'

'वो केवल मिलने आया था,' मरियम नें कहा।

'तुम चुप रहो,' रशीद ने तड़कते हुए एक उंगली उठाई। वो लैला की तरफ़ मुड़ा। 'अच्छा, तुम क्या जानती हो? लैला और मजनूं का फिर से मिलन। पुराने ज़माने की तरह।' उसका चेहरा पत्थर की तरह हो गया। 'तो तुमने उसे भीतर आने दिया। यहां। मेरे घर में। तुमने उसे भीतर आने दिया। वो यहां मेरे बेटे के साथ था।'

'तुमने मुझे ठगा। तुमने मुझसे झूठ बोला,' लैला ने अपने दांत किटकिटाते हुए कहा। 'तुमने एक आदमी को भेजा, जिसने मेरे सामने बैठकर...तुम जानते थे कि अगर मुझे लगेगा कि वो ज़िंदा था तो मैं चली जाऊंगी।'

'और तुम मुझसे झूठ नहीं बोलीं?' रशीद गरजा। 'तुमने सोचा कि मुझे पता नहीं लगेगा? तुम्हारे हरामी के बारे में? तुमने मुझे बेवकूफ़ समझा, रंडी।'

तारिक़ जितना ही बातें करता, लैला को उस पल का उतना ही डर लगता जब वो चुप हो जाएगा। उसके बाद आनेवाली चुप्पी इस बात का संकेत होगी कि अब ब्योरे देने की बारी लैला की है। उसे अपनी आपबीती बतानी होगी। जिन बातों को यकीनन वो पहले से ही जानता था, उनकी पुष्टि करनी होगी। जब वो रुका तो लैला को लगा कि वो अचेत हो जाएगी। उसने अपनी आंखें फेर ली थीं। वो नीचे उसके हाथों को देख रही थी, उसके बिखरे हुए, काले बालों को जो इन बीच के बरसों में उन हाथों के पीछे उग आए थे।

तारिक़ ने जेल में बिताए दिनों के बारे में बहुत कुछ नहीं कहा। बस उसने यही बताया कि वहां उसने उर्दू बोलना सीख लिया था। जब लैला ने पूछा तो उसने बेचैनी से अपना सिर झटक दिया। इस इशारे में लैला ने जंग लगी सलाखें और बिना नहाई हुई देहों, हिंसक आदमियों और भरे हुए हॉलों

और बेकार की चीज़ों के साथ सड़ती हुई छतों को देखा। उसने उसके चेहरे में पढ़ा कि यह जलालत, पतन और निराशा से भरी हुई जगह थी।

तारिक़ ने कहा कि उसकी अम्मी ने उसकी गिरफ्तारी के बाद उससे मिलने की कोशिश की थी।

'वो तीन बार आईं। लेकिन मैं कभी उनसे मिल नहीं पाया,' उसने कहा।

उसने उन्हें एक चिट्ठी लिखी और उसके बाद कुछ और चिट्ठियां। यहां तक कि उसे संदेह हुआ कि वो उनको मिलती भी थीं या नहीं।

'और मैंने तुमको लिखा।'

'तुमने लिखा?'

'ओह, ढेरों,' उसने कहा। 'तुम्हारे दोस्त रूमी मेरी लिखाई से जल मरते।' वो फिर से हंसा। इस बार गरजदार हंसी, मानो वो अपनी बेबाकी से स्तब्ध था और उसने जो किया था उससे शर्मिंदा था।

ऊपर जल्मै फिर गेंद मारने लगा था।

'तो पुराने दिनों की ही तरह,' रशीद ने कहा। 'तुम दोनों। मुझे अंदाज़ा है कि तुमने उसे अपनी सूरत भी दिखाई होगी।'

'उन्होंने दिखाई,' जल्मै ने कहा। इसके बाद लैला से बोला, 'आपने किया था मम्मी, मैंने आपको ऐसा करते देखा था।'

'तुम्हारे बेटे को मेरी उतनी परवाह नहीं है,' लैला ऊपर से लौटी तो तारिक़ ने कहा।

'मुझे अफसोस है,' उसने कहा। 'यह बात नहीं है। वो बस...छोड़ उसे।' फिर उसने जल्दी से बात बदल दी क्योंकि जल्मै के बारे में इस तरह सोचना उसे परेशान कर रहा था और वो कसूरवार महसूस कर रही थी। क्योंकि जल्मै एक बच्चा था, नन्हा सा बच्चा जो अपने अब्बा से प्यार करता था और इस अजनबी के प्रति उसका सहज विरोध समझ में आने लायक और जायज़ था।

और मैंने तुम्हें लिखा।

ढेरों।

ढेरों।

'तुम मुर्री में कितने समय से हो?'

'एक साल से भी कम समय से,' तारिक़ ने कहा।

उसने बताया कि जेल में वो एक बूढ़े से मिला। सलीम नाम का यह आदमी पाकिस्तानी था और कभी का फील्ड हॉकी खिलाड़ी था। जेल में उसका आना जाना लगा रहता था और अभी एक खुफिया पुलिस को चाकू मारने के इल्ज़ाम में दस बरसों से सज़ा काट रहा था। हर जेल में सलीम जैसे लोग हैं, तारिक़ ने बताया। हमेशा ही कोई न कोई चालाक और रसूख वाला इंसान होता था, जो व्यवस्था को चलाता था और तुम्हें चीज़ें मुहैया कराता था, जिसके आस पास मौक़े और जोखिम हर वक़्त मंडराया करते थे। ये सलीम ही थे जिन्होंने अम्मी के बारे में तारिक़ के सवालों को बाहर भेजा, ये सलीम ही थे जिन्होंने उसे बैठा कर नर्म, अब्बाओं जैसे लहजे में उसे बताया था कि वो सर्दी लगने से मर गई थीं।

तारिक़ ने पाकिस्तानी जेल में सात बरस बिताए। 'मैं आसानी से छूट गया,' उसने कहा। 'मैं खुशकिस्मत था। यह पता लगा कि मेरे मामले की सुनवाई कर रहे जज के भाई की बीवी एक अफ़ग़ानी औरत थी। हो सकता है कि उसने रहमदिली दिखाई हो। मैं नहीं जानता।'

जब तारिक़ की सज़ा ख़त्म हुई तो 2000 की सर्दियों का शुरुआती वक़्त था। सलीम ने अपने भाई का पता और फोन नंबर उसे दिया। उसके भाई का नाम सईद था।

'उन्होंने कहा कि सलीम का मुर्री में एक होटल है,' तारिक़ ने बताया। 'बीस कमरे और एक लाउंज। ये सैलानियों के ठहरने की एक छोटी सी जगह है। उन्होंने कहा कि उसे बताना कि तुम्हें मैंने भेजा है।'

तारिक़ को बस से उतरते ही मुर्री पसंद आ गई, इसके बर्फ़ से लदे हुए सनोबर, ठंडी, साफ़ हवा, बंद शटरों वाले लकड़ी के कॉटेज, चिमनियों से गोल-गोल ऊपर उठता धुआं।

सईद का दरवाज़ा खटखटाते हुए तारिक़ सोच रहा था कि ये वो जगह है जहां उसकी अब तक की जानी-पहचानी बदहाली की दुनिया की कोई जगह नहीं बल्कि यहां तो मुश्किलों और गम भी फूहड़ लगते हैं और उनकी कल्पना भी नहीं की जा सकती।

'मैंने खुद से कहा कि ये ऐसी जगह है जहां आदमी कामयाब हो सकता है।'

तारिक़ को इमारत की देखभाल करने और छोटे-मोटे मरम्मत के कामों के लिए रख लिया गया। उसने बताया कि उसने आधी तनख्वाह वाले एक महीने के ट्रायल के दौरान अच्छा काम किया, जिसका जिम्मा सईद ने उसे दिया था। तारिक़ के बोलने में लैला सईद को देखती थी, जिनके बारे में उसने कल्पना की कि वो पतली आंखों और लाल चेहरे वाले इंसान थे, रिसेप्शन ऑफिस की खिड़की के पास खड़े होकर वो तारिक़ को लकड़ियां काटते और राहदरी पर से फावड़े के ज़रिए बर्फ़ हटाते देख रहे थे। उसने उन्हें तारिक़ के पैरों पर झुकते हुए देखा, जब तारिक़ सिंक के नीचे चू रहे पाइप की मरम्मत कर रहा था। उन्हें गायब हो गई नकदी के लिए रजिस्टरों की जांच करते देखा।

तारिक़ ने बताया कि उसकी कोठरी रसोइए के छोटे बंगले की बग़ल में थी। रसोइया एक मेट्रननुमा उम्रदराज़ बेवा थी, जिसका नाम अदीबा था। दोनों कोठरियां होटल से अलग थीं और उनको बादाम के पेड़ों का एक झुंड, एक पार्क बेंच और पिरामिड की शक्ल का एक फव्वारा मुख्य इमारत से अलग करता था, जो गर्मियों में पूरे दिन पानी उड़ाता रहता था। लैला ने कोठरी में तारिक़ की कल्पना की जो अपने बिस्तर पर बैठा हुआ खिड़की से बाहर के पत्तियों से भरी दुनिया को देख रहा था।

ग्रेस पीरियड के आख़िर में सईद ने तारिक़ की तन्खवाह पूरी कर दी और उससे कहा कि उसे दोपहर के खाने के पैसे नहीं देने होंगे। उन्होंने उसे एक ऊनी कोट और एक नया पांव दिया। तारिक़ ने बताया कि वो उस आदमी की दयाशीलता पर रो पड़ा था।

अपनी पहली पूरी तनख्वाह जेब में लिए तारिक़ शहर गया और अल्योना ख़रीद लाया।

'उसके बाल कमाल के सफ़ेद हैं,' तारिक़ ने मुस्कुराते हुए कहा। 'कुछ सुबहों में, जब सारी रात बर्फ़ पड़ी हो, खिड़की से बाहर देखने पर उसकी बस दो आंखें और थूथन ही दिखती है।'

लैला ने सिर हिलाया। फ़ौरन एक और खामोशी उनके बीच आकर बैठ गई। ऊपर जल्मै फिर से दीवारों पर गेंद मारने लगा था।

'मुझे लगा कि तुम मर गए थे,' लैला ने कहा।

'मुझे पता है। तुमने मुझे बताया।'

लैला की आवाज़ टूट गई। उसे अपना गला साफ़ करना पड़ा, हिम्मत

जुटानी पड़ी। 'जो आदमी ख़बर देने आया था वो इतना संजीदा था...मैंने उस पर भरोसा कर लिया, तारिक़। मैंने चाहा कि मैं न करूं, लेकिन मैंने किया। और तब मुझे लगा कि मैं इतनी अकेली और बिखरी हुई हूं। वरना मैं रशीद से शादी करने को राज़ी नहीं हुई होती। मैं नहीं हुई होती...'

'तुम्हें ऐसी बात करने की ज़रूरत नहीं है,' उसने नर्मी से, उसकी आंखों में देखने से बचते हुए कहा। उसने यह बात जैसे कही, उसमें कोई छुपी हुई नाराज़गी और तोहमत नहीं थी। कसूरवार ठहराने का कोई निशान नहीं था।

'लेकिन मैं कहूंगी। क्योंकि उससे शादी करने की इससे भी एक बड़ी वजह थी। ये एक ऐसी बात है, जिसे तुम नहीं जानते, तारिक़। कोई है। मुझे तुम्हें बताना होगा।'

'क्या उसके साथ तुमने भी बैठ कर बातें कीं?' रशीद ने जल्मै से पूछा।

जल्मै ने कुछ नहीं कहा। लैला ने अब उसकी आंखों में हिचक और असमंजस देखी। मानो उसे यह बात समझ में आ गई थी कि उसने जो बात खोल दी थी वो उसके ख्यालों से कहीं ज़्यादा बड़ी निकल रही थी।

'मैंने तुमसे एक सवाल किया है, लड़के।'

जल्मै ने थूक निगली। उसकी निगाह अस्थिर थी। 'मैं ऊपर मरियम के साथ खेल रहा था।'

'और तुम्हारी अम्मी?'

जल्मै ने रोने-रोने को होते हुए, माफ़ी मांगती हुई नज़र से लैला की तरफ़ देखा।

'ठीक है जल्मै,' लैला ने कहा। 'सच कह दो।'

'वो...वो नीचे उस आदमी से बातें कर रही थीं,' उसने पतली आवाज़ में कहा, जिसे एक फुसफुसाहट से भी मुश्किल से ही ऊंची थी।

'मैं समझता हूं,' रशीद ने कहा। 'मिलाजुला काम। टीमवर्क।'

जाते वक़्त तारिक़ ने कहा, 'मैं उससे मिलना चाहता हूं। मैं उसे देखना चाहता हूं।'

'मैं इसका इंतज़ाम करूंगी,' लैला ने कहा।

'अज़ीज़ा। अज़ीज़ा।' वो शब्दों के मज़े लेता हुआ मुस्कुराया। जब रशीद उसकी बेटी का नाम लेता था तो लैला को वो बुरा, लगभग फूहड़ लगता था।

'अज़ीज़ा। यह प्यारा है।'

'जितनी प्यारी वो है। देख लेना।'

उन्होंने आख़िरी बार जब एक दूसरे को देखा था तब से दस बरस बीत चुके थे। लैला के मन में हर वक़्त गली में उनका मिलना और छुप कर चूमना घुमड़ता रहता था। उसे जानने का मन कर रहा था कि वो अब उसको कैसी लग रही थी। क्या वो उसे अब भी प्यारी लग रही थी? या क्या वो उसे बूढ़ी, घिस गई, दयनीय लग रही थी मानो एक डरी हुई अकड़ी हुई उम्र दराज़ औरत हो? लगभग दस बरस। लेकिन एक पल के लिए वहां धूप में तारिक़ के साथ खड़े रहना ऐसा था मानो ये बरस बीते नहीं हों। उसके अम्मी-अब्बू की मौतें, रशीद से उसकी शादी, हत्याएं, यहां तक के उसके बच्चे, ये सारा कुछ एक सपने की तरह लगे, एक अजीब से लंबे सफ़र जैसे, मानो वो पिछली दोपहर के उनके साथ और इस पल के बीच का एक छोटा सा अंतराल भर थे।

तब तारिक़ का चेहरा बदल कर गंभीर हो गया। वो इस भाव को जानती थी। ये वही भाव था, जो उस दिन उसके चेहरे पर था, इतने बरसों पहले उस वक़्त जब वो दोनों बच्चे हुआ करते थे, जब वो अपना पांव खोल कर खादिम की तरफ़ दौड़ा था। अब उसने एक हाथ आगे बढ़ाया और लैला के निचले होंठ का कोना छू लिया।

'उसने तुम्हारे साथ ये किया,' उसने सर्द आवाज़ में कहा।

इस छुअन के साथ ही लैला को उस दोपहर का पागलपन याद आया, जिस दिन उसकी कोख में लैला आई थी। लैला के गले पर उसकी सांसें, तारिक़ के कूल्हे की पेशियों का फड़कना, उसकी छातियों पर उसका दबाव, एक दूसरे में गुंथे हुए उनके हाथ।

'मैं चाहता हूं कि काश तुम्हें अपने साथ ले जा पाता,' तारिक़ लगभग फुसफुसाया।

लैला ने रोने से बचने की कोशिश में अपनी निगाह नीचे कर ली।

'मैं जानता हूं कि तुम अब एक शादीशुदा औरत और एक मां हो। और दूसरी तरफ़ मैं इतने बरसों के बाद, इतने सारे हादसों के बाद तुम्हारे दरवाज़े पर खड़ा हूं। शायद यह मुनासिब या जायज़ नहीं है, लेकिन मैं इतनी दूर तुम्हें देखने आया हूं और...ओह, लैला, मैं चाहता हूं कि मैं तुम्हें छोड़ कर कभी नहीं जाऊं।'

'ऐसा मत कहो,' वो भर्राए गले से बोली।

'मुझे और सख़्त कोशिश करनी चाहिए थी। जब मेरे पास मौक़ा था तो तुमसे शादी कर लेनी चाहिए थी। तब हर चीज़ अलग होती।'

'ऐसी बातें मत करो। मेहरबानी करके। इससे दर्द होता है।'

उसने सिर हिलाया और उसकी तरफ़ क़दम बढ़ाया। फिर ख़ुद को रोक लिया। 'मैं किसी चीज़ का अंदाज़ा नहीं लगाना चाहता। और मैं इस तरह हवा में से यहां तुम्हारे सामने आकर तुम्हारी ज़िंदगी में उथल-पुथल नहीं लाना चाहता। अगर तुम चाहती हो कि मैं चला जाऊं, अगर तुम चाहती हो कि मैं पाकिस्तान लौट जाऊं तो एक बार कह दो लैला। मैं सच कह रहा हूं। कह दो और मैं चला जाऊंगा। मैं तुम्हें फिर से परेशान नहीं करूंगा। मैं चला जाऊंगा-'

'नहीं!' लैला ने इतनी तेज़ी से कहा, जितना उसका इरादा नहीं था। उसने पाया कि उसने उसके हाथों को उसकी तरफ़ हाथ बढ़ा दिया है, कि वो उसके हाथों को पकड़ रही है। उसने अपना हाथ नीचे कर लिया। 'नहीं। मत जाओ, तारिक़। नहीं। मेहरबानी करके रुक जाओ।'

तारिक़ ने सिर हिलाया।

'वो दोपहर से आठ बजे तक काम करते हैं। कल दोपहर बाद आना। मैं तुम्हें अज़ीज़ा के पास ले चलूंगी।'

-'मुझे रशीद का डर नहीं है, तुम्हें पता है।'

'मैं जानती हूं। कल दोपहर बाद आना।'

'और फिर?'

'और फिर...मैं नहीं जानती। मुझे सोचना होगा। ये...'

'मैं जानता हूं कि ये है,' उसने कहा। 'मैं समझता हूं। मुझे अफसोस है। मुझे काफ़ी सारी चीज़ों के लिए अफसोस है।'

'अफसोस मत करो। तुमने वादा किया था कि तुम आओगे। और तुम आए हो।'

उसकी आंखें भींग गईं। 'तुम्हें देख कर अच्छा लगा, लैला।'

लैला ने अपनी जगह कांपते हुए खड़े-खड़े, उसे दूर जाते देखा। उसने सोचा, *ढेरों पत्र* और उस पर डर की एक और लहर दौड़ गई, उदासी और दुख की एक लहर, लेकिन साथ ही कुछ बेचैन और बेकरार उम्मीद भी थी।

पैंतालीस

मरियम

'मैं ऊपर मरियम के साथ खेल रहा था,' जल्मै ने कहा।

'और तुम्हारी अम्मी?'

'वो...वो नीचे उस आदमी से बातें कर रही थीं।'

'समझ गया,' रशीद ने कहा। 'सबकी मिलीभगत।'

मरियम ने उसके चेहरे को सुकून से भर कर ढीला पड़े हुए देखा। उसने साफ़ साफ़ उसकी ललाट की तहें देखीं। उसकी आंखों से संदेह और परेशानी निकली पड़ रही थी। वो तन कर बैठा था और थोड़ी सी देर के लिए वो महज सोचता हुआ-सा दिखा, मानो एक जहाज़ के कप्तान को अभी अभी हुए गदर की ख़बर दी गई हो और वो अपने अगले क़दम के बारे में सोच-विचार रहा हो।

उसने निगाह उठाई।

मरियम ने कुछ कहना शुरू किया लेकिन उसने हाथ उठाया और उसे देखे बिना बोला, 'बहुत देर हो गई है, मरियम।'

जल्मै से उसने बहुत सर्द आवाज़ में कहा, 'तुम ऊपर जाओ लड़के।'

जल्मै के चेहरे पर मरियम ने खतरे के संकेत देखे। वो असहज रूप से उन तीनों को देख रहा था। उसे महसूस हुआ कि उसकी चुगलियों के खेल ने कमरे में एक गंभीर शक्ल अख़्तियार कर ली है, बहुत गंभीर। उसने खिसियाई हुई-सी, अफसोसनाक निगाह से पहले मरियम और फिर अपनी अम्मी को देखा।

ललकारती हुई आवाज़ में रशीद ने कहा, 'अभी!'

उसने जल्मै को कोहनी से पकड़ा। जल्मै ने चुपचाप ख़ुद को ऊपर ले जाए जाने दिया।

मरियम और लैला ज़मीन में आंखें गाड़े जड़वत खड़े रहे, मानो उनका एक दूसरे को देख लेना रशीद के नज़रिए को मज़बूत करेगा, कि जब वो ऐसे लोगों के लिए दरवाज़े खोल रहा था और उनका सामान घसीट रहा था, जो उसकी तरफ़ निगाह उठा कर देखते भी नहीं हैं, तो उसकी पीठ पीछे, उसके अपने ही घर में, उसके प्यारे बेटे की मौजूदगी में एक अश्लील साजिश चल रही थी। उन दोनों में से कोई कुछ भी नहीं बोला। वो ऊपर गलियारे में कदमों की आहटें सुन रही थीं, यह भारी और अपशगुन से भरी हुई आहट थी। दूसरी आवाज़ एक चंचल नन्हें जानवर के बड़बड़ाने की आवाज़ थी। उन्होंने घुटी-घुटी आवाज़ें, चिंचियाती हुई फरियाद, रूखा जवाब, दरवाज़े का बंद होना, चाबी घूमने की करकराती हुई आवाज़ सुनी। फिर एक जोड़ी लौटते हुए पांवें की आहट, जो अब ज़्यादा बेसब्र लग रही थी।

मरियम ने सीढ़ियों पर धमधम करते हुए नीचे आते पांवों को देखा। उसने रशीद को चाबी को जेब में रखते देखा, उसकी बेल्ट देखी जिसका छेदों वाला हिस्सा उसकी मुट्ठी के चारों तरफ़ लिपटा हुआ था। उसके पीछे लटक रहा नकली पीतल का बकल हर क़दम पर उछल रहा था।

वो उसे रोकने के लिए आगे बढ़ी, लेकिन रशीद ने उसे पीछे धकेल दिया और उसकी बग़ल से तेज़ी से आगे बढ़ गया। बिना कुछ कहे उसने लैला पर बेल्ट घुमाई। यह उसने ऐसी तेज़ी से किया कि लैला के पास पीछे हटने या झुक पाने या अपने बचाव में हाथ उठा पाने का कोई मौक़ा नहीं था। लैला ने अपनी कनपटी पर उंगली फिराई और भौंचक होकर ख़ून को और रशीद को देखा। ग़ैरयकीनी की यह निगाह बस एक या दो पलों के लिए ही रही, जिसकी जगह नफ़रत से भरी हुई किसी चीज़ ने ले ली।

रशीद ने फिर से बेल्ट घुमाई।

इस बार लैला ने ख़ुद को हाथ के अगले हिस्से ढंका और बेल्ट को पकड़ने की कोशिश की। उससे बेल्ट छूट गई और रशीद ने फिर से बेल्ट घुमाई। लैला ने इस बार बेल्ट को पकड़ लिया, लेकिन रशीद ने झटक कर बेल्ट खींच ली और उस पर फिर से वार किया। इसके बाद लैला कमरे में

भाग रही थी और मरियम चिल्लाते हुए रशीद से फरियादें कर रही थी, जो लैला का पीछा कर रहा था और उसका रास्ता रोक कर अपनी बेल्ट उस पर फटकार रहा था। एक मौक़े पर लैला ने झुक कर वार बचा लिया और किसी तरह रशीद की कान के ऊपर एक घूंसा जमाया, जिस पर उसने गाली दी और पहले से ज़्यादा बेचैनी से उसका पीछा करने लगा। उसने लैला को पकड़ लिया, उसे दीवार से लगा कर बेल्ट से बार बार उसे मारने लगा। बकल उसे सीने, कंधे, उसकी उठी हुई बांह, उसकी उंगलियों पर चोट कर रहा था और जहां भी पड़ता था, ख़ून निकाल ले रहा था।

मरियम भूल गई कि कितनी बार बेल्ट ने वार किया था, कितनी बार रोते हुए उसने रशीद से फरियादें कीं, कितनी बार वो दांतों और मुक्कों और बेल्ट के बेमेल झड़प के चारों ओर मंडराई होगी, जिसके बाद जाकर उसने रशीद के चेहरे को नोचती उंगलियों को देखा। टूटे हुए नाखुन जबड़ों को खरोंच रहे थे, उसके बाल खींच रहे थे और उसकी ललाट को नोच रहे थे। यह समझने में उसे कितना वक़्त लगा कि वो उंगलियां उसकी अपनी थीं, और वो इससे हैरान भी थी और ख़ुश भी।

रशीद ने लैला को छोड़ दिया और उसकी तरफ़ मुड़ा। पहले तो उसने मरियम को देखे बिना उसकी तरफ़ निगाह डाली, फिर उसकी आंखें सिकुड़ीं, तसल्ली से मरियम का जायज़ा लिया। मरियम को उनमें पल भर के लिए उलझन दिखी जो हैरानी में, फिर नापसंदीदगी में, यहां तक कि निराशा में बदल रही थी।

मरियम ने उस पहले मौक़े को याद किया जब उसने ये आंखें देखी थीं। जलील की निगाहों के नीचे, शादी के बुर्के के भीतर, शीशे में कैसे उन दोनों की निगाहें शीशे में फिसलीं और एक दूसरे से मिलीं। रशीद की बेरुख़ी से भरी आंखें और मरियम की डरी हुई, झुकी हुई और करीब करीब शर्मिंदा आंखें।

शर्मिंदा।

मरियम ने अब उन्हीं आंखों में देखा कि वो कितनी बेवकूफ़ हुआ करती थी।

क्या वो एक धोखेबाज़ बीवी थी? उसने ख़ुद से पूछा। एक आत्मसंतुष्ट बीवी? एक लज्जाजनक औरत? मर्यादाहीन? फूहड़? उसने इस आदमी का जानबूझ कर क्या नुक़सान किया था जो वो इस तरह जलता था, लगातार

हमले करता था, उसको सताने में उसे आनंद आता था? जब रशीद बीमार था तो क्या उसने उसकी देखरेख नहीं की? उसे और उसके दोस्तों को खिलाया नहीं, एक फर्ज़ की तरह उसकी चीज़ों की साफ़-सफाई नहीं की?

क्या उसने इस मर्द को अपनी जवानी नहीं दे दी थी?

क्या वो न्यायोचित रूप से कभी इस नीचता के लायक थी?

रशीद ने जब बेल्ट ज़मीन पर गिराई तो उसकी धप से आवाज़ आई। इस धप ने बताया कि कुछ काम खाली हाथों से किए जाने लायक होते हैं।

लेकिन वो ज्यों ही उसकी तरफ़ झुका, मरियम ने उसके पीछे लैला को देखा जो ज़मीन पर से कुछ उठा रही थी। उसने लैला का हाथ सिर के ऊपर उठते, मुड़ते और रशीद के चेहरे की बग़ल में घूमते हुए देखा। शीशा बिखरा। पानी पीने के गिलास के टूटे हुए नुकीले टुकड़े ज़मीन पर बरसे। लैला के हाथों पर ख़ून लगा था, रशीद के गाल में बने घाव से ख़ून बह रहा था, उसकी गर्दन से ख़ून निकल रहा था और उसकी कमीज़ पर ख़ून था। वो दांत पीसते हुए और जलती हुई आंखों के साथ पीछे मुड़ा।

रशीद और लैला एक दूसरे को पीटते हुए ज़मीन पर ढह पड़े। आख़िर में रशीद ऊपर था और उसके हाथ लैला के गले पर कस चुके थे।

मरियम ने उस पर नाखुनों से हमला किया। उसने उसके सीने पर मारा। उसने को पूरी ताकत लगा कर धक्का दिया। वो लैला की गर्दन पर कसी उंगलियों को खोलने के लिए जूझती रही। उसने दांत गड़ाए। लेकिन उसने लैला की सांस की नली को कसे रखा और मरियम ने देखा कि उसका इरादा इसे अंजाम तक पहुंचाने का था।

वो उसे गला घोंट कर मार देना चाहता उन दोनों के पास इसमें करने के लिए कोई उपाय नहीं था।

मरियम पीछे हटी कमरे से बाहर निकल गई। वो ऊपर पांवों की धमक के प्रति सचेत थी, वो तालाबंद दरवाज़े पर बजती उन नन्हीं हथेलियों को लेकर सचेत थी। उसने गलियारा पार किया। सदर दरवाज़े से होकर गुज़री। उसने आंगन को पार किया।

औजारों के छप्पर से उसने फावड़ा उठाया।

रशीद ने उसके कमरे में वापस आने पर ग़ौर नहीं किया। वो अब भी लैला के ऊपर, फैली हुई पागल आंखें लिए बैठा था और उसके हाथों ने लैला

की गर्दन कस रखी थी। लैला का चेहरा अब नीला पड़ रहा था और उसकी आंखें पलट गई थीं। मरियम ने देखा कि अब लैला जूझ नहीं रही थी। वो उसे मार डालने जा रहा है, उसने सोचा। सचमुच उसका यही इरादा है। और मरियम ऐसा नहीं होने दे सकती। ऐसा नहीं होने देगी। शादी के इन सत्ताईस बरसों में रशीद ने मरियम से बहुत कुछ छीना है। वो उसे लैला को छीनते हुए नहीं देखेगी।

मरियम ने अपने पैरों को मज़बूत किया और फावड़े के हत्थे पर अपनी पकड़ को मज़बूत किया। उसने उसे ऊपर उठाया। उसने यह नाम पुकारा। वो चाहती थी कि वो यह देखे।

'रशीद!'

रशीद ने ऊपर देखा।

मरियम ने हमला किया।

उसने रशीद की कनपटी पर चोट की थी। धक्के ने उसे लैला पर से गिरा दिया।

रशीद ने हथेली से अपना सिर छुआ। उसने अपनी उंगलियों के पोरों पर ख़ून को देखा और फिर मरियम पर निगाह डाली। मरियम को ऐसा लगा कि उसने रशीद के चेहरे को नर्म पड़ते देखा है। उसने कल्पना की कि उनके बीच कुछ गुज़रा है, कि शायद उसने सचमुच में उसके दिमाग में कुछ समझदारी पर दस्तक दी है। मरियम को लगा कि शायद रशीद ने भी मरियम के चेहरे में कुछ देखा था, कुछ ऐसा जिसकी वजह से वो पीछे हट गया। शायद उसने आत्म-त्याग के निशान देखे हों, सारी कुर्बानियां, उसके साथ इन सारे बरसों में रहने के लिए अपनी ज़िंदगी पर थोपे गए बोझ को देखा हो, लगातार नीचा दिखाए जाते रहने और हिंसा से भरी ज़िंदगी, मीनमेख निकालने और नीचता से भरी ज़िंदगी। क्या यही सम्मान मरियम ने उसकी आंखों में देखा था? पछतावा?

लेकिन तब रशीद का ऊपरी होंठ एक द्वेष से भरी हुई हंसी में मुड़ा और मरियम तब इसे पूरा नहीं कर पाने की ग़लती को जान गई, जो उसे गैरज़िम्मेदारी भी महसूस हुई। अगर उसने रशीद को अब खड़ा होने दिया तो रशीद को जेब से चाबी निकाल कर उस कमरे में जाने में जहां उसने जल्मै को बंद कर रखा था, और बंदूक निकाल कर लाने में कितना वक़्त लगेगा? अगर मरियम को इसका यकीन होता कि रशीद सिर्फ़ मरियम को गोली मार तक संतोष कर

देगा, कि इसकी संभावना है कि वो लैला को छोड़ देगा तो वो फावड़ा नीचे कर लेती। लेकिन रशीद की आंखों में उसने दोनों की मौत देखी।

और इसलिए मरियम ने फावड़ा ऊपर उठाया, इतना ऊपर उठाया जितना वो उठा सकती थी। उसे इतना ताना कि वो उसकी पीठ से हल्के से छूने लगा। उसने उसे घुमा दिया ताकि नुकीला सिरा सामने रहे और ऐसा करते हुए उसने जाना कि पहली बार वो अपनी ज़िंदगी का रास्ता खुद तय कर रही है।

और इसके साथ मरियम ने फावड़े से चोट की। इस बार उसके पास जितनी ताकत थी, उसने लगा दी थी।

छियालीस

लैला

लैला अपने ऊपर झुके चेहरे को, सारे दांतों और तंबाकू और अपशगुन से भरी आंखों को जानती थी। उसे हल्का-हल्का मरियम का भी भान था, जो उस चेहरे के पीछे मौजूद थी और जिसकी मुट्ठियां बरस रही थीं। उनके ऊपर छत थी और वह छत ही थी जिसकी तरफ़ लैला का ध्यान गया था। उस पर आर-पार फैले सांचे का गहरा निशान था मानो कपड़े पर स्याही हो। प्लास्टर में दरार थी जो एक भावहीन मुस्कान या घुड़की थी। यह इस पर निर्भर करता था कि आप कमरे के किस कोने से उसे देख रहे हैं। लैला हर वक़्त सोचा करती कि वो झाडू में कपड़े का टुकड़ा बांध कर मकड़ियों का जाला साफ़ कर देगी। तीन बार उसने और मरियम ने उन पर सफ़ेदी की थी। अब वो दरार मुस्कान नहीं बल्कि चिढ़ाती हुई कनखी बन गई थी। और वो अब धुंधली पड़ रही थी। छत सिकुड़ रही थी, उठ रही थी, उससे दूर ऊपर किसी धुंधलके की तरफ़ जा रही थी। वो तब तक ऊपर उठती रही जब तक वो डाक टिकट के आकार की नहीं रह गई, सफ़ेद और चमकदार। उसके चारों ओर की हर चीज़ को बिखरे हुए अंधेरे ने सोख लिया था। अंधेरे में रशीद का चेहरा धूप के टुकड़े जैसा था।

अब अंधा कर देने वाली रोशनी के टुकड़े उसकी आंखों के सामने थे, मानो चांदी के सितारें फूट रहे हों। रोशनी में अजीबोगरीब ज्यामितीय आकृतियां, कीड़े, अंडे की शक्ल जैसी चीज़ें बन रही थीं, ऊपर-नीचे, अगल-बगल आ-जा

रही थीं, एक दूसरे में मिल जा रही थीं, बिखर रही थीं, मिल कर कोई दूसरी चीज़ बना रही थीं, फिर फीकी पड़ती हुई अंधेरे में गुम हो जा रही थीं।

आवाज़ें घुटी-घुटी थीं और दूर से आ रही थीं।

उसकी आंखों की पुतलियों के पीछे, उसके बच्चों के चेहरे जगमगा रहे थे और फिर धुंधले पड़ते जा रहे थे। चौकन्नी और बोझिल, जानकार और राज़ों को छुपाने वाली अज़ीज़ा। एक कांपती हुई बेकरारी के साथ अपने अब्बा की ओर देखते हुए जल्मै।

लैला ने सोचा कि तब इसी तरह अंत आ जाएगा। कितना दयनीय अंत है।

लेकिन तभी अंधेरा छंटने लगा। उसे महसूस हुआ कि वो उठ रही है, उसे उठाया जा रहा है। धीरे-धीरे छत वापस लौट आई, फैल गई और अब लैला उसकी दरार को फिर से देख सकती थी। और यह वही पुरानी उदास मुस्कुराहट थी।

उसे हिलाया जा रहा था। क्या तुम ठीक हो? जवाब दो, क्या तुम ठीक हो? मरियम का खरोंचों से भरा और फिक्र से बोझिल चेहरा लैला के ऊपर झुका हुआ था।

लैला ने सांस लेने की कोशिश की। इससे उसका गला जलने लगा। उसने फिर से कोशिश की। इस बार पहले से भी ज़्यादा जलन हुई और सिर्फ़ उसका गला ही नहीं, सीना भी। और फिर वो खांसने लगी और ज़ोर ज़ोर से सांस लेने लगी। वो हांफ रही थी। लेकिन सांसें ले रही थी। उसका अच्छा कान बजा।

उठ कर बैठने पर जो पहली चीज़ उसने देखी वो रशीद था। वो पीठ के बल पड़ा हुआ था। वो बिना पलकें झपकाए घूर रहा था, पर कुछ देख नहीं रहा था। उसके होंठ गोल सिकुड़े हुए थे। उसके मुंह से हल्के गुलाबी रंग का झाग निकल कर उसके गालों पर बह गया था। उसकी पैंट के सामने का हिस्सा गीला था। लैला की निगाह उसकी ललाट पर पड़ी।

फिर उसने फावड़ा देखा।

उसकी कराह निकल गई। 'ओह,' उसने कांपते हुए कहा। वो महज़ इतना ही कह पाई, 'ओह मरियम।'

कराहती और अपने हाथों को एक दूसरे पर मारते हुए लैला तेज़-तेज़ चल रही थी, जबकि मरियम रशीद के करीब अपने हाथों को अपनी गोद में रखे हुए शांत और बिना हिले-डुले बैठी रही। देर तक मरियम ने कुछ भी नहीं कहा।

लैला का मुंह सूख गया था और वो हकला कर बोल रही थी। वो बुरी तरह कांप रही थी। उसने मन से चाहा कि वो रशीद की तरफ़, उसके खुले हुए मुंह की तरफ़, उसकी खुली हुई आंखों, कॉलरबोन के गड्ढे में जमे ख़ून की तरफ़ नहीं देखे।

बाहर रोशनी मंद पड़ रही थी। परछाइयां गहरा रही थीं। मरियम का चेहरा इस रोशनी में पतला और मुर्झाया सा दिख रहा था, लेकिन वो उत्तेजित या डरी हुई नहीं दिख रही थी। वो बस फिक्रमंद थी, सोच रही थी, अपने में इस कदर डूबी हुई कि जब एक मक्खी उसकी ठोढ़ी पर बैठी तो उसने इस पर ध्यान नहीं दिया। वो बस वहां बैठी रही। उसका निचला होंठ बाहर निकला हुआ था और वो ऐसा तब करती थी जब वो ख़यालों में डूबी होती थी।

आख़िर में मरियम ने कहा, 'बैठ जाओ, लैला जो।'

लैला उसकी बात मानते हुए बैठ गई।

'हमें इसे हटाना होगा। जल्मै इसे देख नहीं सकता।'

रशीद को बिछाने के चादर में लपेटने से पहले मरियम ने उसकी जेब से सोने के कमरे की चाबी निकाल ली थी। लैला ने घुटनों के नीचे उसके पैर पकड़े और मरियम ने उसके हाथों को पकड़ा। उन्होंने उसे उठाने की कोशिश की, लेकिन वो बहुत भारी था उन्हें उसे घसीटना पड़ा। जब वो सदर दरवाज़े से गुज़र रही थीं और आंगन में जा रही थीं, तो रशीद का पांव चौखट में फंस गया और उसकी टांग बग़ल से मुड़ गई। वो पीछे हटीं और उन्होंने फिर से कोशिश की। ऊपर कुछ धमक की आवाज़ आई और लैला के पांवों ने जवाब दे दिया। रशीद उससे छूट गया। कंधे झुकाए वो ज़मीन पर बैठ गई। वो सुबकती हुई कांप रही थी और मरियम को अपने कूल्हों पर हाथ रखे हुए उसके पास खड़े होकर कहना पड़ा कि उसे हिम्मत जुटानी होगी। कि जो हो चुका वो हो चुका।

कुछ देर बाद लैला उठी और उसने अपना चेहरा पोंछा। और बिना किसी दूसरी घटना के वो रशीद को आंगन तक ले गईं। वो उसको औज़ारों वाले

छप्पर में ले गईं। उन्होंने उसे काम करने की एक बेंच पर छोड़ा, जिस पर उसकी आरी, कुछ कीलें, एक छेनी, एक हथौड़ी और बेलन जैसा लकड़ी का एक टुकड़ा था, जिससे रशीद जल्मै के लिए कोई चीज़ बनाने वाला था, लेकिन कभी नहीं बना पाया।

फिर वो वापस लौटीं। मरियम ने अपने हाथ धोए, उन्हें बालों में फिराया, गहरी सांस ली और छोड़ी। 'अब तुम अपने जख्मों की देखभाल करने दो। तुम्हारे हर जगह जख्म हैं, लैला जो।'

मरियम ने कहा कि उसे चीज़ों के बारे में सोचने के लिए उस रात की ज़रूरत है। ताकि वो अपने ख्यालों को जुटा सके और कोई मंसूबा बना सके।

'एक उपाय है,' उसने कहा। 'और बस मुझे उसे खोजना है।'

'हमें जाना पड़ेगा! हम यहां नहीं रह सके,' लैला ने एक टूटी हुई, सूखी-सी आवाज़ में कहा। अचानक उसने उस आवाज़ के बारे में सोचा जो रशीद के सिर पर लगते फावड़े ने पैदा की होगी और इस पर लैला का शरीर आगे को झुक गया। उसके सीने में जलन होने लगी।

मरियम ने लैला के वापस ठीक होने तक इंतज़ार किया। इसके बाद उसने लैला को लिटा दिया और उसके सिर को अपनी गोद में रखते हुए मरियम ने कहा कि फिक्र करने की बात नहीं है, कि सब ठीक होगा। उसने कहा कि वो चली जाएंगी- वो लैला, बच्चे और तारिक़ भी। वो इस घर को, इस निर्मम शहर को छोड़ देंगे। मरियम ने उसके बालों में उंगलियां फिराते हुए कहा कि वो इस उदास देश को ही छोड़ देंगे और दूर कहीं ऐसी महफूज जगह चले जाएंगे जहां कोई उन्हें ढूंढ़ नहीं पाएगा, जहां वो अपने अतीत को भुला कर पनाह खोज सकेंगे।

'ऐसी जगह जहां पेड़ हों,' उसने कहा। 'हां। खूब सारे पेड़।'

मरियम ने कहा कि वो किसी ऐसे शहर के सिरे पर एक छोटे से घर में रहेंगे, जिसका नाम भी उन्होंने नहीं सुना था, या फिर वो दूर-दराज़ के किसी गांव में जहां सड़कें पतली और कच्ची हों लेकिन उनके दोनों तरफ़ सारी किस्मों के पेड़ों और झाड़ियों की कतारें होंगी। शायद वहां कोई राह होगी, ऐसी राह होगी जो घास के मैदानों तक ले जाएगी, जहां बच्चे खेल सकेंगे, या बजरी की सड़क होगी जो उन्हें एक साफ़ नीली झील तक ले जाएगी, जहां ट्राउट मछलियां तैर रही होंगी और सतह से नरकट झांक रहे होंगे। वो भेड़ें और मुर्गियां

पालेंगी और मिल कर रोटियां बनाएंगी और बच्चों को पढ़ना सिखाएंगी। वो अपने लिए नई ज़िंदगियां बनाएंगी- सुकून से भरी अकेली ज़िंदगियां- और उन्होंने अब तक जो कुछ भी सहा है, उसका बोझ उन पर से उतर जाएगा और वो उन सारी खुशियों और सादगी भरी समृद्धि के लायक होंगी, जिन्हें वो अपने लिए तलाशेंगी।

लैला हौसला बढ़ाती हुई बुदबुदाती रही। वो देख रही थी कि यह मुश्किलों से भरी ज़िंदगी होगी, लेकिन यह खुशियां देने वाली होगी, उन मुश्किलों पर वो नाज़ कर सकेंगी, उन्हें अपना सकेंगी, उनका मोल कर सकेंगी, मानो वो खानदान से विरासत में मिली चीज़ हो। मरियम की नर्म, मां जैसी आवाज़ जारी रही लैला को राहत से भरती रही। एक उपाय है। उसने कहा था और सवेरे मरियम बताने वाली थी कि क्या करना है और वो इसे करेंगी और हो सकता है कि कल इस वक़्त वो इस नई ज़िंदगी की राह पर होंगी। एक ऐसी ज़िंदगी जो संभावनाओं और खुशियों और खुशनुमा परेशानियों से भरपूर होगी। लैला इसके लिए शुक्रगुज़ार थी कि मरियम प्रभारी थी, जो सुलझी हुई और गंभीर थी, उन दोनों के लिए सोच पाने में सक्षम थी। उसका अपना दिमाग तो घबराया हुआ, अव्यवस्थित-सा था।

मरियम उठी। 'अब तुम्हें अपने बेटे को देखना चाहिए।' उसके चेहरे पर व्यथा का ऐसा भाव था, जैसा लैला ने कभी किसी इंसानी चेहरे पर नहीं देखा था।

लैला को वो अंधेरे में रशीद के गद्दे की तरफ़ सिमट कर लेटा हुआ मिला। वो उसकी बग़ल में चादर के नीचे सरक आई और कंबल उसके ऊपर खींच लिया।

'क्या तुम सो रहे हो?'

बिना उसकी तरफ़ मुंह किए उसने कहा, 'अभी नहीं सो सकता। अभी बाबा जान ने मेरे साथ बबलू दुआएं नहीं पढ़ी हैं।'

'आज की रात शायद मैं ये दुआएं तुम्हारे साथ पढ़ सकती हूं।'

'तुम उस तरह नहीं पढ़ सकतीं, जिस तरह वो पढ़ सकते हैं।'

उसने उसके नन्हें कंधे भींच लिए। उसकी गर्दन के पीछे चूम लिया। 'मैं कोशिश कर सकती हूं।'

'बाबा जान कहां हैं?'

'बाबा जान चले गए,' लैला ने कहा। उसका गला फिर से रुंध रहा था।

और पहली बार एक बड़ा, भयानक झूठ बोला गया। और कितनी बार इस झूठ को बोलना होगा? लैला ने दुखी होते हुए सोचा। और कितनी बार जल्मै को धोखा दिया जाएगा? उसने ख़ुशी से मगन जल्मै की कल्पना की, जब रशीद के घर लौटने पर वो उसके स्वागत में दौड़ पड़ता था और रशीद उसे कोहनियों से उठा लेता और गोल गोल घुमाने लगता, जब तक कि जल्मै के सीधे तने हुए पांव हवा में उड़ने नहीं लगते। इसके बाद दोनों खिलखिलाते जब जल्मै एक नशे में झूमते आदमी की तरह लड़खड़ाता। उसने उनके उत्पाती खेलों, उपद्रव से भरी हंसी और खुफिया निगाहों के बारे में सोचा।

अपने बेटे के लिए शर्म और दुख का एक बादल लैला पर टूट पड़ा।

'वो कहां चले गए?'

'मुझे नहीं पता, मेरे प्यारे।'

वो कब लौटने वाले थे? क्या बाबा जान जब लौटेंगे तो उसके लिए तोहफ़ा लाएंगे?

लैला ने जल्मै के साथ दुआएं मांगी। इक्कीस बार बिस्मिल्लाहिर्रमानिर्रहीम-सात उंगलियों के हरेक जोड़ों पर एक एक बार। उसने उसे अपने चेहरे के सामने हथेलियों को जोड़ा और उनमें दम फूंकते देखा, इसके बाद जल्मै ने अपने दोनों हाथों को उलट कर ललाट पर रखा और भगाने के संकेत किए और बुदबुदाया, बबलू, चले जाओ, जल्मै के लिए मत आना, उसका तुम्हारे साथ कोई लेना-देना नहीं है। बबलू, चले जाओ। इसके बाद ख़त्म करते हुए उन्होंने तीन बार अल्लाहो-अकबर कहा। और बाद में, उस रात, बहुत बाद में लैला एक दबी हुई आवाज़ को सुन कर हैरान रह गई : क्या बाबा जान मेरी वजह से चले गए? आपके और नीचे आए उस आदमी के बारे में मैंने उनसे जो कहा था उसकी वजह से चले गए?

उसे तसल्ली दिलाने और यह कहने के इरादे से वो उसके ऊपर झुकी कि इसमें तुमने कुछ नहीं किया है, जल्मै। नहीं। तुम्हारा कोई कसूर नहीं है। लेकिन वो सो रहा ता, उसका नन्हा सीना उठ रहा था, गिर रहा था।

लैला जब बिस्तर पर गई तो उसका दिमाग दबा हुआ, असमंजस में था और तर्कसंगत तरीके से सोच पाने के काबिल नहीं था। लेकिन जब वो नमाज

के लिए पुकारते मुअज़्ज़िन की आवाज़ से उठी तो ज़्यादातर उदासी जा चुकी थी।

वो उठ बैठी और कुछ देर ज़ल्मै को अपनी मुट्ठी ठोढ़ी के नीचे रखे सोते हुए देखती रही। लैला ने मरियम की कल्पना की कि जब वो सो रहे थे तो वो बीच रात में उनके कमरे में चुपचाप आई थी, और उन्हें देखते हुए अपने मन में मंसूबे बना रही थी।

लैला बिस्तर से उठी। खड़े होने के लिए उसे कोशिश करनी पड़ी। हर कहीं उसे दर्द हो रहा था। उसकी गर्दन, उसके कंधे, उसकी पीठ, उसकी बांहें, उसकी जांघें, हर जगह रशीद की बेल्ट की बकल के दिए जख्म थे। दर्द में सिकुड़ते हुए वो सोने के कमरे से बाहर निकल गई। मरियम के कमरे में रोशनी स्याह नहीं थी, बल्कि ज़्यादा गहरा अंधेरा था। यह ऐसी रोशनी थी, जिसे लैला हमेशा बोलते हुए मुर्गों और घास की पत्तियों से लुढ़कर गिरती ओस से जोड़ कर देखती थी। मरियम एक कोने में खिड़की की तरफ़ मुंह किए जानेमाज़ पर बैठी हुई थी। धीरे-धीरे लैला उसके सामने ज़मीन पर बैठी।

'तुम्हें सवेरे जाकर अज़ीज़ा से मिलना चाहिए,' मरियम ने कहा।

'मैं जानती हूं कि आप क्या कहना चाहती हैं।'

'चलना नहीं। बस ले लेना, तुम लोगों में मिल जाओगी। टैक्सियां अलग हैं। पक्के तौर पर तुम उनमें अकेली सफ़र करती दिख जाओगी।'

'पिछली रात आपने जो वादा किया था...'

लैला बात पूरी नहीं कर सकी। पेड़, झील, बिना नाम वाला गांव। उसने देखा कि वह एक धोखा था। मन को सुकून पहुंचाने के लिए एक प्यारा सा झूठ। जिस तरह एक परेशान बच्चे को मनाने के लिए तरह-तरह की आवाज़ें निकाली जाती हैं।

'मैंने वो वादा किया था,' मरियम ने कहा। 'मेरा मतलब था कि वो सब तुम्हारे लिए होगा, लैला जो।'

'मैं आपके बगैर उसमें से कोई भी चीज़ नहीं चाहती,' लैला फटी हुई आवाज़ में बोली।

मरियम फीके ढंग से मुस्कुराई।

'आपने जैसा कहा था, मैं वैसा ही चाहती हूं, मरियम। हम सब साथ जाएंगे, आप, मैं और बच्चे। पाकिस्तान में तारिक़ के पास जगह है। हम वहां कुछ समय तक छुप सकते हैं, चीज़ों के शांत होने का इंतज़ार कर सकते हैं—'

'यह मुमकिन नहीं है,' मरियम ने गंभीरता के साथ कहा मानो एक मां अपने अच्छे इरादों वाली, लेकिन भटकी हुई औलाद को समझा रही हो।

'हम एक दूसरे का ख्याल रखेंगे,' लैला ने कहा। उसके शब्द गले में रुंध रहे थे, उसकी आंखें आंसुओं से गीली हो गई थीं। 'जैसा आपने कहा था। नहीं। बदले में मैं आपकी देखभाल करूंगी।'

'ओह लैला जो।'

लैला हकलाते हुए बड़बड़ाती रही। उसने मनुहार किया। वादे किए। उसने कहा कि वो सारी साफ़-सफाई करेगी और सारा खाना भी बनाएगी। 'आपको कुछ भी नहीं करना होगा। कभी भी नहीं। आप आराम करेंगी, सोएंगी, बगीचा लगाएंगी। जो भी आप चाहें, वो आप कहेंगी और मैं लाकर दूंगी। ऐसा मत कीजिए मरियम। मुझे मत छोड़िए। अज़ीज़ा का दिल मत तोड़िए।'

'वो रोटियां चुराने के लिए हाथ काट लेते हैं,' मरियम ने कहा। 'तुम्हें क्या लगता है कि जब उन्हें एक मरे हुए शौहर और दो लापता बीवियों का पता लगेगा तो वो क्या करेंगे?'

'किसी को पता नहीं लगेगा,' लैला ने सांस ली। 'कोई हमें नहीं तलाश पाएगा।'

'वो तलाश लेंगे। देर-सवेर। वो ख़ून के भेदिए कुत्ते हैं।' मरियम की आवाज़ नीची और सतर्क थी। इससे लैला के वादे सनक से भरे हुए, गढ़े हुए और बेवकूफ़ाना लग रहे थे।

'मरियम, मेहरबानी-'

'जब वो तलाश लेंगे तो वो तुम्हें भी मेरे जितना ही गुनाहगार ठहराएंगे। तारिक़ को भी। मैं तुम दोनों को फरार लोगों की तरह भाग-भाग कर जीने नहीं दूंगी। अगर तुम दोनों पकड़े गए तो तुम्हारे बच्चों का क्या होगा?'

लैला की आंखें भर आईं। वो चुभ रही थीं।

'कौन उनकी देखभाल करेगा? तालिबान? एक मां की तरह सोचो लैला जो। एक मां की तरह सोचो। मैं सोच रही हूं।'

'मैं नहीं सोच सकती।'

'तुम्हें सोचना होगा।'

'यह नाइंसाफ़ी है,' लैला फटी हुई आवाज़ में बोली।

'लेकिन यह है। यहां आओ। यहां आकर लेटो।'

लैला घिसटती हुई बढ़ी और फिर से अपना सिर मरियम की गोद में रख दिया। उसे वो सारी दोपहरें याद आईं जो उन्होंने साथ गुज़ारी थीं, एक दूसरे के बाल गूंथे थे, मरियम उसके बेतरतीब ख्यालों और उसकी मामूली कहानियों को एक कृतज्ञता के साथ सुनती थी। उसके चेहरे पर ऐसे इंसान का सा भाव रहता था जिसे एक अनोखे और इच्छित सौभाग्य से नवाज़ दिया गया हो।

'यह इंसाफ़ है,' मरियम ने कहा। 'मैंने हम दोनों के शौहर का कत्ल किया है। मैंने तुम्हारे बेटे को उसके बाप से महरूम किया है। यह सही नहीं होगा कि मैं भाग जाऊं। मैं नहीं भाग सकती। अगर वो हमें कभी नहीं पकड़ पाएं तब भी, मैं कभी...' उसके होंठ कांप उठे। 'मैं तुम्हारे बेटे के दुख से नहीं भाग सकती। कैसे मैं उसे देखूंगी? कैसे मैं उसे देखने के लिए खुद को तैयार कर पाऊंगी, लैला जो?'

मरियम ने लैला के बालों की एक लट को लपेटा और एक ज़िद्दी लट को सुलझाया।

'मेरे लिए यहीं सब कुछ ख़त्म हो गया। अब और कुछ मैं नहीं चाहती। जो कुछ भी मैंने कभी चाहा था, एक नन्हीं बच्ची की तरह तुमने उसे मुझे दिया है। तुमने और तुम्हारे बच्चों ने मुझे इतनी खुशियां दी हैं। यह ठीक है, लैला जो। यही ठीक हैं। इतनी उदास मत होओ।'

मरियम ने जो कुछ भी कहा था, लैला उसमें किसी भी चीज़ के लिए तर्कसंगत जवाब नहीं खोज पाई। लेकिन वो इधर-उधर की बातें करती रही, रोपे जाने का इंतज़ार करते फलदार पेड़ों और पाले जाने का इंतज़ार करती मुर्गियों के बारे में बेमेल और बचकानी बातें करती रही। वो बेनाम शहरों में छोटे घरों के बारे में और ट्राउट से भरी झीलों तक सफ़र के बारे में बातें करती रही। और आख़िर में जब शब्द सूख गए लेकिन आंसू नहीं, तब लैला बस यही कर सकी कि उसने हार मान ली और किसी बड़े के अकाट्य तर्क के आगे हार चुके बच्चे की तरह रोने लगी। वो इतना ही कर सकी कि उसने खुद को ऊपर उठाया और मरियम की गोद की खुशनुमा गर्माहट में अपना चेहरा आख़िरी बार के लिए धंसा लिया।

उस सुबह, बाद में मरियम ने जल्मै के दोपहर के खाने के लिए रोटियां और सूखे चिलगोज़े पैक किए। अज़ीज़ा के लिए भी उसने कुछ चिलगोज़े और जानवरों के आकार वाले बिस्कुट पैक किए। उसने यह सब काग़ज़ के एक थैले में रखा और लैला को दे दिया।

'अज़ीज़ा को मेरी तरफ़ से चूमना,' उसने कहा। 'उसे बताना कि वो मेरी आंखों का नूर है और मेरे दिल का सुल्तान है। क्या तुम यह मेरे लिए करोगी?'

लैला ने सिर हिलाया। उसके होंठ भिंचे हुए थे।

'बस पकड़ लेना, जैसा मैंने कहा था और अपना सिर झुकाए हुए रखना।'

'मैं आपको कब देखूंगी, मरियम? अपनी गवाही के पहले मैं आपसे मिलना चाहती हूं। मैं उन्हें बताऊंगी कि यह कैसे हुआ था। मैं बताऊंगी कि इसमें आपका कसूर नहीं था। कि आपको यह करना पड़ा। वो समझ जाएंगे, नहीं क्या मरियम? वो समझ जाएंगे।'

मरियम ने उसे नर्मी से देखा।

जल्मै के आगे वो पंजों के बल झुकी। उसने एक लाल टी-शर्ट और चीथड़े हो आई खाकी पैंट पहन रखी थी। उसके पांवो में रशीद द्वारा मंडाई से लाए गए सेकेंड हैंड काउब्वाय बूटों की जोड़ी थी। उसने अपनी नई बास्केटबॉल दोनों हाथों से पकड़ रखी थी। मरियम ने उसके गालों को चूम लिया।

'तुम अब एक अच्छे, मज़बूत बेटे बन जाना,' उसने कहा। 'अपनी अम्मी से अच्छे से पेश आना।' उसने अपनी हथेलियों में उसका चेहरा थाम लिया। वो पीछे हटा, लेकिन मरियम ने पकड़े रखा। 'मैं बहुत शर्मिंदा हूं जल्मै जो। यकीन मानो कि तुम्हारे सारे दर्द और उदासी के लिए मैं बहुत शर्मिंदा हूं।'

सड़क पर साथ जाते हुए लैला ने जल्मै का हाथ पकड़ लिया। नुक्कड़ पर मुड़ने से ठीक पहले लैला पीछे मुड़ी और उसने मरियम को दरवाज़े पर खड़े देखा। मरियम ने सिर पर एक सफ़ेद स्कार्फ ओढ़ रखी थी, उसने सामने से बटनबंद एक गहरा नीला स्वेटर और सफ़ेद सूती पजामा पहना था। स्याह बालों की एक लट उसकी ललाट पर खुल कर लटक आई थी। धूप की किरणें उसके चेहरे और कंधों पर तिरछे पड़ रही थीं। मरियम ने स्नेह से हाथ हिलाया।

वो नुक्कड़ पर मुड़ गए और लैला ने मरियम को फिर कभी नहीं देखा।

सैंतालीस

मरियम

यह इतने बरसों के बाद फिर से एक कोल्बा में वापसी जैसा लगा था।

वलायत महिला जेल चिकन स्ट्रीट के करीब शारे-नौ में एक चौकोर नीरस इमारत थी। यह एक बड़े परिसर के बीच में स्थित था, जिसमें मर्द कैदी रखे जाते थे। एक तालाबंद दरवाज़ा मरियम और दूसरी औरतों को चारों तरफ़ के मर्द कैदियों से अलग करता था। मरियम ने पांच कोठरियां गिनीं। वो बिना किसी साज-सामान वाले कमरे थे, जिनकी दीवारें गंदी थीं और रंग छोड़ रही थी। उनमें छोटी खिड़कियां लगी थीं, जिनसे आंगन दिखता था। खिड़कियों पर सलाखें लगी थीं, हालांकि दरवाज़ों में ताला नहीं था और औरतें अपनी मर्ज़ी से आंगन में जाने को आज़ाद थीं। खिड़कियों पर शीशे नहीं थे। पर्दे भी नहीं थे, जिसका मतलब यह था कि आंगन में गश्त कर रहे तालिब गार्ड कोठरियों के भीतर भी नज़र रखते थे। कुछ औरतों ने शिकायत की कि गार्ड खिड़की के बाहर सिगरेट पीते थे और अपनी लाल आंखों और वहशी मुस्कान के साथ भीतर झांकते। कि वो उनके बारे में आपस में फूहड़ मज़ाक करते। इस वजह से ज़्यादातर औरतें सारा दिन बुर्का पहने रहतीं और केवल सूरज ढल जाने के बाद ही उन्हें उठातीं, जब मुख्य दरवाज़े में ताला लगा दिया जाता और गार्ड अपनी चौकियों पर चले जाते।

मरियम पांच औरतों और चार बच्चों के साथ अंधेरे में रात बिताती। उन रातों में जब बिजली रहती वो नगमा को छत तक ऊपर उठाते, जो एक

छोटी सी, सपाट सीने और ख़ूब घुंघराले काले बालों वाली लड़की थी। वहां एक तार था, जिसकी बाहरी परत निकल गई थी। नगमा उस नंगे तार को बल्ब के तले में लपेटती ताकि वो जल सके।

शौचालय अलमारियों की तरह पतले थे। सीमेंट की फर्श चटख गई थी। ज़मीन में एक छोटा, चौकोर छेद था जिसके तले में पाखाने का ढेर था। छेद से मक्खियां आती-जाती रहतीं।

जेल के बीच में एक खुला, चौकोर आंगन था और उसके बीच में एक कुआं था। कुएं में कोई निकासी नहीं थी, जिसका मतलब था कि आंगन में पानी जमा हो जाता और पानी का स्वाद सड़ा हुआ लगने लगता। हाथ से धुले मोज़ों और डायपरों से भरे रहनेवाले कपड़े सुखाने के तार पूरे आंगन में एक दूसरे को काटते हुए फैले हुए थे। जहां कैदी अपने मुलाकातियों से मिलते थे, वहीं उनके लिए परिवारवालों द्वारा लाए गए चावल उबाले जाते थे- जेल कैदियों को खाना नहीं देता था। आंगन ही बच्चों के खेलने की जगह थी-मरियम को पता लगा कि अनेक बच्चे वलायत में ही पैदा हुए थे और उन्होंने कभी इन दीवारों से बाहर की दुनिया नहीं देखी थी। मरियम उन्हें एक दूसरे के पीछे भागते, जीवंतता से भरे खेल खेलते देखती, जिन्हें बदबू देते पाखाने और वलायत में और उनकी अपनी देहों में रच-बस गई पेशाब की गंध की परवाह नहीं रहती। वो तालिब गार्डों की तरफ़ भी ध्यान नहीं देते, जब तक कि कोई उन्हें थप्पड़ नहीं लगा देता।

मरियम का कोई मुलाकाती नहीं था। उसने तालिब अफसरान से पहली और आख़िरी चीज़ यही मांगी थी। उसे कोई मुलाकाती नहीं चाहिए।

मरियम की कोठरी की औरतों में से कोई भी हिंसक जुर्म के लिए बंद नहीं थी। वो सभी 'घर से भागने' के एक ही जुर्म में बंद थीं। नतीजे में मरियम ने उनके बीच खासी बदनामी हासिल कर ली थी और एक सेलिब्रिटी बन गई थी। औरतें उसे आदर, लगभग मुग्धभाव, से देखतीं। वो उसे अपने कंबल पेश करतीं। उनमें उसके साथ अपना खाना बांटने की होड़ रहती।

सबसे फुर्तीली नगमा थी, जो हमेशा उसकी कोहनियां पकड़े रहती और मरियम जहां जाती उसके पीछे-पीछे वो भी जाती। नगमा इस किस्म की इंसान

थी जिसे बदकिस्मती की ख़बरें फैलाने में मज़ा आता था, भले ही वो ख़बरें दूसरों की हों या उसकी अपनी। उसने बताया कि उसके अब्बा ने उसके लिए उससे तीस साल बड़े एक दर्ज़ी को जबान दे दी थी।

'वो गू की तरह महक़ता है और उंगलियों से भी कम उसके दांत थे,' नगमा दर्ज़ी के बारे में बताती।

उसने एक नौजवान के साथ गार्देज़ भाग जाने की कोशिश की, जिससे वो प्यार करती थी। वो एक मुकामी मुल्ला का बेटा था। वो बस काबुल से बाहर तक जा सके। जब वो पकड़े गए और वापस भेज दिए गए तो मुल्ला के बेटे को कोड़े लगाए गए, जिसके बाद उसने माफ़ी मांग ली और कहा कि नगमा ने अपनी औरताना अदाओं से उसे लुभाया था। उसने बताया कि नगमा ने उस पर मंत्र चलाया था। लड़के ने वादा किया कि वो फिर से क़ुरान के अध्ययन में मन लगाएगा। मुल्ला का बेटा छोड़ दिया गया। नगमा को पांच सालों की सज़ा हुई।

उसने बताया कि यहां जेल में रहना अच्छा है। उसके अब्बा ने कसम खाई थी कि जिस दिन वो जेल से रिहा होगी, वो छुरी से उसका गला काट देंगे।

नगमा को सुनते हुए मरियम ने उस सुदूर सुबह में सर्द सितारों की चमक और सफ़ेद कोह पहाड़ियों के ऊपर सरकते पतले, गुलाबी बादलों को याद किया, जब नाना ने उससे कहा था, उत्तर की तरफ़ दिखाती हुई कंपास की सुई की तरह एक मर्द की उंगली इल्ज़ाम लगाने के लिए हमेशा औरत को ही खोजती है। हमेशा। इसे याद रखना मरियम।

मरियम की सुनवाई पिछले हफ़्ते शुरू थी। उसका कोई कानूनी सलाहक़ार नहीं था, न आम सुनवाई हुई, न सबूतों को परखा गया और न अपील की गुंजाईश थी। पूरी चीज़ पंद्रह से भी कम मिनटों तक चली। बीच वाला जज एक नाज़ुक सा दिख रहा तालिब था और वही उनका रहनुमा था। वह गैरमामूली तरह से पतला था, जिसकी पीली झूलती हुई चमड़ी और घुंघराली लाल दाढ़ी थी। उसने चश्मा पहन रखा था जिसमें उसकी आंखें बड़ी-बड़ी दिख रही थीं और यह उजागर कर रही थीं कि उसकी आंखों का सफ़ेद हिस्सा कितना पीला है। उसकी गर्दन इतनी पतली थी कि ऐसा नहीं लग रहा था कि उसके सिर पर बंधी पेचदार पगड़ी का बोझ सह पाएगी।

'आप इसे कबूल करती हैं हमशीरा?' उसने थकी हुई आवाज़ में फिर से पूछा।

'हां, मैं कबूल करती हूं,' मरियम ने कहा।

उस आदमी ने सिर हिलाया। या शायद नहीं हिलाया था। कहना मुश्किल था। उसका सिर और हाथ लगातार कांप रहे थे, जो मरियम को मुल्ला फैज़ुल्ला के हिलने की याद दिलाते थे। जब जज ने चाय पी तो वो अपनी कप नहीं उठा पाया। उसने अपनी बाईं तरफ़ खड़े चौड़े कंधों वाले एक आदमी को इशारा किया, जो आदर से कप को उसके होठों तक ले गया। इसके बाद तालिब ने नर्मी से अपनी आंखें बंद कर लीं, कुछ बुदबुदाया और शुक्राने का एक सुंदर सा भाव बनाया।

मरियम को इस आदमी में एक सुकूनदेह गुण का पता लगा। जब वो बोलता तो उसमें झूठ और दया की झलक मिलती। उसकी मुस्कान धीरज से भरी हुई थी। वो मरियम को फटकार भरी नज़रों से नहीं देखता। वो उसे नफ़रत या तोहमत से नहीं बल्कि हल्की सी माफ़ी भरे अंदाज़ में संबोधित करता।

'आप पूरी तरह समझती हैं कि आप क्या कह रही हैं?' जज की दाहिनी तरफ़ वाले हड़ीले चेहरे वाले, न कि चाय देने वाले, तालिब ने उससे पूछा। ये उन तीनों में सबसे नौजवान था। वो जल्दी-जल्दी बोलता था और उसमें ज़ोरदार और गुरूर से भरा हुआ आत्मविश्वास था। वो इससे चिढ़ गया था कि मरियम पश्तो में नहीं बोल सकती थी। वो मरियम से एक झगड़ालु नौजवान की तरह भिड़ गया, जिसे अपना अख्तियार पसंद था, जो हर जगह जुर्म ही जुर्म देखता रहता था और सोचता था कि फैसले सुनाना उसका जन्मसिद्ध अधिकार है।

'मैं समझती हूं,' मरियम ने कहा।

'मुझे हैरानी है,' नौजवान तालिब ने कहा। 'खुदा ने हमें अलग-अलग बनाया है, आपको औरत और हमें मर्द। हमारे दिमाग अलग हैं। आप उस तरह सोच सकने के काबिल नहीं हैं, जिस तरह हम सोच सकते हैं। पश्चिमी डॉक्टरों और उनके साइंस ने भी इसे साबित किया है। यही वजह है कि हमें मर्द गवाह सिर्फ़ एक चाहिए होता है, जबकि औरतें दो।'

'मैंने जो किया उसे मैं कबूल करती हूं, बिरादर,' मरियम ने कहा। 'लेकिन अगर मैंने ऐसा नहीं किया होता तो वो उसे मार डालता। वो उसका गला घोंट रहा था।'

'ऐसा आप कह रही हैं। लेकिन तब औरतें तो हर वक़्त हर तरह की कसमें खाती ही रहती हैं।'

'मैं सच कह रही हूं।'

'क्या आपका कोई गवाह है? आपकी *अंबाग* के अलावा कोई?'

'कोई नहीं,' मरियम ने कहा।

'तब ठीक है।' उसने अपने हाथ पटके और मक्कारी से हिनहिनाया। इसके बाद बीमार दिख रहा तालिब बोला।

'पेशावर में मेरा एक डॉक्टर है,' उसने कहा। 'कमाल का एक नौजवान पाकिस्तानी दोस्त। मैं उससे एक महीना पहले मिला था और फिर पिछले हफ़्ते भी मिला। मैंने कहा, मुझे सच्चाई बताओ दोस्त और उसने मुझसे कहा कि तीन महीने, मुल्ला साहिब या ज़्यादा से ज़्यादा छह महीने- बेशक सब खुदा की मर्ज़ी है।'

उसने अपनी बाईं तरफ़ के चौड़े कंधे वाले की तरफ़ सिर हिलाया और उसके द्वारा पेश की गई चाय की एक और घूंट भरी। उसने अपने कांपते हाथ को पलट कर मुंह पोंछा। 'इस जीवन को छोड़ना मुझे नहीं डराता, कि मेरा अकेला बेटा पांच साल पहले गुज़र चुका है। इस ज़िंदगी ने मुझको इतने गम दिए हैं कि हम अब बर्दाश्त नहीं कर सकते। नहीं, मुझे यकीन है कि जब वक़्त आएगा तो मैं खुशी से विदा हो जाऊंगा।

'जो बात मुझे डराती है, हमशीरा, वो वह दिन है जब खुदा अपने सामने बुलाएगा और पूछेगा, तुमने वैसा क्यों नहीं किया जैसा मैंने कहा था, मुल्ला? क्यों तुमने मेरे कानूनों का पालन नहीं किया? तब मैं उसको क्या जवाब दूंगा, हमशीरा? उसके हुक्मों को न मानने के लिए मेरे पास अपने बचाव में क्या होगा? मैं बस यही कर सकता हूं, हम सब यही कर सकते हैं, कि हमें जो वक़्त दिया गया है, उसमें हम उन कानूनों पर चलें, जो उस खुदा ने हमारे लिए बनाए हैं। जितना साफ़ मैं अपने अंत को देखता हूं, हमशीरा, जितना मैं अपने हिसाब के दिन के करीब होता हूं, उतनी ही मज़बूती से मैं खुदा की बातों पर चलता हूं। चाहे यह जितना भी दर्दनाक साबित हो।'

उसने अपनी मसनद हटाई और उसके चेहरे पर दर्द का भाव आया।

'जो आप कहती हैं उस पर मुझे यकीन है कि आपके शौहर झगड़ालू मिजाज़ के थे,' उसने फिर से बोलना शुरू किया। अपनी चश्मेवाली आंखों से

उसने मरियम को जड़ कर दिया था। उसकी निगाह सख़्त भी थी और तसल्ली देने वाली भी। 'लेकिन मैं आपकी कार्रवाई की क्रूरता से बेचैन हूं, हमशीरा। मुझे उससे परेशानी है, जो आपने कर दिया है। मैं इससे परेशान हूं कि जब आप ये कर रही थीं ऊपर उनका नन्हा बच्चा उनके लिए रो रहा था।

'मैं ऊबा हुआ हूं और मर रहा हूं, और मैं मेहरबान होना चाहता हूं। मैं आपको माफ़ करना चाहता हूं। लेकिन जब खुदा मुझे बुलाएगा और कहेगा, लेकिन माफ़ी देना तुम्हारा काम नहीं था मुल्ला, तो मैं क्या कहूंगा?'

उसके साथियों ने सिर हिलाया और प्रशंसा से भरी निगाहों से देखने लगे।

'कोई बात है जो मुझसे कह रही है कि आप बुरी औरत नहीं हैं, हमशीरा। लेकिन आपने एक बुरा काम किया है। और आपने जो किया है, उसके लिए आपको कीमत चुकानी ही पड़ेगी। इस मामले में शरिया में कोई अनिश्चितता नहीं है। यह कहता है आपको भी वहीं भेज दिया जाना चाहिए, जहां मैं जल्दी ही जानेवाला हूं।

'आप समझीं हमशीरा?'

मरियम ने नीचे अपने हाथों को देखा। उसने कहा कि वो समझ गई है।

'अल्लाह आपको माफ़ करे।'

उसे बाहर ले जाने से पहले उन्होंने मरियम को एक दस्तावेज़ दिया कि वो अपने बयान पर और मुल्ला द्वारा सुनाई गई सज़ा पर दस्तखत करे। तीनों तालिबान की नज़रों के सामने मरियम ने अपना नाम लिखा-मीम, रे, ये और मीम- और उसने याद किया कि पिछली बार उसने अपना नाम सत्ताईस बरस पहले जलील की टेबल पर, एक और मुल्ला की देखती हुई निगाह के सामने एक दस्तावेज़ पर लिखा था।

मरियम ने दस दिन जेल में बिताए। वो कोठरी की खिड़की के पास बैठी रहती, आंगन में जेल के जीवन को देखती। जब गर्मियों की हवाएं आतीं तो वो कागज़ के टुकड़ों को तेज़ हवा के झोंकों के साथ इधर-उधर उड़ते और जेल की दीवारों के ऊपर जाते देखती। वो हवाओं द्वारा धूल का उड़ाया जाना देखती, तेज़ बवंडर की शक्ल में आंगन में उनका उठना देखती। हर कोई-गार्ड, साथी कैदी, बच्चे, मरियम- अपनी कोहनियों के भीतर अपना चेहरा छुपा लेते, लेकिन धूल उनको नहीं बख़्शती। वो उनके नाक और कान में, आंखों की बरौनियों और चमड़े की तहों में, दांतों के बीच की जगहों में भर जाती। केवल शाम

के समय ही हवाएं बंद होतीं। और अगर रात में हवा बहती तो इतने संकोच के साथ बहती मानो दिन में आई अपनी बहनों की ज़्यादतियों का पश्चाताप कर रही हो।

वलायत में मरियम के आख़िरी दिन, नगमा ने उसे एक संतरा दिया। उसने उसे मरियम की हथेली पर रख दिया और उसकी मुट्ठी बंद कर दी। फिर वो रोने लगी।

'आप मेरी अब तक की सबसे अच्छी दोस्त हैं,' उसने कहा।

मरियम ने बाक़ी का दिन सलाखों वाली खिड़की के पास बैठ कर नीचे कैदियों को देखते हुए बिताया। कोई खाना बना रहा था और ज़ीरे की महक़ वाले धुएं और गर्म हवा का एक झोंका खिड़की में दाख़िल हुआ। मरियम बच्चों को आंगन में आंखों पर पट्टियां बांधे खेलते हुए देखा। दो नन्हीं लड़कियां एक गीत गा रही थीं और मरियम को अपना बचपन याद आया, जब जलील ने उसे यह गीत गाकर सुनाया था, जब वो एक पत्थर पर बैठे हुए धारा में मछली मार रहे थे :

लिलि लिलि बर्डबाथ
सिटिंग ऑन एक डर्ट पाथ
मिनो सैट ऑन द रिम एंड ड्रैंक
स्लिप्ड, एंड इन द वाटर शी सैंक

मरियम ने पिछली रात के सपनों को अलग-अलग किया। उसने ग्यारह कंकड़ों का सपना देखा था, जिनको उसने एक दूसरे के ऊपर खड़ा किया था। फिर से नौजवान हो गया जलील, उसी जीत लेने वाली मुस्कान गड्ढे पड़ती ठोढ़ियों और पसीने के धब्बों के साथ, कंधे पर कोट लहराते हुए अपनी बेटी को ले जाने के लिए एक चमचमाती काली बुईक रोडमास्टर से आया था। मुल्ला फैज़ुल्ला अपनी तस्बीह के दाने फेर रहे थे, उसके साथ धारा के किनारे टहल रहे थे, उन दोनों की परछाइयां पानी में तैर रही थीं और किनारे की धार पर नीली-लैवेंडर जंगली आइरिश पसरी हुई थी, जो सपने में लौंग की तरह महक़ रही थी। उसने कोल्बा के चौखट पर खड़ी नाना का सपना देखा। वो मद्धिम और दूर से आ रही आवाज़ में मरियम को रात के खाने के लिए बुला रही थीं। मरियम

ठंडी, उलझी हुई घास में खेल रही थी, जहां चीटिंया रेंगतीं और भौंरे भागते फिरते और हर तरह की हरियाली के बीच टिड्डे कूद रहे थे। ऊंचे रास्ते पर चढ़ता एक ठेला चरचरा रहा था। गायों के गले में बंधी घंटियां बज रही थीं। पहाड़ी पर भेड़ें बलबला रही थीं।

गाजी स्टेडियम जाता हुआ हुआ ट्रक जब रास्ते के गड्ढे पार करता या उसके पहिए पत्थरों पर पड़ते तो उसकी सीट पर बैठी मरियम को धक्के लगते। इन धक्कों से उसकी कूल्हे की हड्डी दुख रही थी। एक नौजवान, हथियारबंद तालिब उसके सामने बैठा उसे देख रहा था।

मरियम को जानने की इच्छा हुई कि क्या वो उनमें से एक होगा, यह प्यारा सा दिख रहा नौजवान जिसकी आंखें गहरी काली हैं और चेहरा हल्का सा नुकीला है और जिसकी काले नाखुन वाली तर्जनी ट्रक की बग़ल में थपथपा रही है।

'क्या आप भूखी हैं, अम्मी?' उसने पूछा।

मरियम ने सिर हिला कर मना किया।

'मेरे पास बिस्कुट है। ये अच्छा है। अगर आपको भूख लगी हो तो आप खा सकती हैं। मुझे बुरा नहीं लगेगा।'

'नहीं। तशक्कुर, बिरादर।'

उसने सिर हिलाया और उसे दया से देखने लगा। 'क्या आपको डर लग रहा है अम्मी?'

मरियम के गले में कुछ फंस गया। कांपती हुई आवाज़ में मरियम ने उसको सच्चाई बता दी। 'हां, मुझे बहुत डर लग रहा है।'

'मेरे पास मेरे अब्बा की एक तस्वीर है,' तालिब ने कहा। 'मुझे उनकी याद नहीं है। वो कभी साइकिलों की मरम्मत करते थे, मैं बस इतना ही जानता हूं। लेकिन मैं नहीं जानता कि वो कैसे चलते थे, कैसे हंसते थे या उनकी आवाज़ कैसी थी।' उसने दूसरी तरफ़ देखने के बाद मरियम को देखा। 'मेरी अम्मी कहा करती थीं कि वो जितने लोगों को जानती थीं, उनमें वो सबसे बहादुर थे। एक शेर की तरह, वो कहतीं। लेकिन उन्होंने मुझे बताया कि जिस सुबह कम्युनिस्ट उन्हें ले गए, वो बच्चों की तरह चिल्ला रहे थे। मैं आपको यह इसलिए बता रहा हूं कि आप जानें कि डरना एक सामान्य बात है। इसमें शर्मिंदा होने

की कोई बात नहीं है, अम्मी।'

उस दिन पहली बार मरियम थोड़ा सा रोई थी।

हज़ारों आंखें उस पर टिकी हुई थीं। सफ़ेदी की भीड़ में बेहतर नज़ारे के लिए गर्दनें तनी हुई थीं। चीभें चटक रही थीं। जब मरियम को ट्रक से उतारा जा रहा था तो भुनभुनाता हुआ शोर पूरे स्टेडियम में फैल गया। लाउस्पीकर ने उसके जुर्म का एलान किया तो मरियम ने हिलते सिरों की कल्पना की। लेकिन वो यह देखने के लिए निगाह नहीं उठा सकी कि वे सिर नाराज़गी में हिल रहे थे या दया में, धिक्कारते हुए हिल रहे थे या तरस खाते हुए। मरियम ने उन सबकी तरफ़ से आंखें मूंद ली थीं।

उस सुबह, इससे पहले वो डरी हुई थी कि वो अपने को बेवकूफ़ बना लेगी, कि वो फरियादें करती और रोती हुई एक तमाशा बन जाएगी। उसे डर लगा था कि शायद वो चिल्लाएगी या उल्टियां करेगी या पेशाब कर देगी, कि आख़िरी पलों में जानवरों की सहज प्रवृत्तियां या फूहड़ तरीके उस पर हावी हो जाएंगे। लेकिन जब उसे ट्रक से उतारा जा रहा था, तो मरियम के पांव डोल नहीं रहे थे। उसके हाथ झूल नहीं रहे थे। उसे घसीटने की ज़रूरत नहीं पड़ी। और जब उसे लगा कि वो डगमगा रही है, उसने जल्मै के बारे में सोचा, जिससे उसने उसकी ज़िंदगी के प्यार को छीन लिया था, जिसके दिन अपने पिता की गैरमौजूदगी के दर्द के साथ आकार लेंगे। और तब मरियम तन कर खड़ी हो गई और वो बिना विरोध किए चल सकी।

एक हथियारबंद आदमी उसकी तरफ़ बढ़ा और उसने उसे बताया कि वो दक्षिणी गोलपोस्ट की तरफ़ चले। मरियम इंतज़ार में कसमसाती भीड़ को महसूस कर सकती थी। उसने निगाह नहीं उठाई। अपनी आंखें ज़मीन पर अपनी और पीछे आ रहे उसे सज़ा देने वाले आदमी की परछाइयों पर गड़ाए रही।

हालांकि इसमें कुछ ख़ूबसूरत पल भी रहे थे, मरियम जानती थी कि उसकी ज़्यादातर ज़िंदगी उसके लिए मेहरबान नहीं रही थी। लेकिन आख़िरी बीस कदमों के दौरान उसने और कुछ नहीं बल्कि सबसे ज़्यादा ज़िंदगी ही चाही। उसने चाहा कि वो फिर से लैला को देख सके, उसके ठहाके सुन सके, सितारों से रोशन आसमान के नीचे एक बार फिर चाय और बचे हुए हलवे लिए हुए उसके साथ बैठ सके। उसने इसका दुख हुआ कि अब वो अज़ीज़ा को फिर से नहीं देख पाएगी, उस ख़ूबसूरत नौजवान औरत को नहीं

देख पाएगी, जो वह आने वाले वक़्त में बनने वाली थी। वो उसके हाथों को हिना से नहीं रंग पाएगी और उसकी शादी पर नोकुल मिठाइयां नहीं लुटा सकेगी। वो अज़ीज़ा के बच्चों के साथ कभी नहीं खेल पाएगी। उसे बूढ़ी बनना और अज़ीज़ा के बच्चों के साथ खेलना बहुत अच्छा लगता।

गोलपोस्ट के करीब उसके पीछे वाले आदमी ने उससे रुकने को कहा। मरियम रुकी। बुर्के की जाली से उसने देखा कि हाथों की परछाई ने कलाश्निकोव की परछाई को उठाया।

मरियम ने इन आख़िरी पलों में बहुत कुछ चाहा। उसने अपनी आंखें बंद कीं, तब भी उसे कोई पछतावा नहीं था, बल्कि एक विशाल शांति ने उसे अपने साए में ले लिया। उसने इस दुनिया में अपने आने के बारे में सोचा. एक नीच देहाती की एक हरामी औलाद, एक अनचाही चीज़, एक तरस खाने लायक, पछताने लायक हादसा। एक पतवार। और तब भी, जब वो इस दुनिया से जा रही है तो उसने लोगों को प्यार किया था और उसे बदले में प्यार मिला था। वो इसे एक दोस्त, एक साथी, एक निगहबान के रूप में छोड़ रही है। एक मां के रूप में। आख़िर में एक ऐसे इंसान के रूप में, जिसकी अहमियत है। नहीं। मरियम ने सोचा, इस कदर मरना यह इतना बुरा नहीं था। उतना बुरा नहीं। यह एक नाजायज़ शुरुआत का जायज़ अंत है।

मरियम के आख़िरी ख्याल क़ुरान की ये कुछ शब्द थे, जिसे वो अपनी सांसों में बुदबुदा रही थी।

उसी ने सच्चाई से जन्नत और धरती बनाई है। उसने दिन के बात आती रातें बनाई हैं और दिनों को बनाया है ताकि वो रातों को ढंक लें, और उसी ने सूरज और उसके मातहत चांद को बनाया है। हरेक अपने तयशुदा फेरों को पूरा करता है, अब वही खुदा सबसे बड़ा है, सबसे मेहरबान है।

'झुकिए,' तालिब ने कहा।

ओ मेरे ख़ुदा! माफ़ करना और रहम करना, क्योंकि तुम्हीं सबसे बेहतर रहम करने वाले हो।

'यहां झुकिए हमशीरा। और नीचे देखिए।'

इस आख़िरी बार, मरियम को जो कहा गया, वो उसने किया।

भाग चार

अड़तालीस

अब तारिक़ के सिर में दर्द रहता था।

कुछ रातों को लैला जागती और उसने अपने बिस्तर के किनारे तड़पते हुए पाती। उसकी अंडरशर्ट उसके सिर पर खिंची हुई होती। उसने बताया कि दर्द नासिर बाग में शुरू हुआ था और जेल में और बढ़ गया था। कभी कभी दर्द की वजह से उसे उल्टियां होतीं और एक आंख से दिखना बंद हो जाता। वो बताता कि दर्द ऐसा महसूस होता मानो कसाई की छुरी उसकी एक कनपटी को काटती हुई उसके दिमाग में धंसते हुए दूसरी तरफ़ निकल रही हो।

'जब ये शुरू होता है तो मुझे लोहे का स्वाद तक पता लगता है।'

कभी कभी लैला कपड़ा गीला करके उसकी ललाट पर रखती और इससे उसे राहत मिलती। सईद डॉक्टर ने तारिक़ को जो नन्हीं गोल सफ़ेद गोलियां दी थीं, उन्होंने भी मदद की। लेकिन कुछ रातों में तारिक़ बस अपना सिर पकड़ कर कराहता रहता, उसकी आंखें लाल हो जातीं और नाक से पानी बहता। जब उस दर्द का ऐसा हमला होता तो लैला उसके साथ बैठती, उसकी गर्दन के पिछले हिस्से को सहलाती, उसके हाथ अपने हाथों में ले लेती। तब तारिक़ की शादी की अंगूठी का ठंडापन उसकी हथेली में महसूस होता।

शादी उन्होंने मुर्री पहुंचने वाले दिन ही कर ली थी। सईद को सुकून मिला था, जब तारिक़ ने उन्हें बताया था कि वो शादी करेंगे। उन्होंने तारिक़ से होटल में एक बिना शादीशुदा जोड़े के रहने जैसे एक नाज़ुक मसले पर बात

नहीं चलाई होती। सईद वैसे नहीं थे जैसी लैला ने उनकी कल्पना की थी, लाल चेहरा और छोटी आंखें। उनकी काली-सफ़ेद मूंछें थीं, जिनके किनारों को लपेट कर उन्होंने नोकदार बना रखा था, और ललाट पर लंबे, स्याह बालों की एक लट को उन्होंने पीछे की तरफ़ कंघी कर रखी थी। वो नर्मी से बातें करते थे, सलीके वाले आदमी थे और नापतौल कर बोलते और उनकी हरकतें गरिमा से भरी हुई होतीं।

सईद ही थे, जिन्होंने उस दिन निकाह के लिए अपने एक दोस्त और मुल्ला को बुलाया था। सईद ही थे, जिन्होंने तारिक़ को भीतर खींच कर उसे पैसे दिए थे। तारिक़ उन्हें नहीं लेता, लेकिन सईद ने ज़ोर दिया। तारिक़ मॉल गया और सादी-सी, शादी की दो पतली अंगूठियां लेकर आया। बाद में उस रात उन्होंने शादी की, जब बच्चे सो चुके थे।

मुल्ला द्वारा ओढ़ाए गए हरे पर्दे के नीचे शीशे में लैला की आंखें तारिक़ से मिलीं। आंसू नहीं थे, शादियों के दिन वाली मुस्कानें भी नहीं थीं, लंबे समय तक प्यार के बने रहने की फुसफुसा कर कही गई कसमें भी नहीं थीं। खामोशी में लैला ने अपने प्रतिबिंबों को देखा, वो चेहरे जो उनके सामने बड़े हुए थे। अभी दिख रही थैलियां, लकीरें और झुकी हुई चमड़ी एक समय के अविकसित, जवान चेहरों की निशानियां थे। तारिक़ ने अपना मुंह खोला और कुछ कहने लगा, लेकिन ज्यों ही उसने ऐसा किया, किसी ने पर्दा खींच लिया और लैला उस बात से वंचित रह गई, जिसे वह कहने जा रहा था।

उस रात बिस्तर में वे एक शौहर-बीवी की तरह पड़े थे, उनके नीचे सोने के खाटों पर बच्चे खर्राटे ले रहे थे। लैला को याद आया कि किस तरह जब वो छोटे थे तो अपने बीच की हवा को शब्दों से भर देते थे। उनकी बातों का गड़बड़, फुर्तीला प्रवाह हमेशा एक दूसरे को काटता रहता, वो किसी बात पर ज़ोर देने के लिए कॉलरों में कोंचते रहते, उनकी हंसी की तेज़ी, मज़े की उत्सुकता। बचपन के उन दिनों के बाद से कितना कुछ घट चुका था, कितना कुछ कहे जाने की ज़रूरत थी। लेकिन उस पहली रात की भव्यता ने लैला से शब्द छीन लिए थे। उस रात, उसकी बग़ल में होना ही सबसे बड़ा सुख था। यह जानना ही बड़ा सुख था कि वो यहां मौजूद था, अपनी बग़ल में उसकी गर्माहट को महसूस करना, अपने सिरों को छुआते हुए उसके साथ लेटना, उसकी दाहिनी बांह में अपना बायां हाथ लपेटना ही सुखद था।

आधी रात को जब लैला प्यास की वजह से जगी तो उसने पाया कि उनके हाथ अभी भी एक दूसरे के साथ इस तरह बंधे हुए थे, जैसे बच्चे कसकर गुब्बारे का धागा पकड़े रहते हैं।

लैला को मुर्री की ठंडी, कोहरे भरी सुबह, इसकी चौंधियाने वाली शामें और रात के आसमान की काली जगमगाहट पसंद आई। उसे उसके सनोबरों की हरियाली और गिलहरियों का नर्म, भूरापन अच्छा लगा, जो तने हुए पेड़ों पर ऊपर-नीचे फुदकती रहती थीं। वहां अचानक होती बौछारें भी अच्छी लगीं, जिनकी वजह से ख़रीददार सामने के चंदोवे पर तानने के पर्दे के लिए मॉलों की ओर भागते। उसे निशानियों के लिए सामान बेचतीं दुकानें और होटल पसंद आए, जिनमें सैलानी रहते थे, भले ही मुकामी लोग लगातार चलने वाले निर्माण कार्यों और बुनियादी ढांचे के विस्तार की शिकायतें करते रहते। उनका कहना था कि यह मुर्री की कुदरती ख़ूबसूरती को खा रहा है। लैला को यह बात अजीब लगती कि इमारतें बनने पर लोग मातम मनाएं। काबुल में तो लोग जश्न मनाते।

उसे अच्छा लगता कि वहां बाथरूम थे। आउटहाउस नहीं, बल्कि सचमुच के बाथरूम, जिनके शौचालयों में फ्लश थी, शावर था और सिंक भी था, जिसमें जुड़वां टोंटियां थी, जिनसे वो कलाई की एक हरकत से पानी निकाल सकती थी। पानी न ठंडा होता और न गर्म। उसे सुबह में अल्योना के मिमियाने और झगड़ालू रसोइया अदीबा, जो कमाल का खाना बनाती थी, की आवाज़ पर जागना अच्छा लगता।

कभी-कभी जब लैला तारिक़ को सोते हुए देखती, बच्चों को नींद में बड़बड़ाते और हिलते-डुलते देखती तो कृतज्ञता की एक लहर उसके भीतर उठती और उसका गला भर आता। उसकी आंखें गीली हो आतीं।

सवेरे लैला तारिक़ के पीछे-पीछे एक कमरे से दूसरे कमरे में जाती। उसकी कमर में खुंसे हुए छल्ले में चाबियां बजतीं और उसकी जींस के बेल्ट लूपों से खिड़कियां साफ़ करने की स्प्रे की बोतल झूलती रहती। लैला एक बाल्टी लिए रहती, जिसमें चीथड़ें, डिस्इन्फेक्टेंट, एक ट्वायलेट ब्रश और ड्रेसरों के लिए स्प्रे वैक्स होती। अज़ीज़ा भी उससे लगी हुई चलती जो एक हाथ में झाड़ू लिए रहती और दूसरे में फलियों से बनी गुड़िया होती जिसे मरियम ने उसके लिए बनाया था। जल्मै हिचकते हुए पीछे-पीछे आता। वो रूठा हुआ-सा, एक क़दम पीछे रहता।

लैला वैक्युम से साफ़ करती, बिस्तर लगाती और धूल झाड़ती। तारिक़ बाथरूम के सिंक और टब साफ़ करता, ट्वायलेट को रगड़ता और लिनोलियम के फर्श पर झाड़ू लगाता। खानों में वो धुले हुए तौलिए, शैंपू की छोटी बोतलें और बादाम की खुशबू वाले साबुन के टुकड़े सजाता। अज़ीज़ा ने खिड़कियों पर स्प्रे मारने और उन्हें साफ़ करने का जिम्मा ले रखा था। जब वो काम करती तो गुड़िया उससे बहुत दूर नहीं रहती।

लैला ने निकाह के कुछ दिनों के बाद अज़ीज़ा को तारिक़ के बारे में बता दिया था।

लैला को लगता कि अज़ीज़ा और तारिक़ के बीच चीज़ें अजीब और लगभग बेचैन कर देने वाली हैं। अज़ीज़ा तारिक़ के वाक्यों को पूरा करती और तारिक़ उसके वाक्यों को। तारिक़ के मांगने से पहले ही वो उसे चीज़ें थमा देती। रात के खाने की टेबल पर उनके बीच निजी मुस्कानें खिल उठतीं मानों वो बिल्कुल ही अजनबी न हों, बल्कि साथी हों जो एक लंबे समय तक बिछुड़े रहने के बाद फिर से मिल गए हों।

जब लैला ने उसे बताया तो अज़ीज़ा अपनी नज़रें नीची किए अपने हाथों को देख रही थी।

'मुझे वो पसंद हैं,' एक लंबी चुप्पी के बाद उसने कहा।

'वो तुम्हें प्यार करते हैं।'

'ऐसा उन्होंने कहा?'

'उन्हें कहने की ज़रूरत नहीं है, अज़ीज़ा।'

'मुझे बाक़ी चीज़ें बताइए मम्मी। मुझे बताइए ताकि मैं जान सकूं।'

और लैला ने बताया।

'तुम्हारे अब्बा एक अच्छे आदमी हैं। मैं जितने लोगों को जानती हूं उनमें वो सबसे अच्छे आदमी हैं।'

'अगर वो छोड़ कर चले गए, तो?' अज़ीज़ा ने कहा।

'वो कभी नहीं जाएंगे। मुझे देखो अज़ीज़ा। तुम्हारे अब्बा कभी तुम्हें दुख नहीं पहुंचाएंगे और वो कभी छोड़ कर नहीं जाएंगे।'

अज़ीज़ा के चेहरे पर आई राहत ने लैला के दिल को तोड़ दिया।

तारिक़ ने ज़ल्मै के लिए डोलने वाला एक घोड़ा ख़रीदा, उसके लिए एक वैगन बनाई। जेल में एक साथी कैदी से उसने कागज़ से जानवर बनाना

सीखा था और इस तरह उसने जल्मै के लिए अनगिनत काग़ज़ों को मोड़ कर, काट कर और लपेट लगा कर उन्हें शेरों और कंगारुओं में, घोड़ों और चमकीली मोटी चिड़ियों में बदल दिया था। लेकिन इन तोहफ़ों को जल्मै ने बेरुखी और कभी कभी नफ़रत से ठुकरा दिया था।

'तुम गधे हो!' वो चिल्लाता। 'मुझे तुम्हारे खिलौने नहीं चाहिए!'

'जल्मै!' लैला धक से रह जाती।

'ठीक है,' तारिक़ ने कहा। 'लैला, ठीक है। उसे जाने दो।'

'तुम मेरे बाबा जान नहीं हो! मेरे असली बाबा जान दौरे पर हैं और लौटने पर वो तुम्हें पीटने वाले हैं! और तुम भागने के काबिल भी नहीं रहोगे क्योंकि उनके दो पांव हैं और तुम्हारा एक ही है!'

रात में लैला जल्मै को अपने सीने पर बैठा कर और उसके साथ बबलू दुआएं पढ़ती। जब वो पूछता तो वो फिर से झूठ बोलती, उसे बताती कि उसके बाबा जान चले गए हैं और वो नहीं जानती कि वो कब लौटेंगे। वो इस काम से नफ़रत करती थी, इस बच्चे से इस तरह झूठ बोलने के लिए खुद से नफ़रत करती थी।

लैला जानती थी कि इस शर्मनाक झूठ को बार-बार बोला जाना है। ऐसा होना ही है, क्योंकि जल्मै यह सवाल झूलों से उतरते हुए, दोपहर की झपकियों से जागते हुए पूछा करेगा और बाद में जब अपने जूते बांधने और ख़ुद से चल कर स्कूल जाने की उम्र का हो जाएगा तब भी वो यह सवाल करेगा और उससे फिर यही झूठ बोला जाएगा।

लैला जानती थी कि एक समय जाकर सवाल ख़त्म हो जाएगा। धीरे-धीरे जल्मै इस पर सोचना बंद कर देगा कि उसके अब्बा ने क्यों उसे छोड़ दिया। वो ट्रैफिक लाइटों के पास, सड़क पर चलते या सामने से खुले हुए समोवार घरों के आगे चाय पीते बड़ी उम्र के लोगों के बीच वो अपने अब्बा को नहीं तलाशेगा। और एक दिन किसी घुमावदार नदी के किनारे टहलते हुए या बिना राह वाले किसी बर्फीले मैदान को देखते हुए उसे समझ आएगा कि उसके अब्बा का लापता होना अब एक खुला हुआ हरा जख्म नहीं था। कि अब यह कुछ और हो गया था, कोई नर्म किनारों वाली सुस्त सी चीज़। लोरियों की तरह। कभी, कभी जिसकी पूजा होती है, जिस पर रहस्य की परतें चढ़ जाती हैं।

लैला मुर्री में ख़ुश थी। लेकिन यह एक आसान ख़ुशहाली नहीं थी। यह मुफ्त की ख़ुशी नहीं थी।

छुट्टी के दिन तारिक़ लैला और बच्चों मॉल लेकर जाता जिससे लगी दुकानों में सस्ते गहने बिकते थे। उसकी बग़ल में उन्नीसवीं सदी के मध्य में बनी एंग्लिकन चर्च की इमारत थी। तारिक़ उनके लिए रेड़ीवालों से मसालेदार चपली कबाब ख़रीदता। वो मुकामी लोगों, यूरोपीयों और उनके सेल्युलर फोनों और डिजिटल कैमरे, और मैदानी इलाके की गर्मी से भाग कर यहां आए पंजाबियों की भीड़ के बीच चलते।

कभी-कभी वो कश्मीर प्वाइंट तक बस से जाते। वहां से तारिक़ उन्हें झेलम नदी की वादी, सनोबर से ढंकी ढलानें, हरियाली, घने जंगल वाली पहाड़ियां दिखाता। वो बताता कि वहां बंदरों को अभी भी एक डाल से दूसरी डाल पर कूदते हुए देखा जा सकता है। वो चिनार से ढंकी नाथिया गली भी जाते, जो मुर्री से तीसेक किलोमीटर दूर थी और जहां गवर्नर हाउस जाने वाली सड़क पर पेड़ों के साए में तारिक़ लैला का हाथ थामे हुए चलता। वो पुराने ब्रिटिश कब्रिस्तान पर रुकते या पहाड़ी की चोटी पर जाने के लिए टैक्सी करते, ताकि नीचे की हरी, कोहरे से भरी वादी का नज़ारा कर सकें।

कभी कभी इस सैर में जब वो किसी दुकान की खिड़की से गुज़रते तो लैला को उसमें उन लोगों के प्रतिबिंब दिखते। शौहर, बीवी, बेटी, बेटा। वो जानती थी कि अजनबियों को वो रहस्यों, झूठों और पछतावों से मुक्त सबसे मामूली परिवार लगते होंगे।

अज़ीज़ा को बुरे सपने आते, जिनसे वो चिल्लाते हुए जग पड़ती। लैला को खाट पर उसकी बग़ल में लेटना पड़ता, उसके गालों को अपनी आस्तीनों से पोंछते हुए उसे तसल्ली देते हुए फिर से सुलाना पड़ता।

लैला को ख़ुद भी सपने आते। उनमें हमेशा वो ख़ुद को काबुल के घर के हॉल में चलते हुए और सीढ़ियां चढ़ते देखती।

वो अकेली होती, लेकिन दरवाज़ों के पीछे एक इस्तिरी की लयबद्ध फुफकार सुनाई देती, चादरों का झटका जाना और फिर तहें लगाना सुनाई देता। कभी कभी वो एक औरत को धीमी आवाज़ में हेराती गीत गुनगुनाते हुए सुनती। लेकिन जब वो उस कमरे में जाती तो कमरा ख़ाली होता। वहां कोई नहीं होता।

सपने लैला को हिला देते। वो पसीने से लथपथ, आंखों में चुभते आंसुओं के साथ उन सपनों से जगती। यह सब काफ़ी सदमा पहुंचाने वाला था। हर वक़्त यह सदमा पहुंचाने वाला था।

उनचास

उस सितंबर के एक इतवार को लैला जल्मै को सुला रही थी, उसे ठंड लग गई थी, कि तारिक़ अचानक बंगले में दाख़िल हुआ।

'सुना तुमने?' उसने थोड़ा हांफते हुए कहा। 'उन्होंने उन्हें मार डाला। अहमद शाह मसूद को। वो मर गए।'

'क्या?'

दरवाज़े पर खड़े खड़े ही तारिक़ ने उसे वह बताया जो वो जानता था।

'कहते हैं कि वो दो पत्रकारों को इंटरव्यू दे रहे थे। उन पत्रकारों ने ख़ुद को बेल्जियन बताया था, जबकि वो असल में मोरक्को से थे। जब वो बातें कर रहे थे तो वीडियो कैमरे में छुपे बम में धमका हुआ। इसमें मसूद और एक पत्रकार मारे गए। उन्होंने भागने की कोशिश कर रहे दूसरे पत्रकार को गोली मार दी। वो अब कह रहे हैं कि पत्रकार शायद अल कायदा के लोग थे।'

लैला को मसूद का वह पोस्टर याद आया, जिसे मम्मी ने अपने सोने के कमरे में टोक रखा था। आगे की ओर झुके हुए मसूद, एक भौंह तनी हुई, एकाग्रता से सिकुड़ा हुआ चेहरा मानो वो किसी को पूरे आदर के साथ सुन रहे हों। लैला को याद आया कि अम्मी इस पर कितनी कृतज्ञ थीं कि मसूद ने उनके बेटों के दफन के वक़्त उनकी कब्र पर दुआ पढ़ी थी। कैसे वो सबको इसके बारे में बताती थीं। जब उनके गुट और दूसरों के बीच लड़ाई छिड़ गई तब भी अम्मी ने उन्हें दोष देने से इन्कार कर दिया। वो एक भले आदमी हैं, वो कहा करतीं।

वो अमन चाहते हैं। वो अफ़ग़ानिस्तान को फिर से बनाना चाहते हैं। लेकिन वो ये लोग बनाने नहीं देंगे। वो बस उन्हें ऐसा नहीं करने देंगे। मम्मी के लिए आख़िर तक भी, हर चीज़ के बुरी तरह तबाह हो जाने और काबुल के धूल में मिल जाने के बाद भी मसूद पंजशेर के शेर थे।

लैला उतनी क्षमाशील नहीं थी। मसूद के हिंसक अंत से उसे कोई ख़ुशी नहीं हुई लेकिन उसने यह भी याद किया कि मसूद की निगाहों के सामने मोहल्ले धूल में मिलाए जाते रहे, लाशें मलबों से निकाली जाती रहीं, बच्चों को दफनाए जाने के बाद के दिनों में छतों और पेड़ों की ऊंची डालियों पर से उनके हाथ और पांव बरामद होते रहे। उसे वह भाव भी बहुत साफ़ याद है जो रॉकेट हमले के कुछ पलों पहले उसकी मम्मी के चेहरे पर था और उसने उसे भूलने की कितनी कोशिश की थी, पास ही में पड़ी हुई बाबी की सिरकटी देह या आई, घनी धुंध और ख़ून के बीच से झांकती टी-शर्ट पर छपा ब्रिज टावर याद आया।

'दफनाने की रस्म तो होगी,' तारिक़ कह रहा था। 'मुझे यकीन है। शायद रावलपिंडी में हो। यह बहुत बड़ी होगी।'

लगभग सो चुका जल्मै अब उठ बैठा था और अपनी मुट्ठी से आंखें रगड़ रहा था।

दो दिनों के बाद वो कमरा साफ़ कर रहे थे कि उन्हें शोरगुल सुनाई दिया। तारिक़ ने झाड़ू रख दी और बाहर भागा। लैला उसके पीछे-पीछे गई।

शोर होटल की लॉबी से आ रहा था। रिसेप्शन डेस्क की दाहिनी तरफ़ लाउंज एरिया था, जिसमें कई कुर्सियां और मटमैले सुएड से मढ़े दो सोफे रखे हुए थे। सोफों के सामने कोने में एक टेलीविज़न था और सईद, दरबान और दूसरे मेहमान सामने जमा थे।

लैला और तारिक़ रास्ता बनाते हुए भीतर घुसे।

टीवी पर बीबीसी लगाया हुआ था। पर्दे पर एक इमारत, एक टावर दिखाई जा रही थी और इसकी ऊपरी मंज़िल से धुआं निकल रहा था। तारिक़ ने सईद से कुछ कहा और सईद जवाब दे ही रहा था कि पर्दे के एक कोने पर एक हवाई जहाज दिखा। वो बग़ल के टावर से जा टकराया और आग का गोला फूट पड़ा जिसके मुकाबले लैला ने जितने भी आग के गोले देखे थे वो बौने थे। लॉबी से हरेक इंसान की एक मिलीजुली चीख उठी।

दो से भी कम घंटों में दोनों टावर ढह गए।

जल्दी ही टीवी स्टेशन अफ़ग़ानिस्तान और तालिबान और ओसामा बिन लादेन के बारे में बातें कर रहे थे।

'सुना तुमने कि तालिबान ने ओसामा बिन लादेन के बारे में क्या कहा है?' तारिक़ ने पूछा।

अज़ीज़ा बिस्तर पर उसके सामने शतरंज पर ध्यान लगाए बैठी थी। तारिक़ ने उसे शतरंज खेलना सिखाया था। वो त्यौरियां चढ़ाए हुए थी और अपना निचला होंठ थपथपा रही थी। वो अपने अब्बा की हरकतों की नकल कर रही थी, जो वो कोई चाल चलने का फैसला करते वक़्त अपनाता था।

जल्मै को लगी ठंड में अब थोड़ा सुधार हुआ था। वो सो रहा था और लैला उसके सीने में विक्स लगा रही थी।

'मैंने सुना,' वो बोली।

तालिबान ने एलान किया था कि वो ओसामा बिन लादेन को नहीं सौंपेंगे क्योंकि वो एक मेहमान हैं, जिन्होंने अफ़ग़ानिस्तान में पनाह ले रखी है। और एक मेहमान को किसी के हवाले कर देना पश्तूनवली कायदों के ख़िलाफ़ है। तारिक़ कड़वाहट से हंसा और लैला ने इस हंसी में एक सम्मानित पश्तून रिवाज़ को इस तरह तोड़े-मरोड़े जाने और लोगों के तौर-तरीकों को ग़लत तरीके से पेश किए जाने के ख़िलाफ़ विद्रोह को सुना।

हमलों के कुछ दिनों के बाद लैला और तारिक़ फिर से होटल की लॉबी में थे। टीवी के पर्दे पर जॉर्ज डब्ल्यू बुश का भाषण आ रहा था। पीछे एक बड़ा अमेरिकी झंडा था। एक मौक़े पर आवाज़ कांपी और लैला को लगा कि बुश को रुलाई आने वाली है।

सईद अंग्रेज़ी बोल सकते थे और उन्होंने उन लोगों को बताया कि बुश ने अभी अभी जंग का एलान किया है।

'किनके ख़िलाफ़?' तारिक़ ने कहा।

'सबसे पहले तो हमारे वतन के ख़िलाफ़।'

'हो सकता है कि यह उतनी बुरी चीज़ न हो,' तारिक़ ने कहा।

उन्होंने अभी अभी प्यार किया था। लैला की बग़ल में लेटे हुए उसने अपना सिर उसके सीने पर रख रखा था। उसके हाथ लैला के पेट पर थे। शुरुआत में जब उन्होंने कोशिश की थी तो मुश्किल आई थी। तारिक़ माफ़ी मांगता। लैला तसल्ली देती। मुश्किलें अब भी थीं, लेकिन अब शारीरिक नहीं

बल्कि व्यावहारिक मुश्किलें थीं। बच्चों के साथ वो जिस कोठरी में रहते थे वो छोटी थी। बच्चे उनके नीचे खाट पर सोते थे और इसलिए बहुत कम एकांत मिल पाता था। ज़्यादातर वक़्त लैला और तारिक़ चुपचाप प्यार करते, अपनी उत्तेजना पर काबू रखते और बच्चों के बीच में दखल देने की गुंजाइश को ध्यान में रखते हुए कंबल के नीचे भी पूरे कपड़े पहने रहते। हमेशा उन्हें चादरों के सरसराने और बिस्तर की स्प्रिंग के चरमराने की फिक्र लगी रहती। लेकिन लैला के लिए तारिक़ के साथ होना ही इन चिंताओं से बचने का तरीका था। जब वो प्यार करते तो लैला को लगता कि उसे किनारा मिल गया है, उसे पनाह मिल गई है। उसका यह डर कि उनका साथ एक अस्थायी सुख है, कि जल्दी ही इसके रेशे-रेशे बिखर जाएंगे, धीरे-धीरे हल्का पड़ गया था। जुदा हो जाने का उसका डर गायब हो गया था।

'क्या मतलब है तुम्हारा?' अब उसने कहा।

'वहां वतन में जो हो रहा है, आख़िर में इसका नतीजा उतना बुरा नहीं निकलेगा।'

वतन, एक बार फिर बम गिर रहे थे। इस बार अमेरिकी बम। लैला रोज़ चादरें बदलते हुए और वैक्युम करते हुए टीवी के पर्दों पर जंग की तस्वीरें देखती। अमरिकियों ने जंगी सरदारों में फिर से हथियार बांटे थे और तालिबान को खदेड़ने तथा बिन लादेन को पकड़ने के लिए उत्तरी गठबंधन को मदद देना शुरू किया था।

लेकिन तारिक़ जो कह रहा था, उससे लैला भड़क उठी। उसने उसका सिर बेरुखी से अपने सीने से हटा दिया।

'उतना बुरा नहीं? लोग मर रहे हैं? औरतें, बच्चे, बूढ़े? फिर से घर तबाह हो रहे हैं? उतना बुरा नहीं?'

'तुम बच्चों को जगा दोगी।'

'तुम ऐसा कैसे कह सकते हो तारिक़?' वो तड़क उठी। 'करम में उस तथाकथित भारी ग़लती के बाद भी? एक सौ बेगुनाह लोग। तुम खुद उन लाशों को देखा!'

'नहीं,' तारिक़ ने कहा। उसने खुद को कोहनियों पर टिकाया और लैला की तरफ़ देखा। 'तुमने ग़लत समझा। मेरा जो मतलब था...'

'तुम नहीं जान पाओगे,' लैला ने कहा। वो जानती थी कि उसकी आवाज़

तेज़ हो रही है, कि वो शौहर और बीवी के बतौर पहली बार लड़ रहे हैं। 'तुम तब चले गए थे जब मुजाहिदीनों ने झगड़ना शुरू किया था, याद है? पीछे मैं रह गई थी। मैं। मैं जंग को जानती हूं। मैंने जंग में अपने अम्मी-अब्बू खोए हैं। अपने अम्मी-अब्बू तारिक़। और अब तुमसे यह सुनना कि जंग उतनी बुरी नहीं है?'

'मैं शर्मिंदा हूं लैला। मैं शर्मिंदा हूं।' उसने लैला का चेहरा अपनी हथेलियों में लिया। 'तुम सही हो। मैं शर्मिंदा हूं। मुझे माफ़ कर दो। मेरे कहने का मतलब था कि शायद इस जंग के ख़त्म होने पर कोई उम्मीद पैदा होगी, कि शायद अरसे बाद पहली बार...'

'मैं इसके बारे में और बात नहीं करना चाहती,' लैला ने कहा। वो इस पर हैरान थी उसने कैसे तारिक़ को फटकारा था। वो जानती थी कि जो उसने उससे कहा था वो नामुनासिब था, क्या जंग ने उसके अम्मी-अब्बा को भी नहीं छीन लिया था? और इस तरह उसके भीतर जो भी भड़क उठा था, वो नर्म पड़ गया। तारिक़ नर्मी से बोलता रहा और जब उसने लैला को अपनी तरफ़ खींचा तो लैला ने उसे ऐसा करने दिया। जब तारिक़ ने उसकी बांहें और फिर उसका ललाट चूमा तो उसने उसे ऐसा कर लेने दिया। वो जानती थी कि शायद तारिक़ सही था। वो जानती थी कि उसके कहने का इरादा क्या था। शायद यह ज़रूरी था। हो सकता है कि जब बुश के बम गिराने बंद हों तो कोई उम्मीद पैदा हो। लेकिन वो खुद इसे नहीं कह सकती थी, ऐसे में नहीं जब बाबी और मम्मी के साथ हुआ हादसा अफ़ग़ानिस्तान में किसी और के साथ हो रहा था। ऐसे में नहीं पीछे, वतन में जब एक मासूम लड़की या लड़का रॉकेटों द्वारा यतीम बनाया जा रहा था, जैसे कि वो बना दी गई थी। लैला इसे कबूल नहीं कर सकी। इस पर खुश होना मुश्किल था। यह दोमुंहा और विकृत लगा।

उस रात जल्मै खांसी से जग गया। लैला हिल भी पाती, उससे पहले तारिक़ बिस्तर से उठ गया था। उसने अपना नकली पांव बांधा और जल्मै के पास गया, उसे हाथों में उठा लिया। बिस्तर पर से लैला ने तारिक़ की आकृति को अंधेरे में आगे-पीछे जाते देखा। उसने कंधे पर जल्मै के सिर की झलक देखी। उसके हाथ तारिक़ की गर्दन से बंधे हुए थे, उसके नन्हें पांव तारिक़ के कूल्हों पर उछल रहे थे।

जब तारिक़ बिस्तर पर लौटा तो उनमें से किसी ने कुछ नहीं कहा। लैला उसका चेहरा छूने के लिए बढ़ी। तारिक़ के गाल गीले थे।

पचास

लैला के लिए मुर्री का जीवन आराम और चैन से भरा हुआ था। काम बहुत भारी नहीं था और छुट्टियों के दिनों में तारिक़ बच्चों को पैट्रियाटा पहाड़ी पर चेयरलिफ्ट की सवारी के लिए या फिर पिंडी प्वाइंट पर ले जाता जहां एक साफ़ दिन में इस्लामाबाद और रावलपिंडी का निचला हिस्सा देखा जा सकता था। वहां वो घास पर कंबल बिछाते और खीरे के साथ कोफ्ता सैंडविच खाते और अदरक वाली ठंडी चाय पीते।

लैला खुद से कहती कि यह एक अच्छा जीवन था, जिसके लिए शुक्रगुज़ार होना चाहिए। असल में यह ठीक वैसा ही जीवन था, जिसके लिए रशीद के साथ अपने अंधेरे दिनों में वो सपने देखती थी। हर रोज़ लैला यह बात खुद याद दिलाती थी।

तभी जुलाई, 2002 की एक गर्म रात में जब वो और तारिक़ बिस्तर में दबी हुई आवाज़ों में वतन में आ रहे बदलावों के बारे में बातें कर रहे थे। कई सारे बदलाव आए थे। गठबंधन बलों ने तालिबान को हरेक मुख्य शहर से खदेड़ दिया था, उन्हें पाकिस्तानी सरहद के पार और अफ़ग़ानिस्तान के दक्षिण और पूरब के पहाड़ों की तरफ़ धकेल दिया था। एक अंतरराष्ट्रीय शांति सेना आईएसएएफ काबुल रवाना कर दी गई थी। देश में अब एक अंतरिम राष्ट्रपति हामिद करज़ई थे।

लैला ने फैसला किया कि अब तारिक़ से कह देने का वक़्त आ गया है।

एक बरस पहले उसने ख़ुशी से काबुल से बाहर आने के लिए अपना एक हाथ दे दिया होता। लेकिन पिछले कुछ महीनों में उसे अपने बचपन का शहर बहुत याद आया था। उसने शोर बाज़ार की भीड़ भाड़, बाबर के बागीचे, चमड़े की थैलियों में पानी ढोते भिश्तियों की पुकारों की बहुत कमी खल रही थी। उसने चिकन स्ट्रीट में कपड़ों के मोलतोल करनेवालों और कार्तेह परवान में तरबूज़ बेचने वालों की याद आ रही थी।

लेकिन यह महज घर की याद या अतीत से लगाव ही नहीं था, जो लैला इन दिनों काबुल के बारे में इतना सोचने लगी थी। उस पर बेकरारी हावी हो गई थी। उसने सुना था कि काबुल में स्कूल बन रहे हैं, सड़कें फिर से पक्की की जा रही हैं, औरतें काम पर लौट रही हैं और यहां उसका जीवन, जो अपने आप में सुखद था और वो इसके लिए कृतज्ञता से भरी हुई थी, लेकिन यह जीवन उसके लिए नाकाफ़ी था। महत्वहीन था। इससे भी बुरा कि बेकार था। इधर उसे मन में बाबी की आवाज़ें सुनाई देने लगी थीं। वो कहते थे, तुम जो चाहो वो बन सकती हो लैला। मैं तुम्हारे बारे में ये बात जानता हूं। और मैं यह भी जानता हूं कि जब जंग ख़त्म होगी तो अफ़ग़ानिस्तान को तुम्हारी ज़रूरत पड़ेगी।

लैला को मम्मी की आवाज़ भी सुनाई देती। जब बाबी अफ़ग़ानिस्तान से उनलोगों के चले जाने की सलाह देते तो उसे मम्मी का जवाब याद आता। मैं अपने बेटों के सपनों को हक़ीकत में बदलते देखना चाहती हूं। *मैं चाहती हूं कि जब ऐसा हो, जब अफ़ग़ानिस्तान आज़ाद हो तो मैं यहां रहूं, ताकि लड़के देख सकें। वो इसे मेरी आंखों के ज़रिए देखेंगे।* लैला के मन का एक हिस्सा अब काबुल लौटना चाहता था, मम्मी और बाबी के लिए, ताकि वो उसकी आंखों के ज़रिए इसे देख सकें।

और फिर लैला के लिए सबसे बड़ा सम्मोहन ये था कि वहां मरियम है। क्या मरियम ने इसके लिए जान दी थी? लैला खुद से पूछती। क्या उसने ख़ुद की कुर्बानी दी ताकि लैला एक परदेश में एक नौकरानी बन जाए? लैला ने जो किया था, उससे शायद मरियम के लिए इससे तब तक फ़र्क़ नहीं पड़ता, जब तक वो और उसके बच्चे महफ़ूज़ और ख़ुश थे। लेकिन इससे लैला को फ़र्क़ पड़ता था। अचानक, इससे काफ़ी फ़र्क़ पड़ता था।

'मैं घर वापस जाना चाहती हूं,' उसने कहा।

तारिक़ बिस्तर में उठ बैठा और उसे देखने लगा।

लैला फिर से इसे मुग्ध हो गई कि वो कितना ख़ूबसूरत है, उसके ललाट का शानदार घुमाव, उसकी बांहों की सुडौल पेशियां, उसकी ख्यालों में डूबी समझदार आंखें। एक साल गुज़र गया था और अब भी लैला को कभी कभी ऐसे मौक़ों पर यकीन नहीं आता था कि उन्होंने फिर से एक दूसरे को पा लिया था। कि वो सचमुच वहां है, अपनी बीवी के साथ, कि वो उसका शौहर है।

'वापस? काबुल?' उसने पूछा।

'सिर्फ़ तभी जब तुम भी इसे चाहो।'

'क्या तुम यहां दुखी हो? तुम खुश दिखती हो। बच्चे भी।'

लैला उठ बैठी। तारिक़ ने बिस्तर पर थोड़ा खिसकर उसके लिए जगह बनाई।

'मैं ख़ुश हूं,' लैला ने कहा। 'बेशक मैं ख़ुश हूं। लेकिन...हम यहां से कहां जाएंगे, तारिक़? हम यहां कब तक रहेंगे? यह हमारा घर नहीं है। काबुल हमारा घर है, और वहां इतना कुछ हो रहा है, इतनी सारी अच्छी चीज़ें हो रही हैं। मैं इन सबका हिस्सा बनना चाहती हूं। मैं कुछ करना चाहती हूं। मैं इसमें अपनी भागीदारी निभाना चाहती हूं। तुम समझे?'

तारिक़ ने धीरे-धीरे सिर हिलाया। 'तो तुम ये चाहती हो? तुम्हें यकीन है?'

'हां, मैं यही चाहती हूं। मुझे यकीन है। लेकिन यह इससे भी ज़्यादा है। मुझे महसूस होता है कि मुझे लौटना है। यहां रहना अब और सही महसूस नहीं होता।'

तारिक़ ने अपने हाथों की तरफ़ देखा और फिर लैला को देखा।

'लेकिन तभी जब तुम भी लौटना चाहो।'

तारिक़ मुस्कुराया। उसकी ललाट के शिकन दूर हो गई और एक पल को वो फिर से वही पुराना तारिक़ था, वो तारिक़ जिसके सिर में दर्द नहीं रहता था, जिसने एक बार बताया था कि साइबेरिया में नाक की रेंट ज़मीन पर गिरने से पहले बर्फ़ बन जाती है। हो सकता है कि यह उसकी कल्पना हो, लेकिन लैला को यकीन था कि इन दिनों अभी पुराने तारिक़ की और भी झलकें दिखेंगी।

'मैं?' उसने कहा। 'मैं तो तुम्हारे पीछे दुनिया के आख़िरी छोर तक

जाऊंगा, लैला।'

लैला ने उसे करीब खींच लिया और उसके होंठ चूम लिए। उसे यकीन था कि उसने तारिक़ को कभी इस पल से ज़्यादा प्यार नहीं किया था। 'शुक्रिया,' लैला ने तारिक़ के ललाट पर अपना ललाट टिकाते हुए कहा।

'चलो, घर चलें,'

'लेकिन पहले मैं हेरात जाना चाहती हूं,' उसने कहा।

'हेरात?'

लैला ने उसे बात समझाई।

बच्चों को अपने-अपने तरीकों से भरोसा दिलाने की ज़रूरत पड़ी। लैला को गुस्साई हुई अज़ीज़ा के साथ बैठना पड़ा, जिसे अब भी डरावने सपने आते थे, जो एक हफ़्ते पहले बुरी तरह परेशान हो गई थी, जब पास में शादी पर किसी ने हवा में गोलियां दागी थीं। लैला को उसे समझाना पड़ा कि जब वो काबुल लौटेंगे तो वहां तालिबान नहीं होंगे, कि वहां अब कोई लड़ाई नहीं होगी और उसे फिर यतीमखाने नहीं भेजा जाएगा। 'हम सब साथ रहेंगे। तुम्हारे अब्बा, मैं, जल्मै। और तुम, अज़ीज़ा। अब तुम्हें मुझसे फिर कभी भी अलग नहीं होना पड़ेगा। मैं वादा करती हूं।' वो अपनी बेटी को देखते हुए मुस्कुराई। 'जब तक कि तुम अलग होना नहीं चाहो। जब तुम किसी नौजवान से प्यार करने लगो और उसे शादी करना चाहो।'

जिस दिन वो मुर्री से रवाना हुए, जल्मै उदास और बेचैन था। उसने अल्योना की गर्दन में हाथ लपेट रखा था और उसे छोड़ने को तैयार नहीं था।

'मैं बकरी के पीछे जल्मै को नहीं छोड़ सकती मम्मी,' अज़ीज़ा ने कहा।

'जल्मै। हम बकरी को बस में नहीं ले जा सकते,' लैला ने फिर समझाया।

जब तारिक़ ने उसकी बग़ल में घुटने को बल बैठ कर जल्मै से वादा किया कि वो काबुल में अल्योना जैसी ही एक बकरी ख़रीद देगा, तब जाकर जल्मै ने हिचकते हुए उसे छोड़ा।

सईद के साथ विदाई भी आंसुओं से भरी हुई थी। अच्छी किस्मत की खातिर उसने पर क़ुरान पकड़े रखा ताकि तारिक़, लैला और बच्चे उसे तीन बार चूम सकें और इसके बाद उसे इतनी ऊपर उठाया ताकि वो उसके नीचे

से गुज़र सकें। उसने तारिक़ को दो सूटकेस और ट्रंक अपनी कार में रखवाने में मदद की। सईद ही कार चला कर उन्हें स्टेशन ले गया, जो बस के चल पड़ने पर कर्ब पर खड़े-खड़े उन्हें हाथ हिला कर विदा किया।

पीछे की तरफ़ झुके हुए और पिछड़ी खिड़की में सईद को ओझल होते देखते हुए लैला ने मन में संदेह से भरी फुसफुसाहटें सुनीं। उसने जानना चाहा कि मुर्री की सुरक्षा को छोड़ कर क्या वो बेवक़ूफ़ बन गए हैं? एक ऐसी जगह जाना, जहां उसके अम्मी-अब्बू और भाई तबाह हुए, जहां बमों के धुएं बस अभी-अभी बैठने शुरू हुए हैं?

और तभी अपनी यादों की अंधेरी चक्करदार तहों में से दो पंक्तियां उठीं, जो बाबी के लिए काबुल से विदाई का गीत थीं :

कोई गिन नहीं सकता इसकी छतों पर चमकते चांदों को
या इसकी दीवारों के पीछे हज़ारों दमकते आफ़ताबों को

लैला अपनी सीट से टिक कर बैठ गई और गीली पलकें झपकाने लगी। काबुल इंतज़ार कर रहा था। उसे ज़रूरत थी। घर वापसी का ये सफ़र एक सही काम था।

लेकिन पहले एक आख़िरी विदाई कही जानी बाक़ी थी।

अफ़ग़ानिस्तान में जंग ने काबुल, हेरात और कांधार को जोड़ने वाली सड़कों को तबाह कर दिया था। अब हेरात जाने का सबसे आसान रास्ता ईरान के मसहद से गुज़रता था। लैला और उसका परिवार वहां केवल रात भर रहे। उन्होंने रात एक होटल में गुज़ारी और अगली सुबह उन्होंने एक और बस पकड़ी।

मसहद एक भीड़भाड़ वाला, चहल पहल से भरा शहर है। लैला ने गुज़रते हुए पार्क, मस्जिदें और चैलो कबाब रेस्टोरेंट देखे। जब बस आठवें शिया इमाम, इमाम रज़ा की दरगाह से होकर गुज़री तो लैला को इसकी चमकती हुई टाइलें, मीनारें और इसकी शानदार सुनहरी गुंबद देखने के लिए अपनी गर्दनताननी पड़ी। इन सबको बड़े करीने से और प्यार से संजो कर रखा गया था। उसे अपने वतन के बुद्धों का ख़्याल आया। वो विशालकाय बुद्ध अब धूल में मिल गए थे और बामियान वादी में हवा के साथ उड़ते फिर रहे थे।

ईरान-अफ़ग़ानिस्तान सरहद पर बस के सफ़र में करीब दस घंटे लग

गए। ज्यों-ज्यों वो अफ़ग़ानिस्तान के करीब आते गए ज़मीन ज़्यादा वीरान, बंजर होती गई। सरहद पार करके हेरात आने के कुछ ही देर पहले वो एक अफ़ग़ानी शरणार्थी शिविर से होकर गुज़रे। लैला के लिए यह एक पीली धूल, काले तंबुओं और थोड़े से ढांचों की एक धुंधली सी जगह थी, जिन्हें करुगेटेड स्टील की चादरों से बनाया गया था। उसने सीट की दूसरी तरफ़ हाथ बढ़ा कर तारिक़ का हाथ थाम लिया।

हेरात में ज़्यादातर सड़कें पक्की थीं जिनके दोनों तरफ़ खुशनुमा सनोबर के पेड़ों की कतारें थीं। म्यूनिसिपल पार्क और लाइब्रेरियां बनाई जा रही थीं, आंगन जतन से संवारे गए थे, इमारतें ताज़ा-ताज़ा रंगी गई थीं। ट्रैफिक लाइटें काम कर रही थीं और लैला के लिए सबसे हैरानी की बात ये थी कि बिजली लगातार आ रही थी। लैला ने सुना था कि हेरात के सामंती जंगी सरदार इस्माइल खान ने कस्टम की भारी कमाई से हेरात को फिर से बनाने में मदद की थी। खान यह रकम अफ़ग़ान-ईरान सरहद पर वसूलता था और काबुल का कहना था कि यह खान का नहीं बल्कि केंद्रीय हुकूमत का पैसा था। उन्हें मुवफ्फक होटल ले जाने वाले टैक्सी ड्राइवर ने जब इस्माइल खान का नाम लिया तो उसमें आदर और डर दोनों का लहजा शामिल था।

मुवफ्फक में दो रातें गुज़ारने की कीमत उनकी बचत का करीब पांचवां हिस्सा थी, लेकिन मसहद से सफ़र लंबा और थकाऊ था और बच्चे हल्कान हो गए थे। डेस्क पर मौजूद बुज़ुर्गवार ने कमरे की चाबियां उठाते हुए तारिक़ को बताया कि मुवफ्फक पत्रकारों और एनजीओ कार्यकर्ताओं में बहुत लोकप्रिय था।

'बिन लादेन एक बार यहां सोए थे,' उसने शेखी मारी।

कमरे में दो बिस्तर थे और एक बाथरूम था जिसमें ठंडा पानी आ रहा था। बिस्तरों के बीच की दीवार पर ख्वाजा अब्दुल्लाह अंसारी की शायरी पेंट की गई थी। खिड़कियों से लैला को नीचे भीड़ से भरी हुई सड़क और सड़क के पार पार्क दिखाई दिया, जिसमें फूलों की घनी क्यारियों के बीच से निकलती हल्के रंग की ईंटों की राहें थीं। टीवी के आदी हो गए बच्चे इस पर निराश थे कि कमरे में टीवी नहीं था। हालांकि जल्दी ही लैला और तारिक़ भी बिस्तर पर ढह गए। लैला तारिक़ की बांहों में खर्राटे लेते हुए सो गई थी, बस रात में एक बार उसकी नींद तब खुली जब वो एक सपने से जग पड़ी थी। उस

सपने को वो याद नहीं कर पाई।

अगली सुबह चाय और ताज़े ब्रेड, क्विंस के मुरब्बे और उबले हुए अंडों के नाश्ते के बाद तारिक़ ने एक टैक्सी खोजी।

'पक्के तौर पर तुम नहीं चाहतीं कि मैं तुम्हारे साथ आऊं?' तारिक़ ने पूछा। अज़ीज़ा ने तारिक़ का हाथ पकड़ रखा था। जल्मै ने नहीं पकड़ा था लेकिन वो भी उसके करीब खड़ा उसके कूल्हों से अपना एक कंधा टिकाए हुए था।

'मुझे यकीन है।'

'मुझे फिक्र हो रही है।'

'मैं ठीक से रहूंगी,' लैला ने कहा। 'वादा करती हूं। बच्चों को बाज़ार ले जाओ। उन्हें कुछ ख़रीद दो।'

जब टैक्सी चली तो जल्मै रोने लगा और जब लैला ने मुड़ कर देखा तो उसने देखा कि वो तारिक़ की तरफ़ हाथ बढ़ा रहा है। इस बात से लैला के दिल को सुकून और दुख दोनों पहुंचा कि उसने तारिक़ को कबूल करना शुरू कर दिया था।

'आप हेरात से नहीं हैं,' ड्राइवर ने कहा।

उसके काले, कंधों तक लंबे बाल थे। लैला ने पाया था कि यह वापस खदेड़े जा चुके तालिबान को दिया जाने वाला एक आम जवाब था। इसके अलावा उसकी मूंछों पर दाहिनी तरफ़ एक जख्म का निशान था। उसकी तरफ़ के शीशे पर एक फोटो टेप से चिपकाया हुआ था। यह गुलाबी गालों वाली एक नन्हीं लड़की का फोटो था, जिसके बाल बीच से बांट कर दो चोटियों नें गूंथे गए थे।

लैला ने उसे बताया कि वो पिछले साल पाकिस्तान में रही थी और काबुल लौट रही थी। 'देह-माजंग।'

शीशे के ज़रिए उसने बर्तन बनाने वालों को जगों में पीतल के हैंडल जोड़ते हुए और जीनसाज़ों को चमड़े के टुकड़े धूप में सूखने के लिए डालते हुए देखा।

'बिरादर, क्या आप यहां लंबे समय से रह रहे हैं?' लैला ने पूछा।

'ओह, अपनी पूरी ज़िंदगी। मैं यहीं पैदा हुआ। मैंने हर चीज़ देखी है। आपको वह बगावत याद है?'

लैला ने बताया कि उसे याद है, लेकिन वो बोलता रहा।

'यह मार्च, 1979 की बात है। सोवियतों के हमला करने से करीब नौ महीने पहले की बात है। कुछ गुस्साए हुए हेरातियों ने कुछ सोवियत सलाहकारों की हत्या कर दी थी, इसलिए सोवियतों ने तोपें और हेलीकॉप्टर भेजे और इस जगह को धूल में मिला दिया। हमशीरा, तीन दिनों तक उन्होंने शहर पर गोलीबारी की। उन्होंने इमारतें ढहा दीं, मीनारों में से एक को तोड़ डाला, हज़ारों लोगों को मार डाला। हज़ारों। उन तीन दिनों में मैंने अपनी दो बहनें खोईं। उनमें से एक बारह साल की थी।' उसने शीशे पर लगे फोटो को थपथपाया। 'ये वही है।'

'मुझे दुख है,' लैला ने कहा। वो इस पर हैरान थी कि कैसे हरेक अफ़ग़ान कहानी में मौत और नुक़सान और कल्पना से परे गम के निशान मिलते हैं। और तब भी वो देखती है कि लोग जीने और आगे बढ़ने के तरीके खोज लेते हैं। लैला ने अपनी ज़िंदगी और उन सारे हादसों के बारे में सोचा जो उसके साथ घटे थे, और उसे बात पर अचरज हुआ कि वो भी बच गई थी, कि वो ज़िंदा थी और इस टैक्सी में बैठी हुई इस आदमी की दास्तान सुन रही थी।

गुल दामन मिट्टी और फूस के बने सपाट कोल्बाओं के बीच खड़े, चहारदीवारियों वाले कुछेक घरों का एक गांव था। कोल्बाओं के बाहर लैला ने धूप में झुलसी औरतों को खाना बनाते देखा। कामचलाऊ चूल्हों में चलती लकड़ी पर रखे काले पड़ गए बड़े बर्तनों से उठ रही भाप की बूंदें उनके चेहरों पर जमा थीं। खच्चर नांद में खा रहे थे। मुर्गियों के पीछे भागते बच्चे अब टैक्सी के पीछे भागने लगे थे। लैला ने पत्थरों से भरा ठेला धकेल रहे आदमियों को देखा। वो रुक कर कार को गुज़रते हुए देखने लगे। ड्राइवर ने गाड़ी घुमाई और वो एक कब्रिस्तान की बग़ल से गुज़रे जिसके बीच में एक जर्जर मकबरा था। ड्राइवर ने उसे बताया कि उसमें गांव के एक सूफी दफ्न थे।

एक पवनचक्की भी थी। इसकी स्थिर, जंग के रंग के पंखों के साए में तीन छोटे बच्चे बैठे गीली मिट्टी से खेल रहे थे। ड्राइवर ने गाड़ी किनारे की और खिड़की से बाहर सिर निकाला। जवाब उन तीनों में से सबसे बड़े दिख रहे लड़के ने दिया। उसने सड़क पर पीछे, दूर एक घर की तरफ़ इशारा किया। ड्राइवर ने उसे शुक्रिया कहा और कार को बैक गियर में डाला।

उसने चहारदीवारी वाले एक मंज़िला मकान के बाहर गाड़ी को रोका।

लैला ने दीवारों के ऊपर निकले अंजीर की फुनगियों को देखा, जिसकी कुछ डालें बाहर की ओर निकली हुई थीं।

'मुझे देर नहीं लगेगी,' उसने ड्राइवर से कहा।

जिस अधेड़ आदमी ने दरवाज़ा खोला, वो छोटे कद का, दुबला और लाल-भूरे बालों वाला था। उसकी दाढ़ी लंबी थी और उसमें कुछ स्याह बालों की लटें थीं। उसने अपनी पिरहन-तुंबन के ऊपर चापन पहन रखी थी।

उन्होंने एक दूसरे को सलाम अलैकुम कहा।

'क्या ये मुल्ला फैज़ुल्ला का घर है?' लैला ने कहा।

'हां। मैं उनका बेटा हूं, हमज़ा। क्या मैं आपके लिए कुछ कर सकता हूं, हमशीरा?'

'मैं यहां आपके अब्बा की एक पुरानी दोस्त मरियम के सिलसिले में आई हूं।'

हमज़ा ने पलकें झपकाईं। उसके चेहरे पर उलझन का एक भाव आया। 'मरियम...'

'जलील खान की बेटी।'

उसने फिर से पलकें झपकाईं। फिर उसने अपने हथेली अपने गालों से लगाई और उसका चेहरा मुस्कान से रोशन हो उठा, जिससे उसके टूटे हुए और ख़राब दांत दिख गए। 'ओह!' उसने कहा। यह एक छोड़ी हुई सांस की तरह, ओहहहहहह की तरह सुनाई दिया। 'ओह! मरियम! क्या आप उनकी बेटी हैं? क्या वो-' वो अब अपनी गर्दन घुमा कर उत्सुकता से लैला के पीछे देख और तलाश रहा था। 'क्या वो यहां हैं? इतना लंबा अरसा गुज़र गया! क्या मरियम यहां हैं?'

'मुझे आशंका है कि वो गुज़र चुकी हैं।'

हमज़ा के चेहरे की मुस्कान बुझ गई।

एक पल को वो वहीं दहलीज पर खड़े रहे। हमज़ा ज़मीन पर ताक रहा था। कहीं कोई गधा रेंका।

'भीतर आइए,' हमज़ा ने कहा। उसने दरवाज़ा पूरा खोल दिया। 'मेहरबानी करके भीतर आइए।'

वो कम साजो-सामान वाले एक कमरे में फर्श पर बैठे। फर्श पर बैठने के लिए एक हैराती कालीन और गोटेदार कुशन थे। दीवार पर मक्का की एक

मढ़ी हुई तस्वीर थी। वो एक खुली हुई खिड़की के पास बैठे। उन दोनों के बीच चौकोर धूप का एक टुकड़ा था। लैला ने दूसरे कमरे में औरतों के फुसफुसाने की आवाज़ें सुनीं। एक नंगे पांवों वाला छोटा लड़का उनके बीच में ग्रीन टी और पिस्ते रख गया। हमज़ा ने उसकी तरफ़ सिर से इशारा किया।

'मेरा बेटा।'

बच्चा बिना बोले चला गया।

'तो मुझे बताइए,' हमज़ा ने थके हुए लहजे में कहा।

लैला ने बताया। उसने उसे हर चीज़ बताई। इसमें उससे ज़्यादा वक़्त लगा, जितनी उसने कल्पना की थी। आख़िर में उसे अपने को संयत बनाए रखने के लिए जूझना पड़ा। यह अब भी, एक बरस बाद भी मरियम के बारे में बात करना आसान नहीं था।

उसकी बात पूरी होने के काफ़ी देर बाद तक हमज़ा ने कुछ नहीं कहा। वो अपनी तश्तरी में धीरे-धीरे चाय के प्याले को घुमाता रहा, पहले एक तरफ़, फिर दूसरी तरफ।

'मेरे अब्बा, उन्हें सुकून हासिल हो, मरियम को बहुत प्यार करते थे,' आख़िरकार वो बोला। 'पता है, उन्होंने ही तब उनके कान में अज़ान पढ़ी थी, जब वो पैदा हुई थीं। वो हर हफ़्ते उनसे मिलने जाते थे। उन्होंने कभी नागा नहीं किया। कभी कभी वो अपने साथ मुझे भी ले जाते। हां, वो उनके उस्ताद थे, लेकिन वो उनके दोस्त भी थे। मेरे अब्बा एक बड़े दिल वाले आदमी थे। जलील खान ने जब उन्हें दूर कर दिया तो इसने उन्हें करीब-करीब तोड़ डाला।'

'मुझे आपके अब्बा के बारे में सुन कर दुख हुआ। उन पर खुदा की मेहरबानी हो।'

हमज़ा ने शुक्रिया जताते हुए सिर हिलाया। 'वो बहुत उम्र होने तक जीए। असल में वो जलील खान के बाद तक जीए। हमने उन्हें गांव के कब्रिस्तान में दफनाया। ये जगह उससे दूर नहीं है, जहां मरियम की अम्मी को दफनाया गया था। मेरे अब्बा एक प्यारे, प्यारे आदमी थे, यकीनन वो जन्नत में गए होंगे।'

लैला ने अपना प्याला रख दिया।

'क्या मैं आपसे कुछ पूछ सकती हूं?'

'बेशक।'

'क्या आप मुझे दिखा सकते हैं?' उसने कहा। 'मरियम जहां रहती थीं। क्या आप मुझे वहां ले जा सकते हैं?'

ड्राइवर कुछ और देर इंतज़ार करने को राज़ी हो गया।

हमज़ा और लैला गांव से निकले और गुल दामन और हेरात को जोड़ने वाली सड़क पर नीचे की तरफ़ पैदल चले। पंद्रह या इतने ही मिनटों के बाद हमज़ा ने सड़क के दोनों तरफ़ पसरी लंबी घास में एक संकरी-सी खाली जगह की ओर इशारा किया।

'ऐसे आप वहां जा सकती हैं,' उसने कहा। 'एक रास्ता है।'

रास्ता उबड़-खाबड़, घुमावदार, अंधेरा और छोटा था और पेड़ों के नीचे से होकर जाता था। लैला और हमज़ा उस रास्ते पर चल रहे थे और घास की लंबी पत्तियां हवा से लैला के सिर पर टकरा रही थीं। उनके दोनों तरफ़ हवा में झूमते हुए जंगली फूल खिले हुए थे, कुछ मुड़ी हुई पंखुड़ियों वाले लंबे फूल थे तो कुछ नीचे, बड़ी पत्तियों वाले फूल। यहां-वहां नीची झाड़ियों में से कुछ चीथड़े बटरकप झांक रहे थे। लैला को ऊपर स्वैलो चिड़ियों की चहचह सुनाई पड़ी और नीचे लगातार टिड्डे बोल रहे थे।

इस तरह वो पहाड़ी की तरफ़ चढ़ान पर दो सौ गज या इससे ज़्यादा चले। इसके बाद राह समतल हो गई और ज़मीन के एक सपाट टुकड़े में मिल गई। वो सांस लेने के लिए रुके। लैला ने अपनी ललाट पर से आस्तीन से पसीना पोंछा और अपने चेहरे के सामने मंडराते मच्छरों के एक झुंड को हाथों से भगाया। वहां उसने क्षितिज में नीचे खड़े पहाड़ों को देखा, कुछ कास के पौधे, कुछ पोपलार, तरह-तरह की जंगली झाड़ियां देखीं, जिनके नाम वो नहीं जानती थी।

'यहां धारा हुआ करती थी,' हमज़ा ने हल्के से हांफते हुए कहा। 'लेकिन अब इसे सूखे हुए बहुत वक़्त हो गया है।'

उसने कहा कि वो वहां इंतज़ार करेगा। उसने बताया कि वो धारा की सूखी हुई धारा की पेटी को पार करे और पहाड़ों की तरफ़ बढ़ती जाए।

'मैं यहीं इंतज़ार करूंगा,' उसने एक पोपलार के नीचे एक चट्टान पर बैठते हुए कहा। 'आप जाइए।'

'मैं नहीं-'

'फिक्र मत कीजिए। अपना वक़्त लीजिए। जाइए, हमशीरा।'

लैला ने उसे शुक्रिया कहा। एक पत्थर से दूसरे पत्थर पर क़दम रखते हुए उसने धारा की पेटी को पार किया। उसने चट्टानों के बीच में सोडा की टूटी हुई बोतलें, जंग लगे कैन, लोहे के जंग लगे डिब्बे देखे जिनके जिंक के ढक्कन ज़मीन में आधे धंसे हुए थे।

वो पहाड़ों की तरफ़, वीपिंग विलो यानी बड़ी जटाओं वाले बेदमजनूं की तरफ़ बढ़ी जिसे वो अब देख सकती थी। हवा के हर झोंके के साथ उसकी लंबी लटकती हुई जटाएं हिल रही थीं। सीने में उसका दिल धड़क रहा था। वो देख रही थी कि मरियम ने जैसा बताया था, बेदमजनूं उसी तरह से मौजूद हैं। चारों तरफ़ से एक गोल घेरे के बीच में एक खाली सपाट जगह थी। लैला अब तेज़-तेज़ चल रही थी, वो लगभग दौड़ रही थी। उसने कंधे के पीछे से देखा और पाया कि हमज़ा अब एक छोटी सी आकृति भर रह गया है। पेड़ों की गहरी हरियाली के आगे उसके चापन का रंग एक धब्बे के रूप में दिख रहा था। उसके पांव एक पत्थर से टकराए और वो लगभग गिरते-गिरते बचीं। इसके बाद उसने फिर से अपने कदमों को संभाला। बाक़ी रास्ते उसने अपना पजामा ऊपर उठाए रखा। जब वो बेदमजनुओं तक पहुंची तो वो लगभग हांफ रही थी।

मरियम का कोल्बा अब भी वहां था।

वहां पहुंच कर लैला ने देखा कि अकेली खिड़की का चौखटा खाली था और दरवाज़ा नहीं था। मरियम ने मुर्गियों के एक दड़बे, एक तंदूर और लकड़ी के एक आउटहाउस के बारे में भी बताया था। लेकिन लैला को उनका कोई निशान नहीं मिला। वो कोल्बा के दाख़िले पर रुक गई। वो भीतर मक्खियों की भुनभुनाहट सुन सकती थी।

भीतर जाने के लिए उसे एक बड़े मकड़ी के जाले से बचते हुए जाना पड़ा। भीतर हल्का अंधेरा था। लैला को अपनी आंखों को देखने लायक होने देने के लिए कुछ पल इंतज़ार करना पड़ा। जब वो देखने लायक हुई तो उसने पाया कि उसने जितनी कल्पना की थी, भीतर उससे भी कम जगह थी। फ़र्श के तख़्तों में से महज़ एक का ही आधा सड़ रहा, टूटा हुआ हिस्सा वहां बचा था। उसने कल्पना की कि बाक़ी को जलावन के लिए उखाड़ लिया गया था। फ़र्श पर अब सूखी हुई पत्तियां, टूटी हुई बोतलें, च्यूइंग गमों के बेकार रैपर,

जंगली मशरूम, पुराने, पीले पड़ गए सिगरेट के टुकड़े पड़े थे। लेकिन ज़्यादातर घास थी, जो कुछ तो अबाध और कुछ अड़ियल तरीके से दीवारों की आधी ऊंचाई तक उगी हुई थी।

पंद्रह बरस, लैला ने सोचा। इस जगह पर पंद्रह बरस।

लैला दीवार से पीठ लगाए हुए बैठ गई। उसने खिड़कियों से सरसराती हुई बहती हवा को सुना। छत पर और भी मकड़जाले तने हुए थे। किसी ने एक दीवार पर स्प्रे से कुछ लिखा था, लेकिन उसका ज़्यादातर हिस्सा झड़ गया था और जो लिखी गई बात लैला नहीं समझ पाई। तब लैला को समझ में आया कि अक्षर रूसी भाषा के थे। एक कोने में एक खाली घोंसला था और दूसरे कोने में, जहां दीवार छत से मिल रही थी, एक चमगादड़ उल्टा लटक रहा था।

लैला ने अपनी आंखें बंद कर लीं और कुछ देर वहीं बैठी रही।

पाकिस्तान में कभी-कभी मरियम के चेहरे की बारीकियां याद करने में मुश्किल आती थी। कई बार ऐसा भी होता था, जब मानो ज़बान पर आई बात की तरह मरियम का चेहरा याद ही नहीं आता। लेकिन अब, यहां इस जगह पर मरियम को आंखों की पलकों के पीछे बुलाना आसान था। उसकी निगाह की नर्म चमक, उसकी लंबी ठोढ़ी, उसकी गर्दन की खुरदरी चमड़ी, भिंचे हुए होंठो वाली मुस्कान। यहां, लैला अपने गाल मरियम की गोद की नर्मी में फिर से रख सकती थी, मरियम को आगे-पीछे झूलते हुए महसूस कर सकती थी, वो उसे क़ुरान की आयतें पढ़ते हुए महसूस कर सकती थी। वो उन शब्दों को मरियम की देह में, उसके घुटनों में, और उसके अपने कानों में गूंजते हुए महसूस कर सकती थी।

फिर एकाएक घास गायब होनी शुरू हुई, मानो किसी ने उनकी जड़ें पकड़ कर उन्हें ज़मीन के नीचे खींच लिया हो। वो नीचे धंसती गई, धंसती गई जब तक कि कोल्बा की मिट्टी ने आख़िरी नुकीली पत्ती तक नहीं निगल ली। मकड़जाले किसी जादू से सिमटते हुए अपने में समा गए। चिड़ियों का घोंसला खुद ब खुद बिखर गया, तिनके एक एक कर खुले और उड़ते हुए कोल्बा से बाहर चले गए। एक अदृश्य पोछे ने दीवार पर से रूसी इबारत को मिटा दिया।

फर्श के तख़्ते लौट आए। लैला को खाटों का एक जोड़ा, लकड़ी की एक टेबल, दो कुर्सियां, कोने में लोहे का एक स्टोव और दीवारों से लगे खाने

दिखे, जिन पर मिट्टी के बर्तन और तसले, काली पड़ चुकी चाय की एक केतली, प्याले और चम्मच रखे हुए थे। उसे बाहर मुर्गियों का कुड़कुड़ाना और दूर धारा की कलकल सुनाई दी।

नन्ही मरियम लकड़ी की टेबल के पास बैठी तेल के दीए की रोशनी में एक गुड़िया बना रही थी। वो कुछ गुनगुना रही थी। उसका चेहरा चिकना और ताज़ा था, उसके बाल धुले हुए थे और उन्हें पीछे की तरफ़ कंघी किया हुआ था। उसके सारे दांत मौजूद थे।

लैला ने मरियम को गुड़िया के सिर पर सूत के धागे चिपकाते देखा। कुछ बरसों में यह छोटी लड़की औरत बनेगी जो ज़िंदगी के सामने छोटी-छोटी मांगें पेश करेगी, जो कभी दूसरों पर बोझ नहीं बनेगी, कभी यह ज़ाहिर नहीं करेगी कि उसने भी गम उठाए थे, निराशाएं झेली थीं, सपने देखे थे, जिनका मखौल उड़ा दिया गया था। एक ऐसी औरत जो नदी की पेटी में पड़ी एक पत्थर की तरह होगी, बिना किसी शिकायत के सब कुछ चुपचाप सहते हुए, उसकी शालीनता उस पर आई उथलपुथल से ख़त्म नहीं होगी, बल्कि उनके बीच ही वह आकार लेगी। लैला इस नन्हीं लड़की की आंखों में, उसके भीतर की गहराई में कुछ देख चुकी थी, जिसे न तो रशीद और न ही तालिबान तोड़ पाने के काबिल थे। एक चट्टान के टुकड़े की तरह सख़्त और अडिग। ऐसी चीज़ जो आख़िर में उसकी नाकामी की वजह और लैला की निजात बनेगी।

नन्हीं लड़की ने सिर उठाया। गुड़िया को रख दिया। मुस्कुराई।

लैला जो?

लैला की आंखें झटके से खुल गईं। वो धक से रह गई थी और उसका शरीर आगे की तरफ़ उठ गया था। उसने उस चमगादड़ को चौंका दिया था, जिसने कोल्बा के एक सिरे से दूसरे सिरे तक चक्कर लगाया और खिड़की से बाहर निकल गया। उसके पंख किताब के फड़फड़ाते हुए पन्नों की तरह थे। लैला अपने पांवों पर उठी, अपने पजामे पर से सूखी हुई पत्तियों को झाड़ा। वो कोल्बा से बाहर निकल आई। बाहर रोशनी ने अपनी जगह थोड़ी सी बदल ली थी। हवा घास को काटती हुई और बेदमजनू की टहनियों को आपस में टकराते हुए बह रही थी।

खाली जगह से जाने से पहले लैला ने कोल्बा को आख़िरी बार देखा, जहां मरियम सोई थीं, खाना खाया था, सपने देखे थे, जलील के लिए सांस

रोके इंतज़ार किया था। झुकी हुई दीवारों पर वेदमजनुओं के टेढ़े-मेढ़े छापे बन रहे थे जो हवा के हर झोंके के साथ बदल जाते थे। सपाट छत पर एक कौवा आकर बैठ गया। उसने किसी चीज़ में चोंच मारी, कांव-कांव किया और उड़ गया।

'अलविदा, मरियम।'

और इसी के साथ, इस बात से अनजान कि वो रो रही है, वो घास के बीच से दौड़ने लगी।

उसने हमज़ा को अब भी चट्टान पर बैठे हुए पाया। जब हमज़ा ने उसे देखा तो खड़ा हो गया।

'चलिए, लौटते हैं,' उसने कहा। फिर, 'मेरे पास आपको देने के लिए कुछ है।'

लैला ने सामने के दरवाज़े के पास हमज़ा का इंतज़ार किया। कुछ देर पहले जिस लड़के ने उसे चाय लाकर दी थी, वो अब अंजीर के एक पेड़ के नीचे एक मुर्गी पकड़े हुए बेसब्री से उसे देख रहा था। लैला को दो चेहरे दिखे, एक उम्रदराज़ औरत का और हिजाब में एक छोटी लड़की का चेहरा, जो एक खिड़की के पीछे से उसे संकोच के साथ देख रहे थे।

घर का दरवाज़ा खुला और हमज़ा दिखा। उसने एक डिब्बा ले रखा था।

उसने उसे लैला को दे दिया।

'जलील खान ने अपने मरने से महीना भर या इससे पहले इसे मेरे अब्बा को दिया था।' हमज़ा ने कहा। 'उसने मेरे अब्बा से कहा था कि इसे वो तब तक मरियम के लिए संभाल कर रखें, जब तक वो इसे लेने नहीं आती। मेरे अब्बा ने इसे दो बरसों तक रखा। फिर, अपने गुज़रने के ठीक पहले उन्होंने इसे मुझे दिया और मरियम के लिए संभाल कर रखने को कहा। लेकिन वो. ..आप जानती हैं, कभी नहीं आई।'

लैला ने उस टिन के अंडाकार डिब्बे को देखा। यह एक पुराने चॉकलेट के डिब्बे जैसा था। यह एक पीले-हरे रंग का फीकी पड़ गई चमक वाला डिब्बा था, जिस पर एक ढक्कन जड़ा हुआ था। उसकी बगल की तरफ़ हल्का जंग था और ढक्कन के सामने की रिम में दो नन्हें गड्ढे थे। लैला ने उसे खोलने की कोशिश की, लेकिन उसकी कुंडी में ताला लगा था।

'इसमें क्या है?' उसने पूछा।

हमज़ा ने एक चाबी उसकी हथेली पर रख दी। 'मेरे अब्बा ने इसे कभी

नहीं खोला। न ही मैंने। मुझे लगता है कि यह ख़ुदा की मर्ज़ी है कि इसे आप खोलें।'

तारिक़ और बच्चे अभी होटल नहीं लौटे थे।

लैला बिस्तर पर बैठी थी और डिब्बा उसकी गोद में था। उसके भीतर एक हिस्सा चाहता था कि डिब्बे को बिना खोले रहने दिया जाए और जलील की इच्छा को एक राज़ ही रहने दिया जाए। लेकिन आख़िर में कौतूहल मज़बूत साबित हुआ। उसने चाबी लगाई। वो थोड़ा किरकिराई, हिली लेकिन उसने डिब्बा खोल लिया।

भीतर तीन चीज़ें थीं : एक लिफाफा, कपड़े का एक थैला और एक वीडियोकैसेट।

लैला ने टेप लिया और नीचे रिसेप्शन डेस्क पर गई। उसे बुज़ुर्गवार क्लर्क से, जिसने पिछले दिन उनका स्वागत किया था, पता लगा कि होटल में एक ही वीसीआर है और वो इसके सबसे बड़े सुईट में है। सुईट इस पल खाली है और वो उसे वहां ले जाने को राज़ी हो गया। उसने डेस्क को एक मूंछों वाले नौजवान के ऊपर छोड़ा, जो सेल्युलर फोन पर बातें कर रहा था।

बूढ़ा क्लर्क लैला को दूसरी मंज़िल पर एक लंबे गलियारे के अंत में एक दरवाज़े तक ले गया। उसने ताला खोला और उसे भीतर आने दिया। लैला की आंखों ने एक कोने में टीवी खोज ली। सुईट में उसने और किसी चीज़ पर ग़ौर नहीं किया।

उसने टीवी और वीसीआर चालू किया। टेप उसने वीसीआर में लगाया और प्ले बटन दबाया। पर्दा कुछ पलों तक खाली रहा, और लैला को समझ में नहीं आया कि जलील ने एक खाली टेप मरियम को देने के लिए इतनी ज़हमत क्यों उठाई। लेकिन तभी संगीत शुरू हुआ और पर्दे पर तस्वीरें आने लगीं।

लैला ने त्यौरियां चढ़ाईं। वो एक या दो मिनटों तक देखती रही। फिर उसने स्टॉप बटन दबा कर और टेप को आगे बढ़ाया और फिर से प्ले दबाया। वही फ़िल्म चल रही थी।

बूढ़ा आदमी हैरानी भरी नज़र से लैला को देख रहा था।

वो फ़िल्म वाल्ट डिज़्नी की पिनोच्चियो थी। लैला समझ नहीं सकी।

तारिक़ और बच्चे छह बजे के ठीक बाद होटल लौटे। अज़ीज़ा दौड़ी हुई लैला के पास गई और उसने कान की बालियां उसे दिखाईं, जिन्हें तारिक़ ने

उसके लिए ख़रीदा था। चांदी की दोनों बालियों पर तितलियां रंगी हुई थीं। जल्मै ने एक फुलाने वाली डॉल्फिन पकड़ रखी थी, जिसकी थूथन दबाने पर वो बज उठता था।

'कैसी हो?' तारिक़ ने उसके कंधों के गिर्द बाहें लपेटते हुए कहा।

'मैं ठीक हूं,' लैला ने कहा। 'मैं तुम्हें बाद में बताऊंगी।'

खाने के लिए वो पास के एक कबाब घर गए। यह एक छोटी सी, चिपचिपी, प्लास्टिक के टेबलक्लॉथों वाली, धुएं और शोर से भरी हुई जगह थी। लेकिन गोश्त शानदार और नम था और रोटी गर्म थी। इसके कुछ देर बाद वो सड़क पर टहले। तारिक़ ने सड़क के किनारे एक कियोस्क से बच्चों को गुलाब जल के आइसक्रीम ख़रीद कर दिए। उन्होंने उसे एक बेंच पर बैठ कर खाया। उनके पीछे ढलती शाम की लालिमा के बरअक्स काली पहाड़ियां दिख रही थीं। हवा हल्की गर्म थी और उसमें देवदार की महक भरी हुई थी।

लैला पहले ही लिफाफा खोल चुकी थी, जब वो वीडियोटेप देख कर कमरे में लौटी थी। इसमें हाथ से लिखा हुआ एक ख़त था, जिसे धारियों वाले पीले क़ागज़ पर नीली स्याही से लिखा गया था।

इसमें लिखा था :

13 मई, 1987

मेरी प्यारी मरियम :

दुआ करता हूं कि जब तुम्हें यह ख़त मिले, तुम सेहतमंद होओ।

जैसा कि तुम्हें पता है, मैं एक महीना पहले तुमसे बात करने काबुल आया था। लेकिन तुम मुझसे नहीं मिलीं। मैं निराश हुआ था लेकिन तुम्हें दोष नहीं दे सका। तुम्हारी जगह मैं होता तो शायद मैंने भी यही किया होता। मैंने तुम्हारी कृपा का सुख अरसा पहले खो दिया था और इसके लिए मैं केवल ख़ुद को ही दोष दे सकता हूं। लेकिन अगर तुम यह ख़त पढ़ रही हो, तब तुमने वो ख़त पढ़ा होगा, जिसे मैं तुम्हारे दरवाज़े पर छोड़ आया था। तुमने यह ख़त पढ़ा और तुम मुल्ला फ़ैज़ुल्ला से मिलने आईं, जैसा करने को मैंने तुम्हें कहा था। मैं इसके लिए तुम्हारा शुक्रगुज़ार हूं मरियम जो कि तुमने ऐसा किया। मैं तुमसे कुछ बातें कह पाने के इस मौक़े के लिए शुक्रगुज़ार हूं।

कहां से शुरू करूं?

हमारी आख़िरी बातचीत के बाद से तुम्हारे अब्बा ने बहुत गम झेला है मरियम जो। तुम्हारी सौतेली अम्मी अफसूं 1979 बगावत के पहले दिन ही मारी गईं। उसी दिन एक आवारा गोली ने तुम्हारी बहन नीलोफर को मार डाला। मैं अब भी उसे देख सकता हूं, अपनी नन्हीं नीलोफर को मेहमानों को प्रभावित करने के लिए सिर के बल खड़ी होते देख सकता हूं। तुम्हारा भाई फरहाद 1980 में जिहाद में शामिल हुआ। सोवियतों ने हेलमंद के ठीक बाहर उसे मार डाला। मैं उसकी लाश तक नहीं देख पाया! मुझे नहीं पता कि तुम्हारे अपने बच्चे हैं या नहीं, मरियम जो, लेकिन तुम्हारे बच्चे हैं तो मैं दुआ करता हूं कि ख़ुदा उनका ख़याल रखे और तुम्हें उस गम से बचाए, जिससे मैं दोचार हूं। मुझे अब भी उनके सपने आते हैं। मैं अब भी अपने मरे हुए बच्चों के सपने देखता हूं।

मैं तुम्हारे सपने भी देखता हूं मरियम जो। मुझे तुम्हारी कमी महसूस होती है। मुझे तुम्हारी आवाज़ की, तुम्हारी हंसी की कमी महसूस होती है। मुझे तुम्हें पढ़ कर सुनाना याद आता है, और वो वक़्त याद आते हैं जब हमने साथ मछलियां पकड़ी थीं। क्या तुम्हें वो वक़्त याद है, जब हमें साथ मछलियां पकड़ी थीं? तुम एक अच्छी बेटी थीं, मरियम जो, और मैं शर्मिंदगी और पछतावा महसूस किए बिना तुम्हारे बारे में सोच तक नहीं सकता। अफसोस...तुम्हारे मामले में मेरे पास अफसोस का सागर है मरियम जो। मुझे अफसोस है कि जिस रोज़ तुम हेरात आईं तो मैं तुमसे नहीं मिला। अफसोस है कि मैंने तुम्हारे लिए दरवाज़ा नहीं खोला और तुम्हें भीतर नहीं ले गया। मुझे अफसोस है कि मैंने तुम्हें अपनी बेटी नहीं बनाया, कि मैंने तुम्हें उतने बरसों तक उस जगह में रहने दिया। और किसलिए? इज़्ज़त खो देने के डर से? अपने तथाकथित अच्छे नाम के कलंकित हो जाने के डर से? इस घिनौनी जंग में इतने नुक़सान उठाने के बाद, इतनी सारी भयानक चीज़ें देखने के बाद अब ये सारी बातें कितनी छोटी लग रही हैं। लेकिन बेशक अब बहुत देर हो चुकी है। शायद यह उन लोगों के लिए जायज़ सजा है जो निर्मम होते हैं कि उन्हें तब समझ आए जब कोई भी चीज़ पलटी नहीं जा सकती हो, सुधारी नहीं जा सकती हो। अब मैं इतना ही कर सकता हूं कि मैं कहूं कि तुम एक अच्छी बेटी थीं, मरियम जो, और यह कि मैं कभी तुम्हारे लायक नहीं था। अब मैं बस

तुमसे माफ़ी ही मांग सकता हूं। इसलिए मुझे माफ़ कर दो मरियम जो। मुझे माफ़ कर दो। माफ़ कर दो। माफ़ कर दो।

अब मैं वो दौलतमंद आदमी नहीं रहा, जिसे तुम कभी जानती थीं। कम्युनिस्टों ने मेरी ज़्यादातर ज़मीन जब्त कर ली है और मेरे सारे स्टोर भी ले लिए हैं। लेकिन शिकायत करना नीचता है, क्योंकि ख़ुदा ने अब भी मुझे ज़्यादातर लोगों से कहीं अधिक ही बख़्शा है और मैं इसकी वजह नहीं समझ पाता। काबुल से लौटने के बाद मैंने अपनी बची-खुची ज़मीन भी बेच दी। मैंने ख़त के साथ में तुम्हारे लिए तुम्हारे हिस्से की विरासत रख दी है। तुम देख सकती हो कि यह बहुत बड़ी दौलत से तो कहीं कम है, लेकिन यह फिर भी कुछ है। यह कुछ है। (तुम इस पर भी ग़ौर करोगी कि मैंने रकम को डॉलरों में बदलने की छूट ले ली है। मुझे लगता है कि यह बेहतर होगा। केवल ख़ुदा ही हमारी संकट में फंसी हुई करेंसी का नसीब जानता है।)

उम्मीद करता हूं कि तुम यह नहीं सोचोगी कि मैं तुमसे माफ़ी ख़रीदने की कोशिश कर रहा हूं। उम्मीद करता हूं तुम मुझे इस बात से नवाज़ोगी कि तुम्हारी माफ़ी बिकाऊ नहीं है। यह कभी बिकाऊ नहीं थी। भले ही देर से, लेकिन मैं तुम्हें बस वो दे रहा हूं जो शुरू से ही तुम्हारा था। तुम्हारे लिए मैं ज़िंदगी में एक फर्ज़ निभाने वाला बाप नहीं रहा। शायद मैं मौत के बाद हो पाऊं।

आह मौत। मैं तुम्हें ब्योरे देकर परेशान नहीं करूंगा, लेकिन मौत अब मेरी नज़रों के दायरे में है। डॉक्टर कहते हैं कि दिल कमज़ोर है। मुझे लगता है कि एक कमज़ोर आदमी के लिए मौत का माकूल सलीका है।

मरियम जो,

मैं जुर्रत कर रहा हूं, मैं यह उम्मीद करने की जुर्रत कर रहा हूं कि यह ख़त पढ़ने के बाद तुम मेरे प्रति उससे कहीं ज़्यादा दयालु होओगी जितना मैं कभी तुम्हारे लिए था। कि तुम अपने दिल में अपने अब्बा को आकर देखने की चाहत पाओगी। कि एक बार और तुम मेरा दरवाज़ा खटखटाओगी और मुझे इस बार इसे खोलने का एक मौक़ा दोगी, कि मैं तुम्हारा स्वागत कर सकूं, तुम्हें अपनी बांहों में ले सकूं, मेरी बेटी, जैसा मुझे बरसों पहले करना चाहिए था। यह एक कमज़ोर उम्मीद है, मेरे दिल जितनी ही कमज़ोर। यह

मैं जानता हूं। लेकिन मैं इंतज़ार करूंगा। मैं तुम्हारी दस्तक को सुनने का इंतज़ार करूंगा। मैं उम्मीद करता रहूंगा।

खुदा तुम्हें एक लंबी और आरामदेह ज़िंदगी बख्शे, मेरी बेटी। ख़ुदा तुम्हें सेहतमंद और ख़ूबसूरत औलादों से नवाज़े। तुम वो खुशियां, चैन और मकबूलियत हासिल करो, जो मैं तुम्हें नहीं दे पाया। अच्छे से रहो। मैं तुम्हें खुदा की प्यार करने वाली बांहों के हवाले कर रहा हूं।

तुम्हारा नालायक बाप
जलील

उस रात होटल लौटने के बाद जब बच्चे खेल कर बिस्तर पर चले गए तो लैला ने तारिक़ को ख़त के बारे में बताया। उसने कपड़े की थैली में रखी रकम दिखाई। जब वो रोने लगी तो तारिक़ ने उसे चूमा और अपनी बांहों में उसे थामे रहा।

इक्यावन

अप्रैल, 2003

सूखा ख़त्म हुआ। आख़िरकार पिछली सर्दियों में बर्फ़बारी हुई और घुटनों तक हुई। और अब कई दिनों से बारिश हो रही है। काबुल नदी फिर से बह रही है। इसकी बसंत की बाढ़ ने टाइटेनिक सिटी को बहा दिया था।

रास्तों पर अब कीचड़ था। जूते धंस जाते। कारें फंस जातीं। सेब के भारी बोझ से लदे गधों के खुर बारिश के बने छोटे तालाबों से पानी के छींटे उड़ाते। लेकिन कोई भी कीचड़ की शिकायत नहीं कर रहा था, कोई भी टाइटेनिक सिटी का मातम नहीं मना रहा था। लोग कहते, हमें फिर से हरे भरे बन गए काबुल की ज़रूरत है।

कल लैला बच्चों को बौछारों में खेलते हुए देख रही थी। वो काले आसमान के नीचे आंगन में पानी के एक तालाब से दूसरे तालाब में कूद रहे थे। वो दो छोटे सोने के कमरों वाले मकान की रसोई की खिड़की से देख रही थी। यह मकान उन्होंने देह-माज़ंग में किराए पर लिया था। आंगन में अनार का एक पेड़ था और स्वीटब्रियर की झाड़ियां थीं। तारिक़ ने दीवारों की मरम्मत की थी और बच्चों के लिए एक फिसलन पट्टी, एक झूले का सेट और जल्मै की नई बकरी के लिए बाड़ से घिरी एक नई जगह बना दी थी। लैला ने जल्मै की खोपड़ी पर से ढुलकती बारिश को देखा- उसने पूछा था कि वो तारिक़ की तरह, सिर के बाल हटाना चाहता है। थोड़ा बदलाव करते हुए तारिक़ अब बबलू दुआएं पढ़ता था। बारिश ने अज़ीज़ा के लंबे बालों को चिपका कर सपाट

कर दिया था और उन्हें गीली पूंछ में बदल दिया था। वो जब सिर झटकती तो उससे छींटे उड़ कर जल्मै पर पड़ रहे थे।

जल्मै अब करीब छह बरस का था। अज़ीज़ा दस की थी। उन्होंने पिछले हफ़्ते उसका जन्मदिन मनाया था। वो उसे सिनेमा पार्क ले गए थे जहां आख़िरकार टाइटेनिक काबुल के लोगों के लिए दिखाई जा रही थी।

'चलो बच्चो, हमें देर हो रही है,' लैला ने उनके दोपहर का खाना काग़ज़ के थैले में रखते हुए पुकारा।

सुबह के आठ बज रहे हैं। लैला पांच बजे उठ गई थी। हमेशा की तरह अज़ीज़ा ने उसे सुबह की नमाज़ के लिए हिला कर उठाया था। लैला जानती थी कि नमाज़ों के ज़रिए अज़ीज़ा मरियम को थामे रखती थी, ये मरियम को अपने करीब बनाए रखने का तरीका थीं, जब तक कि वक़्त अपना काम न कर जाए, उसकी यादों के बागीचे से मरियम के खींच न ले जैसे कि पतवारों को जड़ों की तरफ़ से खींच लिया गया।

नमाज़ के बाद लैला वापस बिस्तर पर चली गई थी और अभी सो ही रही थी कि तारिक़ चला गया। उसे इसकी धुंधली सी याद है कि उसने उसने गालों पर चूमा था। तारिक़ को एक फ्रांसीसी एनजीओ में काम मिल गया था, जो बारूदी सुरंगों और कटे हुए अंगों वाले लोगों को नकली पांव लगाते थे।

जल्मै अज़ीज़ा का पीछा करते हुए रसोई में आया।

'तुम्हारे पास अपनी नोटबुकें हैं, तुम दोनों के पास? पेंसिलें? किताबें?'

'यहां है,' अज़ीज़ा ने अपना पीठ पर टांगने वाला बैग उठाते हुए कहा। फिर से लैला ने ग़ौर किया कि उसकी हक़लाहट कम हो रही है।

'तो फिर चलें।'

लैला ने बच्चों को घर से बाहर आने दिया, फिर दरवाज़े में ताला लगाया। उन्होंने बाहर एक सर्द सुबह में क़दम रखे। आज बारिश नहीं हो रही है। आसमान नीला है और लैला को दूर आसमान में बादलों का एक झुंड दिखा। हाथ पकड़े हुए वो तीनों बस स्टॉप तक गए। सड़कें पहले से ही भर चुकी हैं जिनमें रिक्शों, टैक्सियों, संयुक्त राष्ट्र के ट्रकों, बसों, आईएसएएफ़ की जीपों का एक मज़बूत प्रवाह है। उनींदी आंखों वाले कारोबारी अपनी दुकानों के दरवाज़ों के ताले खोल रहे हैं, जिन्हें पिछली रात बंद किया गया था। च्यूइंग गम और सिगरेट के डिब्बों की मीनारों के पीछे रेहड़ीवाले बैठे थे। राहगीरों

से सिक्के मांगती हुई विधवाएं नुक्कड़ों पर अपनी अपनी जगहें पकड़ चुकी हैं।

लैला को काबुल लौटना अजीब लगा। शहर बदल चुका है। हर रोज़ वो लोगों को पौधे रोपते हुए, पुराने घरों को रंगते हुए, नए घर बनाने के लिए ईंटें ले जाते हुए देखती है। वो गटर और कुएं खोदते हैं। खिड़कियों के ओटे पर लैला को मुजाहिदीनों के पुराने रॉकेटों के खोखे में उगाए हुए फूल दिखते हैं- काबुली उन्हें रॉकेट फूल कहते हैं। हाल ही में तारिक़ लैला और बच्चों को बाबर के बागीचे में ले गया, जिनकी मरम्मत करके उन्हें नया बनाया जा रहा था। बरसों में पहली बार लैला को काबुल के नुक्कड़ों पर संगीत सुनाई दे रहा हैं, रूबाब और तबला, दोतार, हारमोनियम और तंबूरा, अहमद ज़ाहिर के पुराने गीत।

लैला चाहती है कि मम्मी और बाबी इन बदलावों को देखने के लिए ज़िंदा होते। लेकिन जलील के ख़त की तरह काबुल का पछतावा देर से पहुंचा।

लैला और बच्चे बस स्टॉप जाने के लिए सड़क पार कर रहे थे कि दागदार खिड़कियों वाली एक काली लैंड क्रूज़र तेज़ी से आई। उनको बचाने के लिए आख़िरी मौक़े पर वो मुड़ गई और लैला हाथ भर से भी कम दूरी से बाल-बाल बची। इससे चाय के रंग का बारिश का पानी उड़ कर बच्चों की कमीज़ों पर पड़ गया।

लैला ने जल्दी से बच्चों को फुटपाथ पर खींच लिया। उसका दिल गले में धड़क रहा था।

लैंड क्रूज़र ने सड़क पर तेज़ी से भागते हुए, दो बार हॉर्न बजाया और जल्दी से बाईं तरफ़ मुड़ गई।

लैला वहीं खड़ी अपनी सांसें दुरुस्त करती रही। उसकी उंगलियां अपने बच्चों की कलाइयों पर कसी हुई थीं।

इसने लैला की जान ले ली थी। इसने उसकी जान ले ली थी कि जंगी सरदारों को काबुल लौटने दिया गया था। कि उसके अम्मी अब्बू के कातिल चहारदीवारियों से घिर बागीचों वाले आलीशान घरों में रह रहे हैं, कि वो इसके मंत्री और उसके उप मंत्री बनाए जा रहे हैं, कि वो चमकदार, बुलेटप्रूफ एसयूवी गाड़ियों में उन मुहल्लों से होकर बेधड़क घूम रहे हैं, जिसे उन्होंने तबाह किया था। यह उसकी जान ले लेता है।

लेकिन लैला ने फैसला किया कि वो गुस्से से लड़खड़ाएगी नहीं। मरियम ने यह नहीं चाहा होता। क्या तुक है? वो एक मासूम और समझदार मुस्कान के साथ कहती। इसमें क्या अच्छाई है लैला जो? और इसलिए लैला ने आगे बढ़ने के लिए इसे बर्दाश्त कर लिया। अपने लिए, तारिक़ के लिए, अपने बच्चों के लिए। और मरियम के लिए, जो अब भी लैला के सपनों में आती थी, जो कभी भी उसकी चेतना में एक या दो सांसों से ज़्यादा नहीं रही थी। लैला आगे बढ़ती रही। क्योंकि आख़िरकार वो जानती थी कि वो बस यही कर सकती है। बस वो यही कर सकती है और उम्मीद कर सकती है।

जमान फ्री थ्रो लाइन पर खड़े घुटने मोड़े बास्केटबॉल उछाल रहे हैं। वो कोर्ट पर एक जैसी जर्सियां पहने और आधा दायरा बना कर बैठे हुए लड़कों के एक समूह को निर्देश दे रहे हैं। जमान ने लैला को देखा, गेंद अपनी बांहों में दबाई और उसकी तरफ़ हाथ हिलाया। उसने लड़कों से कुछ कहा, जिन्होंने इसके बाद हाथ लहराया और चिल्लाए, 'सलाम, मोअल्लिम साहिब!'

लैला ने भी हाथ हिलाया।

यतीमखाने के खेलने के मैदान में पूरब रुख की दीवार से लगा कर सेब के छोटे-छोटे पौधों की कतारें रोपी गई थीं। लैला ने मंसूबा बनाया था कि दक्षिण की दीवार फिर से बनते ही वहां भी कुछ पौधे रोपे जाएंगे। झूले का एक नया सेट, नए मंकी बार और एक जंगल जिम लगे हैं।

स्क्रीन डोर से होकर लैला भीतर चली गई।

उन्होंने यतीमखाने को बाहर और भीतर से फिर से रंगा था। तारिक़ और जमान ने चूती हुई छत की मरम्मत की थी, दीवारों को ठीक किया था, खिड़कियां बदली थीं, जिन कमरों में बच्चे सोते और खेलते थे, उनमें दरियां बिछाई थीं। इस पिछली सर्दी में लैला ने बच्चों के सोने के क्वार्टरों के लिए कुछ बिस्तर, तकिए और अच्छे ऊनी कंबल ख़रीदे थे। उसने सर्दियों के लिए लोहे के स्टोव लगवाए थे।

काबुल के अखबारों में से एक अनीस ने यतीमखाने को नया किए जाने पर एक लेख छापा था। उन्होंने जमान, तारिक़, लैला और सहायकों में से एक को बच्चों की एक कतार के सामने खड़ा करके फोटो भी लिया था। जब लैला ने लेख देखा तो उसे बचपन की अपनी सहेलियों गीती और हसीना का ख़याल आया। और हसीना की बात का ख़याल आया, बीस की होने तक गीती और

मैं, हममें से हरेक चार, पांच बच्चे पैदा कर चुकी होंगी। लेकिन तुम लैला, तुम हम दोनों बेवकूफ़ों को नाज़ से भर दोगी। तुम कुछ बनने जा रही हो। मैं जानती हूं कि एक दिन मैं एक अखबार उठाऊंगी और उसके पहले पन्ने पर तुम्हारा फोटो देखूंगी। फोटो पहले पन्ने पर नहीं छपा था लेकिन इसके बावजूद, यह छपा था जैसा कि हसीना ने कहा था।

लैला मुड़ी और ठीक उसी गलियारे में आगे बढ़ी जहां दो बरस पहले उसने और मरियम ने अज़ीज़ा को जमान के हवाले किया था। लैला को अब भी याद था कि कैसे उन्हें अपनी कलाइयों पर से अज़ीज़ा की उंगलियों को छुड़ाना पड़ा था। उसे इसी गलियारे में रुलाई को दबाते हुए भागना याद आया, मरियम का उसे पुकारना और आतंक से अज़ीज़ा का चिल्लाना याद आया। गलियारे की दीवारें अब डायनासोरों, कार्टून किरदारों, बामियान के बुद्धों और यतीमों द्वारा बनाई गई तस्वीरों के पोस्टरों से भरी हुई थीं। उनमें से अधिकतर तस्वीरों में झोंपड़ियों पर चलती तोपों, एक-47 लहराते आदमियों, शरणार्थी शिविरों के तंबुओं और जिहाद के दृश्यों को दिखाया गया था।

लैला गलियारे में एक कोने पर मुड़ी और अब बच्चों को क्लासरूम के बाहर इंतज़ार करते हुए देखा। उसका स्वागत दुपट्टों और घुटे हुए सिरों पर पहनी टोपियों ने, नन्हीं, पतली उंगलियों ने, उदासी की ख़ूबसूरती ने किया।

जब बच्चों ने लैला को देखा तो वो भागते हुए आए। वो पूरी तरह झुक कर दौड़ते हुए आए। लैला उनसे घिर गई। फिर तो ऊंचे सलामों, तेज़ आवाज़ों, हांफने, पकड़ने, थपथपाने, छूने और उसकी गोद में चढ़ने के लिए दूसरों से धक्कामुक्की किए जाने का रेला आ गया। फैले हुए नन्हें हाथ और खुद की तरफ़ ध्यान दिए जाने की अपीलें हैं। उनमें से कुछ ने उसे अम्मी कहा। लैला ने उन्हें सुधारा नहीं।

इस सुबह इन बच्चों को शांत करने और उन्हें बाकायदा एक कतार बना कर क्लासरूम में ले जाने में लैला को मेहनत करनी पड़ी।

तारिक़ और जमान ने एक साथ लगे हुए दो कमरों के बीच की दीवार को गिरा कर क्लासरूम बनाया था। फर्श में अब भी ढेरों दरारें हैं और कहीं-कहीं टाइलें नदारद हैं। कुछ वक़्त के लिए फर्श को तिरपाल से ढंक दिया गया है, लेकिन तारिक़ ने जल्दी ही सीमेंट से कुछ नई टाइलें लगाने और फर्श पर दरी बिछाने का वादा किया है।

क्लासरूम के दरवाज़े के ऊपर एक आयताकार बोर्ड ठोंका गया है, जिसे जमान ने घिस पर चिकना बनाया और उस पर चमकदार सफ़ेद रंग लगाया। इस पर एक ब्रश से जमान ने शायरी की चार पंक्तियां पेंट की हैं। लैला जानती है कि ये उन लोगों को जवाब है, जो ये रोना रो रहे हैं कि अफ़ग़ानिस्तान को जिस सहायता रकम का वादा किया गया था वो नहीं आ रही है, कि पुनर्निर्माण बहुत धीरे चल रहा है, कि भ्रष्टाचार फैला हुआ है, कि तालिबान एकजुट हो चुके हैं और बदला लेने के लिए आएंगे, कि दुनिया एक बार फिर अफ़ग़ानिस्तान को भूल जाएगी। ये लाइनें जमान के पसंदीदा शायर हाफ़िज़ की गज़लों से ली गई थीं

युसूफ़ लौटेगा फिर से कनआं, गम न कर
झोंपड़ियां गुलाब के बागीचों में लौटेंगी, गम न कर
अगर एक बाढ़ आनी है, सभी ज़िंदा चीज़ों को डुबोने के लिए
नूह तूफ़ान की आंखों में है तेरा रहनुमा, गम न कर

लैला इस बोर्ड के नीचे से गुज़री और क्लासरूम में दाख़िल हुई। बच्चे अपने जगहों पर बैठ रहे हैं, फड़फड़ाते हुए अपनी नोटबुकें खोल रहे हैं, बातें कर रहे हैं। अज़ीज़ा अपनी बगल की एक कतार में एक लड़की से बातें कर रही है। कागज़ का एक हवाई जहाज़ ऊंचा उड़ते हुए कमरे की दूसरी तरफ़ जा रहा है। किसी ने इसे दोबारा उछाल दिया है।

'अपनी फ़ारसी की किताबें खोलो बच्चो,' लैला ने टेबल पर रखी अपनी किताब पर झुकते हुए कहा।

फड़फड़ाते पन्नों के कोरस के बीच लैला बिना पर्दवाली खिड़की तक गई। शीशे से वो खेल के मैदान में फ्री थ्रो का अभ्यास करने के लिए कतार में खड़े लड़कों को देख सकती है। उनके ऊपर, पहाड़ों के ऊपर सुबह का सूरज उग रहा है। उसने बास्केटबॉल के लोहे के छल्ले को देखा। टायर के झूले की जंज़ीरें। जमान के गले में लटकती सीटी, उसका नया चश्मा। लैला ने शीशे के हल्के गर्म पल्लों पर अपनी हथेली सटा दी। अपनी आंखें बंद कर ली। उसने धूप को अपने गालों, अपनी पलकों और ललाट पर आने दिया।

जब वो काबुल लौटे थे तो लैला को पहले इसका बहुत सदमा हुआ था कि वो नहीं जानती थी कि तालिबान ने मरियम को कहां दफ़नाया था। उसका मन किया था कि वो मरियम की कब्र पर जा सकती, कुछ देर बैठती, एक

या दो फूल वहां रख आती। लेकिन अब लैला देखती थी कि इससे कोई फ़र्क़ नहीं पड़ता। मरियम कभी भी बहुत दूर नहीं है। वो यहीं है, इन्हीं दीवारों में जिनको उन्होंने फिर रंगा है, इन पेड़ों में जिनको उन्होंने रोपा है, उन कंबलों में जो बच्चों को गर्म रखते हैं, इन तकियों, किताबों और पेंसिलों में। वो बच्चों की हंसी में है। वो उन शेरों में है जिन्हें अज़ीज़ा पढ़ती है और उन दुआओं में है जिन्हें पश्चिम की तरफ़ सिर झुकाए वो पढ़ती है। लेकिन मरियम सबसे ज़्यादा लैला के अपने दिल में है, जहां वो हज़ारों आफ़ताबों की फूटती हुई जगमगाहट में दमक रही है।

लैला ने महसूस किया कि कोई उसका नाम लेकर बुला रहा है। वो मुड़ी और आदतन उसने अपने सिर को अपने अच्छे वाले कान की तरफ़ से ज़रा सा उठाया। यह अज़ीज़ा थी।

'मम्मी? क्या आप ठीक हैं?'

कमरा शांत हो गया है। बच्चे उसे देख रहे हैं।

लैला जवाब देने ही वाली है कि एकाएक उसकी सांस फंस गई। उसने हाथ गिरा लिए। उसने वहां थपथपाया जहां पल भर पहले उसने एक हौल महसूस किया था। उसने इंतज़ार किया। लेकिन अब कोई हरकत नहीं हो रही है।

'मम्मी?'

'हां, मेरी जान।' लैला मुस्कुराई। 'मैं ठीक हूं। हां। बहुत ठीक।'

क्लास के सामने अपनी डेस्क पर जाते हुए लैला ने नामों के उस खेल के बारे में सोचा, जिसे वो पिछली रात खाने के दौरान खेल रहे थे। जब से लैला ने तारिक़ और बच्चों को ख़बर दी थी, तब से यह उनके रोज़ रातों की रस्म हो गई थी। वो हिलते-डुलते हुए और अपनी अपनी पसंद पेश करते। तारिक़ मुहम्मद को पसंद करता है। जल्मै को, जिसने हाल ही में टेप पर सुपरमैन देखी थी, यह उलझन होती है कि क्यों एक अफ़ग़ानी लड़के का नाम क्लार्क नहीं रखा जा सकता। अज़ीज़ा अमन के लिए मुहिम छेड़े हुए है। लैला को उमर पसंद आता है।

लेकिन इस खेल में सिर्फ़ मर्दों के नाम ही शामिल हैं। क्योंकि अगर यह लड़की हुई तो लैला उसका नाम पहले ही रख चुकी है।

आख़िर में

करीब तीस सालों में अफ़ग़ानिस्तान में शरणार्थियों के संकट ने पूरी दुनिया के सबसे गंभीर संकटों में से एक का रूप ले लिया है। जंग, भुखमरी, अराजकता और उत्पीड़न ने ज़बरदस्ती दसियों लाख लोगों को उनके घरों से उजाड़ दिया है। वे भाग कर पड़ोस के देशों पाकिस्तान और ईरान में बसने को मजबूर हुए हैं। पलायन के इन सबसे बुरे दिनों में करीब अस्सी लाख अफ़ग़ानी लोग विदेशों में शरणार्थियों के रूप में रह रहे है। आज बीस लाख से अधिक अफ़ग़ानी पाकिस्तान में पनाह लिए हुए हैं।

2002 से करीब पचास लाख शरणार्थी संयुक्त राष्ट्र की शरणार्थी संस्था यूएनएचसीआर की मदद से अपने घरों को लौटे हैं। सितंबर 2007 में मैं उत्तरी अफ़ग़ानिस्तान में इनमें से कुछ लोगों से मिला। मैं उन परिवारों से मिला जो एक डॉलर रोज़ से भी कम पर जीवन बसर कर रहे हैं। वे पूरी सर्दियां ज़मीन के भीतर खोदे गए गड्ढों में बंद रह कर गुज़ारते हैं। मैं उन गांवों में गया जहां हर सर्दी और गर्मी के मौसम में परिवारों के दस से पंद्रह बच्चे मर जाते हैं। मैं जिन लोगों से मिला वे कीचड़ भरी नदियों से लाया पानी पीते हैं और जिनकी आसानी से ठीक हो सकने वाली बीमारियों से मौतें हो जाती हैं। उनके पास सिर छुपाने को घर नहीं है और न ही उन्हें इलाज, स्कूल, खाना और नौकरी मयस्सर हैं। मैं यह सब देख कर टूट गया था।

जीवन को बदल देने वाले इस सफ़र का ही नतीजा है 'द ख़ालिद हुसैनी

फाउंडेशन'। इस फाउंडेशन के साथ हम सार्थक और लंबे बदलाव की उम्मीद करते हैं। 2009 में फाउंडेशन ने यूएनएचसीआर के साथ मिल कर उत्तर-पूर्वी अफ़ग़ानिस्तान में 71 बेघर परिवारों के लिए घर बनाने में मदद दी। लौटने वाले बेघर शरणार्थियों के लिए और भी घर बनाए जाने की योजनाओं पर काम चल रहा है। हम अभी सबसे ज़्यादा उन परियोजनाओं को फंड देने में तरजीह दे रहे है जिनसे शरणार्थियों, औरतों और बच्चों को फायदा हो। ये दोनों समूहों ने इस फंसे हुए देश में सबसे ज़्यादा तकलीफें उठाई हैं और इन्हीं पर अफ़ग़ानिस्तान का आनेवाला कल निर्भर करता है।

अफ़ग़ानिस्तान को फिर से बनाने की ज़रूरतें बहुत बड़ी हैं। वहां लोगों को तकलीफों से बचाने की ज़िम्मेदारी एक लंबी और मुश्किल कोशिश है। इसके बारे में या 'द ख़ालिद हुसैनी फाउंडेशन' के बारे में जानने के लिए इस वेबसाइट पर आएं: *www.khaledhosseinifoundation.org*

शुक्रिया
ख़ालिद हुसैनी

शुक्रिया

शुक्रिया अदा करने के पहले कुछ बातें साफ़ कर दूं। जहां तक मैं जानता हूं-गुल दामन का गांव एक काल्पनिक जगह है। जो लोग हेरात शहर से वाक़िफ़ हैं, वो इस पर ग़ौर करेंगे कि मैंने इसके आस पास के भूगोल का ब्योरा देने में थोड़ी-बहुत छूट ली है। आख़िर में, इस उपन्यास का शीर्षक सत्रहवीं शताब्दी के फ़ारसी शायर साएबे-तिबरिज़ी द्वारा लिखी गई एक नज़्म से लिया गया है। जिन लोगों ने यह नज़्म फ़ारसी में पढ़ी है, वो बेशक इस पर ग़ौर करेंगे कि जिस शेर में इसका शीर्षक है, उसका अंग्रेज़ी तर्जुमा शाब्दिक अनुवाद नहीं है। लेकिन यह एक आम तौर से कबूल कर लिया गया तर्जुमा है, जिसे डॉ. जोसेफ़ीन डाविस ने किया है और मुझे यह अनुवाद प्यारा लगा। मैं उनका शुक्रगुज़ार हूं।

मैं कय्यूम सरवर, हिक़मत सादात, एल्सी हेथवे, रोज़मेरी स्टेसेक, लॉरिस क्विल और हलीमा जेज़मीन क्विल को उनके द्वारा की गई मदद और सहारे के लिए शुक्रिया अदा करता हूं।

अपने अब्बा, बाबा को इस किताब की पांडुलिपी को पढ़ने, इस पर अपनी राय देने और हमेशा की तरह उनके प्यार और सहारे के लिए बहुत ख़ास शुक्रिया। और अपनी अम्मी को भी बहुत ख़ास शुक्रिया, जिनकी निस्वार्थ, सौम्य अंतरात्मा इस पूरी कहानी में रची-बसी है। आप मेरी समझ हैं, अम्मी जो। अपनी सास और ससुर को भी उनकी उदारता और मेहरबानियों के लिए

मेरा शुक्रिया।

मैं अपनी एजेंट एलेन कोस्वर को हमेशा, हमेशा अपने में भरोसा रखने के लिए, जोडी हॉचकिस्स (आगे भी!), डेविड ग्रॉसमैन, हेलेन हेलर और कभी न थकने वाले चैंडलर क्रौफोर्ड को शुक्रिया अदा करना चाहता हूं। मैं रिवरहेड बुक्स के हरेक व्यक्ति के प्रति कृतज्ञ और कर्ज़दार हूं। ख़ास तौर में सुसान पीटरसन केनेडी और ज्यॉफ्री क्लोस्के को इस कहानी में भरोसा रखने के लिए शुक्रिया अदा करना चाहता हूं। मेरिलिन डक्सवर्थ, मिह-हो चा, कैथरिन लिंच, क्रेग डी. बर्क, लेस्ली श्वार्ट्ज, होनी वर्नर और वेंडी पर्ल को तहेदिल से शुक्रिया। तेज निगाह वाले मेरे कॉपी संपादक टोनी डाविस को ख़ास तौर से शुक्रिया, जिनकी निगाह से कभी कुछ भी नहीं छूटता, और मेरी प्रतिभाशाली संपादक सारा मैकग्राथ को उनके सब्र, दूरदर्शिता और रहनुमाई के लिए शुक्रिया।

आख़िर में शुक्रिया, रोया। इस कहानी को पढ़ने और बार-बार पढ़ने के लिए, मेरे आत्मविश्वास के ज़रा-से संकट को (और वे एक बार के बड़े संकटों को भी) दूर करने के लिए, कभी संदेह नहीं करने के लिए। आपके बिना इस किताब का वजूद नहीं रहा होता। मैं आपको प्यार करता हूं।

पश्चलेख

ख़ालिद हुसैनी

यह लेख 2 जून, 2007 को बुक एक्स्पो अमेरिका में दिए गए एक भाषण का सार है।

मैंने *द काईट रनर* के आमिर की तरह लिखना शुरू किया। मैं काबुल में 1970 के दशक में बड़ा हुआ और मैं कविताएं और छोटे नाटक लिखता था, जिन्हें मैं अपने और चचेरे भाई-बहनों को फुसला कर अपने अब्बा और चाचाओं की दावतों में खेला करते थे। मैंने कहानियां भी लिखीं, जिनके बारे में मुझे याद है कि वो उदास, तीव्र और बेशर्मी और गर्व से भरी हुई अतिनाटकीय हुआ करती थी। और अपने बचकाने तरीके से उनमें वफादारी, दोस्ती और वर्ग संघर्ष को दिखाया गया होता। उनमें परिष्कृत अंदाज़ या अदा की जो कमी थी वो उनका मन जीत लेने वाला विशाल दिल पूरा कर देता था। ऐसा *द काईट रनर* के किरदारों के बारे में लोग कहते हैं और शायद ये सही भी है।

जिस भाषा में मैं लिखता था, वो बदल गई है। मैंने फ़ारसी में लिखना शुरू किया था, फिर मैंने फ्रेंच में लिखा और अब मैं ज़्यादातर अंग्रेज़ी में लिखता हूं, लेकिन एक बात हमेशा बरकरार रही : मैं एक अकेले पाठक के लिए लिखता रहा हूं। मेरे लिए, लिखना हमेशा ख़ुद को एक कहानी सुनाने की एक स्वार्थी, आत्मसेवा की कार्रवाई रही है। आप जानते हैं कि कोई चीज़ मेरी दिलचस्पी को खींच लेती है और मुझे बैठ कर उसके भीतर देखने पर बाध्य कर देती है। इसी तरह *द काईट रनर* लिखी गई थी। मेरे दिमाग में दो बच्चे थे, जिसमें से एक के मन में भारी उथल-पुथल थी और वो एक बेहद अनिश्चित नैतिक ज़मीन पर टिका था, और दूसरा मासूम और वफादार था और जिसकी जड़ें

ईमानदारी में जमी हुई हैं। मैं जानता था कि उनकी दोस्ती का बुरा अंत होगा, कि यह ख़त्म हो जाएगी और कि इसका उनके आसपास के लोगों की ज़िंदगियों पर गंभीर असर पड़ेगा। यह कैसे होगा और क्यों होगा, इसकी बाध्यता ने मुझे मार्च, 2001 में बैठ कर यह उपन्यास लिखवाया।

मेरा इरादा कभी उपन्यास को प्रकाशित कराने का नहीं था। जब मैंने दो तिहाई उपन्यास लिख लिया था, तब भी मेरे दिमाग में यह बात नहीं आई कि कोई इसे पढ़ेगा। हालांकि मैंने सोचा कि शायद मेरी बीवी इसे पढ़ेंगी क्योंकि वो मुझे प्यार करती हैं। इस तरह आप *द काईट रनर* के छपने के बाद दुनिया भर में इसको मिली लोकप्रियता पर मेरी हैरानी की कल्पना कर सकते हैं। मुझे भारत, लंदन, सिडनी, पेरिस, अरकांसास और सारी दुनिया से पढ़ने वालों के ख़त हासिल हुए, जिन्होंने मेरे प्रति उनके मनोभावों को ज़ाहिर किया। उनमें से अनेक ने जानना चाहा कि वो अफ़ग़ानिस्तान में कैसे रकम भेज सकते हैं। कुछ ने कहा कि वो एक अफ़ग़ानी यतीम को गोद लेना चाहते हैं। उन खतों में मैंने एक अनोखी काबिलियत देखी कि कैसे एक काल्पनिक कहानी ऐसे लोगों को आपस में जोड़ सकती है, जो अलग पहनावे पहनते हैं, अलग तरह के मजहबों पर चलते हैं और मैंने देखा कि दोस्ती, अपराधबोध, माफ़ी, नुक़सान और प्रायश्चित के कुछ इंसानी एहसासात किस कदर सार्वभौम हैं।

उन खतों में मैंने यह भी देखा कि कैसे मैंने अनचाहे ही खुद को एक खतरनाक स्थिति में रख दिया है—कि *द काईट रनर* के बाद की कहानी कहने की स्थिति में, और एक ऐसी किताब लिखने की स्थिति में जिसके पन्नों की स्याही अभी गीली ही होगी कि उसे *द काईट रनर* से तुलना किए जाने का बोझ ढोना पड़ेगा। और इसमें उसका कोई दोष भी नहीं होगा। मुझे मिले हरेक ख़त को पढ़ने के साथ ही मैं एक तेज़ और उत्तेजना से भरी हुई सांस से भर जाता और मैं अब तक लिखे जा रहे इस उपन्यास के प्रति दयाभाव से भर जाता। मैं अपने परिवार के विवेक के प्रति डरा हुआ था, जिसे इस किताब को लिखते हुए मुझे बर्दाश्त करना था।

मैंने एक ऐसी कहानी लिखने का फैसला करके मामले को और भी जटिल बना दिया, जो एक नहीं बल्कि दो मुख्य किरदारों की मांग करती थी और उनमें से दोनों ही औरतें थीं। यह फैसला मैंने तब किया था, जब मैं *द काईट रनर* का आख़िरी संपादन कर रहा था- एक बाप और एक बेटे की कहानी ख़ास

तौर से मर्दों की दुनिया में स्थित थी। मैं अफ़ग़ानिस्तान में केंद्रित एक दूसरी प्रेम कहानी लिखना चाहता था, लेकिन इस बार मां-बेटी की कहानी और दो संघर्षरत औरतों की आंतरिक ज़िंदगी की कहानी कहना चाहता था। मेरा अंदाज़ा है कि कुछ आसान रास्ते भी थे जिन पर मैं आगे बढ़ सकता था, लेकिन मैंने यही चुना क्योंकि एक लेखक और एक अफ़ग़ानी होने के नाते मैं अपने वतन की संघर्षरत औरतों की कहानी से ज़्यादा आकर्षक या अहम या बाध्यकारी कहानी नहीं सोच सकता था। नाटकीय तौर पर कहें तो इसकी तुलना में दूसरी हरेक कहानी फीकी लगी।

बदक़िस्मती से तालिबान अफ़सरों के सख़्त, चमकते हुए चेहरे के सामने से गुज़रती बुर्क़े में ढंकी औरतों की छवि दुनिया भर में बेहद आम हो गई है। शायद उससे भी बढ़ कर यह एक प्रतीक बन गई है। जब मैं 2003 में काबुल में था तो मैं एक ऐसे आदमी से मिला जिसने सरकारी बॉडीगार्ड के रूप में काम किया था। उसने यों ही मुझे एक औरत की कहानी बताई जिसे उसने तालिबान अधिकारी द्वारा सड़क पर पीटे जाते देखा था। यह कहानी उसने ख़ुशनुमा भावों के साथ बताई। उसने कहा कि अफ़सर ने उस औरत को तब तक पीटा जब तक उसकी हड्डियों से उसकी मां का दूध नहीं चूने लगा। वह कहानी सुनते हुए मुझे यह बात हक़ीकत से परे लगी कि ऐसा काबुल में हो चुका था। यह बहुत पहले की बात नहीं है जब अफ़ग़ानिस्तान में औरतें यूनिवर्सिटियों में प्रोफ़ेसर हुआ करती थीं, वे डॉक्टर और वकील थीं, अस्पतालों में काम करती थीं, स्कूलों में पढ़ाती थीं और समाज में एक अहम भूमिका अदा करती थीं। मेरी अम्मी की तरह यूनिवर्सिटियों में पढ़ी हुई और फ़ारसी पढ़ाने वाली औरतें थीं, जो आख़िर में लड़कियों के एक बहुत बड़े हाई स्कूल में वाइस प्रिंसिपल भी बनीं। लेकिन यह काबुल की बात थी और अफ़ग़ानिस्तान एक शहरी मध्य वर्ग का राष्ट्र नहीं है। यहां हमेशा उदार सुधारवादी काबुल और देहाती अफ़ग़ानिस्तान के बीच वैचारिक फ़र्क़ रहा है। दुखद सच्चाई यह है कि तालिबान के पाकिस्तानी ख़ुफिया विभाग की आंखों का तारा बनने के बहुत पहले से औरतों के ख़िलाफ़ तालिबान की शैली का उत्पीड़न अफ़ग़ानिस्तान के कुछ निश्चित इलाकों में मौजूद रहा था। अगर तुलनात्मक रूप से देखें तो एक तरफ़ काबुल औरतों की ख़ुदमुख़्तारी का एक मरकज़ था और दूसरी तरफ़ देहाती अफ़ग़ानिस्तान में और ख़ास कर दक्षिण और पूरब के पाकिस्तान से

लगे सरहदी इलाकों में रिवायती तौर पर पितृसत्तात्मक कबीलाई इलाके मौजूद रहे हैं जहां मर्द औरतों की किस्मत तय किया करते हैं। वहां औरतें हमेशा कैद रही हैं। हमेशा उन्हें रास्तों पर बुर्का पहन कर चलना पड़ता रहा है और बारह साल की उम्र के बाद शायद ही कभी वो स्कूल गई हों। इस तरह उन इलाकों में भारी निरक्षरता रही है। सदियों से औरतों को यह बताया जाता रहा है कि वो कहां शादी करें, किनसे शादी करें और आख़िरकार कितनी शादियां करें। ज़्यादातर हिस्सों में देहाती औरतें चुपचाप, पर्दे के भीतर आज्ञा मानते हुए, सेवा करते हुए जीती रही हैं।

हो सकता है कि आपको इससे हैरानी हो लेकिन काबुल से पिछली पूरी सदी में अफ़ग़ानिस्तान की औरतों को आज़ाद करने की अनेक कोशिशें शुरू हुईं। 1920 के दशक में अमानुल्लाह नाम के एक बादशाह थे जिन्होंने सरेआम बुर्का पहनने पर पाबंदी लगा दी थी। उन्होंने औरतों के लिए पहला अस्पताल और लड़कियों के लिए पहला स्कूल बनवाया। वो पूर यूरोप से शिक्षकों को लेकर आए और औरतों को तालीम हासिल करने के लिए यूरोप भेजा। अमानुल्लाह ने जबरन होनेवाली शादियों पर पाबंदी लगाने की कोशिश की, लड़कियों के लिए शादी की न्यूनतम उम्र को बढ़ा कर सोलह किया और दुल्हनों के लिए पैसे देने के चलन पर पाबंदी लगाई। बदकिस्मती से, मुख्यतः इन कोशिशों के नतीजे में बगावत हो गई और उन्हें शहर छोड़ कर भागना पड़ा। वो निर्वासन में बूढ़े होकर मरे।

1950, 60 और 70 के दशकों में भी कोशिशें हुईं जिनमें से कुछ के अच्छे नतीजे सामने आए। 1964 में अफ़ग़ानी औरतों को वोट देने का हक़ हासिल हुआ। लेकिन काबुल के इन सुधारों का पितृसत्तात्मक कबायली नेताओं ने हमेशा मखौल उड़ाया, उन्हें मानने से इन्कार किया और कुछ मामलों में तो बगावत कर दिया, जैसा कि बेचारे बादशाह अमानुल्लाह के साथ हुआ था।

इसलिए आप देख सकते हैं कि अफ़ग़ानी औरतों के लिए ज़िंदगी तालिबान के पहले से ही एक जद्दोजहद थी। लेकिन यह अलग-अलग गुटों के बीच जंग छिड़ जाने, अराजकता और उग्रवाद की शुरुआत के साथ असहनीय हो गई। अनेक तरीकों से, तभी सचमुच तबाही आई।

औरतों को सभी की तरह न केवल आम लोगों के रिहाइशी इलाकों में बमबारी और अंधाधुंध गोलीबारी का सामना करना पड़ा, न केवल उन्हें पिटाई

और यातनाएं और जलालतें और कैद बर्दाश्त करने पड़े, न केवल उनके बुनियादी हक़ों की बार-बार धज्जियां उड़ाई गईं बल्कि बड़ी संख्या में वो लैंगिक आधार पर होने वाले दुर्व्यवहारों की शिकार भी हुईं। उन्हें अगवा किया गया और गुलामों की तरह बेचा गया, मिलीशिया कमांडरों से उनकी जबरन शादी कराई गई, उन्हें वेश्या बनने पर मजबूर किया गया, उनका बलात्कार किया गया। बलात्कार एक ऐसा घिनौना और अक्षम्य अपराध था, जिसका इस्तेमाल उन परिवारों को धमकाने के लिए किया गया, जो एक या दूसरे गुट का विरोध कर रहे थे।

आज तालिबान के चले जाने के बाद, 9-11 के बाद के अफ़ग़ानिस्तान में फिर से औरतों की आज़ादी की बातें हो रही हैं, जैसी कि होने चाहिए। अफ़ग़ानी औरतों पर थोपा गया लैंगिक भेदभाव आधुनिक दुनिया की अब तक हल नहीं हुई सबसे नाइंसाफियों में से एक है। इसके साथ-साथ अफ़ग़ानिस्तान को अपनी औरतों की ज़रूरत है। अफ़ग़ानिस्तान के पुनर्निर्माण में अगर अफ़ग़ानी औरतों के बुनियादी हक़ों का सम्मान नहीं किया गया और उनको इसमें भागीदारी की इजाज़त नहीं दी गई तो यह पूरी परियोजना नाकाम हो जाएगी।

बादशाह अमानुल्लाह की बीवी रानी सुरैया ने कहा था : 'जो भी हो, यह मत सोचिए कि हमारे कौम को अपने लिए सिर्फ़ मर्दों की ज़रूरत है। औरतों को भी इसमें हिस्सा लेना चाहिए जैसा उन्होंने इस्लाम के शुरुआती बरसों में लिया था। पूरे इतिहास में औरतों द्वारा की गई अनमोल सेवाओं का ब्योरा मिलता है। और उन मिसालों के ज़रिए हम सीखते हैं कि हम सबको ही अपने कौम की तरक्की के लिए मिल कर भागीदारी करनी होगी।' रानी ने ये शब्द 1926 में कहे थे और मुझे लगता है कि उनकी बातें अस्सी बरसों के बाद भी प्रासंगिक हैं और शायद तब तो और भी प्रासंगिक होंगी।

मैं 2003 में काबुल लौटा और हर तरह की ज़िंदगी जी रहे लोगों से मिला। और मुझे एक नुक्कड़ पर खड़े होना और पूरी तरह ढंकी हुई औरतों को चलते देखना याद है। उनके पीछे चार, पांच, छह बच्चे चल रहे होते। मुझे यह सोचना याद है कि इसके भीतर का इंसान कौन है? उसने क्या-क्या देखा है? उसने क्या-क्या सहा है? किस बात से उसे खुशी मिलती है? क्या उसे दुख देता है? उसकी उम्मीदें, उसकी लालसाएं, उसकी निराशाएं क्या हैं?

एक तरह से हज़ारों दमकते आफ़ताब (ए थाउज़ेंड स्प्लेंडिड संस) उन सवालों के जवाबों की कल्पना करने की मेरी कोशिश है। ये उन दो काल्पनिक औरतों की भीतरी ज़िंदगी को तलाशने की और उन पर्दों के भीतर के बेहद मामूली इंसानियत को देखने की मेरे द्वारा की गई कोशिश है।

हज़ारों दमकते आफ़ताब मुझे बहुत, बहुत प्रिय है। इसे प्यार ने जन्म दिया है और मैं उम्मीद करता हूं कि यह कहना उतना महत्वाकांक्षी नहीं लगेगा कि मैं सोचता हूं कि ये अफ़ग़ानिस्तान के महान साहस, सहनशीलता और लचीलेपन को मेरी विनम्र श्रद्धांजली है।

मैं उम्मीद करता हूं कि ये किताब आपके दिल को छुएगी, कि मैं आपको अपने साथ बहा ले जाऊंगा और उपन्यास आपको हिला कर रख देगी और आपको अफ़ग़ानी औरतों के प्रति हमदर्दी से भर देगी, जिसकी तकलीफ़ों की मिसाल हाल की दुनिया के इतिहास में बहुत कम मिलेगी।

–ख़ालिद हुसैनी

मरियम तब महज़ पंद्रह साल की थी जब रशीद के साथ उसकी शादी करा दी गई और उसे काबुल भेज दिया गया। करीब दो दशक बाद उसकी दोस्ती वहां की एक किशोरी लैला से होती है और फिर वह मां-बेटी जैसे एक मज़बूत रिश्ते में बदल जाती है। देश पर तालिबान की हुकूमत शुरू होने के बाद ज़िंदगी भूख, क्रूरता और डर के ख़िलाफ़ निराशा से भरी एक जद्दोजहद में तब्दील हो गई थी। लेकिन तब भी प्यार लोगों से ग़ैर मामूली काम करा लेता है और हैरान कर देने वाली बहादुरी के साथ मुश्किल से मुश्किल रुकावटों से पार पाने में उनकी मदद करता है।

'अगर आप जानना चाहते हैं कि *हज़ारों दमकते आफ़ताब*, *द काईट रनर* जितना ही अच्छा है या नहीं तो जवाब है: नहीं। यह उससे बेहतर है'

-वॉशिंगटन पोस्ट

'इसे पढ़ कर सिर्फ़ कठोर दिलवाले ही नहीं हिलेंगे'

-ग्लैमर

'दिल को छू लेने वाली दास्तान... यह तालिबान की हुकूमत में औरतों के दुख और धैर्य की एक ज़ोरदार कहानी भी है'

-डेली मेल

A Thousand Splendid Suns, Khaled Hossein

अनुवाद: रियाज़ुल हक

आवरण चित्र: गेटी इमेजेज

ISBN 978-0-143-41587-9

9 780143 415879

₹399

www.penguinbooksindia.com

PENGUIN INDIA

PRAKASH BOOKS

द काईट रनर